स्वर्ण जयन्ती महोत्सव समिति

श्री रामेश्वरदास बिड़ला
,, गोविन्दलाल पित्ती
,, पन्नालाल पित्ती
,, मदनमोहन रुइया
,, जमनादास अडुकिया
,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, शिवकुमार भुवालका
,, घनश्यामदास पोद्दार
,, मोतीलाल तापड़िया
,, रामनाथ आनन्दीलाल पोद्दार
,, व्रजरतन मोहता
,, हरीराम हरलालका
,, जुग्गीलाल पोद्दार
,, भगवानदास तोषनीवाल
,, भवानीदास बिनानी
,, सूरजरतन दामाणी
,, नन्दलाल केजड़ीवाल
,, भगवतीप्रसाद गोयनका
,, मदनलाल राजपुरिया
,, पुरुषोत्तमलाल रुइया
,, जगदीशप्रसाद रिंगसिया
,, विश्वम्भरलाल डालमिया
,, दुर्गादत्त धर्ड
,, घनश्यामदास जालान
,, विश्वनाथ पोद्दार
,, रामगोपाल रुइया

श्री हरिराम सराफ
,, श्रीराम तापड़िया
,, रूपचन्द भन्साली
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल
,, शंकरलाल बजाज
,, जयदेव सिंहानिया
,, कालीचरण डालमिया
,, मदनलाल जालान
,, रामेश्वरलाल कन्दोई
,, ओमप्रकाश मोदी
,, रामरिख "मनहर"
,, खेताराम चौधरी
,, रामेश्वरप्रसाद साबू
,, सांवरमल तोदी
,, मुरलीधर बजाज
,, श्रीनिवास बगड़का
,, काशीप्रसाद अडुकिया
,, गोकुलचन्द अग्रवाल
,, गोविन्दराम बूबना
,, पुरुषोत्तमदास फतेहचन्द झुंझनुवाला
,, मुरलीधर जालान
,, राधाकृष्ण खेमका
,, चम्पालाल जैन
,, बसन्तलाल नृसिंहपुरा
,, रामस्वरूप बियाला

श्रीमती रतनीबाई पोद्दार
,, गंगाबाई तोषनीवाल
,, मंगलाबाई खेतान
,, विजयाबाई मालपानी
,, लज्जारानी गोयल

खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष श्रीवेंकटेश्वर-प्रेस बम्बई के लिए
बी. पी. अवस्थी मैनेजर द्वारा मुद्रित,

लीलामय कृष्ण की कर्मक्षेत्र में स्फूर्त मधुरतम वाणी का आह्लादमय स्वर झंकृत हुआ–'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥' उद्घोष स्वरूप और मोह-ग्रस्त धनुर्धर अर्जुन के नेत्र पटल से ममत्व का झीना आवरण अदृश्य हो गया –नेत्र खुल गये–आत्मा में शक्ति का संचार हुआ एवम् कर्तव्य बोध का ज्ञान सूर्य उदित हुआ।

भगवान हृषीकेश के पाञ्चजन्य की ध्वनि में धनंजय के महाशंख देवदत्त का स्वर एकाकार हुआ एवम् गहन गंभीर नाद की छत्र-छाया में निरंतर कर्मशीलता की प्रेरक भावनाओं का उद्भव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होने लगा जिसके फलस्वरूप ही वांछित फल की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होने के समस्त साधन समुपस्थित हुये।

मानवीय मनोभावनायें, मुक्ति के मंगलमय महासूत्र का भाष्य; मनोयोग पूर्ण मनस्वियों की महत्ता के माध्यम की मान्यता के साथ संयुक्त करती हैं। मुक्ति के आध्यात्मिक पक्ष से यहां तात्पर्य नहीं है अपितु अभावों से मुक्त होने के सशक्त प्रयत्नों की आकांक्षा इसमें निहित है। उन अभावों से जो व्यक्ति, समाज एवम् राष्ट्र को अपनी विपरीत प्रतिक्रियाओं से संत्रस्त रखते हों–जिनकी विषम व्यथा से मानव मात्र की विकास धारा के अनन्त प्रवाह में रोक लगती हो एवम् जिन के परिणामस्वरूप स्वतन्त्र व स्वाभिमानयुक्त जीवनयापन असंभव भी नहीं तो कठिनतर अवश्य हो जाता है।

मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई की स्थापना में अन्तर्हित उद्देश्य इन्हीं अभावों से समाज को मुक्त करने के स्वप्न की साकारता से ही सर्वथा सम्बन्धित रहा है। उस मारवाड़ी समाज की जो अपने अन्तःकरण में सत्य, सदाचार, सद्धर्म एवम् सद्व्यवहार के सद्गुणों को सन्निहित किये हुये अपनी जन्मस्थली से सुदूर भारत के प्रत्येग भाग व विदेशों के प्रदेशों में भी अपनी संस्कृति की परम्परागत स्वरक्षा के साथ साथ उक्त स्थलीय प्रवृत्तियों के सामयिक विकास में साहसपूर्वक संलग्न रहा है। वाणिज्य-व्यवसाय, अध्ययन-अध्यापन एवम् लगन-मनन के उच्च-ध्येय हृदयांकित किये हुये यह समाज जहां अग्रसर हुआ वहां अपना एक विशिष्ट सेवा क्षेत्र निर्माण किया और उस क्षेत्र में जिस सदाशयता का परिचय इस समाज के कृत्यों से परिलक्षित हुआ है वह अपने आप में एक इतिहास है–एक साहसिक गाथा है जिसकी कल्पनामात्र हृदय में समाज के महत्व की अभिव्यक्ति का साधन प्रस्तुत करती है।

अर्द्धशताब्दि से समाज की सेवा में संलग्न मारवाड़ी सम्मेलन का सर्वसमुदायी बम्बई नगर के सर्वांगीण विकास के सूक्ष्मतम एवम् दीर्घसूत्रीय प्रयासों में सर्वदा विनम्र व सक्रिय सहयोग रहा है इस तथ्य के प्रति शंका को कोई स्थान नहीं है। अपने सेवाकाल के स्वर्णिम अध्याय को मन में संजोये सम्मेलन अपने स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सम्पन्नता का सगर्व अधिकारी है तथा अपने अतीत-काल की कृत्तियों में नगर की

सर्वतोमुखी सफलता का स्वप्न चरितार्थ समझते हुये समुज्ज्वल भविष्य की अनिवर्चनीय निर्माण कल्पना में अपनी सम्पूर्ण शक्ति का केन्द्रीकरण करने को प्रयत्नशील है।

सम्मेलन अपने निहित उद्देश में किस सीमा तक समाज एवम् राष्ट्र का हित सम्पादन कर सका इसका स्पष्ट आधार आपके समक्ष प्रस्तुत है तथा सम्मेलन की शैक्षणिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवम् राष्ट्रीय अभ्युत्थान की गतिविधियों का लाभ कहाँ तक इन उद्देश्यों की सम्प्राप्ति का आधार बना है इसका अनुमान संभवतः विज्ञजनों का ही कर्तव्य है।

मारवाड़ी सम्मेलन ने समाज की चिरवांछित जिन प्रवृत्तियों के समारंभ को अपने प्रारंभिक चरण के साथ समाहित किया, उनसे लाभान्वित जन-जन की हार्दिक अनुभूतियों का स्पन्दन सर्वग्राह्यस्वरूप धारण कर चुका है तथा इस सर्वमान्य सत्य का साक्षात्कार करवाने में समर्थ हो सका है कि सम्मेलन सर्व जन हिताय के अमर सिद्धान्तों की साकारता के हेतु निरंतर सक्रिय है।

व्यावसायिक वृत्ति की प्राधान्यता प्राप्त किये हुये मारवाड़ी समाज के अत्यन्त व्यस्त जीवन से स्फूर्त इस सामाजिक सेवा संगठन का स्वरूप सदैव से सर्व समाज हित सम्पादन एवम् धर्म निरपेक्षता से युक्त रहा है। इसकी गतिविधियों का सम्यक् उपयोग बिना किसी भेद-भाव के सभी जाति, वर्ग व सम्प्रदाय के व्यक्तियों को सर्वदा सुलभ रहा है जो समाज की समन्वयवादी भावना के संक्षिप्त संस्करण का स्वरूप प्रकट करता है। बम्बई नगर के विभिन्न समुदायों से समन्वयकारी समानता का सद्प्रयत्न सम्मेलन के प्रयास से सदैव संभव हुआ है और नगर के नेतृत्व ने इसकी नवीनता में कभी कमी अनुभव नहीं की है। मराठी, गुजराती, पारसी एवम् अन्य सभी समाजों के लोग सम्मेलन के राष्ट्रसेवी स्वरूप से आश्वस्त रहे और उनका अनन्य विश्वास समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में मान्यता का सशक्त आधार बन सका, यह निर्विवाद तथ्य है।

अपने वर्तमान विकसित स्वरूप के सफलसर्जकों के प्रति सम्मेलन की सहृदय कृतज्ञता का समर्पण सर्वथा श्रेयस्कर है तथा समाज के जिन सपूतों ने इसके स्थायित्व एवम् उत्कर्ष के गहनतम प्रयास किये हैं उनका समाज व सम्मेलन सदैव आभारी रहेगा एवम् भावी युगीय परम्पराओं के अनुरूप सम्मेलन के गतिशील चरणों को सुदृढ़ आधार प्रदान करने में संलग्न आज का समुत्साही वर्ग सदैव धन्यवाद का सत्पात्र सिद्ध होगा, यह मनोकामना सम्मेलन के हरस्नेही की है तथा रहेगी।
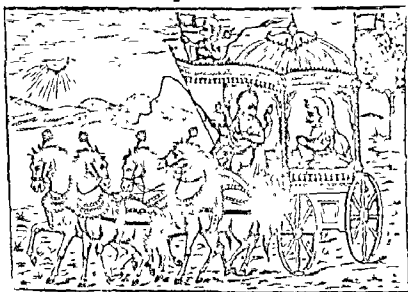
लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं, पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्वलकान्तिकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ।।

विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणि विघ्नाटवी हव्यवाट्,
विघ्नव्यालकुलाभिमानगरुडो विघ्नेभपञ्चाननः ।
विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदनपवि विघ्नाम्बुधेर्बाडवः,
विघ्नाघौघघनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ।।

President Sarvapalli Radhakrishnan

Prime Minister Pandit Jawaharlal Nehru

send good wishes to the Marwari Sammelan, Bombay, on the occasion of its Golden Jubilee.
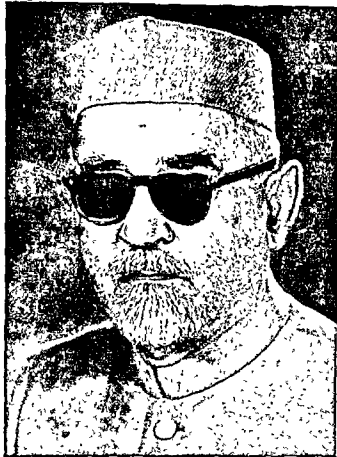
VICE-PRESIDENT
INDIA

NEW DELHI

December 17, 1963.

Dear Shri Poddar,

Thank you for your letter of the 11th inst.

I send my best wishes for the success of the Golden Jubilee celebrations of the Marwari Sammelan, Bombay.

Yours sincerely,

Zakir Husain

I am happy to know that Marwari Sammelan is celebrating its Golden Jubilee in March 1964. During the last 50 years this institution has rendered useful service not only in educational and cultural fields but also in Social activities. I send my greetings on this happy occasion and wish the Marwari Sammelan a long and useful career ahead.

Y. B. CHAVAN.
Defence Minister.

★

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मारवाड़ी सम्मेलन मार्च सन् १९६४ में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है। अपने ५० वर्ष के काल में सम्मेलन ने देश की अपूर्व सामाजिक एवं शैक्षणिक सेवा की है। नारी शिक्षा और हिन्दी को बम्बई प्रान्त में प्रोत्साहित करने में सम्मेलन अग्रणीय रहा है। "समाज वाणी" नामक पत्रिका के द्वारा बौद्धिक विकास का अनुपम कार्य किया है। स्वाधीनता आन्दोलन के समय देश में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने तथा समय समय पर आने वाले प्रकोपों में सहायता कार्य करने में सजग प्रहरी का कार्य किया है।

मेरी शुभकामनायें सम्मेलन के साथ हैं।

राज बहादुर
केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री

यह हर्ष की बात है कि मारवाड़ी सम्मेलन गत् ५० वर्षों से निःस्वार्थ भाव से देश की सामाजिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक सेवा समुचित रूप से करता आ रहा है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आगामी मार्च १९६४ में सम्मेलन द्वारा स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने का आयोजन किया जा रहा है। मेरी शुभकामना है कि सब कृत्य सानंद और सफलतापूर्वक संपन्न हों और सम्मेलन द्वारा अधिकाधिक नर नारी लाभ उठावें।

विजयालक्ष्मी पंडित
राज्यपाल, महाराष्ट्र

★

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई अपने सामाजिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक सेवाओं से पूर्ण ५० वर्ष के कार्यकाल के पश्चात् मार्च १९६४ में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है।

मारवाड़ी समाज अपनी व्यावसायिक प्रतिभा के लिये ही प्रसिद्ध नहीं है अपितु समाज सेवी कार्यों में भी अग्रणी रहे हैं। यह मारवाड़ी समाज के अनुरूप ही है कि आपका सम्मेलन कई उच्च शिक्षण व अन्य रचनात्मक सेवा संस्थायें संचालन कर रहा है। मैं इन सब प्रवृत्तियों के सफल संचालन के लिए सम्मेलन को बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह सम्मेलन अपनी सेवा प्रवृत्तियों में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा।

मेरी शुभकामना है कि आपका स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पूर्ण सफल हो।

सम्पूर्णानन्द
राज्यपाल, राजस्थान

प्रसन्नता का विषय है कि आगामी मार्च महीने में मारवाड़ी सम्मेलन की स्वर्ण-जयन्ती मनायी जायगी। इस संस्था ने अपने जीवन काल में समाज-सेवा और साहित्य एवं सांस्कृतिक उत्थान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किये हैं। आशा है कि भविष्य में भी यह संस्था अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उसी तत्परता से सक्रिय रहेगी।

मैं इसके स्वर्ण जयन्ती समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

कृष्णवल्लभ सहाय
मुख्य मंत्री, बिहार

★

I send my greetings to the Marwari Sammelan on the occasion of their Golden Jubilee. The contribution of this community in the development of trade, commerce and industry and in fostering innumerable charity trusts and organisations throughout the country will be acknowledged by all concerned. We all look forward to the services of this community in the cause of the country and the people.

PRAFULL CHANDRA SEN
Chief Minister of West Bengal.

I am glad to know that the Marwari Sammelan, Bombay will be celebrating the completion of 50 years of its activities. I find that the Sammelan has rendered great service in many fields and particularly in the fields of education and women's welfare. I am sure the Sammelan will render greater and greater service to the community in the years to come. I wish the celebration and the publication of the souvenir success.

S. NIJALINGAPPA.
Chief Minister of Mysore.

★

The Spirit of social services that is evident among the members of the Marwari Community, wherever they live, is highly commendable. The institutions which they sponser for providing education, promoting health and for supporting the aged and infirm never suffer for lack of funds. Every member of the Marwari Community considers it his duty to give some portion of his earning to support social service institutions. I appreciate the valuable services which the Marwari Sammelan is rendering to the community in Bombay. I send my best wishes for the success of its many-sided activities.

M. BHAKTAVATSALAM.
Chief Minister of Madras

I extend my felicitations to the Marvadi *Sammelan, Bombay on the occasion of its Golden* Jubilee Celebrations.

Although fifty years of useful and manifold services rendered by the Sammelan is itself a testimony of integrity to the devoted workers of the mercantile Marvadi community, yet their Zeal and enthusiasm in the service of common man through education and social activities are some thing very vital for the public of the metropolitan city of Bombay. It is in Bombay, people of different communities with their deverse culture and different professions happily pull together and contribute to the national culture and strengthen the bonds of unity.

I have every hope that in future also the Sammelan and its members will continue to contribute, with greater Zeal and enterprise, their mite in fulfilling their obligations in the service of the multifarious professions they represent and in the enrichment of the economic and socio-cultural life of Bombay.

I wish the celebrations all success.

BALVANTRAY MEHTA.
Chief Minister of Gujarat.

★

जनता की सामाजिक तया शिक्षा विषयक सेवा करत हुये मारवाड़ी सम्मेलन ने पचास बरस पूरे किये और आज सम्मेलन अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है यह जानकर खुशी हुई । सम्मेलन आगे चलकर ऐसा ही प्रगति पर कार्य करता रहे यही मेरी शुभकामना है ।

स्वर्णजयन्ती महोत्सव को सफलता चाहता हूँ ।

शांतिलाल ह. शाह
आरोग्य कायदा व न्याय मंत्री
महाराष्ट्र सरकार

मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई अपने ५० वर्ष पूर्ण कर स्वर्ण जयंती मनाने जा रहा है। यह जानकर प्रसन्नता हुई। किसी भी संस्था के लिए ५० वर्ष का जीवन गौरव का विषय है। सम्मेलन ने हर दिशा में कार्य किया है वह सराहनीय है। विशेष कर शिक्षा के क्षेत्र में इसने जो प्रगति की है वह अभिनन्दनीय है। मैं पूर्ण आश्वस्त हूँ कि यह भविष्य में भी समाज और देश की सेवा में पूर्ण तथा योगदान देता रहेगा। मैं इस आयोजन की हृदय से सफलता चाहता हूँ।

ईश्वरदास जालान
मन्त्री कानून, स्वायत् शासन व
पंचायत विभाग पश्चिमी बंगाल।

★

मुझे यह जानकर अत्यन्त-प्रसन्नता हुई कि मारवाड़ी सम्मेलन, बंबई, मार्च १९६४ में स्वर्ण जयंती समारोह मना रहा है।

देश के उत्थान और विकास में राजस्थानी समाज का प्रमुख दायित्व रहा है और मारवाड़ी सम्मेलन ने विशेषतः इस दायित्व को पिछले ५० वर्षों पूर्व मनोयोग और साहस के साथ निभाया है। सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में राजस्थान वासी युग की गति को पहचान कर बड़े वेग से चल रहे हैं और वह समय दूर नहीं है जब-युग-चेतना, चिंतन और प्रगति से युक्त समृद्ध जीवन लेकर राजस्थान राष्ट्रोन्नति में विशेष योग देने लगेगा।

मारवाड़ी सम्मेलन, बंबई के कार्यकर्त्ताओं ने सदासे ही हर युग के जीवन के मान और मूल्यों को अपना कर रचनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण हाथ बंटाया है।

मेरी यह हृदय से शुभ कामना है कि यह सम्मेलन दीर्घायु प्राप्त करते हुए देश और समाज की निरंतर सेवा करता रहे।

हरिभाऊ उपाध्याय

शिक्षा, समाज कल्याण, देवस्थान व यातायात मंत्री

I am glad to know that the Marwadi Sammelan which has completed 50 years of useful service to the society and the nation in the fields of education, culture and social uplift would be celebrating its Golden Jubilee in March 1964 and to commemorate the occasion proposes to bring out a souvenir containing messages, etc.

On behalf of the citizens of Bombay and as its Mayor I take this opportunity to send my greetings and goodwishes to the authorities of the Marwadi Sammelan and through them to the womanfolk of India for greater success in life in the years ahead.

ESHAKBHAI A. BANDOOKWALA.
Mayor of Bombay.

★

I am glad to learn that the Marwadi Sammelan, Bombay, is celebrating its Golden Jubilee in the month of March. I need hardily say that I am acquainted with the activities of the Sammelan and have been impressed by the initiative and interest it has shown in the educational field and in the promotion of the Hindi language. That its beneficial activities are not confined to any particular community or class, is evidence of the broad outlook the Sammelan brings in its service of the people of Bombay. Considering the fact that members of the Marwadi Community command vast resources, however, the sammelan's spheres of work can be considerably extended. I am sure that in this Golden Jubilee year consideration will be given to how and in what direction the extension should take place.

I wish the Sammelan all success in its laudable activities.

A. B. NAIR.
Sheriff of Bombay.

I have your letter of the 11th instant regarding the Golden Jubilee of the Marwadi Sammelan in March next. I congratulate the Marwadi Sammelan on the wonderful services that it has rendered to the society and the nation during the last fifty years and I send my humble felicitations on this auspicious occasion. The work of the Sammelan has added a glorious chapter to the rich history of the city of Bombay. It is one of the organisations that have given this city a national and cosmopolitan character. On the occasion of the Golden Jubilee, I heartly wish the Sammelan a still more glorious and prosperous future.

With my kindest personal regards.

S. K. PATIL.

✱
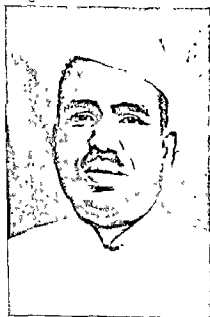
मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई अपने कार्य के पचास वर्ष समाप्त कर मार्च, १९६४ में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

सम्मेलन की गतिविधियाँ बहुमुखी है। शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन, महिला संस्था के गठन, पुस्तकालय तथा वाचनालय आदि की स्थापना व मासिक पत्रिका के प्रकाशन आदि कार्यों के अतिरिक्त सम्मेलन ने जो विद्यार्थी-गृह के निर्माण का कार्य हाथ में लिया है, वह समाजोत्थान में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

यह और भी प्रसन्नता की बात है कि सम्मेलन समय समय पर दैविक प्रकोपों से पीड़ित जनता की सेवा का कार्य भी करता रहता है। आशा है, स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सम्मेलन भविष्य के लिये भी भी समाज सेवा की विस्तृत योजना पर विचार करेगा।

समारोह सफल हो।

जगजीवनराम

मारवाड़ी सम्मेलन अपनी स्वर्णजयन्ती मना रहा है यह प्रसन्नता की बात है। मारवाड़ी सम्मेलन के ५० वर्ष के अतिस्त्व में समय का प्रवाह इतनी तेजी के साथ आगे बढा है और इस अरसे में इतना क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गया है कि इस अवसर पर समाज को एक नये सिंहावलोकन की जरूरत महसूस होती है।

सबसे पहले तो यह बात समझ में आनी आवश्यक है कि जबसे राजस्थान बनाहै तब से 'मारवाड़ी' शब्द का महत्व समाप्त सा ही हो गया है। लोग अपने आप को "राजस्थानी" कहने लगे हैं। राजस्थान की भौगोलिक सीमा विस्तृत हो गई। "मारवाड़ी" शब्द की व्याख्या भी विस्तृत हो गई। "मारवाड़ी" शब्द की पुरानी व्याख्या तो इतनी थी कि जयपुर और बीकानेर के व्यवसाई लोग जो कलकत्ता बम्बई में व्यवसाय करते थे "मारवाड़ी" शब्द में केवल उन्हीं का समावेश था। मारवाड़ी राजपूत, ब्राह्मण या अन्य वर्ण के लोगो को इस शब्द में गणना नहीं थी। यह संकुचित दायरा अब विस्तृत होना अनिवार्य हो गया है और इस लिये 'मारवाड़ी' शब्द की व्याख्या पहले से विस्तृत और उदार होनी जरूरी बन गई है।

दूसरी बात यह है कि राजस्थानी लोगों का सामाजिक बंधन भी ढ़ीला पड़ता जा रहा है। अंतरजातीय विवाह और अंतरप्रदेशीय विवाह बिना रुकावट के होने लगे हैं इस लिये राजस्थानी शब्द धीरे धीरे भारतीय शब्द में विलीन होता जा रहा है। कालधर्म का तकाजा भी यही है। इस धर्म के अनुसार हमें चाहिये कि इस नई स्थिति का अध्ययन करें और इस विस्तार को बिना संकोच के स्वीकार करें।

तीसरी बात जो हमें इस विस्तृत व्याख्या को स्वीकार करने को बाध्य करती है वह यह है कि राजस्थानी लोग अपने व्यवसाय और निर्वाह के लिये राजस्थान से बाहर निकल कर भारतवर्ष के कोने कोने में फैल गये हैं। नूतन राजस्थानी समाज जहाँ जनमा वहीं के लोगो के सम्पर्क में आकर उन्हीं की रीति नीति को अपनाने लगा है। राजस्थानी भाषा के स्थान पर बोल चाल में हिन्दी आ रही है। जिनको तीन चार पीढ़ियां बाहर बीती हैं–जैसा महाराष्ट्र में–वहाँ के राजस्थानी स्थानीय भाषा और स्थानीय वेशभूषा को अपनाने लगे हैं। नूतन पीढ़ी के लोगों का राजस्थान को भूमि से सम्पर्क भी हटता जा रहा है। अब से ५० वर्ष के बाद क्या होगा यह कहना कठिन है पर जैसे बंगाल में आज से सैंकड़ों वर्ष पहले कान्यकुब्ज ब्राह्मण बस गये और वे ही लोग आज अपने आप को बंगाली कह रहे हैं। इसी तरह अन्य प्रदेश में जो राजस्थानी बस गये हैं वे क्या रहेंगे यह कहना मुश्किल है।

जो कुछ हो रहा है वह कालधर्म के अनुसार हो रहा है इसलिये मारवाड़ी सम्मेलन अपना दायरा विस्तृत करे– सामाजिक क्षेत्र में भी और अन्य क्षेत्रों में भी इसी में उनका कल्याण है। संकोच अच्छा भी नहीं। "जाके मन में अटक है वो हो अटक रहा।"

आशा है इन सभी बातो को समझकर ही मारवाड़ी सम्मेलन अपनी रीति नीति निश्चित करेगा।

सम्मेलन को मेरी शुभ कामनाएँ, अतीत के लिये बधाई, भविष्य के लिये शुभेच्छा।

घनश्यामदास बिड़ला

मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने जा रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यों का विवरण पढ़कर सन्तोष हुआ। महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हो तथा सम्मेलन द्वारा सेवाकार्य निरन्तर निर्विघ्न चलता रहे यह मेरी हार्दिक इच्छा है।

जुगलकिशोर बिड़ला

*

मारवाड़ी सम्मेलन से मेरा प्रारम्भ से ही सम्पर्क रहा है। मैंने सम्मेलन का ४९ वाँ वार्षिक वृत्तान्त पढा। सम्मेलन द्वारा जो अनेकविध सार्वजनिक प्रवृत्तियां और समाज-सेवा हो रही है और नये नये कार्यकर्त्ता जिस उत्साह और लगन से सम्मेलन की विभिन्न गतिविधियों को वेग दे रहें हैं, यह देख मुझे प्रसन्नता और गौरव का अनुभव होता है।

समय में परिवर्तन तेजी से हो रहा है। राजस्थानी-समाज सेवा के क्षेत्र में सदा अग्रसर रहेगा और अपनी गतिविधियो को सदा समय के अनुकूल रखेगा तो अवश्य लोगों की सद्‌भावना और सम्मान को प्राप्त कर सकेगा। महज राजस्थानी समाज के लिए ही नहीं, बल्कि सारे देश की जनता के लिए बिना जाति-पाँति के भेदभाव सम्मेलन की सेवायें सुलभ होनी चाहिये। जातिवाद और प्रांतीयता की संकीर्ण भावना हरेक राजस्थानी को अपने विचारों से दूर रखनी चाहिये। मैं आशा करता हूँ कि सम्मेलन के कार्यकर्त्ता इस उद्देश्य को सदैव अपने सम्मुख रख कर सेवा कार्य में प्रयत्नशील रहेंगे जिससे अन्य लोगों को यह खयाल न रहे कि सम्मेलन सिर्फ राजस्थानियों के लिए ही है। यह बात सर्व विदित है कि जहां जहां राजस्थानी व्यवसायी और अन्य लोग गये हैं वहां पर वे स्थानीय जनता में पूर्णरूप से घुलमिल गये हैं और जरा भी भिन्नता नहीं रखी है।

"मारवाड़ी सम्मेलन" के नाम से लोगो को कोई भ्रान्ति नहीं होनी चाहिये कि सम्मेलन की सेवा का क्षेत्र मारवाड़ी या राजस्थानी समाज तक सीमित है। सम्मेलन का उद्देश्य है सेवा करने का जिसमें किसी प्रकार के भेदभाव को स्थान नहीं होना चाहिये। समान भाव और समदृष्टि रखने से ईश्वर भी सहायता करेगा।

बम्बई अस्पताल भी मारवाड़ी सम्मेलन की प्रवृत्तियों से भिन्न नहीं है क्यों कि बम्बई अस्पताल के सदस्य प्रायः सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं में से ही है। इसी तरह मारवाड़ी विद्यालय भी सम्मेलन के संबंधित समझना चाहिये। संक्षेप में बम्बई में राजस्थानी या मारवाड़ी समाज की ओर से सचालित सभी संस्थायें एक तरह से सम्मेलन से संबंधित रही है और अपने अपने क्षेत्र में सार्वजनिक सेवा कार्य में योगदान दे रही हैं।

रामेश्वरदास बिड़ला

मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुये पचास वर्ष पूरे हो रहे हैं। तब से यह संस्था सक्रिय रूप से न केवल मारवाड़ी समाज अपितु सभी भारतीयों के उन्नति में अपना योगदान देती आई है। उस समय हम लोग जो युवक थे उन सबको देश और समाज सेवा की प्रेरणा हो रही थी। ऐसी संस्था की आवश्यकता का हमें अनुभव हुआ और उत्साह और उमंग से यह संस्था स्थापित हुई।

इसका कार्य क्षेत्र दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। संस्था के पुस्तकालय और वाचनालय से हिन्दी और अन्य भाषा भाषियों ने पर्याप्त लाभ उठाया और उठा रहे हैं। सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

बालिका हिन्दी विद्यालय की आवश्यकता का अनुभव करके सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय की स्थापना हुई। उसकी व्यवस्था यह सम्मेलन जिस प्रकार सुचारु रूप से कर रहा है वह सम्मेलन के प्रति श्रेय का विषय है इस विद्यालय में आरम्भ में लड़कियों की संख्या बहुत कम थी अब पंद्रह सौ छात्राएँ है। बम्बई में स्थान के अभाव की भारी समस्या है अगर स्थानाभाव नहीं होता तो विशेष छात्राओं के अध्यापन का प्रबन्ध करते हेतु एक दूसरी पाठशाला ही सम्मेलन खोल देता किन्तु स्थानाभाव तो प्रतिदिन बढ़ता ही जारहा है। उच्चशिक्षा का हिन्दी माध्यम द्वारा प्रबंध भी छात्राओं के लिए सम्मेलन ने किया है। श्रीमती भागीरथीबाई मानमल रूइया महिला महाविद्यालय के द्वारा एक सौ छात्राएं बी० ए० तक की शिक्षा ग्रहण कर रही है। स्थानाभाव न होता तो कन्याओं और बालको के हिन्दी कालेज बम्बई में हो जाते। इनके अतिरिक्त राजस्थानी महिला मंडल की स्थापना भी सम्मेलन ने किया जिसके द्वारा महिलाओं को सिलाई, पाकशास्त्र, कलात्मक काम सिखाए जाते हैं। दूसरे स्थानों से आनेवाले विद्यार्थियों के निवास की व्यवस्था के हेतु राजस्थान विद्यार्थी गृह का कार्य भी सम्मेलन ने आरम्भ कर दिया है। यह भवन शीघ्र ही तैयार हो जाने की आशा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मारवाडी समाज और सम्मेलन ने पूर्ण रूप से सक्रिय सहयोग अनेकों प्रकार से दिया है जो प्रशंसनीय है।

गोविन्दलाल पित्ती

★

I have had the privilege of being associated with the Marwadi Sammelan for the last several years. It has been rendering a valuable service to the community and although regional in character, it has been playing a significant role in the cultural, social and economic life of the city. On this occasion of its Golden Jubilee which is an important landmark in the history of the Sammelan, I offer my hearty congratulations to the organisers on their splendid achievements and my best wishes for the increasing prosperity of the Sammelan so that it may continue its useful work in the years to come.

MADANMOHAN R. RUIA.

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि स्थानीय मारवाड़ी सम्मेलन अपनी सार्वजनिक सेवाओं के ५० वर्ष पूर्ण करके स्वर्ण जयन्ती मनाने का आयोजन कर रहा है। सम्मेलन के द्वारा सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक सेवाओं के विविध पहलुओं की जो उत्तरोत्तर प्रगति हुई है यह हमारे राजस्थानी समाज के लिये गौरव का विषय है। सम्मेलन समय समय पर अपने संगठन के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवा के स्थायी एवं अस्थायी कार्यक्रमों में उत्तरोत्तर विस्तार करता रहा है। सार्वजनिक सेवा का क्षेत्र वास्तव में अपरिमित है एवं ऐसी ठोस सेवा करने वाली संस्थाओं की भी अभी कमी है। सम्मेलन ने उन इनी गिनी थोड़ी सी संस्थाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यद्यपि सम्मेलन का संगठन राजस्थानी समाज के लोगों से संचालित होता है फिर भी संतोष का विषय है कि जहाँ तक सार्वजनिक सेवा के लिये उसके द्वारा संचालित विविध संस्थाओं का सवाल है सभी वर्ग एवं सम्प्रदाय के लोगों को इससे लाभ मिल रहा है। वास्तव में यह उचित और आवश्यक भी है कि राजस्थानी समाज अपनी सेवाओं के द्वारा जनता के सार्वजनिक हित के लिये विशद् रूप से प्रयत्नशील रहे ताकि समाज के प्रति लोगों में उत्तरोत्तर सद्भावना की वृद्धि होती रहे।

स्वर्ण जयंती मनाने के समय आज तक किए गए सेवा कार्यों के विविध पहलुओं का सिंहावलोकन तो होगा ही परन्तु अधिक आवश्यकता इस बात की है कि भविष्य में इन सेवाओं का क्षेत्र और भी कैसे व्यापक और विस्तृत किया जाय ? जैसा मैंने ऊपर लिखा है, सेवा का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है एवं सम्मेलन को स्वर्ण जयन्ती के समय और भी अनेक प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं में अग्रसर होने की कई ठोस योजनाएँ बनानी चाहिये।

सम्मेलन के द्वारा इस समय सार्वजनिक सेवा का जो महान कार्य हो रहा है उसके लिये मैं सम्मेलन के वर्तमान पदाधिकारियों को बधाई देना चाहता हूँ एवं महोत्सव की सफलता की कामना करता हूँ।

गजाधर सोमानी,
अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन।

★

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मारवाड़ी सम्मेलन अपने पचास वर्षों की अवधि पूर्ण कर मार्च १९६४ में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है।

विगत ५० वर्षों में मारवाड़ी सम्मेलन ने अपनी विभिन्न बहुमुखी प्रवृत्तियों द्वारा न केवल अपने समाज को ही उत्थान के पथ पर खड़ा किया है बल्कि उसने सारे देश के सामने एक आदर्श उपस्थित किया है। साहित्य, कला, विज्ञान, शिक्षा, नारी जागरण एवं राजनीति आदि क्षेत्रों में सम्मेलन सदैव क्रियाशील रहा है। स्वाधीनता संग्राम में तथा देश में जब जब अकाल एवम् आकस्मिक आपत्तियाँ आई हैं सम्मेलन ने सदा बिना किसी भेदभाव के अपना योग दिया है। वास्तव में आज मारवाड़ी समाज में प्रगतिशीलता आई है उसका श्रेय मारवाड़ी सम्मेलन को है।

आधुनिक शिक्षा का लक्ष्य है कि नवयुवकों में सांस्कृतिक चेतना का आविर्भाव करना, उनमें आत्मविकास की भावना उत्पन्न करना, तथा किसी विशेष क्षेत्र में दक्ष बनाना। यह प्रसन्नता की बात है कि सम्मेलन की भावी योजनाएँ इस ओर अब अधिक सचेष्ट होकर अग्रसर होने जा रही है। मुझे विश्वास है कि हमारे आज के नवयुवक अधिक से अधिक इस संस्था में सम्मिलित होकर सम्मेलन की भावी योजनाओं को साकार रूप देंगे। सम्मेलन के इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की सम्पूर्ण रूप से सफलता की मैं शुभकामना करता हूँ।

रामनाथ आनन्दीलाल पोद्दार

I am happy to learn that Marwari Sammelan, Bombay is celebrating Golden Jubilee *after completing fifty years* of its active service in the fields of culture and education and general advancement of the Society. The Marwari Com munity, apart from its contribution in the sphere of social life, has played a very significant role in the growth and advancement of trade, commerce and industry in the City of Bombay. It is our proud heritage that active leaders with vision and foresight in the Society laid the foundation of the Sammelan fifty years ago which has since been rendering yeoman service to all section of the society without consideration of caste, colour or creed.

I have every hope that the Sammelan would not only widen the sphere of its activities in future, but also carry successfully the message of the great task of national integration that lies ahead of us all.

I wish the function all success.

RADHAKRISHNA R. RUIA,
Chairman,
The Millowners Association, Bombay.

★

यह हर्ष की बात है कि बम्बई का मारवाड़ी सम्मेलन अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रहा है। किसी भी संस्था के लिए यह गौरव की बात है कि वह पचास वर्ष के दीर्घ काल तक जीवित रहे और कार्य करती रहे।

आज विश्व के समस्त देशों और मानव जाति की एकता का प्रयास चल रहा है। सचमुच वह समय हमारे इस भूमंडल के लिए गौरवमय तथा कल्याण कारी समय होगा जब संसार के समस्त देश एकसूत्र में बँधकर सारी मानव जाति एक हो जाय। हमारा देश तो भिन्न भिन्न जातिओं और समुदायोंवाला देश है। जातीयता, प्रान्तीयता आदि विध्वंसकारी तत्वों से हमारे देश को जो हानि पहुँच रही है वह किसी से छिपी नहीं है। ऐसे देश में इस प्रकार की संस्थाओं के विरुद्ध भी मत है। यदि सच्चे रूप में प्रान्तीयता और जातीयता का अन्त होकर सच्ची भारतीयता आ सके, और हम सब भारतीय हैं यह भावना हमारी समस्त जनता में आ सके, तो इससे अधिक अच्छी बात संभव नहीं है। परन्तु जब तक यह नहीं हो जाता तब तक इस आदर्श की ओर अपनी जाति और समुदाय को ले जाने का कार्य भी इस प्रकार की संस्था कर सकती है। मारवाड़ी समाज की सामाजिक संस्थायें कभी भी राष्ट्र विरोधिनी नहीं रही। इन सामाजिक संस्थाओं ने विशेष कर गांधी युग में अपने अपने समाज को राष्ट्रीयता की ओर अग्रसर किया है। साथ ही समाज सुधार का भी बहुत बड़ा कार्य किया है।

विश्व के समस्त देशों और समाजों की एकता तथा भारत की *एकता का प्रयत्न करते हुए मारवाड़ी सम्मेलन समाज* सुधार के कार्य में भी अग्रसर रहे यही मेरी कामना है।

गोविन्ददास

आज संस्था की सर्वांगीण उन्नति हो रही है और अधिकांश कार्य का संचालन महिलाएं स्वयं करने लगी है, यह देखकर हर्ष होना स्वाभाविक है। आप के प्रयत्नों से प्रत्यक्ष सेवा भी मुझसे कम हो सकी है, फिर भी इस संस्था के प्रति सब दृष्टि से मैं घनिष्ट आत्मीयता सदा महसूस करती रही हूं।

जानकी देवी बजाज

★

मारवाड़ी सम्मेलन (बम्बई) के कार्य का छपा हुआ वृत्तान्त और दूसरा टाईप किया हुआ विवरण मैंने देखा। मेरी राय में अच्छा काम है सम्मेलन का। ऐसी समाजसेवा की संस्थाओं में राजनीति का प्रवेश न होने दिया जाए तो बहुत सुन्दर काम हो सकता है।

सम्मेलन की ओर से जो नये कार्यक्रम सोचे जा रहे हैं उनमें होनहार विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति आदि की सहायता देने के लिए शिक्षा कोष की स्थापना का भी एक कार्यक्रम हो सकता है। बिहार और उड़ीसा आदि की ओर मैंने देखा कि झरिया निवासी श्री अर्जुनदासजी आदि बहुत अच्छा काम कर रहे हैं इस दिशा में।

हीरालाल शास्त्री

राष्ट्र प्रेम की भावना तथा राष्ट्रीय एकता को लेकर काफी अरसे से वाद-विवाद चला आ रहा है। इसका ठीक से स्पष्टीकरण नहीं किया जायगा तो राष्ट्रप्रेम की भावना को समझना तथा परखना और भी कठिन हो जायगा।

राष्ट्र प्रेम के बहाने कुछ लोगों को यह सुनहरा अवसर हाथ लग गया है कि वे छोटे दायरे में बात करने वालों को संकीर्ण विचारों का बतलाते हैं और कहते हैं कि उनके हृदय प्रांतीय तथा जातीय भावनाओं से घिरे हुए हैं। अपना देश प्रांतीय, साम्प्रदायिक तथा जातीय मनोवृत्तियों की जहरीली निगाहों से बचा हुआ नहीं है। यह बात सूरज के प्रकाश की तरह साफ है कि इन कमजोर मनोवृत्तियों ने देश की ताकत को काफी घटाया है।

राष्ट्र प्रेम की भावना तो एक सामाजिक शिक्षण का ऊँचा दृष्टिकोण है। मनुष्य को लेकर समाज और समाज को लेकर देश बनता है अतः इस सामाजिक शिक्षा की सच्चाई मनुष्य के दैनिक कार्यों से जानी जाती है। यदि इस सबल दृष्टिकोण की शिक्षा से मनुष्य में राष्ट्र प्रेम की भावना का उदय नहीं हुआ तो केवल राष्ट्रप्रेम की बात से कभी भी शक्ति तथा क्षमता पैदा नहीं हो सकती।

राष्ट्र प्रेम व्यक्ति तथा समाज की छोटी से छोटी क्रियाओं द्वारा महक उठता है। यदि कोई व्यक्ति अपने शरीर को पुष्ट बनाने की कोशिश करता है तो उसकी शारीरिक पुष्टि में भी राष्ट्र की पुष्टि समाई हुई है। लेकिन यदि वही व्यक्ति अपने शारीरिक बल का किसी कमजोर व्यक्ति पर दुरुपयोग करता है तो वह समाज को नीचे की ओर ढकेलने का प्रयत्न करता है।

एक किसान अपने कठोर परिश्रम से अच्छी फसल तैयार करता है। उसकी यह मेहनत कोई शुद्ध क्रिया नहीं बल्कि समाज सेवा है। और यदि वह उसकी उपज का अनावश्यक संचय करके रखता है तो देश के विकास में अवरोध करता है।

किसी भी राष्ट्र में बसने वाले देश वासियों का कार्य क्षेत्र तो निश्चित रूप से मर्यादित है। फिर भी मनुष्य किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो अपनी ईमानदारी व सच्चाई से वह अज्ञात रूप से समाज तथा देश की सेवा कर सकता है।

राष्ट्र प्रेम की भावना आकाश पुष्पों से नहीं मिलती। वह हमारे हृदय में पैदा की जा सकती है। राष्ट्र प्रेम की सार्थकता केवल इसी बात में है कि हमारे दिलों में विश्वास, प्रेम और नेक काम करने की सच्ची लगन हो। हर व्यक्ति प्रेम व लगन से अपना काम करे यही सच्चा राष्ट्रप्रेम है। यदि कोई व्यापारी सुरक्षा कोष में एक बड़ी धनराशि देकर भी अपने दैनिक व्यापार में अनियमितता करता है तो उसका वह कार्य देश प्रेम से नहीं बल्कि नाम कमाने के ध्येय से हुआ है। इसी तरह एक छोटा कर्मचारी हर महीने नियम से सुरक्षा-कोष में धन देने के साथ-साथ अपने रोज के कामों में ढिलाई दिखाता है और रिश्वतखोरी करता है तो उसके इस राष्ट्र-प्रेम में आवश्यक सुधार की जरूरत है।

जैसा कि ऊपर बतलाया है कि व्यक्ति को लेकर समाज और समाज को लेकर देश बनता है अतः देश की उन्नति की नींव उसके निवासियों में है। उनके दैनिक कार्यों की मर्यादाओं से ही देश का कोना कोना सुशोभित होता है तथा समाज व देश उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

हृदय की विशालता के आधार पर यदि प्रांतीय भाषा, प्रांतीय साहित्य व प्रांतीय संस्कृति को अपनी मर्यादित सीमाओं के अंदर मस्तक ऊँचा करने दिया जाय तो इस स्वाभाविक मनोकामना को संकीर्ण मनोवृत्ति कह कर टाला नहीं जा सकता बल्कि सही अर्थों में वही सच्ची देश भक्ति है।

हमारे राष्ट्र के सभी प्रांतों की संपत्ति को अधिक से अधिक संपन्न बनाने के लिये उचित सामाजिक तथा राष्ट्रीय आधार मिले तभी हमें राष्ट्रीय अखंडता तथा एकता की चरम सिद्धि प्राप्त होगी। देश के सभी प्रांतों की सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा मानसिक उन्नति हो तब ही राष्ट्रीय एकता का वरदान प्राप्त हो सकेगा। अपने देश की हर जाति, हर क्षेत्र व प्रांत को अपने आध्यात्मिक, साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक सद्‌गुणों को अधिक से अधिक उभारने का जन्म जात अधिकार है। आवश्यकता है मनोवृत्ति तथा दृष्टिकोण बदलने की तथा इसके लिये उचित शिक्षा की।

हर व्यक्ति को अपने २ कार्य क्षेत्र में अपनी संकीर्ण तथा बुरी भावनाओं पर अंकुश रखकर काम करना चाहिये ताकि उसके मंगल मय कल्याण के साथ जिस समाज तथा देश में वह है उनका भी कल्याण परोक्ष रूप से होता रहे।

प्रवासी राजस्थानियों द्वारा आयोजित अपने जातीय सम्मेलनों को राष्ट्र भावना के दृष्टिकोण से ही अपने कार्य करने चाहियें। मार्च में होनेवाले मारवाड़ी सम्मेलन के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव को पूर्ण गौरव तथा शान के साथ मनाया जाय, पूरे विश्वास के साथ मनाया जाय यही मेरी मंगल कामना है। सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं तथा प्रवासी लाडलों को मेरी शुभ कामना प्रदान है।

सफलता, प्रेम और यश कार्य के प्रति निस्वार्थ भावना तथा अटूट विश्वास में समाये हुए हैं।

अपने अब तक के जीवन के अनुभवों से मुझे केवल यही "अमृत" प्राप्त हुआ है और इस "अमृत" को मैं अपने राजस्थानी समाज को उपहार रूप में देना चाहती हूँ।

मुझे प्रसन्नता है यह बताने में कि मारवाड़ी सम्मेलन केवल राजस्थान को ही नहीं पर समय आने पर देश की सेवाएं करने को भी तत्पर रहा है। मैं मारवाड़ी सम्मेलन के लिये उज्ज्वल भविष्य देखती हूँ और उसकी हृदय से कामना करती हूँ।

सुव्रता देवी रुइया

मुझे यह जानकर संतोष हुआ कि आपका सुन्दर और उपयोगी कार्य सफलता पूर्वक हो रहा है, और आप अपनी सुवर्ण जयन्ती मना रहे हैं। इस सुन्दर अवसर पर मैं अपनी बधाई देता हूँ। मेरी यही शुभ कामना है कि सब कृत्य सानन्द और सफलतापूर्वक सम्पन्न हो और आप सब सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहें।

श्री प्रकाश

★

Undoubtedly Marwari Sammelan has rendered signal service in various fields of Bombay's social, educational and cultural life. It is one of the major institutions which have, in an abundant measure, helped to raise the status of Bombay as a most advanced and enlightened city in the country. Bombay's history would be incomplete without a rich reference to institutions like Marwari Sammelan.

The fact that Marwari Sammlean has completed fifty years of its very active existence is a matter of pride for all of us. Its Golden Jubilee is an occasion for rejoicing for all sections in the city.

I wish the celebrations all success.

BHAWANJI A. KHIMJI
President,
Bombay Pradesh Congress Committee.

बम्बई के मारवाड़ी सम्मेलन ने सामाजिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक सेवाएं करते हुये ५० वर्ष पूरे किये हैं और मार्च १९६४ में उसका स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया जायेगा।

मैंने सम्मेलन द्वारा किये गये अनेक विविध कार्यों का संक्षिप्त विवरण देखा है। लोक सेवा जिस भव्य भावना के साथ उसने की है वह निस्संदेह उल्लेखनीय है और अभिनन्दनीय है। सम्मेलन ने अपनी प्रवृत्तियां उदारतापूर्वक आज तक चलाई है। दुनिया इन पिछले वर्षों में बड़े वेग से आगे बढ़ रही है और उसका रूपान्तर होता जा रहा है। विज्ञान दिन प्रतिदिन उसके विस्तार और सीमाओं को कम करता जा रहा है। इस तथ्य को सामने रखकर, मेरा विश्वास है, सम्मेलन की सेवाएं और भी अधिक उदारतापूर्वक और निःसीमता की ओर प्रगति करेंगी, और वह दिन जल्दी ही सम्मेलन के सम्मुख आ जायेगा जब वह अपने साथ जुड़े हुए मारवाड़ी इस शब्द की आवश्यकता अनुभव नहीं करेगा।

वियोगी हरि

★

मुझे प्रसन्नता है कि मारवाड़ी समाज बम्बई में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मना रहा है। मैं आशा करता हूं कि मारवाड़ी सम्मेलन मारवाड़ी समाज को इस परिवर्तन शील युग में नया दृष्टिकोण देने में सफल होगा। आधुनिक जमाने में सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि जो भारतीय संस्कृति के अच्छे मूल्य है उनको हम कायम रखें और उसके साथ साथ नए मूल्यों को अपने जीवन में स्वीकार करें।

आपके सम्मेलन की मैं सफलता चाहता हूं।

कालूलाल श्रीमाली

मारवाड़ी सम्मेलन की स्वर्ण जयन्ती के आयोजन के विषय में गत बार बम्बई आया तब आपसे तथा अन्य मित्रों से चर्चा हुई थी। इस आयोजन के संबंध में मेरे कुछ विचार मैंने आपकी सेवा में उपस्थित किये थे। दिसम्बर में फिर बम्बई आऊँगा तब विस्तृत चर्चा की जावेगी यह मैंने कहा था पर आ न सका। आपने इस आयोजन को लेकर सम्मेलन द्वारा संचालित कार्यों की सूचना भेजी अत्यन्त प्रसन्नताहुई। सम्मेलन की ओर से काफी सराहनीय कार्य हो रहे हैं इस दृष्टि से सम्मेलन का कार्य आवश्यक और उपयोगी है यह मान्यता होना स्वाभाविक है। भविष्य के कार्य के विषय में आपने की हुई सूचना विदित हुई। स्वर्ण जयन्ती के समय कोई विशाल और प्रभावशाली योजना का आयोजन किया जाय जिसके निर्माण से स्वर्ण जयन्ती की स्मृति बनी रहे। इस दृष्टि से अवश्य विचार करें। सामान्य कार्य की दृष्टि से समाज में नयी चेतना और नयी विचारधारा का प्रादुर्भाव हो इस प्रकार आयोजन करने के विषय में आपने सोचा ही होगा मेरी राय है कि इस अवसर पर अखिल भारतीय मारवाड़ी कार्यकर्त्ता सम्मेलन आयोजित किया जाय और सारे देश के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को अच्छी संख्या में निमंत्रित किया जाय इस प्रकार का सम्मेलन अत्यन्त उपयोगी होगा यह मेरा विश्वास है।

मार्च में स्वर्ण जयन्ती मनाने की योजना है मेरे आने के विषय में आपने लिखा है मेरी भी इच्छा है कि इस अवसर पर यदि उपस्थित हो सकूं तो अवश्य होऊँ।

ब्रिजलाल बियाणी

*

मारवाड़ी सम्मेलन का स्वर्ण जयंती महोत्सव आप मना रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। स्वर्ण जयंती के अवसर पर एक विशाल स्मृति ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। सो अच्छी बात है। आपने मुझे उसमें कुछ लिखने के लिए अनुरोध किया, सो आपकी कृपा है। परन्तु शरीर की शिथिलता आदि कारणों से मैं कुछ लिख सकूंगा ऐसा सम्भव प्रायः नहीं है। सम्मेलन से जब तक मैं बम्बई था मेरा बराबर सम्बन्ध रहा है। इस स्वर्ण जयंती की मैं हृदय से सफलता चाहता हूँ। जिन लोगों ने सम्मेलन के द्वारा समाज की बहुमूल्य सेवा की है और अब तक कर रहे हैं उन सबको मेरे नमस्कार पूर्वक हार्दिक बधाई।

हनुमानप्रसाद पोद्दार
सम्पादक "कल्याण"

मारवाड़ी सम्मेलन की स्वर्ण जयंती के शुभ प्रसंग पर मैं अपनी श्रद्धायुक्त अनुभूतियां समाज के आदि आदर्श व्यक्तियों को समर्पित करते हुये सम्मेलन के माध्यम से जनसेवा के लिए तत्पर सहकारी कार्यकर्त्ताओं एवम् सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें प्रस्तुत करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूं जिनके निरंतर सहयोग से अनेक सफलताओं को प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

हमें अपने अतीत पर जितना गर्व है उससे कहीं अधिक उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा हमारे हृदय में हिलोरे भर रही हैं। हमने अब तक जिन समाजोपयोगी रचनात्मक कार्यों की पूर्ति का बीड़ा उठाया वे महत्वाकांक्षी भावनाओं के अनुरूप संपन्न हुये हैं तथा भविष्य में भी जिन स्वप्नों की साकारता हमें अभीष्ट है उसके लिये हम अहर्निश प्रयत्नशील रहने को पूर्ण विश्वास के साथ कृतसंकल्प हैं।

सम्मेलन की सेवाकाल के पचास वर्षों में अनेक ऐसे प्रसंगों की गाथायें निहित हैं जिनमें समाज को अग्रसर करने की अटूट लगन, अदम्य उत्साह एवम् असीम कार्यक्षमता के दर्शन हमें समाज के कर्णधारों की जीवनक्रियाओं में हुये हैं और विरासत के रूप में उसको पाने के वास्तविक अधिकारी अपने क्रियाकलापों से हम बन सकें तो वह बहुत बड़ी सिद्धि होगी।

सम्मेलन के पचास वर्षीय सेवाकाल की सफल सम्पन्नता पर मैं जगन्नियंता परमात्मा की सद्कृपा के प्रति पूर्ण निष्ठा प्रकट करते हुये आशा रखता हूं कि भविष्य में समाज के लाभार्थ सम्मेलन और अधिक सक्रिय रहेगा तथा सभी वर्गों का स्नेह यथावत् प्राप्त कर अपनी प्रवृत्तियों की समाजोपयोगिता को सिद्ध करने में सफल होगा।

पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला
अध्यक्ष
मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई

बम्बई में जन विकास

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।।

— भर्तृहरि

बुद्धि की जड़ता दूर करती है, वाणी में सत्य का सञ्चार करती है, सन्मान बढ़ाती है, पापों को हरती है, चित्त को प्रसन्न करती है, चारों ओर कीर्ति फैलाती है, मनुष्यों के लिये "सत्संगति" क्या क्या नहीं करती ? अर्थात् सब प्रकार से हित साधन करने वाली है ।

महाराष्ट्र का गौरवशाली स्वरूप ईस्वी सन् २५० में अशोक महान द्वारा प्रस्थापित चार चट्टान आलेखों में उल्लिखित तथ्यों से स्पष्ट होता है । दंडक वनवासी राष्ट्रीकों के मध्य बौद्ध धर्म प्रचारक दलों का आगमन उस काल में हुआ था । इन्हीं स्वतंत्रताप्रिय गर्वीले राष्ट्रीकों ने स्वयम् को महाराष्ट्रिक एवम् इस प्रदेश को महाराष्ट्र के नाम से अंकित किया हो इस संभावना की पुष्टि श्री रानाडे लिखित 'मराठा शक्ति का उदय" ग्रंथ के अंतर्गत हुई है । दमन से कारवार तक समुद्रतटीय पट्टी के अतिरिक्त नागपुर तक त्रिभुजाकार विस्तृत प्रदेश का प्रमुख अंग वह कोंकण प्रदेश है, जो सह्याद्रि पर्वतमाला व सागर के मध्य अवस्थित है । माल व देश उन पुरातन नामों से संबोधित भूभागों को माना गया है जो इससे पूर्वोत्तर खंड में अग्रसर होने से प्रकट होते हैं।

इसी प्रकार बंबई के वर्तमान द्वीप—पुंज को पौराणिक युग में "अपरान्तक" प्रदेश से नामांकित किया गया था किंतु इसके स्वतंत्र राजनैतिक अस्तित्व का विश्वासोत्पादक प्रमाण प्राप्त नहीं है। सम्राट अशोक के गिरनार व अफगानिस्थान स्थित शाहबाजगढ़ी वाले स्तम्भों में इसकी चर्चा हुई है तथा समीपवर्ती सोपार, कल्याण तथा सिम्मुला आदि द्वीपों से सारे विश्व में व्यवसाय करने को जाना व आना निरंतर बना रहा है । डा० भटारकार के मतानुसार ईस्वी सन् १५० में यहां शतवाहन का दौर दौरा था । थाना के प्राचीन प्रलेखों के आधार पर इस तथ्य को भी मान्यता दी जा सकती है कि पार्थिव सम्राटों के समय सुदूर देशों से यहां के लोग व्यवसायिक संबंध स्थापित रखे हुये थे । इन तथ्यों के आधार पर इस द्वीप पुंज के अस्तित्व को अंगीकृत करने में कोई व्यवधान नहीं है किंतु काल व स्वरूप निर्धारण तो फिर भी कठिन ही है । इसके साथ यह भी सिद्ध है कि, चाहे यहां आगमन करने अथवा मिश्र, मलाया व चीन की यात्रा को निकले यूनानी, मिश्री, अरब व इरानी सभी ने यहां अल्पकालीन विश्राम एवम् आश्रय भले ही ले लिया हो पर उन्होंने इस स्थल पर जमकर शासन व्यवस्था के हेतु उन्मुख होना कभी नहीं चाहा ।

आज बंबई महाराष्ट्र के मस्तक का मुकुट है किंतु इसे आवास-योग्य बस्ती का स्वरूप किस प्रकार प्राप्त हुआ इसका ऐतिहासिक विवेचन पूर्णतः सम्भव नहीं है क्यों कि भारतीय इतिहास की प्राचीनतम साम-

प्रियो की उपलब्धि के समस्त मार्ग विदेशी आक्रान्ताओ द्वारा बन्द कर दिये गये थे। भारत के भूभाग से जिन लोगों का प्रथम प्रवेश यहा माना जा रहा है वे अपने आप को कुलिस अथवा कोली के नाम से सम्बोधित करते थे। पुरातत्ववेत्ताओके मतानुसार यह शब्द द्रविड समुदाय की अनार्य भाषाओके अन्तर्गत ही आते हैं। इनकी भाषा, भेष व भाव सभी मे अनार्य सभ्यता की झलक प्रकट होती थी। कोकण प्रदेश के शासन सूत्र से आबद्ध होने के कारण ही वहा होनेवाले शासकीय परिवर्तनों का प्रभाव इन पर भी होना सर्वथा स्वाभाविक था। मौर्य शासन के सभावित प्रभाव ने तत्कालीन कोली परिवार को अपने साथ "मोरे" शब्द सयुक्त करने को प्रोत्साहित किया होगा तो चालुक्य शासकों के अंतर्गत "चोलके" शब्द का सयोग अभीष्ट हुआ होगा किंतु चाहे जो हो यह लोग आज भी अपना अस्तित्व बबई में अक्षुण्य बनाये हुये हैं।

द्वीप की मलाबार पहाडी पर स्थित वालकेश्वर का प्राचीन शिव-मंदिर इस समय नही है किंतु सन् ९९७ से १२९२ के मध्यकालीन समय में निरतर सिलहरा राजवश का भक्तजनों के साथ दर्शनार्थ आगमन बना रहना इसका कोकण प्रदेश से सबधित होने के तथ्य की पुष्टि का आधार है। समय के साथ व कालचक्र के थपेडो से ध्वस्त वह मदिर आज नही रहा किंतु इस ऐतिहासिक सत्य का प्रतिपादन अनेक विद्वानों द्वारा किया गया है।

कोकण प्रदेश से अनार्य शासन अदृश्य होने के साथ ही इस द्वीप पर भी आर्य सभ्यता का विकास प्रारभ हुआ। देवगिरी शासको ने आर्यशासन की नीव यहा डाली तथा इतिहास प्रसिद्ध देवगिरी नरेश रामदेव का अच्युत नाम का एक प्रधान नायक सन् १२७२ में षष्टी द्वीप पर जो आज सालसेट के नाम से ज्ञात है शासन व्यवस्था संभालता था। यवन शासक अल्लाऊद्दीन खिलजी द्वारा देवगिरी राज्य के पराभूत होने की स्थिति में नरेश के द्वितीय पुत्र भीमसेन भारद्वाजगोत्री राजगुरु पुरुषोत्तमपंत कवले के साथ कोंकण विजय यात्रा के मध्य में माहिम स्थल पर पहुचे तथा वहाँ की नैसर्गिक छटा से मुग्ध होकर उन्होंने अपने व सामन्तो के योग्य राजमहल व आवास निर्माण करवायें, राजगुरु को मलाड प्रदेश दान कर दिया एवम् उस द्वीप पुज को "महिकावती" (माहिम) नाम प्रदान किया। राजगुरु के वंशजो के पास अब भी प्राप्त दानपत्र का उल्लेख श्री वैद्य के ऐतिहासिक ग्रथ की सलग्न सूचि के अतर्गत निम्न प्रकार आता है "शाके १२२० के माघ मास में महाराजाधिराज बिबशाह ने गोविंद मितकरी की चगूनाबाई से मालाड प्रात को सरदेसाई और सरदेशपाडे का वतन २४ हजार रायल्स दे मोल लिया और एक वर्ष के बाद राजगुरु पुरुषोत्तम पत कवले को दान कर दिया।

सन् १३०३ में महाराज भीमदेव न रहे तथा सन् १३१८ में दिल्ली शासक मुबारक शाह के महिकावती पर हुये आक्रमण से बचने पर भी सन् १३४८ में इस द्वीपपुज से हिन्दू शासन का सूर्य अस्त हो गया तथा उसके साथ ही थोडे समय के उपरात गुजरात के मुस्लिम शासको ने अपना आधिपत्य इस द्वीप पर जमा लेने में सफलता प्राप्त की। इस प्रकार इन शताब्दियो में द्वीप ने अनेक सभ्यताओ एवम् सस्कृतियो का प्रवाह होते अनुभव कर लिया तथा इन सभी के सामयिक सुविचारो से यहा की सभ्यता का विकास होता गया। गुजरात के मुस्लिम शासक समय असमय राजपूतो के सपर्क में सग्राम अथवा सहकार के उद्देश्य से आते रहते थे। इस उल्लिखित काल के आगे की दो शताब्दिया ऐसीही प्रकारान्तर स्थिति की निर्माता रही है जिसमें राजपूती परिवारो के मारवाड़ मेवाड आदि प्रादेशिक शासन स्थलो का सीधा संबंध इनके माध्यम से इस द्वीप पुज के साथ सभव हो सका तथा शौर्य के प्रतीक मेवाडी व मारवाडी व मेरवाड़ी शनैः शनैः शोणित स्नान से संन्यास व शांति के शोध में ऐसे स्थल पर अन्य साधनो की समृद्धि की ओर अग्रसर हुये। यही कारण है सन् १५३४ की बसई सधि के अतर्गत यह द्वीप पुज जब पुर्तगालियों के अधीनस्थ हुआ तो मारवाडी भण्डाररक्षक का उल्लेख मलाबारी लिखित बबई निर्माण की ओर के अंतर्गत आना सभावित हो सका हो किंतु मारवाड, गुजरात व कोकण प्रदेश के इस द्वीपपुज के मध्य आदान-प्रदान की यह कडी तो इससे पूर्व भी शृखलित थी यद्यपि ऐतिहासिक आलेख हस्तगत नही है। उस समय मात्र इग्यारह पुर्तगाली परिवार व उनकी सुरक्षा में सत्तर भारतीय पुलिसजनो का दल इसकी व्यवस्था के लिये पर्याप्त समझा गया था।

मराठा उत्कर्ष :

मराठा राष्ट्र के आदि उन्नायक छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने कुटुब को उदयपुर परिवार की शाखा के रूप में मान्यता दिलवाई। उदयपुर परिवार के ही एक पूर्वज लक्ष्मणसिंह के पुत्र सज्जन सिंह से इस महान भोसले परिवार का सबध रहा है यह एक तथ्य है तथा उदयपुर के राणा से मतभेद हो जाने पर देवराजजी नाम से एक परिवार दक्षिण को प्रवास कर गया और उदयपुर के भोसावत परिवार के अंगस्वरूप होने से उन्होंने अपने उतराधिकारियो के नाम को भोसले की संज्ञा प्रदान की। शिवदिग्विजय बखर के अंतर्गत देवराज जी को काकाजी नाम से सबोधित किया गया है। द्वितीय धारणा के अनुसार खेलकरण जी (खेलोजी) और मालकरणजी (मालोजी) यह दो बधु अहमदनगर के शासक को अपनी स्वतंत्र सेवायें अर्पित करने को उदयपुर से आये और यही सेत रहे थे। मालोजी के पुत्र बाबाजी के परिवार की द्वितीय पीढी में शाहजी का जन्म हुआ जो अपने स्वयम् के अद्वितीय शौर्य के कारण तथा छत्रपति शिवा के पितृपद की महत्ता से मराठा राज्य की स्थापना के आदि पुरुष के रूप में मान्य किये गये।

मराठा राज्य की स्थापना के ऐतिहासिक उतराव व चढाव व गतिविधियो के विस्तार में न जाते हुये भी यह सब विवरण आलेख में प्रस्तुत करना इस दृष्टि से अनिवार्य लगा है कि महाराष्ट्र एवम् राजस्थान के मेवाड़, मारवाड, मेरवाड़ का रक्त संबंध स्थायी रूप से रहा है और इसे ऐतिहासिक मान्यता प्राप्त हुई है।

देवगिरी के यादव राजाओं का पुरातन काल से संबध व्यवहार राजस्थान की इन देशी रियासतो के सुप्रसिद्ध हिंदू परिवारो से होता रहा है और शाहजी के पितृश्री मालोजी की हार्दिक मनोकामना भी देवगिरी शासको के वंशज लाखोजी जाधवराव से अपने पुत्र के हेतु कन्या जीजाबाई का संबध प्राप्त करने की ओर उन्मुख हुई जिसमें प्रारंभिक कठिनाइयाँ अवश्य आई किंतु अन्ततः यह सयोग सफल हुआ और राष्ट्र के सौभाग्य सूर्य छत्रपति शिवा का इनकी कोख से प्रादुर्भाव हुआ। इससे स्पष्ट है कि महाराष्ट्र व राजस्थान के आदिकालीन परिवारों की रक्त धमनियो में एक ही शोणित की शक्ति का सचय है एक सदृश धारा का

प्रवाह है और स्नेहिल निर्झर में निरंतर गति रहे इस ओर लगातार प्रसार के स्फूर्त प्रयत्न महाराष्ट्र और राजस्थानी परिवार आपसी संपर्क के द्वारा करते रहे हैं। उन प्रयत्नों में पुरातन व अर्वाचीन काल के सभी बंधनों पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो सर्वथा आशाजनक स्थिति का बोध होता है तथा ऐसे ही एक उदाहरण का और उल्लेख यहा कर देना उचित रहेगा।

छत्रपति शिवाजी के राज्यारोहण अवसर पर उपस्थित इस प्रसंग से संबंधित तथ्य को ध्यानगत करना आवश्यक है कि शुद्ध राजसी रक्त की परम्परा मेवाड़ के सिसोदिया कुल में परिलक्षित हुई। निजामशाही द्वारा अहमदनगर शासन की ओर से राजा की पदवी से विभूषित भोसले परिवार के लिये इसका उपयोग लाभप्रद नही हो सकता था क्योंकि उक्त शासन ही लुप्त हो चुका था एवम् इसी प्रकार मुगल सिंहासन के विश्वासघात का प्रतिकार करने के उद्देश्य से शिवाजी महाराज ने दिल्लीपति द्वारा प्रदत्त सभी सम्मान भी समाप्त कर दिये थे अतः यह निर्णय करना आवश्यक प्रतीत हुआ कि राज्यारोहण के अधिकार प्राप्त होने का सूत्र शोध वहा से किया जाय। उच्च भावनाओ से युक्त दक्षिण के सरदारों ने समरागण में मुक्त सहयोग शिवा को प्रदान करने में कभी सकोच नही किया पर राजभोजों के यदा कदा अवसरो पर मोहिते, निम्बालकर, सावंत घोरपडे वीरो को प्रदत्त स्थान के समकक्ष ही अपना स्थल सुरक्षित रखने का प्रयास शिवाजी की ओर से किया जाता रहा।

अपने निजी सचिव के परामर्श एवम् मातृश्री जीजाबाई, गुरु समर्थ रामदास एवम् आराध्य देवी मा भवानी से निर्देश प्राप्त कर शिवाजी ने मुगल सम्राट के हाथों राज्यपद ग्रहण करने के स्थान पर काशी के उद्भट विद्वान का चयन राजमुकुट धारण करने के उद्देश्य से उचित समझा। विद्वद्वर गागाभट्ट ने अभिषेक के हेतु सहमत होने के पूर्व क्षत्रिय कुलोद्भव का प्रमाण प्राप्त कर जब पूर्णत. संतोष कर लिया कि उदयपुर राणा परिवार की शाखाओं में ही इस परिवार की प्रशाखा सलग्न है तो सर्वथा शास्त्रीय विधान से विशिष्ट समारोह के साथ यह कार्य संपादन करवाया। तत्समय भालचद्र भट्ट पुरोहित व सोमनाथ भट्ट कत्रे के सहयोग से पडितप्रवर गागाभट्ट ने शिवाजी महाराज की महत्ता को अभिनंदनीय श्रेष्ठता प्रदान करवाई वह वास्तव में सामजस्य स्थापना के अनुपम आदर्श की प्रतीक रही है।

इस घटनाक्रम से संबंधित भट्ट विद्वानों का आदि मूलस्थल विवादास्पद होते हुये भी महाराष्ट्र-गुजरात व राजपूत शासकीय इकाइयों मेवाड़, मारवाड़ व मेरवाड़ा की आपसी आवागमन गतिविधियों का केंद्रीकरण उनके पर्यटनकारी स्वरूप से सदैव भाषित हुआ है। मराठा उत्कर्ष के साथ निरंतर कोंकण प्रदेश तथा इस द्वीपपुंज का भाग्य जुडा रहा है और इस प्रकार के आदान प्रदान के माध्यम सदैव से इसे दृढ़तम करने का आधार रहे हैं।

अनेक सभ्यताओं के उत्थान पतन से प्रभावित इस द्वीपपुंज ने अपना वर्तमान नामकरण किस तथ्य के आधार पर निर्धारित किया यह विचारणीय विषय है।

नामकरण :

बंबई नाम का अधिष्ठाता कौन है यह अभी तक ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वमान्य शोध नही हो पाया है। पौराणिक युग के "अपरातक" प्रदेश को "महिकावती" नाम से प्रतिष्ठापित करने तक का उल्लेख तो स्पष्ट है। कतिपय इतिहासज्ञों का मत है कि पुर्तगाली पुराने आलेखों में इसे "बाम्बेय" नाम से संबोधित किया गया है और इसी को तदनंतर परिष्कृत स्वरूप "बंबई" प्राप्त हुआ है किंतु इसकी पुष्टि में सर्वाधिक बाधा उपस्थित होती है पुर्तगाली भाषा में "बाम्बेय" शब्द का अभाव जब कि दूसरी ओर अच्छे बंदरगाह के अर्थ हेतु प्रयुक्त दो शब्दों के मेल से जिस Buonbahia की आवृत्ति होती है उसी का उल्लेख आना उस स्थिति में अनिवार्य था अतः इस आधार पर बंबई नाम की पुष्टि सभव नही है।

मुबारकशाह की इस द्वीप पर विजय ने नाम सस्थापन का आधार समुपस्थित किया हो ऐसा लगता नही है क्योंकि उस स्थिति में निस्सन्देह मुबारकाबाद अथवा मुबारकपुर को ही महत्व दिया जाता, मुम्बई अथवा बम्बई को नही।

तृतीय सभावना जो शेष रहती है वह इस नामकरण का सबध मुबादेवी के साथ ही सलग्न करती है। धार्मिक दृष्टि को ही एक मात्र आश्रय न दिया जाय तो भी मुबा शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में मत-मतान्तरो पर आधारित एक राय को महत्व देना तो अनिवार्य था ही। मुबा नाम के व्यक्ति विशेष ने मंदिर अथवा विशिष्ट निर्माण कार्य को सपन्न करवाया हो एवम् तदनुसार इस नाम की प्रतिष्ठा हुई हो ऐसी स्थिति भी उस समय उपस्थित नही थी तथा वैसा कोई शिलालेख अथवा स्मृतिचिन्ह भी इतिहासवेत्ताओं को अब तक कही से भी हस्तगत नहीं हुआ है।

अतः इस विकल्प के अतिरिक्त और कोई आधार इस नाम के प्रतिष्ठापन का ध्यान में आना सभव नही है कि द्वीप के आदिवासियों की आराध्यदेवी महाअबा की ही शक्ति को हृदयगत रखने के उद्देश्य से तथा निरतर शब्दोच्चारण के माध्यम से भक्ति एवम् श्रद्धा की अभिव्यक्ति का साधन प्राप्ति के विचार से यह नामकरण सस्कार सपन्न किया गया हो। महाअबा, जगदंबा व अबिका नाम से सबोधित एक ही शक्ति है जो शिव प्रिया भवानी का स्वरूप है। आई शब्द मराठी में मा के अर्थ में प्रयुक्त होता है अत. उस सभावना में बहुत बल है कि मुबा+आई का मुम्बई अपभ्रंश तथा वर्तमान बम्बई नाम उस प्रारभिक उद्घोष का ही परिष्कृत रूप है जो जहा के लोग अपनी आराध्य देवी को संबोधन के हेतु उपयोग में लाया करते थे।

नाम के संबंध में ऐतिहासिक आधार की कमी रही हो अथवा अन्य कोई भी कारण उपस्थित हुआ हो किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि यह आधुनिक काल में प्रदत्त नही हुआ है और इसका सबध चिरकाल से द्वीप के साथ संलग्न रहा है और आज भी इस की मधुरता में कोई कमी नहीं आई है तथा जगज्जननी मुबा व मुम्बई (बम्बई) एकीकृत शब्दो के प्रतीक बनकर यहा के जनमानस में रमे हुये हैं।

अंग्रेजों के आधीन :

पुर्तगाल राज्य ने फ्रान्स के सहयोग से एवम् ब्रेग्राजा के ड्यूक की संरक्षता मे अपनी स्वतंत्रता पुन. प्राप्त कर उसकी सुरक्षा के हेतु इग्लंड के शाही स्टुअर्ट परिवार से वैवाहिक सबंध स्थापित किया। सन् १६६१ में चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी कैथेरिन के साथ संपन्न हुआ और पुर्तगाली शासक ने अपनी पुत्री के दहेज में टेन्जियर्स के साथ साथ भारत के पश्चिम तटीय द्वीप बम्बई भी अंग्रेजो को प्रदान किया।

पुर्तगाल सरकार के लिये यह उपहार महत्वहीन सा था क्योंकि कोकणतट के अतर्गत निम्नतटीय चट्टान समूह से वेष्ठित इस स्थल का विकास दक्षिण-पश्चिमी मानसून के तीक्ष्ण प्रवाह से व्यापारिक पोतो की सुरक्षा में कितना सहकारी सिद्ध हो सकेगा इस की कल्पना सभवत इन्हें नही थी। हा भारत में तत्कालीन पुर्तगाली प्रतिनिधि डी० ला कोस्टा ने अवश्य भविष्यवाणी के रूप मे अपने सम्राट को चेतावनी देते हुए लिखा था कि जिस दिन अग्रेजो के पाव इस द्वीप पर पडेंगे वही दिवस पुर्तगाल के भारतीय साम्राज्य को विघटन करने का प्रारंभिक चरण होगा। दाय प्रावधान की अनेक धाराओ के स्पष्टीकरण मे विलंब करने की नीति मे भी असफल होकर इस प्रतिनिधि को अंततः चार्ल्स द्वितीय के विशेष आदेशानुसार मार्च २७ सन् १६६८ के दिन बबई द्वीप को ईस्ट इंडिया कपनी के अतर्गत करने को विवश होना पड़ा।

सन् १६७४ में जब तक कि साहसी अग्रेज गेराल्ड आजियर ने कंपनी का प्रधान कार्यालय सूरत से बंबई परावर्तित किया भारतीय राजनीति में अंग्रेज अपना स्थान निर्माण करने में सलग्न हो चुके थे। सूरत में उनका समय व्यर्थ भारवाहक सूचनापत्रो व हिसाब के वही-खातो की परिधि में ही सीमित रहा था जब कि नौकानयन की दृष्टि से सर्वथा महत्वपूर्ण बदरगाह बंबई की प्राप्ति के साथ ही उन्हें एक ओर मुगल सम्राटों एवम् दूसरी ओर शिवाजी महाराज के साथ संधिगत रहते हुये विकास की ओर अग्रसर होना ही अभीष्ट हुआ। शिवाजी महाराज ने राज्यारोहण दरबार के पश्चात् अंग्रेज प्रतिनिधित्व को विचाराधीन रखने का निर्णय किया था तदनुसार तीन अग्रेजो का प्रतिनिधिमंडल रायगढ राजसभा में समुचित उपहार के साथ उपस्थित हुआ एवम् अपने बीससूत्रीय निवेदन की स्वीकृति करवाने का प्रयत्न किया जिसके अतर्गत अन्य प्रार्थनाओ के साथ साथ स्थायी उद्योगधधो को कल्याण, दाभोल, चौल ग्रामो में प्रारभ की अनुमति, आग्ल मुद्रा के अग्रेजी भू-भाग में मुक्त चलन व मात्र २॥ प्रतिशत आयात कर देकर उक्त भूभाग में मुक्त व्यापार की सुविधाओ की मागें सन्निहित थी और उदारमना शिवाजी महाराज ने इन सभी प्रार्थनाओ को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार बबई के इतिहास मे निर्माण के अध्याय का सूत्रपात हुआ जिसकी वर्तमान आवृत्ति में इन प्रारंभिक प्रयत्नो की सफलता का रहस्य अतर्हित है और जो उसके विकास की लड़ी मे सयुक्त मुक्तामणि का सरस स्वरूप प्रकट करनेवाली आधार भीत्तिका है।

द्वीप से नगर की ओर :

वृहद् बबई का वर्तमान स्वरूप जिस भव्य रचना का प्रतीक है उस के लिये अथक परिश्रम और अटूट लगन से यहा के मनस्वी नागरिकों ने क्या-क्या न किया होगा यह कल्पनातीत विषय है। द्वीप के क्रमिक विकास में अन्य साधनो के साथ ही साथ व्यवसाय के आरंभ, उत्कर्ष और विस्तार का स्थान प्रमुख है। व्यवसायी प्रतिष्ठानो ने इसे आवास के योग्य स्थल बनाने के उद्देश्य से विभिन्न टापुओं को एकीकृत स्वरूप प्रदान करने के हेतु जो भगीरथ प्रयत्न किये उन्ही मे इसका वास्तविक इतिहास मूर्तवत है।

अगाध समुद्र के गर्भस्थ भूमि को निकालने के आयोजन की सर्व प्रथम कल्पना सभवतः सिमाऊ थेलो नामक पुर्तगाली व्यवसायी ने की थी जिसे ईस्ट इडिया कपनी ने जारी रखने का स्फूर्त प्रयत्न किया। सर्व प्रथम महालक्ष्मी-वर्ली के मध्य की भूमि की रचना जल राशि निकाल कर करने का कार्यारभ हुआ तथा अन्तत द्वीप में मध्यभाग के समुद्र को पूरने के प्रयास हेतु सन् १८३६-३७ में एक सुदृढ कपनी सगठित हुई इसका उल्लेख ६ फर्वरी १८३९, के बबई टाइम्स पत्र में प्राप्त होता है। रेल्वे कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार १८४४ तक वाडी व चिंचबदर की भूमि भी जलगर्भ से निकल चुकी थी। बंबई क्वार्टरली रिव्यू नामक पत्र के अनुसार सन् १८५५ तक द्वीप का अधिकाश भाग इस दृष्टि से पूर्ण हो गया था। अमरीकी गृह युद्ध के समय बंबई में उच्चतम लाभ व पूजी के विशेष आकर्षण के फलस्वरूप गठित अनेक कपनियों के सहयोग से मोदी खाडी, एल्फिन्स्टन, मझगाव, टंक बदर व फ्रेयर रोड की पूर्वी भाग वाली तथा कोलाबा मे मलबार पहाडी तक की पश्चिमीय पार्श्व की भूमि को समुद्र के बाहर निकाल कर आवास योग्य बनाया जा सका था।

सन् १८६५ में बंबई म्युनिसिपल कार्पोरेशन का जन्म हुआ। कार्पोरेशन ने नगर के अनेक जलाशयों को समतल भूमि में परिवर्तित किया तथा ताडदेव से परेल तक के भाग की भूमि को उद्योग-कारखानो के उपयुक्त बनाया एवम् इसके स्वास्थ्य विभाग की ओर से भी ८६ एकड़ भूमि समुद्र से निकाली गई। सन् १८६७ में गठित पोर्ट ट्रस्ट के हाथो १८७९ में एलफिन्स्टन, १८८८ में अपोलो, १८९० में कोलाबा, १८९२ में कस्टम, १८९४-९५ में टँक, १९०४-०५ में मझगाव के अतिरिक्त सिवरी बंदरगाह व फ्रेयर स्टेट के निर्माण कार्य निस्सन्देह अनुकरणीय है। "बबई नगर के इतिहास का एक आर्थिक अध्याय" नामक ग्रंथ के अनुसार उपरोक्त गृह युद्ध के परिणाम स्वरूप इन विकास कार्यों में सलग्न व्यवसायिक सगठनों की सम्मिलित पूजी प्रायः ८०३४ करोड से बढ कर सन १८६४-६५ तक १७,०५६ करोड की हो गई थी। व्यवसाय की उन्नति के साथ साथ अधिकाधिक भूमि की आवश्यकता कार्पोरेशन को अनुभव होती गई। फलतः इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के अंतर्गत १९०६ में कोलाबा की ओर भूमि-प्राप्ति के प्रयत्न हुये तथा डेवलपमेंट लोन के रूप में एकत्र करोड़ों की राशि को सर चिमनलाल सीतलवाड की देख-रेख में सस्थापित बोर्ड द्वारा चौपाटी से लाइट हाऊस तक भूमि निकालने के हेतु उपयोग में लिया गया। समुद्र के मध्य सोलह फुट की दीवाल बनाने व कोलाबा से मरीन लाइन तक का रमणीय स्थल जो आज मेरिन ड्राइव के नाम से बंबई का हृदय स्थल बनी हुई है निर्माण में अरबो रुपयों की राशि व्यय होने पर ही यह बिखरे द्वीप पुजो की अस्तव्यस्त जनाकीर्ण बस्ती इतना विशाल स्वरूप व सम्यक सौंदर्य प्राप्त विश्व का प्रमुखतम नगर बन सकी है इसके एकाकी श्रेय की गर्वाधिकारी बंबई की प्रारंभिक कालीन राजनैतिक व व्यावसायिक संगठन शक्तिया ही है यह सर्वमान्य तथ्य है।

व्यवसाय की क्रमिक गति :

विदेशी व्यवसायियों ने बंबई को प्रारंभ में थाना तट का साधारण बंदर मान्य किया था। सत्रहवी शताब्दि तक भी उनकी मान्यता में कोई अंतर नही आने पाया। सन् १६७० तक यहा नारियल, तंबाकू, अफीम व शराब का ही व्यापार मुख्यतः होता था। वणिकवृत्ति अंग्रेजो के हाथ लगने ही इस नगर की सूरत को अपेक्षा अत्यधिक महत्व उन्होंने दिया व ईस्ट इंडिया कंपनी का कार्यालय सूरत से यहा परिवर्तित होने मे पूर्णतः आश्वस्त व्यापारियो में सर्व प्रथम औरंगाबाद व पूना मे आकर कुछ महाजन यहां बसे व उन्हो ने अपनी दुकानें यहा प्रारभ की। उनमें अनेक व्यवसायी पीढियाँ पूर्व मे मारवाड, गुजरात एवम् कच्छ-काठिया-वाड से आकर इन स्थलों पर अपना व्यापार-व्यवहार करने में संलग्न थे। इन प्राथमिक आगंतुकों में मारवाड़ के पाली-नागौर एवम् मेर-वाड़-मेवाड़ के पाटन-झालोर तथा बीकाण-शेखाण व्यवस्थाओ के अधीन विभिन्न स्थलों के मूलनिवासी मुख्यत. रहे है। गोढवाली नाम संयुक्त किये हुये जिस समुदाय को आज बबई की व्यवसाय शृंखला के हर अंग में समाहित पाते हैं उनकी मूलभूमि तो मारवाड ही रही है। अठारहवी शताब्दि के मध्य काल से ही इन सभी व्यवसायियों ने अन्य समुदाय के व्यापारियों की भांति अपना समुचित स्थान यहां निर्माण कर लिया था।

सन् १८१३ में इंग्लैंड की लोकसभा द्वारा स्वीकृत विधान के अनु-सार ईस्ट इंडिया कंपनी की एकतत्री व्यवसायिक स्वेच्छाचारिता का अंत हुआ तथा यहां के व्यवसाय में देशी व विदेशी व्यापारियों की स्वस्थ स्पर्धा का अध्याय प्रारंभ हुआ जिसके परिणाम स्वरूप ही चीन से मात्र अफीम के व्यवसाय को प्रमुखता प्रदान करने वाले व्यापारियो ने रूई, बीमा, बैंकिंग व यातायात व्यवसायों में अग्रसर होना शुरु किया जिसमें मारवाड़ी व्यापारियों का भी प्रमुख भाग रहा है। आपसी लेनेदेन को पटुता के साथ पटा देने की कला के फलस्वरूप ही न केवल देशी व्यापारियो को बल्कि युरोपियनों को भी मारवाड़ी व्यापारी अत्यधिक विश्वस्त मध्यस्थ प्रतीत होते थे व मारवाडियो के अनेक प्रतिष्ठान शीघ्र ही विशिष्ट व्यापारिक मंडी इन्दौर आदि की अपनी पुरातन दुकानो व कार्यालयों का स्थानान्तरण शनैः शनैः बबई में करने को तत्पर हुये।

इन मारवाड़ी व्यापारियो ने मालवा, गुजरात, व हैदराबाद के प्रदेशों में अपने व्यवसाय द्वारा जो ख्याति अर्जित की थी उससे बबई की विकसित नगरी में इन्हें अपना स्थान बनाने में अत्यन्त सहयोग प्राप्त हुआ तथा इनके अनुभवजन्य व्यवसायिक क्रिया कलापो के कारण नगर के व्यवसाय की क्रमिक विकास गति को बल प्राप्त हुआ। अफीम का व्यवसाय जिस पर इन्होने वर्चस्व स्थापित कर रखा था जब चीनी जनता के आंदोलन की लपेट में आने से क्षीण होने की आशंका समुपस्थित हुई तो तुरंत ही अपने रुई, बीमा व बैंकिंग प्रतिष्ठानो की स्थापना बंबई में करते इन्हें विलंब न लगा। हाजिर व वायदा के सौदे आयात या निर्यात की व्यवस्था और माग व पूर्ति के मध्य संतुलन का आधार रखते हुये मारवाड़ी व्यापारी ने रुई के व्यवसाय को बबई में अपनाया व आगे बढाया। इसी प्रकार बीमा व बैंकिंग के माध्यम से बंबई के आर्थिक क्षेत्र को अपने प्रभुत्व की सीमा में रखने को प्रयत्नशील रहे तथा विशिष्ट विनियोजन के आदर्श यहा के जनहित व व्यवसाय के निरंतर विकास को दृष्टिगत रखते हुये करने में बंबई का मारवाड़ी समाज सदैव अग्रणी रहा।

आवास में स्थायित्व :

उन्नीसवी शताब्दि भर बंबई के परिवर्तनकारी स्वरूप के प्रत्यक्ष दृष्टा नागरिकों ने यहा अपने अपने उपयोगी क्षेत्रो का चयन करते हुये स्थायी आवास के साधन निर्माण किये है। पारसी, गुजराती, मराठी, मद्रासी, उत्तर–दक्षिण भारतीय अन्यान्य प्रदेशो के निवासियों के साथ-ही-साथ मारवाडी भी यहा के स्थायी नागरिक के रूप में आवास की सुविधाओ का लाभ अर्जित करने की ओर उन्मुख हुये तथा अनेक बड़े बड़े मारवाड़ी परिवार तो अपनी मातृभूमि के मोह से सर्वथा सन्यास धारण कर बंबई में पीढ़ी-गत-पीढ़ी के स्थायी निवासी बनकर यहा के जनजीवन में अपना स्थान बना सके।

कलकत्ता के बड़ा बाजार स्थल की भाति कालबादेवी क्षेत्र में ही प्रमुखत. मारवाडी समाज की व्यवसायस्थली पेढिया और आवास स्थानों का बाहुल्य भी इस दिशा की ओर इंगित करता है कि नगर के इस पुरातनतम भाग में प्रवेशार्थी लोगो में मारवाड़ियो का स्थान ही महत्वपूर्ण रहा होगा। पायधुनी नामांकित स्थल तक समुद्र की लहरों के प्रवाह की गाथायें तथा अन्य सभी क्षेत्रो में समुद्रगर्भ से भूमि-प्राप्ति के विशिष्ट उद्योगो के विवरण में कही भी इस क्षेत्र को ऐसे प्रयत्नो के द्वारा आवासयोग्य बनाने के प्रयासों का वर्णन नही मिल रहा है जो इस वस्तु-स्थिति का द्योतक है कि वह यह प्राचीनतम स्थल है तथा यहा आकर बसने वाले व अपने व्यवसायों के माध्यमों का केंद्रीकरण यही पर करने-वाले का बबई में प्राथमिक प्रवेश असंदिग्ध है-निर्विवाद सत्य है। ऐति-हासिक दृष्टि से इसकी पुष्टि करने में सभवत. कुछ कठिनाइया भले ही उपस्थित हो किंतु किसी एक स्थल विशेष पर मारवाड़ी जैसे विकासशील समाज को आवास का स्थायित्व एवम् उसी क्षेत्र की प्राचीनता को मान्य बिंदु इस तथ्य का आधार अवश्य है कि मारवाडी नगर में आने वाले प्रथम व्यापारियों एवम् आवासकर्त्ताओं में सम्मिलित रहे हैं।

इसके साथ ही साथ यह तथ्य भी विचारणीय है कि अन्य समाज के लोगो ने जहा अपने लिये चयन किये हुये क्षेत्रों को ही महत्व प्रदान किया वहा मारवाडी समाज के प्रायः सभी तत्कालीन समर्थ सज्जनों ने अपने आपको कालबादेवी–भूलेश्वर के बंधनो में ही जकड़े न रहने दिया बल्कि नैसर्गिक छटाओं से युक्त उपनगरों में प्रकृति के प्रदत्त उपादानों का लाभ निरंतर प्राप्ति के ध्येय से अपने अपने आवास स्थल अत्यन्त रूचि के साथ निर्मित करवाये तथा वहां सप्ताहांत निवास का निश्चित क्रम निर्धारित किया जो उनकी एक विशिष्ट जीवन शैली का परि-चायक है। शातांक्रूज से लेकर कांदिवली तक यह आवास स्थल अपनी-अपनी सुविधाओं को ध्यानगत रखते हुये मारवाडी लोगो ने बनाये थे और कही-कही तो इनके ईर्द-गिर्द ही अनेक परिवारों ने अपने आश्रय-स्थल निर्माण कर उस क्षेत्र को विकसित करने के हेतु इनके सहयोग से अग्रसर हुये थे।

तात्पर्य यह है कि आज बबई में मारवाड़ी समाज के लोग मैरिन ड्राइव की महान् अट्टालिकाओं से लेकर मलाड-मुलुंड की सूक्ष्म इकाइयों में घर बसा के नगर में अपने लिये महत्व के स्थल निर्माण में सलग्न है।

विविध विभागीय विकास :

नगर के क्रमिक विकास में राजनीति एवम् व्यवसाय वृत्ति से संबंधित उपादानों का संक्षिप्त परिचय उस समय तक पूर्ण नहीं माना जा सकता जब तक कि औद्योगिक उत्थान की प्रतीक मिलो व अन्य निर्माण साधनों की विस्तार गाथा समुपस्थित न हो। उद्योग-धंधों के प्रति आकर्षण का प्रधानत्व यद्यपि बबई के पारसी समाज को प्रारंभ में प्राप्त हुआ किंतु वे ही सभी उद्योगों के सूत्रधार नगर में रहे हो ऐसी बात नही है। सन् १८७२ में सर्वप्रथम सूती मिल की कल्पना के जनक ने नगर की सूती वस्त्रोद्योग में लंकाशायर-मेंचेस्टर से टक्कर की बात संभवत ध्यान में भी नही रखी होगी। देश भर में प्रमुखतम उद्योगों की संस्थापना का जो क्रम प्रारंभ हुआ उसमे बबई की औद्योगिक क्रांति का बहुत महत्वपूर्ण योग रहा है। सूती रेशमी वस्त्रो के निर्माता उद्योगों की तो यह नगरी आश्रयस्थली बनी ही अपितु अनेक प्रकार के अन्य उद्योग भी यहां विकसित हुये जिनमें निर्मित वस्तुओं का निर्यात निरतर उन्नत होता गया तथा देश की आर्थिक प्रगति में सहकारी होने के साथ-साथ व्यवसायी वर्ग की संपन्नता में भी सहयोगी हुआ।

लोहे, कागज, सिमेंट, व साबुन आदि सभी प्रकार के उद्योगो को यहां के नागरिकों ने अपने हाथो विकसित किया। प्रकाशन प्रतिष्ठानो की संस्थापना मूलत. भारतीय संस्कृति के आदि अंग वैदिक साहित्य की सुरक्षा के अंतर्हित उद्देश्य को हृदयस्थ रखने के साथ ही समाज के प्रबुद्ध शैक्षणिक विकास का आधार बनी तो बडी बडी ऐसी कपनियों का निर्माण भी हुआ जिन्होंने भवन जल बंध व राज पथ के सर्व हितकारी स्वरूपो की साकारता से अपनी समर्थता का प्रमाण प्रस्तुत किया। काष्ट उद्योग की विशालता तो बंबई नगर में अपनी पराकाष्ठा तक पहुंची इसका प्रत्यक्ष दर्शन तत्कालीन सभी रचनाओं के द्वारा आज भी अभीप्ट है।

इस प्रकार सभी दिशाओ में उत्थान पथ के राही इस नगर के सौम्य सुखद स्वरूप में जिन साहित्यिक सास्कृतिक एवम् सामाजिक गतिविधियों का सूत्रपात हुआ वे भी अपना अलग महत्व रखती हैं। उनके फलस्वरूप ही साहित्य के विविध अंगो का पोषण, रचनाओं का प्रकाशन प्रचार-प्रसार एवम् साहित्यकारों का समुचित स्थान समाज में सुरक्षित रहा। सास्कृतिक गतिविधियो ने संगीत व ललित कलाओं को जीवत स्वरूप प्रदान करने तथा नगर के जनमानस में इनके माध्यम से सुकोमल भावो का सृजन सदैव संचालित रखने में सफलता प्राप्त की। सामाजिक क्षेत्र में ऐसे अनुपम कार्यों का श्री गणेश किया गया जिनसे सर्वतोमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सर्वसमुदाय नगर में मारवाड़ी-समाज का महत्व :

बबई नगर के सर्व-समाज स्वरूप में मारवाडियो ने व्यवसाय की दिशा में विशेष प्रयास अवश्य किये है किंतु इस तथ्य की ओर अभी तक संभवतः किसी का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है कि देश की औद्योगिक व्यवस्था के सुचारु संचालन में न केवल अन्य स्थानों पर बल्कि विशेषतः बबई में तो मारवाडी समाज ने महत्वपूर्ण भाग लिया है।" फूट डालो और राज करो" के गर्हित सिद्धात के प्रतिपादक विदेशी शासकों ने कभी यह विश्वास भी नहीं किया था कि देश के अस्वाभाविक विभाजन की मार से आहत राष्ट्र को राजनैतिक सुस्थिरता व औद्योगिक सफलता प्राप्त हो सकेगी किंतु दोनो दिशाओं में तत्परता पूर्वक उत्तरदायित्व वहन कर सामान्य स्थिति बनाये रखने में सभी वर्गों के साथ मारवाड़ी समाज ने भी अपना कर्तव्य निर्वाह किया है।

स्वतंत्रता के पूर्व तथा पश्चात् बडे-बडे विदेशी प्रतिष्ठानों का अधिग्रहण साहसपूर्वक मारवाडी समाज ने सारे देश मे तथा विशेषतः बबई में किया तथा उन्हें उतनी ही सूझ बूझ व उच्च स्तरीय पद्धति से संचालित रखा और शनैः शनैः विकसित ही किया है। यह एक ऐसी अप्रत्यक्ष सेवा थी जिसके महत्व को राष्ट्र पिता बापू ने दूरदर्शी भविष्य की स्फूर्त कल्पना के अधीन अभिभापित करते हुये अनेक बार उद्योगपतियों को इस ओर अग्रसर रहने के आव्हान स्वरो में प्रकट किया था। सद्य स्वाधीनता प्राप्त अनेक एशियाई-अफ्रीकी राष्ट्रो के समक्ष आज आकस्मिक कठिनाई इस संबध में आ रही है, वह उनकी आत्मनिर्भरता के मार्ग में बाधा पहुंचाने वाली सिद्ध हो रही और वे विदेशी तंत्रज्ञो व विशेषज्ञो को अपने आर्थिक विकास मे भागीदार बनाने की विवशता अनुभव कर रहे है।

बबई में जिन-जिन उद्योगो से विदेशी हटने को उद्यत हुये उन्हें आगे बढकर हस्तगत करने का कोई सुअवसर मारवाडी समाज ने नहीं छोडा तथा यह सभी प्रकार के उद्योग धधो के संबध में लागू हुआ। नगर के सुप्रसिद्ध वस्त्र विक्रय स्थल मूलजी जेठा, मगलदास एवम् स्वदेशी मार्केट मे अपनी अधिकाधिक सक्रिय व्यवसायिक गतिविधियों के केंद्र मारवाडी समाज ने संस्थापित किये। इसी प्रकार बैंकिंग व बीमा व्यवसायो पर भी समाज का वर्चस्व स्थापित हुआ। लौह उद्योग से संबधित सभी सहकारी विभागों की बडी-बडी कपनिया एवम् निर्माण कार्य के ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठानो का स्वामित्व मारवाडी समाज के कर्मशील व्यक्तियो ने सहर्ष ग्रहण किया। रुई के हाजिर व वायदा सौदोके प्रमुख स्थल मारवाडी बाजार को समाज ने अपने भाग्योदय की सतत् परीक्षा व निरंतर व्यवस्थित ढग से इनमें अपना महत्व स्थापित करने को प्रयत्नशील रहे। ऊनी, रेशमी व रगादि वस्तुओं के आयात निर्यात व निर्माण में भी किसी से कम मारवाड़ी समाज की स्थिति नही रही।

मारवाडी समाज ने अपने मनोभावो में बबई की सर्व समुदाय वृत्ति को आत्मसात करते हुये सभी वर्गों के हितार्थ यदाकदा ऐसे कार्यों का सूत्रपात भी किया जिससे व्यक्तिश: उन विशिष्ट जनोकी स्मृति को तो स्थायित्व प्राप्त हुआ ही तथा सब समाजो को मुक्त रूप से लाभ प्राप्त हुआ। सन् १८१३ मे बंबई प्रवास की ओर अग्रसर मूलत. पालीवासी ओसवाल जैन परिवार की जैन देरासर पायधुनी व भायखला ऐसी धार्मिक कृतिया है जिसमें प्रायः लाखो रुपये के ट्रस्ट धर्मार्थ वृत्तियों के हेतु प्रोत्साहित करने की भावना निहित है। जीवन की कुल कमाई से प्रायः २० लाख की राशि बंबई विश्वविद्यालय को तथा शेप समस्त सपत्ति जिसका मूल्यांकन प्रायः ५२ लाख रुपये तक हुआ धार्मिक ट्रस्ट के रूप में समाज को पूर्णत. समर्पित करने वाले मारवाडी समाज के नर रत्न ने वास्तव में अपना पूर्णमल नाम तो सार्थक किया ही किंतु साथ ही साथ उनके इस सात्विक दान के फलस्वरूप ही नगर में समाज की सर्वोपयोगी महान कृति बंबई अस्पताल को वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो सका था।

इस प्रकार यह एक सर्वथा सही तथ्य है कि बंबई में जन के विकास के प्रथम चरण से आरंभ होकर आज तक की प्रत्येक परिस्थिति में देश के हर भाग से आये हुये बहुभाषी विभिन्न समुदायों के सहयोग से मारवाडी समाज ने जो कार्य संपन्न किये है उनको सर्व मान्यता प्राप्त हुई है तथा उनका महत्व सर्वोपरि है।

★

सत्यं वाचि दृशि प्रसादपरता सर्वाशयाश्वासिनी
पाणौ दानविमुक्तिरात्मजनन–
क्लेशान्तचिन्ता मतौ।
संसक्ता हृदये दयैव वयिता काये परार्थोद्यमो,
यस्यैकः पुरुषः स जीवति भवे
भ्राम्यन्ति जीवाः परे॥
(क्षेमेन्द्रस्य चतुर्वर्गसंग्रहे)

जिस पुरुष की वाणी में सत्यता, दृष्टि में सौम्यता, हाथ में दानशीलता, बुद्धि में स्वजनों के क्लेशहरण की विचारशीलता, हृदय में दया हो, तथा जिसकी काया परोपकार में रत हो, उसी पुरुष का जीवन सफल है, अन्य तो संसार सागर में योंही भटकते हैं।

महाराष्ट्र प्रदेश की हृदयस्थली भुयशोधरा नगरी बम्बई के *गौरवपूर्ण वर्तमान और अभूतपूर्व अतीत के साथ मारवाड़ी समाज* का अटूट लगाव परिलक्षित है। यहाँ की मिट्टी में उसे मातृभूमि के कणों की छटा झलकती प्रतीत होती है। यहाँ के भव्य निर्माण कार्यों में अपने सफल सपूतों के अद्वितीय शौर्य के दर्शन और यहाँ के विभिन्न समुदायों से भावनात्मक एकता के दृढ बन्धनों से अभिभूत मारवाड़ी समाज प्रताप और शिवा, दादू और तुकाराम तथा मीरा और जनाबाई के प्रति एक समान श्रद्धा भाव हृदय में सजोये हुये सभी वर्गों के लोगों के नवीनतम संकल्पों का निरंतर साथ देकर कदम कदम आगे बढ़ने को प्रयत्नशील है।

सभ्यता के आशातीत उत्कर्ष की ओर अग्रसर बीसवीं सदी का मानव भावी युग के लिये प्रेरणाप्रद स्वर्णिम इतिहास के निर्माण में सलग्न है। *वैज्ञानिक, साहित्यिक, राजनीतिज्ञ, उद्योगपति व श्रमिक* सभी ने युग के संकेत को समझा है। सभी के हृदयों में नये युग की नई मान्यताओं के अनुरूप अपने जीवन कृत्यों को ढालने की कल्याणी भावना हिलोरें ले रही है। इसी आदर्श भावना से अनुप्राणित समाज की बम्बई स्थित प्रतिनिधि संस्था "मारवाड़ी सम्मेलन" अर्द्धशताब्दी काल के सेवा कार्यों की सफल सम्प्राप्ति पर *आयोजित अपने "स्वर्ण जयन्ती* महोत्सव" के शुभ प्रसंग को समाज के व्यापक विविध अंगों की सम्पूर्ण गतिविधियों के सिंहावलोकन का उपयुक्त अवसर समझती है क्योंकि यह निश्चित है कि भव्य भविष्य की आधार शिला भूतकालीन एवम् वर्तमान क्रियाकलापों की प्रमाणिकता पर ही स्थित है।

मारवाड़ी एक व्याख्याः

राजपूती शौर्य की क्रीडास्थली मरुधरा को भौगोलिक व ऐतिहासिक पृष्ठों में राजपूताना भले ही अंकित किया गया है किन्तु मेवाड़, मारवाड, मेरवाड़ा सभी शब्दों में मरू कणों की चमक सन्निहित है। वेश भूषा व आचार व्यवहार में प्रायः समान राजपूताना की मरूभूमि का प्रत्येक वासी न केवल बम्बई में बल्कि देश के कोने कोने में मारवाड़ी नाम से ही मरुधरा की गरिमा को उज्ज्वल किये हुये है। संभव है कि जोधपुर क्षेत्र के वासी जिसे मारवाड़ नाम से नकशों में मान्य किया

गया है अपने आपको मारवाड़ी बताते हुये इस प्रदेश में भी सर्वप्रथम प्रवेश करने वालों में हों तथा उन्ही की समाकृति व पहनाव वाले अन्य सभी बाद में आने वालों के लिये भी मारवाडी शब्द उपयुक्त हुआ हो–भले ही वह मेवाडी, बीकानेरी अथवा जयपुरी और अन्य स्थानीय प्रादेशिक संस्कृति सहित आये हों। व्यापार वृत्ति, साहसिक लगन एवम् चातुर्यपूर्ण व्यवहार के धनी मारवाडी को केवल व्यापारी की संज्ञा देने वालों को संभवत समाज के सही इतिहास का परिचय नही है अन्यथा शौर्य व आनवान की प्रतीक जिस पगडी (पाग) को मारवाडी की पहचान का प्रमुख आधार मान्य किया गया उसकी पृष्ठभूमि के प्रति अज्ञान के अन्धकार को समुचित प्रकाश की आवश्यकता अनुभव करते हुये यह तथ्य प्रस्तुत करने की जरूरत नही होती।

पाग की साख:

पागधारी वीरो ने पगडी को मान मर्यादा का प्रतीक सदैव माना एवम् उसकी प्रतिष्ठा में आँच न आये–किसी के द्वारा वह उछाली न जा सके–कोई उसे पैरों में डलवाने में समर्थ न हो इसके लिये उच्चतम त्याग और भीषणतम संग्राम की परंपराओ से इतिहास के पृष्ठ रंगे पड़े है। हिन्दू सूर्य महाराणा प्रताप की पाग प्रचंड दिल्लीपति सम्राट अकबर के सामने न झुकी सो नही झुकी पर हल्दीघाटी के समरांगण में झाला नरेश के आत्मबलिदान का दीप जलाने राणा के मस्तक से उनके भाल का मुकुट बन गई। पगडी धारी नागौरी विप्रो के उत्सर्ग और पाग के रक्षक भीलों के आत्मोत्सर्ग की कथायें घर घर गाई जाती है। राजा टोडरमल ने बंगाल में इसकी साख बचाई तो आगरा के बादशाही किले की विशाल प्राचीर अपने वायुवेग अश्व के साथ लांघने वाले वीरवर अमरसिंह राठौड़ जहाँगीरी आलम में पाग नीची करने के स्थान पर अपनों के भरोसे में रहकर मस्तक ही दान कर आये। पगडी बदल बन्धुओं व सखाओं की साखियां मारवाडी लोक गीतों का मृदुतम अंग है तथा पगड़ी के क्रियाकलापों को लोकोक्तियों एवम् मुहावरो के माध्यम से साहित्य का अभिन्न अंग मान्य किया गया है। इसी पाग के साथ हर मारवाड़ी, हर राजस्थानी राष्ट्र के कोने कोने में अपितु विदेशों में भी भारतीय संस्कृति के सम्मान को सुरक्षित रखते हुये एवम् सभी के साथ सहयोगी भावना अपना कर उनके हृदयों में अपना स्थान बनाता रहा है।

विकास के पथ पर:

आधुनिक विश्व की अनन्य नगरियों में अपनी अक्षुण्यता प्राप्त आज की बम्बई का स्वरूप शताब्दी पूर्व क्या था इसकी कल्पना ही विस्मयोत्पादक है। लघुद्वीप पुंजो की बिखरी लड़ी को यहाँ के अध्यवसायी नागरिकों के अनवरत परिश्रम ने भव्य द्वीप पर स्थित अलकापुरी का स्वरूप प्रदान किया है। यह किसी एक वर्ग, समुदाय व जाति अथवा सम्प्रदाय का चमत्कार नहीं था बल्कि मराठी, गुजराती, पारसी, और अन्य नागरिकों के साथ साथ मारवाडी समाज की देन का अमिट प्रभाव भी इस अलौकिक मणिमाला के निर्माण का अंग रहा है। नगर के विकास के साथ साथ मारवाड़ी समाज की नागरिकता भी विकासोन्मुख रही है यह एक तथ्य है अपनी अपनी संख्या व शक्ति के अनुसार जिन अन्य नागरिकों ने बम्बई के विकास में विशेष सहयोग देने के प्रयत्न जब जहाँ भी किये है मारवाडी नागरिक ने अपने आपको प्रथम प्रयत्नशील नागरिकों की गणना में मान्यता मिले ऐसे कार्य किये है। नेतृत्व की भावना से विरक्त रहकर नगर की हर चेतनात्मक प्रवृत्ति में समाज का सर्वोदयी योगदान रहा ही है। राष्ट्रीय, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक सभी क्षेत्रो में समाज ने अपनी सुयोग्यता के प्रमाण प्रस्तुत किये है। बबई नगर के विकास की सभी प्रक्रियाओ में मारवाडी समाज सदैव अग्रगामी ही रहा कही पर कदम पीछे नही हटाये यह निर्विवाद तथ्य है।

आज से लगभग डेढ सौ वर्ष पूर्व जब समाज के व्यक्ति अपना बहुमुखी विकास कर रहे थे बम्बई अपना स्वरूप बदल रही थी। क्रूर लार्ड मिण्टो का शासन समाप्त हो गया था और उसकी जगह हेस्टिंग्स गवर्नर जनरल थे। सन् १८१३ का यह काल भारतीय व्यापार व्यवस्था पर अन्तिम घातक प्रहार का था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नवीन चार्टर ने सन् १८३३ मे हर अंग्रेज को भारत मे स्वतंत्र रूप से व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया था, फलत बम्बई में अंग्रेजो की संख्या बढ रही थी। शासन से प्रोत्साहित हर अंग्रेज भारतीय व्यापारियो की ताकत तोड रहा था। इससे पूर्व बम्बई के व्यापारियो ने अन्यान्य देशों के साथ जो व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किये थे अंग्रेज व्यापारी उसका अनुचित लाभ उठाने लगे थे, उस समय मारवाडी समाज के व्यापारी वर्ग ने देखा थोडे दिन अगर यह स्थिति रही तो इस धरती का धन कोडियों के मोल बिक जायगा अत समाज के हौसलेदार व्यक्तियो ने कमर कसी।

निस्सदेह तत्कालीन मारवाड़ी समाज के वे सपूत केवल मारवाड़ी समाज के ही गौरव नही बल्कि बम्बई की नागरिकता के गौरव थे जिन्होंने अपनी व्यावसायिक सत्ता को छिनने से बचाया, देश के धन को लुटने से बचाया और अंग्रेज व्यापारियो को पुनः यह मानने के लिये विवश कर दिया कि भारतीय व्यापारी में आधुनिक शिक्षा से अनभिज्ञ होने के बावजूद भी विश्व के कुशल व्यापारियों जैसी क्षमता है।

प्रारंभिक व्यवसाय के माध्यमः

प्रारंभ में समाज के व्यावसायिक माध्यमों में रेशम, रुई, कपड़ा, बैंकिंग, बीमा व कमीशन एजेंसी आदि का उल्लेख मिलता है। मारवाडी व्यापारी की उल्लेखनीय कुशलता के ज्वलंत प्रमाण की साक्षी यही थी कि बम्बई नगर के भावो पर सिर्फ बारदान पट्टी का लाभ अर्जित कर अधिक से अधिक व्यापार का विस्तार ही उसका ध्येय रहा है और यही कारण था कि नगर के आसपास के क्षेत्रों व विदर्भ बरार के तो घर घर उसकी पहुँच थी। आज तो मारवाड़ी कुटुम्बों की पीढियां देशभर में जहा गई वहीं की हो गई। उन्हें अपने पूर्वजों की भूमि का स्मरण ही रहा होगा जबकि यहाँ उन्हें मातृभूमि का पूर्णाभास अनुभव हो रहा है। आश्चर्य होता है यह जानकर कि कांदिवली जैसी इस समय विकसित स्थलों में भी लोग आज निश्चिन्तता से वास करना संभवत. कम पसंद करते है वहाँ प्रायः १५० वर्ष पूर्व से मारवाडी परिवार गृहोपयोगी हर वस्तु की दुकान लगा के बैठा देखा गया। इन सामान्य व्यवहारिक गुणों के फलस्वरूप मारवाड़ी समाज को न केवल व्यापारिक दिशा में सफलता प्राप्त हुई बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी वह यहाँ के लोगों का पारिवारिक

स्नेह अर्जित करने में सफल हुये और इन लघु व्यवसायों के अतिरिक्त भी उसे अपनी सच्चाई व सच्चरित्रता के कारण बडे से बडे व्यापारी व ग्राहक दोनों का विश्वास अर्जित करने में सफलता प्राप्त हुई। व्यापार में उसकी हुंडी की साख थी बाजारों में उसके वायदे पर अटूट श्रद्धा— क्योंकि हजारों की आय– लागत भी जबान के आधार पर करने वाले तत्सामयिक मारवाड़ी को कभी बडे से बडे भुगतान से मुकरते सभवत: *नही सुना गया। मात्र कागज के पुर्जे पर* 'ताती, सौली, चोरी, जोरी आई-अनआई हमारी छे' के आधार पर १३ लाख रुपये बीमाकर्ता को अविलम्ब प्रदान करनेवाले मारवाड़ी व्यवसायी ही देखे गये।

उसके व्यापार करने के हौसले व ग्राहकों के साथ सहयोगात्मक रवैये एवम् लेन देन की सच्चाई से प्रभावित अंग्रेज व्यापारी सर्वप्रथम मारवाडी व्यवसायी की खोज में रहता था। उसका मुख्य ध्येय भारतीय धन का स्थानान्तरण करना ही रहता था फिर भी मारवाडी समाज ने अंग्रेज व्यापारियो से प्राप्त विश्वास को राष्ट्रीय अहित में कभी नही जाने दिया–अपनी व्यावसायिक स्वतन्त्रता का सदैव ध्यान रखा और हर काम अपने विशिष्ट ढंग से सम्पन्न करते हुये सघर्ष के सर्वथा अनुपयुक्त उक्त समय में भी इसका उपयोग समाज तथा देश के लाभार्थ किया। उस समय सगठन का अभाव था–राजनैतिक दमन का दौर दौरा–जनता नेतृत्व हीन थी। लोग स्वतन्त्रता की बातें यदा कदा मन्दिरो एवम् निजी आवास स्थलों में बैठ कर कर लिया करते थे किन्तु *सक्रिय असहयोग द्वारा विदेशी सरकार के परिवर्तन की योजनाबद्ध* लड़ाई में विलम्ब था।

व्यवसाय की उस प्रारंभिक स्थिति में भी संसार की परिवर्तनशील स्थिति का प्रभाव निरंतर पड रहा था तथा यूरोप व अन्य महाद्वीपों के विभिन्न देशो में ऐसे संघो एवम् सघटनो का उदय हो रहा था जो व्यापार के सामान्य हितो की सुरक्षा तथा उद्योगों के श्रमिकों की *संगठित इकाइयों का आपसी समन्वय रखने में सफल सिद्ध हुये।* १७ वी शताब्दी से प्रारम्भ हुई इन गतिविधियो से प्रभावित होकर ही युरोपीय व्यापारियो ने देशी व्यापारियों की परस्पर सहयोगात्मक शैली देखकर सन् १८३४ में भारत में स्थापित एक चेम्बर आफ कामर्स की आधार भीत्ति पर ही सन् १८३६ में बम्बई के व्यापारी भी बोम्बे चेम्बर आफ कामर्स की छत्रछाया में सगठन की ओर उन्मुख हुये थे। इस समय तक मारवाड़ी व्यापारी बिना किसी औपचारिक सगठन के स्वच्छन्द रूप से परस्पर सहयोगी भावना के साथ प्रगति करते रहे थे। सन् १८५३ में प्रथम रेलमार्ग का निर्माण हुआ और सन् १८५४ में दादाभाई नौरोजी की प्रमुखता में "बोम्बे एसोसियशन" की स्थापना हुई व *औपचारिक रूप से बम्बई के सभी प्रमुख नागरिकों की* यह एक प्रथम संस्था मानी जा सकती है। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप अपने स्वत्वाधिकारों के हेतु प्रोत्साहन प्राप्त कर भारतीय प्रयत्नशील अवश्य हुये किन्तु दमन की अबाध प्रक्रियाओं ने जनमानस के स्वाभिमान को बहुत अंशो तक निर्बल कर दिया था अत: जागरण की भावना मन्थर गति से उठ रही थी। जागरण के इसी अभियान में वस्त्रोद्योग के प्रतिनिधित्व की संगठित संस्था के रूप में सन् १८८१ में बम्बई नेटिव पीस गुड्स मर्चेन्ट्स एसोसियेशन का नाम सर्व प्रथम आता है और शनै: शनै: अनेक छोटे बड़े संगठनों के जन्म होते रहे पर सन् १८९६ में सस्थापित "मारवाड़ी एसोसिएशन" जिसका आज परिष्कृत स्वरूप "हिन्दुस्तानी मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्स एसोसियेशन लिमिटेड" हमारे समक्ष है समाज की व्यापारिक दिशा में उत्कर्ष की महत्वपूर्ण कड़ी का प्रारंभिक उपादान रही है।

व्यावसायिक प्रवृत्तियों के उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से इस मन्तव्य की पुष्टि होती है कि मारवाड़ी समाज ने यद्यपि व्यापार को अपने जीवन में प्रमुखता देने का प्रयास तो किया किन्तु मात्र उसको ही आधार मानकर अन्य सभी दिशाओं से प्रवाहित वायु के झकोरों की ओर से उदासीनता का भाव इस समाज में रहा हो ऐसी बात नहीं है तथा अपने इस कौशल विशेष का उपयोग भी राष्ट्रीय जागरण के प्रत्येक कार्य में उसके द्वारा हुआ यह निर्विवाद तथ्य है। शासक व व्यापारी की सामंञ्जस्यता सर्वोपरि मान्य की गई है। वैधानिक दृष्टि से शासन की सत्ता सर्वोच्च है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि मे व्यापारी को भी सर्वदा सम्मान प्राप्त है क्योकि शासन व जनता दोनो के हित इसी वर्ग मे संलग्न है। दोनो के मध्यस्थ रहते हुये उसे कार्यरत रहना है और इस पद पर आसीन होने के कारण आम जनता के संकटो का असर सर्वप्रथम व्यापारी पर ही पडता है एवम् तत्पश्चात् ही शासक वर्गों को उसकी अनुभूति होती है। जनता और व्यापारी वर्गो की इसी परम्परागत निकटता को निरन्तर न्याय देते जाने में ही मारवाडी समाज की प्रारंभिक व्यावसायिक साधनो की सफलता निहित है।

नगरसेठों से नगरसेवकों तक :

समाज के कतिपय व्यक्तियों की सम्पन्नता ने उन्हें अंग्रेजी शासकों की दृष्टि में एवम् कुछ आतंकित लोगों की भावनाओ में नगरसेठ का स्वरूप भले ही चित्रित करने का साधन उपस्थित किया हो किन्तु *वास्तविक तथ्य से यह सर्वथा दूर की स्थिति थी।* उस समय भी मारवाडी समाज के तथाकथित नगरसेठ समाज को अन्दर ही अन्दर संगठित करते जा रहे थे। शासक वर्ग के प्रति इनके मन में भी विद्रोह जन्म ले चुका था जो आगे चलकर उनकी देशभक्ति का परिचायक सिद्ध हुआ।

जो लोग अंग्रेजो की कूटनीति से त्रस्त थे और उनके निकट भी थे उन्हें विदेशी सरकार प्रसन्न रखनेकी नीति अपना रही थी उसका एक मात्र कारण यही था कि किसी भी क्षण यदि क्रान्ति की ज्वाला भड़के तो इनको अपनी ढाल बनाया जा सके। सन् १८५७ मे १९१२ तक का बम्बई में मारवाड़ी समाज का स्वरूप बहुत कुछ नगरसेठों की कल्पना से दूर रहकर सेवापथ की ओर अग्रसर होता प्रतीत हो रहा था। फिर भी उस समय तक जागृति की सन्देशवाहिका संस्था के रूप में समाज के व्यापक स्वरूप की साकारता के कोई चिन्ह प्रकट नही हुये थे। यद्यपि उस समय तक कांग्रेस का जन्म हो चुका था किन्तु चेतना का अभाव था। अभी संगठनात्मक भावनाओं में उभार नही आया था। यद्यपि न्यायमूर्ति रानाडे व दादाभाई नौरोजी की ओजस्विनी वाणी से वातावरण प्रभावित अवश्य था। सर फिरोजशाह मेहता और श्री गोपालकृष्ण गोखले जैसे व्यक्तित्वों की आवाजें बुलन्द थी फिर भी जनमानस में पूर्ण जागरुकता के चिन्ह दृष्टिगोचर नही हो रहे थे।

इस विषमकाल में भी अंग्रेजी कूटनीति की दुरंगी चालो मे पूरी तरह अभिज्ञ मारवाड़ी वर्ग ने अपने अमित प्रभाव का उपयोग अपनी सम्पन्नता को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से कभी नही किया बल्कि

शासकवर्ग के घरभेदी कुकर्मों का भंडा फोड़ कर के जनता के मनोबल में दृढ़ता भरने के प्रयत्नों की कड़ी में अपना योगदान किया जिसमे यदा कदा शासन की क्रूर दृष्टि का शिकार उन्हें भी होना पड़ा।

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि मारवाडी को मात्र सेठ के रुप में मान्यता सत्य पर आधारित नहीं है और जिन्हें जनजागरण के विषय में जरा भी रुचि है बम्बई के विकास की ओर अग्रसर विभिन्न समाजो के सही इतिहास में कुछ अभिरुचि है एवम् समाजशास्त्र के प्रारंभिक उपादानो से अल्प सा भी परिचय है वे एक ऐसे समाज को मात्र नगरसेठ के रुप में मान्य करके नही चल सकते जिसके कर्मवीरो की रचनात्मक प्रवृत्तियो के प्रतीक आज भी बम्बई की वैभवशालिनी संस्कृति के अभिन्न अंग है जिनसे निरंतर यह प्रतिध्वनि गुंजरित होती रहती है कि हम मात्र सेठों के स्वप्नों की साकार कृतियाँ नहीं है बल्कि नगर के उदारमना मानस के सही चित्रों का प्रतिबिम्ब हैं।

इस प्रतिबिम्ब में समाज के व्यवसायिक, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र की युगीय गाथा की झलक प्रकट होती है। अर्वाचीन भारत के निर्माताओ का आदर्श समाज ने ग्रहण करने का प्रयास किया। राष्ट्रपति महात्मा गांधी की आन्धी का प्रबल वेग विदेशी सरकार को झकझोर डालने में तभी समर्थ हो सका जब कि भारतीय जनसमाज का मुक्त समर्थन उन के द्वारा प्रतिपादित हर सिद्धान्त में अपनी अटल श्रद्धा के साथ प्राप्त हुआ। मारवाडी समाज बम्बई में इस दिशा की ओर सदैव से अग्रसर रहा है फिर प्रसंग चाहे व्यापारिक संगठन के निर्माण का हो अथवा समाज हितैषी प्रवृत्ति का या किसी राजनैतिक समस्या की गंभीरता का, सभी अवसरो पर एक समान उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्यरत होने में कोई संकोच समाज को नहीं हुआ।

लोकमान्य की ललकार से देश ने करवट बदली और उसकी परिणिती हुई क्रान्तिकारी हलचलों के साथ रचनात्मक गतिविधियों के प्रारंभ द्वारा किन्तु उन्नीसवी शताब्दि का अन्तिम चरण जो भारतीय राजनीति में लाल-बाल-पाल का युग था, राष्ट्र के प्रांगण में नवीन नेतृत्व की ओर इंगित कर रहा था। बम्बई के मारवाडी समाज को इस महान त्रिमूर्ति के प्रति कितनी श्रद्धा थी उसकी अभिव्यक्ति लालाजी के आत्मोत्सर्ग की अमिट स्मृति के हेतु लाजपत व्यायामशाला की सम्मेलन द्वारा संस्थापना से हुई व सन् १९१२ में मारवाडी विद्यालय के प्रतिष्ठा समारोह की घड़ी पर तिलक महाराज की उपस्थिति मे राष्ट्र की सेवार्थ इस विशिष्ट संस्था के समर्पण में भी उसी श्रद्धा के पुष्पों की सौरभ सन्निहित है।

महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन व स्वदेशी वस्त्र बहिष्कार में समुचित योगदान बम्बई के मारवाडी समाज को अभीष्ट रहा। ऐसे अनेक अवसर उपस्थित हुये जब कि राष्ट्र की महान विभूतियों ने समाज के मध्य उपस्थित होकर जो उद्बोधन दिया उसको सक्रिय स्वरुप प्रदान करने का पूर्ण प्रयत्न किया गया। सत्याग्रह-संग्राम में मारवाडी समाज के कार्यकर्त्ताओं ने खुलकर भाग लिया तथा बारडोली के सेनानी सरदार पटेल के हाथों जब बम्बई अस्पताल का उद्घाटन सम्पन्न हुआ उस समय एक दूसरे ही रुप में समाज की उदार भावनाओ का मूल्यांकन नगर की जनता को हुआ और स्वयम् सरदार ने अनुभव किया कि इस समाज ने बम्बई के जन जीवन में प्रत्येक लाभकारी प्रवृत्ति को मात्र परोपकार की भावना से संचालित करने का दृढ़ मन्तव्य धारण किया हुआ है।

इन सभी तथ्यों ने इस सत्य का वास्तविक रुप से निरूपण किया है कि मारवाडी समाज की गतिविधियों का केन्द्रीकरण मात्र एक दिशा की ओर कभी नही रहा बल्कि चहुँदिशि प्रगति के प्रयत्नों में इस समाज की देन भी बम्बई के लिये महत्वपूर्ण रही है।

क्रियाशील समाज :

नवयुग की आकांक्षाओ की पूर्ति का प्रयत्न समाज कहाँ तक कर पायेगा यह अभी भविष्य के गर्भ में अन्तर्हित है किन्तु यह मान्यता असत्य नही हो सकती कि जो रक्त उसकी धमनियो में प्रवाहित है उसमें वे तत्व सकलित हैं जिनका प्रभाव शताब्दियों से मारवाडी समाज के विविध प्रकारेण उत्कर्ष-उत्थान के मध्य परिलक्षित होता है और जिनका भारत भूमि पर एक एक कण शौर्य व सौजन्यता की प्रतिमूर्ति का स्वरुप धारण कर समाज के महत्व को राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में सफल हुआ है।

मारवाडी समाज ने देश का एक कोना भी ऐसा न छोड़ा होगा जहाँ उनकी निर्माणकारी प्रवृत्ति के स्मृतिचिन्ह प्राप्त नही। जहाँ जैसी आवश्यकता अनुभव की उसी तरह की व्यवस्था करने का प्रयास किया गया जिसके फलस्वरुप धार्मिक तीर्थस्थानों पर विशाल देवस्थान तथा साथ ही संलग्न आश्रयस्थलों व यात्रियों की सुविधाओं के हेतु विश्रामालय-धर्मशाला आदि इसी प्रकार की मानवीय भावनायुक्त रचनायें प्रस्तुत हुई जिनका सर्वोपरि महत्व जनसाधारण की दृष्टि से आज भी सुरक्षित है।

कलात्मक वस्तु कला के जीवंत स्मारकों से समाज की निर्मल सुकोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है तथा कलापक्ष की दृष्टि से जिसका मूल्यांकन उन मर्मज्ञों की समझ के अनुरुप ही संभव है जिन्होंने इसकी उपादेयता और विशिष्टता के गान गाये हैं, विदेशी परिभ्रमणकारियों के निरन्तर आकर्षण के जो केन्द्र रहे हैं और जिनको राष्ट्रीय हितों की पृष्ठभूमि का आधार मान्य करते हुये सरकार का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है।

तृषा तृप्ति के सामान्य साधन के रुप में जल की प्याऊ के लघु निर्माण के प्रति वही भाव मारवाडी समाज के हृदय में था जो क्षुधा शांति के निमित्त विशाल अन्नक्षेत्र की व्यवस्था को प्राप्त था। कुंआ बनाना उसी प्रकार स्थानीय जनों के लिये अनिवार्य समझा गया जितना पशुधन एवम् खेतिहर की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन स्वरुप जलाशय का निर्माण करवाना। घर घर औषध-उपचारो की सेवाओं की उपलब्धि के साथ साथ सामाजिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के हेतु अस्पतालो, आतुरालयो एवम् सेवासदनों की स्थापना हुई—समाज के अभिशप्त बालसमूह को मातृ-पितृ स्नेह से वंचित न रखने के उद्देश्य से अनाथाश्रमों की सुविधा की गई तो गौ की महत्ता व रक्षा के मोह ने विशाल गौशालायें खडी कर दी। इस प्रकार मारवाडी समाज की बहुपक्षीय विचारधाराओ के सामञ्जस्य की प्रतीक स्वरुप यह निर्माण की प्रक्रियायें सदा-सर्वदा से सर्वहित की भावनाका मूर्तरुप सिद्ध हुई है।

बम्बई में भी समाज ने अपनी इन भावनागत विशिष्टताओं

को अक्षुण्ण रखा है। धार्मिक विचारों की प्राधान्यता के कारण उस काल की रचनाओं के प्रारम्भिक स्वरूप धर्मशालाओं, वाडियों एवम् औषधालयों की स्थापना से स्पष्ट होते हैं। शैक्षणिक विकास के साथ साथ समाज का ध्यान विद्यालयों, पुस्तकालयों एवम् विविध प्रशिक्षण उपादानों की उपयोगिता की ओर गया व समुचित संख्या में इन साधनों की उपलब्धि के हेतु स्फूर्त प्रयत्न हुये। समयचक्र की गति के साथ भौतिकयुगीय वैज्ञानिक पद्धतियों के उत्कर्ष की स्थिति में भी समाज पीछे नही रहा तथा ऐसी योजनाओं का निर्माण अपने हाथों किया जिनमें न केवल महाविद्यालयों की उच्चशिक्षा का लाभ प्राप्त हुआ अपितु विदेश पर्यटन का प्रोत्साहन शैक्षणिक व कलात्मक दृष्टि से समाज के युवक वर्ग में विस्तार पा सका।

समाज ने सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के समाधानार्थ सदैव से सही साधन समुपस्थित करने का सत्साहस रखा है और मान्य भारतीय औषध विज्ञान व आयुर्वेदिक पद्धति के माध्यम से जनहितकारी प्रवृत्तियों का संस्थापन तो प्रारम्भ से ही अभीष्ट था अपितु सर्वसाधन सम्पन्न एवम् आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित विशाल बम्बई अस्पताल भी स्थानीय नागरिकों को उपहारस्वरूप समाज ने प्रस्तुत करते हुये गौरव अनुभव किया है और इतनी बृहद् जनोपयोगी संस्था को संकुचित उपयोग की सीमाओं में आबद्ध करने का कभी भी प्रयास नही किया। मारवाड़ी समाज द्वारा प्रदत्त विशाल दानराशि से निर्मित इस विशिष्ट उपादान की सुविधायें सभी को मुक्तरूप से उपलब्ध हैं।

स्थानाभाव की समस्या यों तो बम्बई के नागरिक जीवन की दैनंदिन व्यवस्था का अंग बन गई है किन्तु विशेषतः विवाहादि कार्यों के अवसर पर तो जो संकुचन अनुभव होता है तथा कष्ट उठाने पड़ते हैं उनका परिमार्जन कुछ अंशों तक समाज द्वारा प्रस्तुत वाडियो के साधनों से होने में सहयोग प्राप्त हुआ है तथा उन्हीं के अन्तर्गत सुरक्षित बर्तन भण्डारों से सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन भी इस कठिनाई की स्थिति में प्राप्त होने से सानन्द कार्य सम्पन्नता में सरलता होती है। सामाजिक दृष्टि से अनिवार्य अन्य आवश्यक साधन भी समाज के धनी मानी परिवारों द्वारा सुलभ करने की परम्परा ने भी इन कष्टों में कमी करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस प्रकार समाज की बहुमुखी प्रगति में सहकारी प्रत्येक सत्कार्य में निस्संकोच अग्रसर होने में कभी हिचक अनुभव नही होने के कारण ही यह विशाल स्मृतिचिन्ह आज लाभप्रद सिद्ध हो रहे हैं और इनके द्वारा ही वास्तव में मारवाड़ी समाज की महत्ता को स्वीकार किया जाता है।

व्यवसायिक और औद्योगिक क्षेत्र में भी मारवाडी समाज के चरण गतिमान रहे हैं तथा बम्बई की अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नगर के रूप में मान्यता के साथ उनकी अध्यवसायी कुशल व्यवहारिकता का योग संलग्न है। ऐसे व्यापारिक संस्थानों एवम् औद्योगिक प्रतिष्ठानों की नींव मारवाड़ी समाज के हाथों डाली गई जिनके शताब्दि समारोह सम्पन्न हो चुके हैं बल्कि अनेक तो अपनी मूक सेवाओं द्वारा निरन्तर शताब्दि पूर्व से ही समाज के आदि स्वरूप को प्रतिनिधित्व प्रदान करने का प्रयत्न पूर्णत. निर्लिप्त भावना के साथ करते रहे हैं। जब तक बम्बई नगर में अफीम, नारियल, बीमा-बैंकिंग आदि के व्यापार को प्रमुखता प्राप्त रही तो प्रायः लेन देन उन्ही के माध्यम से होता रहा तथा जैसे ही अन्य दिशाओं में विश्व की दृष्टि घूमी और औद्योगिक क्रान्ति के चिन्ह प्रकट हुये रुई, रेशम व वस्त्रादि के व्यवसायों को भी अपनाने में भी उन्होंने विलम्ब नही किया।

औद्योगिक विकास में अग्रसर मारवाड़ी समाज ने अपना योग स्वदेशी आन्दोलन को बल पहुँचाने के हेतु निरंतर प्रदान किया। अपने उद्योगों के श्रमिक वर्ग की भावनाओं में राष्ट्रीय कल्याण के बीज अंकुरित करने का प्रयास प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष सभी प्रकार के साधनों से किया और ऐसा वातावरण निर्माण करने का प्रयत्न किया जिसमें स्वामी-सेवक के भाव समाहित न रह कर साथी-सहकारी की भावना को प्रश्रय प्राप्त होता रहा और मालिक व मजदूर सभी ने अपने आपसी मनोमालिन्यों को मन से मिटाकर मातृभूमि की मान मर्यादा को ही महत्व प्रदान करने का एक मात्र ध्येय और पवित्र आदर्श अपने समक्ष रखा और उसके निर्वाह को सदैव संलग्न रहे।

वणजारा वृत्ति के मारवाड़ी समाज ने अपने अस्तित्व को स्थायित्व प्रदान करनेवाले उपादानों के मध्य संतुलन बनाये रखने का प्रयत्न सदैव से किया है। राष्ट्र के कोने कोने में बिखरे इस समाज की प्रवृत्तियों में यह भाव स्पष्टत परिलक्षित होता है कि जहाँ वे पहुँचे वहाँ के सभी कुछ को अपने में आत्मसात करने को उत्सुक रहते हुये भी उन्होंने अपने चारों ओर कुछ ऐसे तन्तुजाल सदृश्य आवरण की आवृत्ति रखी जो अभेद्य था और जिस के फलस्वरूप ही न केवल बम्बई के मारवाडी समाज से बल्कि कहीं से भी यह बोध नही हो सका कि भाषा–खान–पान –वेशभूषा एवम् अन्य सभी प्रकार से सब में संमिश्रित मारवाड़ी समाज की सुगठित सांस्कृतिक इकाई में कोई व्यवधान उपस्थित हुआ हो और उसकी सामाजिक व्यवस्था के दृढ़ दुर्ग के अन्तर्गत किसी विघटनकारी गति-विधि का सूत्रपात हुआ हो। यही कारण है कि मारवाडी समाज के जागरुक अस्तित्व को आज बम्बई में भी मान्य किया जा रहा है और इसके महत्व का मूर्त स्वरूप अंगीकार करने में कोई बाधा नही दृष्टिगोचर हो रही है।

भवन निर्माण कार्य से लेकर बहुमूल्य अलंकार उद्योग तक में मारवाडी समाज के विविध अंग समाविष्ट हैं। अनेक विशाल भवनों की योजनाओं में अपनी लगन का उदाहरण समाज के उन मुस्लिम राजो व कारीगरों ने प्रस्तुत किये हैं जिनकी बहुत बड़ी जमात सामूहिक रूप से इसी कार्य में दक्षता प्राप्त किये हुये हैं और इनमें से अनेकों ने बड़े से बड़े निर्माण के कार्य हाथ में लिये व सम्पन्न करवायें हैं जिसके फलस्वरूप आज उनके अनेक सुव्यवस्थित संगठन इस उद्योग में अपनी विशिष्टता एवम् महत्ता को सुरक्षित रखे हुये हैं।

अल्प गृहोद्योगों में मारवाडी समाज के कर्मकार व मूर्तिकार ने बम्बई में अपना महत्व प्रकट किया है तो समाज के साहित्यकार व पत्रकार भी यहाँ के जनजीवन को प्रेरणा प्रदान करने में पीछे नही रहे हैं। स्व० जयनारायण व्यास का जन्मभूमि आदि पत्रों से जो अटूट सम्बन्ध वर्षों तक रहा तथा पत्र की रीति नीति पर जो अमिट प्रभाव उनकी क्रियाशीलता ने दिखाया वह समाज के लिये गौरव की बात है। श्रमजीवी के रूप में समाज के जो असंख्य जन बम्बई प्रवास पर आये और यहीं रम गये उनका परिश्रम और कौशल आज के औद्योगिक

स्तर की सम्प्राप्ति का आधार रहा है एवम् सभी प्रकार से समाज की विशिष्ट सफलताओ के सही सर्जक उन्हें स्वीकार करना ही होगा।

सात्विक आय की मनोवृत्ति सर्वदा समाज को प्रिय रही है और उस भावना पर दृढ़ रहते हुये ही समाज अग्रसर हुआ है। अलंकार उद्योग का प्रायः स्वत्वाधिकार सा मारवाडी समाज के हाथों सुरक्षित रहा है। रजत-स्वर्ण-प्रवाल अथवा मणिमाणिक युक्त किसी भी मूल्य के अलकारों का निर्माण पूर्ण विश्वास के साथ लोगों द्वारा निस्संकोच समाज के हाथो करवाया जाता था और उस विश्वास को कभी डिगने का अवसर उपस्थित नहीं हुआ। यह न केवल दृढ मनोवृत्ति की परिचायिका है बल्कि इस के अन्तर्गत उन सत्प्रवृत्तिजन्य संस्कारों की स्पष्ट छाप परिलक्षित हो रही है जो निरन्तर ग्राहक के हृदय मे गर्हित सूक्ष्म मे विश्वास को अटलता प्रदान करने में सहकारी हुई है।

इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बम्बई के मारवाड़ी समाज ने अपनी क्रियाशीलता को सजीवता प्रदान की है और सभी सर्वहितैषी सत्कार्यों की सफलता से सम्बन्धित सदाचारी एवम् समन्वयकारी शक्तियों के संवर्द्धन को सदैव से सशक्त करने का सुयत्न किया है।

मारवाडी समाज के कतिपय मूलाधार गुण भी है जिन्हें आत्मसात करने का प्रयास आज देश के सभी वर्गों की ओर से किया जा रहा है और वे है :—

(१) सयुक्त परिवार, (२) सहकार भावना, (३) मितव्ययता, (४) उपयोगितावाद।

इन्ही चतुर्गुणों के समन्वय से समाज का हर व्यक्ति सर्वदा सर्वोदयी भावों से युक्त रहा है और इन्ही के कारण पूर्णतः अभावग्रस्त श्रेणी का मारवाडी भी आचरण से सम्पन्न पाया जाता था। पुरोहित वर्ग का आध्यात्मिक नेतृत्व मान्य था तो क्षत्रिय हरिजन एवम् वैश्यो को उचित मार्गदर्शन के साथ व्यवस्थित रूप से जीवनयापन का आधार प्राप्त था। कतिपय उच्छृंखल व परिश्रम से जी चुरानेवाले व्यक्तियों को छोड़कर समाज के सभी वर्गों के लोगो के समक्ष न पहले कोई कठिनाई थी न आज ही कोई विशेष कष्ट इस दृष्टि से प्रकट हो रहा है जिससे इन गुणों के सम्बन्ध में व्यवधान का रूप उपस्थित हो सके।

इस वर्गगत विभाजन से मन्तव्य यह कदापि नही है कि किसी एक वर्ग के माध्यम से दूसरा वर्ग सम्पन्नता की सीढ़ी पर कदम रख सका वल्कि प्रायः व्यक्ति सर्वथा स्वतंत्र रूप से अपने भुजबल से भविष्य निर्माण की भावना लेकर आये और सफल हुये क्योंकि उनमें लगन थी और उपरोक्त गुण उनके जीवन के अभिन्न अग थे।

परिवार के प्रति आसक्ति और उत्तरदायित्व की भावना ने मारवाडी समाज को सही दिशा का निर्देश निरंतर प्रदान किया। माता, पिता, भाई, बहन, चाचा दादा, मामा, नाना, आदि सभी के प्रति ममत्व की डोर से आवद्ध मारवाडी परिवार का मुखिया अपने किसी भी अग की पुष्टि के लिये सर्वथा समर्थ होता था— अपना कर्तव्य समझता था जिसके फलस्वरूप ही निर्बल से निर्बल व यदा कदा अंग भग सदस्य का पोषण भी बिना किसी बाधा के सम्पन्न होता था— उसे कभी कोई अभाव अनुभव नही हो पाता था — अपने आप को सुरक्षित समझते हुये वह निश्चित था।

सहकार भावना ने समाज में संगठन की नीव डाली और सब के साथ कन्धे से कन्धा लगाकर कार्य करने की परम्पराओं का श्रीगणेश हुआ। दु.ख का भार बँटाने और सुख का अंश समाज के लाभार्थ वितरित करने की भावना मारवाड़ी के जीवन की अतीव आवश्यक अंग बनकर रही। सामाजिक स्तर पर प्रत्येक श्रेणी व वर्ग का मारवाडी ऐसे दु ख, सुख, हानि, लाभ, जीवन, मरण आदि सभी अवसरों पर अपनी सम्पन्न अथवा विपन्न स्थिति का भान भूल कर एकाकार होने का आदर्श समुपस्थित करता था जिससे कभी किसी के मनोभावो में एकाकीपन की स्मृति की झलक न आने पाये।

मितव्ययता का तात्पर्य मारवाडी समाज की दृष्टि से कंजूसी कदापि नही रहा है। समाज ने व्यापार आदि के माध्यम से धन अर्जित किया तो संग्रहमात्र ही उद्देश्य न रखा बल्कि परमार्थ हेतु व्यय करनेका अटल सिद्धान्त अपनाये हुये कुल प्राप्त धन का बड़ी अर्द्धांश तथा कुछ उदाहरणो से पूर्णांश तक को समाजहितार्थ दान कर देने की तत्परता मारवाडी समाज ही मे प्रकट हुई है। अपनी आय का निश्चित भाग धर्मादा की निष्ठा के साथ निकालना अनिवार्य सा प्रतीत होता था तथा यह भावना इतना बलवती थी कि आचरण संहिता की अंगस्वरूप व समाज मे प्रतिष्ठा का मापदण्ड मान्य की जाती थी।

उपयोगिता के प्रस्तुत सभी साधनों ने ही मातृभूमि से सुदूर प्रदेशों में तथा महानगरी बम्बई मे भी मारवाडी समाज का स्नेहिल लगाव उत्पन्न किया। यहाँ के लोग आश्वस्त हुये क्योंकि मारवाड़ी यही के हो गये। उन की भाषा, रीतिरिवाज व रहन सहन आदि पर यहाँ की संस्कृति की छाप स्पष्टतया परिलक्षित होती है। उनका अन्य समाज के लोगो से सम्पर्क की घनिष्ठतम शृंखलाओं में आबद्ध हो जाना एवम् अपनी उपयोगिता यहां के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवम् आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में सिद्ध कर देने का स्फूर्त प्रयत्न हर मारवाडी ने अपना सुपुनीत कर्तव्य समझा और उसकी पूर्ति में निरंतर प्रयत्नशील रहा। इन सभी गुणों की अभेद्य प्राचीर से रक्षित यह समाज यदि सम्पन्न माना भी जाय तो वह मात्र अर्थ की दृष्टि से नही अपितु इन मानवीय गुणों से युक्त सभी श्रेणियों व वर्णों के मारवाड़ी समाज का वास्तविक स्वरूप ही मान्यता प्राप्त कर सकेगा।

सुयोग्य नागरिक :

मारवाडी समाज ने किन विशिष्टताओं के आधार पर बम्बई में अपने लिये सुयोग्य नागरिकता के अधिकार सुरक्षित करवा लिये इसकी उन प्रवृत्तियों से कुछ कल्पना की जा सकती है जिनकी गतिविधियाँ बम्बई के साथ साथ सारे भारत में व्याप्त होकर देशभर के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। यह राजस्थान का वह वर्ग है जिसके द्वारा प्रवास में आने से पूर्व अपने प्रदेश में समाजव्यवस्था का सतुलित सचालन होता था। वहाँ भी उसे सम्मान्य नागरिकता के अधिकार प्राप्त थे।

परस्पर राजनैतिक संघर्षों में व्यस्त राजस्थानी नरेशों को प्रजा के विकास के लिये सोचने का समय ही नहीं मिलता था। उस समय युद्ध और प्रकृति के प्रकोपों से त्रस्त जनता का हित सम्पादन इसी वर्ग के हाथों हुआ यह प्रामाणिक तथ्य है।

शासन और जनता दोनों के अनुराग का सदैव अभिलाषी बम्बई का सहृदय मारवाड़ी इन निस्सीम दो कूल किनारों के मध्य प्रवाहित शान्त निर्झर धारा का जीवन जी रहा है। इस प्रवाह ने दोनों किनारों के हर सतप्त को वांछित फलप्राप्ति से प्रसन्न देख कर ही आत्मतुष्टि प्राप्त की है। संस्कारी वैष्णव होने के कारण ही महालक्ष्मी उसकी पथप्रदर्शिका रही और वरुण इसका प्रहरी-अत. इस प्रवाह के माध्यम से लोग पार होकर किनारे ही लगे हैं। मझधार में तिरोहित होते सभवत. किसी को देखा नहीं गया है। अपितु उन्हें गहरे पानी बैठकर मोती खोज निकालने वाली कला का ज्ञान ही प्राप्त हुआ है।

आध्यात्मिक झुकाव ने समाज के व्यवहार में श्रद्धालुता रखी, आत्मचिंतन के फलस्वरूप नैतिक स्तर में उच्चता प्राप्त हुई व व्यवहारिक क्षेत्र में सफलता मिली है एवम् जिन्होंने समाज की इस आचरण परम्परा के अनुकूल अपने आपको बनाया वे जीवन में सर्वथा सफल हुये हैं।

परम्परागत प्रामाणिकता से ही मारवाडी समाज को बम्बई में अर्थ और इस के साथ साथ सुनागरिकता के सर्वाधिकार भी सहर्ष प्रदत्त हुये हैं।

अर्थ और यश दोनों के विपुलमात्रा में अर्जन के पश्चात् नागरिक के दायित्व का निर्वाह समाज ने किस सीमा तक किया है इस का लेखा जोखा आलेख के अन्तर्गत निहित है किन्तु समाज के इतिहास में मान व हृदय की दृढ़ इच्छाओं के प्रमाण सर्वत्र प्रकट हुये हैं। जहाँ भी मारवाड़ी समाज ने अपना अस्तित्व निर्माण किया वहाँ के शासन और वहाँ के नागरिकों का अपार स्नेह उसे प्राप्त हुआ और उसने अपनी सुयोग्य नागरिकता असदिग्ध ढंग से सुरक्षित रखी है। अत: मारवाड़ी समाज की नागरिकता के सही मूल्यांकन में इसे सर्वथा उपयोगी की सज्ञा से विभूषित किया जाय तो संभवतः सत्य को शृंगार ही मिलेगा।

नया युग नयी पीढ़ी :

प्राचीनता और नवीनता की आज सर्वत्र चर्चा है। प्राचीनता को प्रतिक्रियावादिता का चिन्ह मान्य किया जाता है और नवीनता में प्रगति का समवेतस्वर सुना जाता है। यह धारणा सत्य नहीं है—सत्य है विकास और मात्र युगानुकूल आचारव्यवहार को ही विकास की अभिव्यक्ति का स्वरूप दिया जा सके यह संभव नहीं है क्योंकि पूर्णत: युगानुकूल आचरण तो पाश्चात्य भौतिक समाजदर्शन का अन्धानुकरण मात्र है। यदि इसने हमारे जीवन में कहीं भी स्थान बना लिया तो हमारी आदर्श संस्कृति के प्राण शेष नहीं रह सकेंगे।

मारवाड़ी समाज की नई पीढ़ी भी इस सत्य को मानकर चलती है। उसने व्यवसाय में अधिक उद्योगधन्धों की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया है। कल का मारवाड़ी विक्रेता आज का निर्माता भी है। कल तक वह गद्दी पर बैठता था तो आज उसके निकट कुर्सी मेज भी रखी मिलेगी विज्ञान के समस्त आविष्कारों व प्रकृति की हर देन के उपयोगों से वह अब सर्वथा परिचित है।

प्राध्यापन, वकालत, भवन निर्माण, कला, विज्ञान, प्रकाशन, यत्रविद्‌ता, औषध उपचार, रंगमच, साहित्य, सगीत व जनसाधारण के मध्य सभी क्षेत्रों में समाज की नई पीढ़ी कार्यरत है। अपने अस्तित्व की सुरक्षा में उनके समक्ष राष्ट्र के अमरवीरों का आदर्श है और राष्ट्रीय सेवा से गौरवान्वित होने की अभिलाषा लिये हुये समाज की नई पीढ़ी बम्बई को दिनो दिन योग्य नागरिक प्रदान करती जा रही है। मैरीन ड्राइव से मलाड, कालबादेवी से कोलाबा व कल्याण तक होनेवाली समस्त औद्योगिक, शैक्षणिक व अन्य सेवाप्रधान प्रवृत्तियों से उनका सक्रिय सम्बन्ध है।

मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमगुणा न परित्यजन्ति ॥
— भर्तृहरि

सामान्यजन विघ्नों के भय से किसी कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते, मध्यम वृत्ति वाले प्रारम्भ करके भी विघ्न आजाने पर बीच में ही छोड़ देते हैं। किन्तु उत्तम गुणोंवाले कार्य को प्रारम्भ करके बीच में छोडते नहीं अपितु अन्त तक निभाते हैं।

प्रगति के मानदण्ड हर युग में भिन्न भिन्न होते हैं। युगीय आवश्यकताओं और संस्कृतियों के संमिश्रण से राष्ट्र के इतिहास में अनेक परिवर्तन हो जाते हैं —कायापलट तक हो जाती है। नवीनतम अनुसन्धानों व आविष्कारों से प्रभावित मानव की विचारधारा, वेषभूषा व समस्त क्रियाकलापों में क्रान्तिकारी भावों के सूत्रपात का रहस्य समाविष्ट होता रहता है। फलत. परम्परागत जीवन शैली वर्तमान की स्मृति का रूप धारण कर लेती है तथा भूतकाल अपने आप मे निधि स्वरूप बन जाता है।

सारे संसार में नयेपन की बलवती इच्छा का प्रसार है तथा प्रगति का आधार स्तम्भ भी इसी में स्थितप्रज्ञ की भाँति समाहित है। मनुष्य एकाकीपन से निस्तार पाने का प्रयास आदिकाल से करता आया है। यह उसकी हार्दिक अभिलाषा रही है कि सयुक्त रूप से सोचने समझने का अवसर उसे प्राप्त हो तथा युगधारा के अनुकूल अपनों को जो आज के समाज का प्रारम्भिक अंग विन्यास है, सगठित करने का-उनमें अनेकात्मकता से विलग हो सामूहिक दृष्टिकोण पनपाने का संयोग उसके भी हाथ में आये तथा वह भी अपने समाज के और राष्ट्रीय हितों की अभ्यर्थना में काम आ सके।

सन् १९१४ का समय एक ओर जहाँ विश्व को विनाश की तटीय रेखा पर खींच लाया था—प्रथम विश्वयुद्ध की चिन्गारियों की चमचमाहट से चहुँदिशि चकाचौंध हो रही थी —वहाँ दूसरी ओर निरन्तर पराधीनता की पीडा से आक्रान्त भारतीय जनमानस में मुक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी एवम् व्यक्ति की सेवा भावना का दृष्टिकोण मात्र सामाजिक न रह कर राष्ट्रीय हो गया था। परम्परागत कुलीय सामाजिक सगठन छिन्न-भिन्न हो रहे थे और नवीन भावोंके उद्भव की प्रतिक्रिया स्वरूप उस काल का मारवाड़ी युवक कुछ कर बैठने को तड़प उठा था जिसका साकार प्रतीक उस सक्रमण काल की अंकुरित "मारवाड़ी डिबेटिंग युनियन" का परावर्तित बृहद् शाखा प्रशाखायुक्त विटप "मारवाड़ी सम्मेलन" आज अर्द्धशताब्दी से कल्पवृक्ष सदृश समाज के हर अंग की सम्पुष्टि में सलग्न है।

इस शुभकार्य का श्रीगणेश उस समय के मारवाड़ी समाज के उदीयमान कार्यकर्त्ताओं ने किया। उनकी व उनके पूर्व के कार्यकर्त्ताओं

की शैली में भेद होना सर्वथा स्वाभाविक था-प्रेरणा के स्रोत अलग थे आदर्श भिन्न था और लक्ष्य की स्पष्टता का पूर्वाभास था अत: एक प्रबुद्ध मार्ग पर अग्रसर होने की अभूतपूर्व अभिलाषा मन में संजोये समाज के यह नवीन कर्णधार अपनी संकटाकीर्ण राह पर बढ़ चले जिसका भविष्य यद्यपि अगोचर था-कल्पनातीत था और बाधाओं से युक्त था किन्तु कर्मवीरो के दृढ मनोबल को डिगाने की शक्ति इनमें हो नही सकती। वे जब बढ़ते है तो रुकावटें स्वयम् हट जाती हैं मार्ग स्वत: प्रकट हो जाता है।

बम्बई के जागरुक नागरिकों की दृष्टि उस समय कांग्रेस की ओर लगी थी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के भाषणों की भावना तेजी से नये रक्त में प्रवेश कर रही थी। जनमानस उद्वेलित था और राष्ट्रीय जीवन में चेतना के सुस्पष्ट लक्षण सन्मुख उपस्थित थे। ऐसे अवसरों पर मनोभावों में सुप्त निर्माणकारी प्रवृत्तियां ही हृदय को आन्दोलित करती है और नव पथ का अनुसरण करने को प्रेरित करती रहती है। रचनात्मक कार्यो की रूपरेखा निर्धारण में व्यस्त राष्ट्रीय नेतागण देश के युवक हृदय का स्पन्दन अनुभव कर रहे थे।

उन्होंने इस स्पन्दन में क्रान्ति के कणो की झलक देखी-अनुभव किया कि यदि इन वलखाती-मदमाती भावनाओं को उचित प्रश्रय प्राप्त न हुआ तो संकट की घडी समुपस्थित हो सकती है-सामयिक मार्गदर्शन के अभाव में यह भटक गई तो इन्हे सभालना सभव नहीं हो सकेगा अत इन्हे समुचित मान प्रदान करते हुये राष्ट्र के निर्माण की ओर मोड देने का प्रयास नेतागणों ने किया तथा इन्हें इसमें कुछ सफलता भी मिली किन्तु वे न भारत के लाडले भगतसिंह को व न नरकेसरी चन्द्रशेखर आजाद को और जाने अनजाने असंख्य नौनिहाल खुदीराम बोस जैसे मा भारती के सपूतो को स्वयम् के विनाश द्वारा राष्ट्र यज्ञ की पूर्णाहुति में भस्मसात होने से रोक न पाये। उन के आत्मबलिदान की आधारशिला पर आज हमारा स्वाधीनता का विशाल आगार अवस्थित है। वे इस विषम काल की उत्पत्ति को सार्थकता प्रदान करने वाले अमूल्य रत्न थे जिन्होंने अपनी आन न जाने दी जान भले ही दे दी हो। राष्ट्र के हेतु बलिवेदी के राही इन शहीदों के साहसिक कृत्यों का अमिट प्रभाव देश के युवक समाज पर पड़ा तथा उन्ही के आदर्श पर चलते हुये नव जागरण के अनेक स्मारक युवकगण संस्थापित करने में सफल हुये।

मारवाड़ी नवयुवको के समक्ष भी अपने आपको व अपने समाज को उस समय की प्रगतिशील बयार के साथ कदम मिलाकर राष्ट्रीय हितो के सरक्षणार्थ अग्रगण्य रखने की समस्या उपस्थित थी और उसका सामयिक हल निकालने के उद्देश्य से उनके ध्यान में आया कि समाज को इस अभियान में किसी से पीछे न रहने दिया जाय, निर्माणकारी कार्यों का समारंभ किया जाय और इसमें सभी से प्रत्येक प्रकार का योगदान लिया जाय। समय की पुकार थी कि इस समय उठनेवाला हर कदम ऐतिहासिक होगा और समय के उपहार स्वरूप ही सन् १९१४ की प्रभात वेला में यह "मारवाड़ी सम्मेलन" सस्थापित हुआ।

मारवाड़ी डिबेटिंग युनियन :

विचारो का आदान प्रदान एवम् विषय पर सामूहिक चर्चा से एक दूसरे के भावो को आत्मसात करने का अवसर प्राप्त होता है विशे-षत: किसी भी विकास शील समुदाय के लिये तो यह सर्वथा आवश्यक है कि उसके सदस्य अपने समाज तथा उसके कर्तव्यों व अन्य आपसी सम्बन्धों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें तथा अपनी ओर से प्रदान करे।

इसी भावना की व्युत्पत्ति का परिणाम सभवत युनियन जैसे सगठन की स्थापना का कारण बना हो। अनेक ऐसी निजी, सामाजिक एवम् राष्ट्रीय समस्यायें उस समय समाज के सामने थी जिन पर एक साथ बैठकर खुले दिल से विचार करना अनिवार्य प्रतीत होता था और उन मुक्त हृदय व शांत मस्तिष्क द्वारा हुये विमर्श के माध्यम से समाज की कठिनाइयों का हल निकालने में तथा भावी गतिविधियों के मूल्यांकन व परिष्करण का मार्ग दृष्टिगोचर हो पाता था जिसका उस समय बहुत महत्व था।

युनियन के प्रतियोगितात्मक वादविवाद के विषय यदा कदा इतने गभीर, उपयोगी एवम् उच्च स्तर के होते थे तथा उन्हें प्रतिपादन अथवा खण्डन करनेवाले वक्ताओं को जिस परिश्रम व लगन के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत करना पड़ता था उसी में इसके सस्थापन की सही सफलता निहित थी। महीनो पूर्व से ही उस विषय का अध्ययन व मनन प्रारम्भ होता था। सम्बन्धित साहित्य की खोज बीन व प्राप्ति का प्रयास किया जाता था और पक्ष की सबलता के उद्देश्य से वक्ताओं के उचित चयन को प्रमुख स्थान दिया जाता था। इस प्रकार एक स्वस्थ स्पर्धा के अन्तर्गत समाज का अत्यन्त उपयोगी कार्य सम्पन्न होता रहता था।

सामाजिक कुरीतियों के प्रति नई पीढी के विचार प्रवाह में परिपक्वता की दृष्टि से ऐसे विषय निर्धारित किये जाते थे जिन पर तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप समाज का ध्यान आकर्षित करवाना आवश्यक प्रतीत होता था तथा प्रचार के प्रत्येक साधन से वहाँ पर प्रदर्शित भावनाओं को प्रत्येक मारवाड़ी परिवार के घर घर पहुँचाने का सतत् उद्योग किया जाता था। इस प्रवृत्ति को प्रारम्भ में जिन हास्य व्यगात्मक ढंग के उपहासों का सामना करना पड़ा, वे कभी कभी इतने कटु होते थे कि आयोजको को पथ से विचलित करने और इस जनहितैषी गतिविधि के सफल संचालन में व्यवधान के रूप में उपस्थित होने का आधार प्रस्तुत करते थे किन्तु वस्तुत: ऐसा हुआ नही और यह प्रवृत्ति दृढ़तर स्वरूप धारण करती गई।

डिबेटिंग युनियन की सभायें इस आयोजन स्थल पर होती थी जहाँ बड़े छोटे, धनी निर्धन, पठित अपठित एवम् सवर्ण हरिजन के मध्य कोई अन्तर नही रहता था तथा तन्मयतापूर्वक व अटूट लगन के साथ युवक वर्ग इसे निभाते रहे, अपनी आस्थाओं को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करते रहे और इसे एक सशक्त संगठन की ओर अग्रसर करते रहे ताकि समाज की समस्याओं का प्रतिनिधित्वपूर्ण समाधान करने वाली कोई सस्था का निर्माण भविष्य में संभव हो सके।

भविष्य के दूरगामी परिणामों को ध्यानगत रखकर जिस योजना की नींव रखी जाती है उसके लिये अधिकाधिक त्याग एवम् सक्रिय सेवा की आवश्यकता अनुभव होती है और जब तक जनसेवियों का एक-मन, एक तन तथा सही विचार-एकराय वाला समूह पूरी संलग्नता के
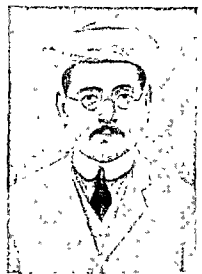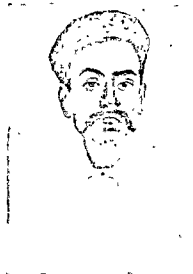
सम्मेलन के संस्थापक

श्री रामेश्वरदास बिड़ला
श्री गोविन्दलाल पित्ती
श्री बल्लभ नारायण दाणी
श्री गजानन्द मोदी
श्री सीताराम पोद्दार
श्री माधवप्रसाद शर्मा सोलीसिटर
श्री मदनलाल चौधरी
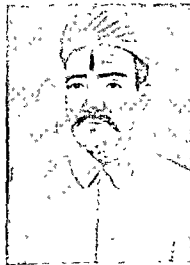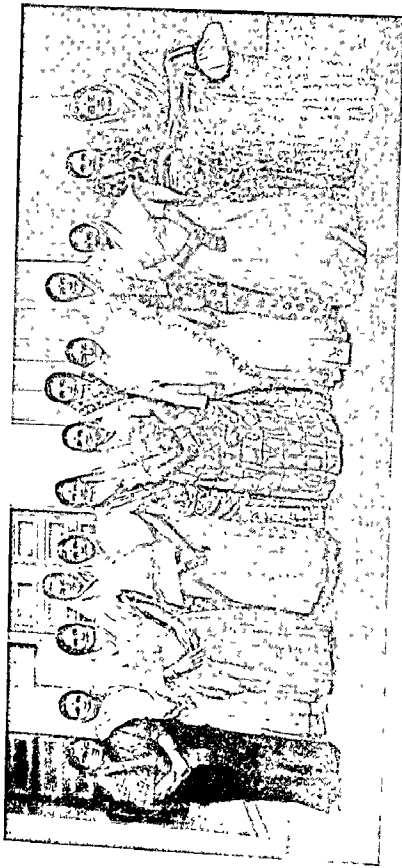
राजस्थानी महिला मंडल की कार्यकारिणी समिति की सदस्यायें

सर्व श्रीमती रतनीबाई पोद्दार (अध्यक्षा), लज्जारानी गोयल (उपाध्यक्षा), मंगलाबाई खेतान (मंत्रिणी), विजयाबाई माखरिया, गंगाबाई तोषनीवाल (सह-मंत्रिणी), सदस्यायें—सर्व श्रीमती पद्माबाई खेतान, दमयंतीबाई पित्ती, रुक्मणीबाई पोद्दार, रुक्मणीबाई अग्रवाल, शांताबाई दारका, रतनबाई मोहता, राधाबाई मोहता, ललिताबाई माखरिया, अन्नपूर्णाबाई गोयल, विद्यादेवी रस्तोगी

साथ जुट पड़ने को तत्पर नहीं होता है तब तक ऐसी महत्वाकांक्षा पूर्ण योजना की सफलता असंदिग्ध ही रहती है।

मेल-मिलाप व विचार स्वातंत्र्य की जो सुविधा युनियन ने उस समय अपने सदस्यों को प्रदान की उसी के फलस्वरूप समाज को अनेक ऐसे सुयोग्य वक्ता, कुशल संगठनकर्ता और सफल व्यवस्थापक प्राप्त हुये जिन्होंने जनजीवन के प्रत्येक स्थल पर अपनी सेवायें अर्पित करते हुये न केवल अपना कर्तव्य पालन किया बल्कि समाज का मान बढाया व नगर के अन्य समाजों से तुलनात्मक दृष्टि में मारवाडी समाज को किसी भी क्षेत्र में पीछे न रहने दिया।

इनके मार्ग में उस समय जितनी रुकावटें थी। मारवाडी समाज की शैक्षणिक सामाजिक व राजनैतिक स्थिति का जो स्वरूप था तथा यत्र तत्र बिखरे परिवारों के मध्य सभी प्रकार से जो अन्तर था; उन सबका ध्यान रखते हुये तत्परता पूर्वक इस प्रवृत्ति में जो सहयोग इन की अध्यवसायी कार्यक्षमता को प्राप्त हुआ उसी के फलस्वरूप यह गतिविधि अग्रसर हो सकी थी।

समय के साथ साथ व्यापक विचारधारा का प्रभुत्व हुआ—डिबेटिंग युनियन को "मारवाड़ी सम्मेलन" नाम से अभिषिक्त किया गया। मारवाड़ी समाज के अतिरिक्त सभी हिन्दी भाषा भाषी जनों के निरंतर सम्पर्क से इसकी लोकप्रियता में वृद्धि हुई।

नवयुग की अभिलाषा-सम्मेलन की परिभाषा :

सम्मेलन की स्थापना ऐसे संक्रमण काल में हुई जबकि एक युग आ रहा था—एक युग जा रहा था। विश्व के समस्त विचारक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चिन्तन कर रहे थे। प्रबुद्ध जनमानस भीतर ही भीतर उन आडम्बरों को तथा थोथी मर्यादाओं को आमूल विनष्ट करने को उतावला हो रहा था जिससे साम्राज्यवाद को किसी भी रूप में समर्थन प्राप्त होना था।

मानव समाज में साम्राज्यवादी भावनाओं का प्रवेश कहाँ से किस कारण से एवम् क्यों कर हुआ इस पर यहाँ प्रकाश डालना सर्वथा विषयान्तर का द्योतक होगा अतः इतना कहना ही पर्याप्त है कि जनसाधारण को इन प्रतिगामी भावनाओं से घृणा हो गई थी—खलनेवाली वस्तुस्थिति की परिचायिका थी एवम् इसका विषम स्वरूप असह्य हो गया था जिसके फलस्वरूप पुरातन पद्धति के संगठनों से समाज के लोगों की आस्था अस्त हो रही थी। फिर भी यह तर्क तो किसी भी प्रकार उचित नहीं ठहराया जा सकता कि असाध्य रोग से पीड़ित जन को अपनी इहलीला विषपान द्वारा समाप्त कर लेनी चाहिये, उसी प्रकार प्राचीनता के कटु बन्धनों का सर्वथा त्याग भी सहसा नहीं किया जा सकता है यही विचार कर सम्मेलन के संस्थापकों ने जो जानेवाले युग के दृष्टा और आनेवाले युग में समाज के बहुपक्षीय स्वरूप के स्रष्टा थे; एक सुदृढ संगठन के स्थापनार्थ उन्मुख हुये।

उनके मनोभावों में निस्सन्देह यह अभीष्टता रही होगी कि अन्यों को संगठित स्वरूप प्रदान करने के प्रयास में सफलता प्राप्ति के पूर्व क्यों नहीं उन्हें हम प्राथमिकता के हिसाब से एकसूत्र में आबद्ध करें जिन के साथ हमारा सामाजिक सम्बन्ध है—जिन के नाम के साथ हमारा नाम संयुक्त है और जिनके साथ अधिक ममत्व होना मानव के नैसर्गिक स्वभाव का परिचायक है। वैसे मानव मात्र अपने आप में एक है फिर भी प्रकृति के अलौकिक प्रवाह ने मानव को एक से अधिक संख्या व स्वरूप देकर न जाने किस प्रयोजन का सूत्रपात किया है यह सृष्टि के आदि काल से आज तक अज्ञेय ही है।

स्वरूप का अन्तर व संख्या की अनेकता ने ही मानव रुचि में वैचित्र्य उत्पन्न किया है और इस रुचि वैचित्र्य के कारण ही भावात्मक भेद का आवरण आज सर्वत्र आच्छादित है जिससे मानवमात्र का सम्बन्ध है तथा प्रकृति भी उससे विलग नहीं है।

भावात्मक भेद की प्रक्रिया का दोष सीधा मानव पर नहीं प्रकृति पर है जिसने संभवतः अपने चमत्कारिक प्रवाह की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में विचार करना भी नहीं चाहा अथवा चाहने पर भी उसके लिये संभव नहीं हुआ। वह तो अपने स्वभावानुसार स्वच्छन्द रूप से प्रवाहित रहती है एवम् अपने प्रवाहजन्य जीवों को नवीन नवीन संज्ञाओं से विभूषित करती है। व्यक्ति को समाज में और समाज को राष्ट्र में परावर्त्तन का क्रम अबाध गति से जारी रहता है।

भूगोल के समक्ष खगोल को उपस्थित करके प्रकृति ने जैसे निकटता में अन्तर खड़ा कर दिया उसी प्रकार व्यक्ति के सामने समाज, राष्ट्र और विश्व रखकर निकटता की राह में कई ठहराव नियुक्त कर दिये हैं। हर ठहराव अपनी अलग उपयोगिता रखता है किसी भी स्थिति में इन की अवहेलना नहीं की जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति द्वारा निश्चित इस विधान को मान्यता दिये बिना किसी भी गतिमान चरण का लक्ष्यतक पहुँचना कठिन ही नहीं अपितु प्रायः असम्भव ही है। इन्ही तथ्यों पर ध्यान देकर उक्त डिबेटिंग युनियन को मारवाड़ी सम्मेलन का रूप दिया गया।

जिन विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति का लक्ष्य सम्मेलन ने निर्धारित किया उन पर दृढ रह कर समाज के लिये अपनी उपयोगिता का आभास निरंतर अपनी गतिविधियों द्वारा सम्मेलन ने प्रदान किया।

परिवर्तन शील युग में क्रान्तिकारी विचारों का उद्भव एवम नवीन अभिलाषाओं का सवर्द्धन अपनी विशिष्टता रखता है और इसी सत्य को सम्मेलन ने अपनी सही व्याख्या व अर्थपूर्ण परिभाषा द्वारा प्रतिपादित किया है। सम्मेलन को अपनी परिभाषा के अनुरूप ऐसी अनेको अग्निपरीक्षाओं के मध्य से अपना आंचल बचाना पड़ा था—ऐसे विविध आन्तरिक व बाह्य अपवादो से झूझना पडा था और ऐसे कृत्यों की सफलता के लिये अड़ना पडा था जिनका समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान था तथा जिनसे पार पाये बिना "मारवाड़ी सम्मेलन" का सर्वतोमुखी विकास संभव नहीं था।

संस्थापना के प्रारंभिक चरण :

"डिबेटिंग युनियन" के प्रारंभ में जिन शक्तिशाली कर्मवीरों का हाथ था उनकी कार्यपद्धति के सूक्ष्म विश्लेषण ने इस तथ्य को सिद्ध कर दिया है कि वे मारवाड़ी समाज को सही माने में विकास के पथ पर अग्रसर करने को दृढ प्रतिज्ञ थे, उनमें असीम मनोबल था और थी वह लगन जो निरंतर कार्यरत रहने को उन्हें प्रोत्साहित करती रहती थी

अन्यथा क्या यह संभव था कि मात्र "युनियन" को अति अल्प समय में ही "सम्मेलन" का स्वरूप प्राप्त हो जाता और उसकी चहुँमुखी प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो पाता।

समस्त घटनाक्रमों का विस्तृत अध्ययन इस बात का परिचायक है कि "युनियन" के स्वप्नद्रष्टाओं की भावनाओं का ही साकारस्वरूप अन्ततः सम्मेलन हुआ है –वे ही इस परिवर्तित वस्तुस्थिति के जन्मदाता थे और उन्हीं को सम्मेलन के सस्थापन का श्रेय प्राप्त था। कार्यकर्ताओं की सख्या उस काल में भी अभूतपूर्व रही होगी एवम् सात्विक दृष्टि से उन सभी का विस्तृत आलेख इस प्रयास में सलग्न हो पाना कठिन ही है किन्तु उस समय के प्रकाशित विवरणों, समाचार पत्रों की कतरनों एवम् पत्रव्यवहारादि से सक्रिय गणना में निम्नोक्त महानुभावों के नाम सामने आते हैं। सर्व श्री सीतारामजी पोद्दार, रामेश्वरदासजी बिड़ला, गोविन्दलालजी पित्ती, जमनालालजी बजाज, मदनलालजी चोधरी गजानन्दजी मोदी, फतेहचन्दजी रुइया, बल्लभनारायणजी दाणी, हनुमानप्रसादजी बगड़िया, हनुमानप्रसादजी शास्त्री, एवम् प० माधवप्रसादजी शर्मा, सालिसिटर आदि की प्रारंभिक सक्रियता एवम् परिमार्जित रुचियों से युक्त सबल नेतृत्व ने ही समाज की इस आदर्श प्रतिनिधि सस्था को अकुरित एवम् पल्लवित पुष्पित करने में पूर्ण योगदान प्रदान किया है।

यो तो समाज के इन आदर्श व्यक्तिओं में प्रत्येक का जीवन अपने आप में ही एक सस्था का ही स्वरूप था तथा इनकी व्यक्तिशः सार्वजनिक सेवाओं का लेखा जोखा विस्तार भय से प्रस्तुत किया जाना संभव न होते हुये भी जिन सात्विक भावों के अधीन जनहितैषी कार्यों का सम्पादन इनके द्वारा होता था वह वस्तुतः स्तुत्य है सर्वथा अभिनन्दनीय है। ज्ञान और दान के पोषक इन व्यक्तियों की उस समय बम्बई नगर के मारवाड़ी समाज में अग्रगण्य वरिष्ठ लोगों में चर्चा की जाती थी और "डिबेटिंग युनियन" एवम् अति अल्प अवधि में ही उसके स्थायी संगठनात्मक स्वरूप मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना ने तो इनके जीवन को और भी गौरवान्वित बना दिया।

राजस्थान की बलिदानी भूमि से उठा मारवाड़ी अपनी आनबान की गरिमा सग लिये एक आदर्श जीवन का निर्माण करने में सदैव सारे देशवासियों को सहयोग देता रहा है। श्रम और सदाचार निष्ठा का मत्र राष्ट्र के कण कण में सम्मिलित करनेवाला, जन जन के मानस में उनकी महत्ता को सस्थापित रखने में प्रयत्नशील मारवाड़ी अपनी पुनीत उदार भावना को जीवन्त रखना–स्थिरता प्रदान करना, उतना ही उपयोगी मानता है जितना का सूर्य धरती के वासियों को अपनी तपन से जीवनी शक्ति प्रदान करना आवश्यक समझता है। तपन की प्रक्रिया को सहज ही स्वीकार कर लेना साधारण मानव के बल-बूते का कार्य नहीं, उस के वश की बात नहीं है–त्यागी और संयमी ही उसे हृदयंगम कर सकता है।

सम्मेलन के इन संस्थापक कर्णधारों ने अपनी ओजस्विनी परम्पराओं के आधार पर ही खड़े होकर देश के सगठनात्मक अभियान में योग देना समुचित समझा और फलतः सम्मेलन निर्द्वन्द रूप से बम्बई नगर की जनता के समक्ष आया और आगे बढ़ पाया।

सम्मेलन का सौभाग्य था कि उस की संस्थापना समाज के उस समय के तपे हुये सधे-सधाये मनस्वियों के हाथों हुई और इनमें से आज भी समाज की सेवा साधना में रत सर्वश्री रामेश्वरदासजी बिड़ला व गोविन्दलालजी पित्ती की सक्रिय सेवाओं का पूर्ण लाभ समाज को प्राप्त है किन्तु जिन्होंने यावज्जीवन अपना योग संस्था को दिया उनका आदर्श समाज के वर्तमान कर्णधारों को उनके वास्तविक कर्तव्यों का बोध कराने वाला मंत्र है जिसे अपने क्रियात्मक जीवन का अंग बना कर ही वे अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकते हैं।

मारवाड़ी समाज के सर्वप्रथम सालिसिटर प० माधवप्रसादजी शर्मा के अहर्निश प्रयत्नों ने सम्मेलन को जीवनदान दिया तो श्रीसीतारामजी पोद्दार के अनन्य शिक्षा प्रेम ने सम्मेलन की सर्वाधिक उपयोगी प्रवृत्तियों के रूप में समाज को लाभ पहुँचानेवाले बालिका विद्यालय एवम् हिन्दी पुस्तकालय को साकार स्वरूप प्रदान किया। बापू के लाडले श्री जमनालालजी बजाज पर मात्र बम्बई के मारवाड़ी समाज का ही एकाधिकार न मानते हुये भी सम्मेलन के प्रति उनके ममत्व को विस्मृत नहीं किया जा सकता। सम्मेलन की हर गतिविधि में सक्रियता व उसके आन्दोलन कारी स्वरूप के अधिष्ठाता सर्वश्री मदनलालजी चोधरी, गजानन्दजी, मोदी, बल्लभनारायणजी दाणी, श्री फतेहचन्दजी रुइया एवम् हनुमानप्रसादजी बगड़िया के अथक प्रयास ने ही सम्मेलन के प्रारंभिक चरणों को सुदृढ़ आधार प्रदान किया– उनमें दौड़ लगाने योग्य शक्ति का सचय किया।

बढ़ते कदम और समस्याएं:

ससार का इतिहास साक्षी है कि जब जब कोई ऐतिहासिक कदम उठाया गया समस्या उस की परीक्षिका बनकर सम्मुख उपस्थित रही। समाज के युगान्तरवादी परिवर्तनों में भी इसी परिपाटी का अनुसरण हुआ है।

मारवाड़ी समाज की अनेक ज्वलन्त समस्यायें थी जिन के परिमार्जन में संस्था की शक्ति लगना परमावश्यक थी और वह लगी भी। प्राचीन प्रथाओं के घेरे में घिरे लोग प्रगति के उदित दिवाकर की रश्मियों के आलोक से वचित थे पिछड़े हुये थे और उन्हें युगानुकूल आचरण के लिये प्रेरित करने में सम्मेलन को जो भगीरथ प्रयत्न करने पड़े वे एक साहसिक गाथा की पृष्ठभूमि मात्र रहे हैं। सामाजिक बन्धनों की शृंखलाओं में जकड़े हुये लोग बेचैन थे–छटपटा रहे थे किन्तु मुक्तिदूत की प्रतीक्षा में ही अपनी अवश स्थिति को व्यतीत करने के अलावा और चारा ही उनके पास न था।

इसी मुक्तिमार्ग का पथ प्रदर्शक बनने के महान स्वप्न को आत्मसात किये हुये सम्मेलन के चरण बढ़े, पर बाधायें अपना कराल मुख विस्तारित किये सामने दृष्टिगोचर थी जिन पर विजय पाना खेल नहीं था बहुत ही जीवट का काम था। उन बाधाओं में बाहरी वातावरण का प्रभाव तो था ही किन्तु आन्तरिक विरोध के कटु प्रहार भी सन्निहित थे। समाज के भीतर ही ऐसा वर्ग था जो इस संगठनात्मक सहकार के प्रति उद्विग्न था। अपने सस्कारगत विचारों के ताने बाने में नवीन सूत्रों को कहीं जमा नहीं पा रहा था और असत्य व रूढ़िगत आधारों पर

स्थित अपने नेतृत्व के छिन जाने से संत्रस्त था –आकुल-व्याकुल स्थिति में समाज के हानि-लाभ का निर्णय भी नही कर पा रहा था।

इन सभी प्रकार की रुकावटों के मध्य भी सगठन को सशक्त बनाने-रूठे हुओं को मनाने व सामञ्जस्य भाव से, सौम्य स्वभाव से एवम् समाजहित के चाव से कार्यरत रहना जरूरी था। अपव्यय और प्राचीन रीतिरिवाजों की प्राचीर भेदकर जन जन की सर्वोदयी भावनाओं में उभार लाने के स्फूर्त प्रयत्न अनिवार्य थे। कटु से कटु आक्षेप और आलोचनाओं का भय त्यागकर ही सिद्धान्तों की सत्यता व उपयोगिता के प्रसारण में संलग्न होना था। समाज के पिछड़ेपन के प्रत्येक चिन्ह को, अमिट अवशेष को और पुरातनता के प्रतीक को, पराधीनता की विवशता को; जिनकी प्रतिच्छाया में प्रतिक्रियावादी एवम् साम्राज्यवादी मनोवृत्तियाँ पनपती हो–जिससे समाज के विकास में अनावश्यक अवरोध आता हो एवम् जिनकी मात्र स्मृति भी मनोबल को पराभूत करनेवाली हो उन्हें लुप्त करने को प्रयत्नशील होना था। इन सभी का सामना करते हुये समाज का यह अनोखा सगठन कदम-कदम बढ़ा–समस्यायें एक एक करके हल होती गई और सस्था की लोकप्रियता बढ़ती गई।

लौ जगमगाने लगी :

किसी को कल्पना नही थी कि "डिबेटिंग "यूनियन" की सफल परिणिती सम्मेलन सदृश्य देश के महत्त्वपूर्ण सगठन में हो सकेगी। जो लोग सार्वजनिक जीवन के अधिष्ठाता है उन्हें ही ज्ञात है कि नव सगठन की स्थापना एवम् उसका कुशल संचालन कितना दुरुह कार्य है। पक्ष-विपक्ष और पारस्परिक मतमतान्तरों की आँधी से संगठन का दीप किसी भी क्षण बुझ सकता है–किसी भी समय उसकी तेल बाती का अत आ सकता है। ऐसी विकट संभावनाओं के मध्य भी सम्मेलन का यह प्रदीप गत पचास वर्षों से निरंतर जगमगाता रहा है–जनमानस को आलोकित करता रहा है यह निस्सन्देह सुखद अतीत का एवम् समुज्ज्वल भविष्य का द्योतक है।

प्रायः लोग जातीय संगठनो का सार्वजनिक स्वरूप स्वीकार करने में हिचकिचाते है किन्तु उन्हें सम्भवतः यह ज्ञात नही है कि इसी प्रकार की यह सुगठित इकाईयाँ यदि स्वस्थ रूप में सगठित होकर राष्ट्र के नवनिर्माण में योगदान देती रहें तो देश के बड़े से बड़े काम को अत्यन्त सफलतापूर्वक संपादित किया जा सकता है। अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर इस तथ्य को मान्य किया जा सकता है कि गाँवों में पचायतों व लघुविस्तारवाले कस्बों में नगरपालिकाओं एवम् शहरों में नगर निगम आदि को जो जनसेवा का भार वहन करते हैं तथा समाजहितैषी कार्यों को अग्रसर करने में सलग्न है जितनी सफलता प्राप्त हुई है उसका अल्पांश भी यश सर्वसाधनसपन्न सरकार को अपने क्रियाकलापों से अर्जित करने को नही मिला है। जातीय भावना का स्तर तो सिर्फ वैचारिक स्थिति तक ही है तथा उसे समाज हित के माध्यम से राष्ट्रोन्नति के अर्थ समर्पण करने का सयोग उपस्थित करनेवाला संगठन अपने अलौकिक प्रकाशपुज की ज्योति का आभास सभी के विकासपथ को आलोकित करके ही करवाता है।

उस समय देश को संगठनात्मक आयोजनों की ही आवश्यकता थी। विभागीय दृष्टिकोण से अलग अलग जातीय संगठनों का स्वरूप राष्ट्रीय जागरण में योगदान के हेतु भी किसी भी प्रकार से अवांछनीय नही था। विशिष्ट पद्धति पर संचालित इन संगठनों के कार्यों से उनके सदस्यों के साथ साथ समाज व राष्ट्र भी लाभान्वित हुये हैं यह एक निर्विवाद सत्य है जिसमें संगठित रूप से सोचने विचारने की अबतक की मात्र पारिवारिक व व्यावसायिक व्यवधानों की सीमाओं का विस्तार देशव्यापी स्तर पर सभी के समक्ष आनेवाली समस्याओ तक विस्तृत हुआ व सगठन में सुदृढ़ता आई और जिस दीप की नन्ही वर्तिका की टिमटिमाहट में शंकाओं के अन्धकार का भय समाया था वह अपने पूर्ण ओज की प्रदर्शिका लौ के रूप में जगमगाने लगी।

उद्देश्य-निर्धारण :

सम्मेलन के माध्यम से देश सेवा के लिये सभी आमंत्रित थे। किसी संकीर्ण मनोवृत्ति को यहाँ स्थान न था। सर्वांगीण उदय की कामना से अभिभूत होकर सम्मेलन ने अपने उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया–

(क) जन साधारण में और विशेषकर मारवाड़ी समाज में शिक्षा का प्रचार करना और उनकी सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक, व्यापारिक, औद्योगिक और राजनीतिक अवस्था की उन्नति के लिये प्रयत्न करना तथा उनमें पारस्परिक प्रेम भाव और एकता की वृद्धि करना।

(ख) प्लेग, कालेरा, अकाल, अग्नि-प्रकोप, जलप्रकोप, भूकम्प आदि अनेक प्रकारकी दुर्घटनाओं के समय यथासाध्य सर्व साधारण की सहायता करना।

(ग) हिन्दी भाषा की उन्नति और उसका प्रचार करना।

(घ) मारवाड़ी समाज के हितों और अधिकारों की उन्नति और रक्षा पर सर्वाग्र ध्यान देकर यथेष्ट उपाय करना।

(ङ) बालक और बालिकाओं के लिये पाठशालायें, विद्यार्थी-गृह एवम् सर्वसाधारण के लिये औषधालय, पुस्तकालय, व्यायामशालायें, सहायक समिति, वादविवाद समिति, छापखाने और क्लब आदि संस्थायें खोलना और उन्हें चलाना।

(च) रात्रि पाठशालायें और साप्ताहिक वर्ग, सामाजिक एवम् साहित्य सम्मेलन, सार्वजनिक व्याख्यान और लेंटर्न लेक्चर्स इत्यादि का आवश्यकतानुसार प्रबन्ध करना।

(छ) समाचार पत्र प्रकाशित करना, उपयोगी पुस्तकें और लेख लिखवाना तथा प्रकाशित करना और आवश्यकतानुसार स्वयसेवको तथा उपदेशको को नियत करना।

(ज) योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ और पारितोषिक प्रदान करना।

(झ) आवश्यकतानुसार भारत सरकार अथवा उस के किसी विभाग से देशी रियासतो और उनके किसी विभाग से

सार्वजनिक एवम् अन्यान्य संस्थाओ से पत्रव्यवहार करना या किसी विशेष काम से कही भी प्रतिनिधि भेजना।

(ञ) उपर्युक्त कार्यों की पूर्ति के लिये धन इकट्ठा करना और उसको उचित उचित रीति से व्यय करना।

(ट) किसी धार्मिक मतमतान्तर या सम्प्रदाय का पक्षपात या विरोध करना सम्मेलन का काम न होगा।

इन उद्देश्यो से प्रमाणित होता है कि सम्मेलन के सस्थापक निस्सन्देह जागरुक व्यक्ति थे। अपने समाज के सर्वतोमुखी विकास को माध्यम मान्य करते हुये राष्ट्रीय अम्युत्थान में उन्हें योगदान करना अभीष्ट था।

इन उद्देश्यो के अन्तर्गत सम्मेलन की स्थापना के साथ ही नव चेतन की लहर समाज के अंग अंग में व्याप्त हो गई। राजस्थान के प्रवासी जिन्हें अपने मारवाडी होने पर गर्व था, जिन्हें अपनी साहसिक परम्पराओं का ध्यान था और जिन्हें अपनी मातृभूमि राजस्थान की रजकणो से प्यार था व माँ भारती की गरिमा से दुलार था फिर वह चाहे ब्राह्मण हो या वैश्य, हिन्दु हो या मुसलमान, जैन हो या हरिजन, जाट हो या राजपूत सभी ने अपने आपको देश का सुयोग्य नागरिक सिद्ध करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

देश के राजनैतिक वातावरण से अनेक लोग परिचित थे किन्तु सक्रिय राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने की रुचि कम थी अत: लोगो में परिपक्व रुचि पैदा करना ही उस समय का प्रमुख कार्य था। वर्षो तक यह क्रम चलता रहा और समाज के कर्णधार अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुरूप देशव्यापी सभी प्रकार के आयोजनो में समाज व सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में पूर्ण उत्साह के साथ भाग लेते रहे।

राष्ट्रव्यापी ऐसा कोई आन्दोलन उस समय बाकी नही रहा होगा जिसमें समाज के अग्रणी बन्धुओ का योग न रहा हो—सम्मेलन तो आधार था किन्तु कार्य क्षमता तो उन्ही की थी। समाज के लोग उनके सम्पर्क में आते और उनकी भावनाओ को हृदयगम करने को प्रयत्नशील होते थे। प्रचार-प्रसार के प्रमुख साधन के रूप में समाचार पत्रों का पूर्ण उपयोग लेने का सफल प्रयास सम्मेलन ने अपने उद्देश्यो के स्पष्टिकरण में किया तथा देश की विभिन्न समस्याओ पर विचार विनिमय पत्रो द्वारा करके उनके सुलझाने में अपना योग दान दिया।

इस प्रकार अपने उद्देश्यो को अन्तर्हित किये उस समय की अन्य सामाजिक प्रवृत्तियो के साथ स्वयम् को सन्तुलित रूप में प्रस्तुत करते हुये सम्मेलन ने स्वल्प काल में ही मारवाडी समाज को जो गौरव प्रदान किया वह अविस्मरणीय है तथा उन उद्देश्यो में निहित भावनाओं के तदात्म्य स्वरुप कार्यो का संक्षिप्त आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

समाज के शैक्षणिक, सामाजिक एवम् शारीरिक उत्थान् के लिये सम्मेलन ने अनेक योजनाओ का प्रारभ व सचालन किया है तथा विद्यालय, पुस्तकालय, विद्यार्थीगृह, महिला महाविद्यालय एवम् महिलामण्डल आदि की समाजोपयोगी प्रवृत्तियो का लाभ सभी को प्राप्त हुआ है। राजनैतिक आन्दोलनों में सम्मेलन की आवाज सदैव बुलन्द रही तथा उसके कार्यकर्त्ताओं ने राष्ट्रीय नेताओं की पुकार पर जो योग व भोग संभव हुआ दिया।

देश में अनेक वार दैवी आपदाओं के विषम प्रभाव से ग्रस्त स्थलों में बाढ, अकाल, भूकम्प एवम् असाध्य रोगों के आक्रमण ने जनजीवन को त्रस्त किया। ऐसे अवसरो पर ही सेवा भावी सामाजिक संगठनो के सहकार का सही मूल्याकन हो पाता है और सम्मेलन अपने इस प्रमुख उद्देश्य की पूर्ति में कही भी पीछे नही रहा है व तन मन धन से इनके परिष्कार हेतु साहसपूर्वक अपने आपको अग्रिम पंक्ति में समुपस्थित किया है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के विकास को अपने मूलभूत उद्देश्यों में स्थान देकर सम्मेलन को भावी युगीय मांग का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करने का गौरव प्राप्त हुआ और उस गरिमा को आज तक सुरक्षित रखे हुये सम्मेलन अपनी सभी प्रवृत्तियो के माध्यम से राष्ट्रभाषा के उन्नयन में सलग्न है।

साहित्य प्रकाशन एवम् पत्र प्रसारण की योजनायें सम्मेलन के प्रारम्भिक प्रयत्नो से आज के क्षणों तक की अभिन्न अंग रही है जिसका उद्देश्यो की कड़ी में महत्वपूर्ण स्थान था और जिसकी अभिव्यक्ति इस समय "समाजवाणी" मासिक पत्रिका के नियमित प्रकाशन द्वारा प्रतिभाषित होती है। सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं के स्वयंसेवक दलो ने न जाने कितने अवसरो पर अपनी कुशलता का परिचय देकर सम्मेलन के उद्देश्यों की सार्थकता के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं।

अध्ययन अध्यापन के निमित्त छात्रवृत्तियाँ व पारितोषिक प्रदान करने की परम्परा सम्मेलन के बहुउद्देश्यीय कार्यक्रमों की आधार रही है जो प्रत्येक अवसर पर दाता व प्राप्तकर्ता के सम्मुख ज्ञान के आलोक को प्रकाशमान रखने के विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति की प्रतीक-स्वरूप सिद्ध हुई जिन से प्रोत्साहन प्राप्त कर शैक्षणिक विकास की ओर अग्रसर होने के दृढ संकल्प को असीम बल प्राप्त हुआ यह सर्व विदित तथ्य समाज के समक्ष आज प्रस्तुत है।

धर्मनिरपेक्षता के सम्बन्ध में अन्यत्र विस्तारपूर्वक उल्लेख हुआ है अत: यहाँ इतना ही प्रकट करना समीचीन रहेगा कि सम्मेलन के आधारभूत सन्देश के रूप में सभी धर्मो के प्रति आस्था के भावों का जो अभूतपूर्व प्रयोग स्थापना काल में एक विशेष प्रभाव का संचार समाज के प्रत्येक विभाग पर परिलक्षित हुआ और परिणामस्वरूप सम्मेलन के द्वार सभी के लिये मुक्त रूप से खुले गये। सेवाव्रती का मार्ग भिन्न धर्मावलम्बी होने से ही अवरुद्ध हो तथा उसका प्रतिकार समाज की विशेष हानि के रुप में प्रकट हो यह कैसे सम्भव था। यही इस सर्वहित-कारी उद्देश्य में अन्तर्हित लक्ष्य था जिसकी ओर सर्व प्रथम संभवतः सम्मेलन ने ही अपने कदम बढाये और जिसे आज की राष्ट्रीय सरकार भारत को एक धर्म निरपेक्ष गणतंत्र की संज्ञा का अभिषेक प्रदान कर मान्यता दे चुकी है।

समाज से एकत्र धन को उचित रीति से व्यय करने का उद्देश्य सम्मेलन के संचालको की रीति नीति पर अंकुश का बोध करानेवाला साधन रहा है। अपव्यय एवम् अल्पव्यय के मध्यम मार्ग का अनुसरण

करते हुये संतुलित ढंग से संस्था के आय-व्यय को स्थिरता प्रदान करने की मनोकामना से ही इस विधान को संस्था ने अपनाया होगा।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सम्मेलन की स्थापना के प्रारम्भिक ध्येय में किसी भी वस्तुस्थिति को महत्व प्रदान कर दिया गया हो– किसी भी विशिष्ट उद्देश्य को प्राथमिकता की दृष्टि से आगे पीछे कर दिया गया हो किन्तु यह निश्चित था कि जिन विचारों को प्रश्रय प्राप्त हुआ वे वास्तव में समाज के भावी इतिहास पर अमिट प्रभाव छोड़े बिना नही रह सके। उन प्रबुद्ध विचारों की पृष्ठभूमि में ही हमें समाज के प्रति सम्मेलन के कर्तव्यो का सही विश्लेषण करना होगा और तब हम पायेंगे कि इन उद्देश्यों के अन्तर्गत कितनी महान भावनाओं को निहित रखा गया था।

स्वप्न की साकारता :

सम्मेलन के स्थापना काल की परिस्थितियों का साधारण चित्र आलेख के अधीन संग्रहित हुआ है किन्तु ऐसी अनेक अमूल्य निधियां को इस अवसर पर भी समाज के सम्मुख प्रस्तुत नही किया जा सका है जो आज काल के थपेड़ों से आक्रान्त हो समय के गतिमान प्रवाह में अन्तर्हित हो रही है तथा जिन्होंने समाज को अधिकृत सही स्वरूप प्राप्ति का अधिकारी बनाया था।

सम्मेलन की कल्पना के जनक इस तथ्य से सर्वथा परिचित थे कि वे जिस महान् कार्य का श्रीगणेश कर रहे है उसकी महत्ता जन जनार्दन की सजगता का प्रतीक बनने की आकृति में प्रकट होने से ही स्वीकार की जायेगी और यही कारण है कि समाज के इन सजग प्रहरियों ने इस की भंवरजाल में डूबती उतराती नौका को कूल-किनारा प्राप्ति का आधारस्तंभ प्रदान किया।

सर्वप्रथम घटनाक्रमों की परिचायिका के रूप में ऐसा कोई सप्रमाण आलेख हस्तगत नहीं होता है जिसके द्वारा इस कल्पना के स्वतः स्फूर्त भावों की अभिव्यंजना का भास हो सके बल्कि वास्तविक स्थिति यह है कि एकादश विवरण जो सन् १९२४ में प्रकाशित हुआ इस तथ्य की ओर इंगित अवश्य करता है कि उससे पूर्व एक त्रिवर्षीय कार्यविवरण प्रस्तुत हुआ था किन्तु काफी प्रयास के उपरान्त भी उस की खोज कहीं भी कर पाने में सफलता प्राप्त न हो सकी। यदि वह प्राप्त हो सकता तो तत्सामयिक प्रवृत्तियों एवम् उनके सफल संचालन में तल्लीन कार्यकर्त्ताबन्धुओं का उल्लेख पूर्ण विश्वास व हर्ष के साथ प्रस्तुत किया जा सकता था। इस अभाव को मानते हुये भी प्रथम विवरण के रूप में एकादशवर्षीय वृत्तान्त का महत्व सर्वोपरि है तथा उसमें प्रकाशन वर्ष में सम्मेलन व्यवस्थापक सभा की नामावली से ही संस्था के पदाधिकारियों एवम् सदस्यों की निम्नोक्तसूचि का ज्ञान होता है। श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला (सभापति) श्री केशवदेवजी नेवटिया (उपसभापति) श्री प्यारेलालजी गुप्त (मंत्री) श्री जमनादासजी अडुकिया (उपमंत्री) और सदस्यों में सर्वश्री चेनीरामजी जेसराज, जमनालालजी बजाज, लक्ष्मणदासजी डागा, रामदेवजी पोद्दार, विश्वंभरलालजी रुइया, हनुमानप्रसादजी पोद्दार, बेगराजजी गुप्त, दुलीचन्दजी डालमिया, मदनलालजी चौधरी, गोविन्दरामजी सिगतिया, रतनलालजी राधाकिशन, रामेश्वरदासजी आजोदिया, गुलाबरायजी नेमाणी, सागरमलजी मोदी, श्रीनिवासजी बजाज, विश्वेसरदासजी बिड़ला एवम् विश्वम्भरलालजी बुकरेडीवाला के नामों का उल्लेख है। आगत चतुर्थ वर्षों में इन सदस्यों की नामावली में निम्नलिखित नाम और संयुक्त हुये है :–सर्वश्री बालकृष्णलालजी पोद्दार, श्रीगोपालजी नेवटिया, गोविन्दलालजी पित्ती, मदनलालजी जालान, श्रीगजराजजी शिवकरणदास, बेणीप्रसादजी डालमिया, नारायणलालजी पित्ती, रामनारायणजी पोद्दार, चिरंजीलालजी लोयलका, रामचन्द्रजी वैद्य, प्रभूलालजी खेतान, इन्द्रमलजी मोदी, जयदयालजी चादगोठिया, कन्हैलालजी रामपाल विहाणी, शिवप्रतापजी जोशी, महादेवजी सिंधी, मन्नालालजी गुप्त, मुकुन्दलालजी बंशीलाल, डाक्टर खूबचन्दजी बच्छराज गुगलिया रामशरणजी तारबाल ब्रह्मदत्तजी गुप्त व गंगाधर गोपालरामजी। इस सारी अवधि में मंत्रित्व का भार पं० माधवप्रसादजी शर्मा सालिसिटर के कंधों पर रहा।

उपरोक्त नाम वर्ष विशेष की व्यवस्थापक सभा के संगठन से ज्ञातव्य है किन्तु इन सभी वर्षों में घूम फिरकर इन्ही कार्यकर्त्ताओं के मध्य से सम्मेलन की गतिविधियों के संचालन में अग्रगण्य रहे है तथा कतिपय ऐसे कर्मठ व्यक्तियों की सेवायें संस्था को अहर्निश प्राप्त हुई है जिन्होने पद-ग्रहण को कभी महत्व नही दिया किन्तु जिनकी लगन और साधन ने इस संगठन को सदैव संबल प्रदान किया इसे प्रगति के पथ पर अग्रसर होने को उन्मुख किया।

यदा कदा शिथिलता के प्रकरणों का बोध होने के साथ ही यह कर्मवीर नव उमंग के साथ उन नैराश्य वृत्तियों की समाप्ति के लिये तत्पर होकर निकल पड़ते थे–उदासीनता के प्रतिगामी भावों को भगा देने को कटिबद्ध यह समाज हितैषी बन्धु अपने द्वारा अंकुरित इस विटप की रक्षा के हेतु दौड़ पड़ते थे। यही कारण है कि इनको सम्मेलन के प्राणदाताओं के पदों पर समाज ने विभूषित किया है।

किसी भी सगठन की जीवनशक्ति के मुख्य तत्व उसके कार्यकर्त्ता ही होते है तथा पद की भूख और नाम की लालसा मात्र से संस्था में प्रवेशार्थी विशिष्टतम सदस्य के हाथो किसी लाभ से आशान्वित रहना मृगमरीचिका की भांति मतिभ्रम का ही परिचायक होता है। संस्थाओं को जब जब पराभूत होना पड़ा है ऐसे हाथो में जाकर ही वह हुआ जहां सिर्फ अपना महत्व प्रदर्शन करने का दौर चलता रहा व अन्य सभी प्रकरणों में निष्क्रियता के भावों का सचार हुआ।

इसका यह तात्पर्य कदापि नही है कि सामाजिक संगठनों की बागडोर का सूत्र हाथों में रखने को उत्सुक कार्यकर्त्ताओं की कार्यक्षमता के प्रति किसी अश्रद्धा की अभिव्यक्ति हो किन्तु जहा तक इस तरह की संस्थाओं के मान व गौरव का प्रश्न है, मर्यादा व प्रतिष्ठा का सवाल है अपनत्व के आगे परोपकार की भावना का स्थान निर्धारण अधिक लाभकारी सिद्ध होता है। इन्ही विचारो से तिरोहित उन कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन के उत्थान व उत्कर्ष में सर्वोपरि स्थान है जिन्होंने पदों से दूर रहकर, समाज के कण कण में दिनरात रमकर एवम् संस्था की हर गतिविधि में अहर्निश कार्यतत्परता की जोत जगाये हुये जम कर कार्य करते जाना अपने जीवन का लक्ष्य ही बना लिया था।

जैसे जैसे समय ने पलटा खाया, परिस्थितियो में परिवर्तन आया और सम्मेलन ने अपने आपको सुदृढ आधार पर स्थित पाया, कार्यकर्त्ताओं की शैली में भी चमत्कारितापूर्ण चिन्ह प्रकट हुये और धीरे धीरे काल की गति के साथ सम्मेलन का गतिवान चक्र अपने पथ पर अग्रसर होता रहा। इस विकास की अबाधगति में समाज के सभी वर्गों का सामूहिक प्रयास निहित है किसी एक समुदाय की धरोहर सम्मेलन नही है और इसके लहलहाते उद्यान का सिंचन प्रत्येक श्रेणी के मारवाड़ी द्वारा होता रहा है, इस सर्व प्रतिपादित तथ्य से हटना आज किसी भी हालत में सभव नही है।

कार्यकर्त्ताओं का एक तरफ प्रयत्न ही संभवत उतना फलदायक नही होता क्योकि संगठन के दैनन्दिन एवम् कार्य व्यवस्था संचालन व प्रवृत्तियों के नियमित विकास में अर्थ का बहुत अधिक महत्व होता है। अर्थ संचय परोपकार हेतु करना एक ऐसी वृत्ति है जो हर मानव के स्वभाव से मेल नही खाती है। संस्था के उत्कर्ष व सुदृढ आधार की देह यदि सगठनात्मक कार्यक्षमता है तो उसकी रीढ अर्थ को मानना सर्वथा वाछनीय है।

प्रारभिक काल में जिस अर्थसकट का सामना सस्था को करना पड़ा वह वास्तव में भयावह था। जबतक संस्था के उद्देश्यो को पूर्णत समाज ने आत्मसात नही कर लिया, उनका वास्तविकता का सही मूल्याकन नही हुआ तब तक अर्थयोग से वचित रहने के सिवाय कोई मार्ग नही था किन्तु ऐसे समय में भी समाज में अनन्य शिक्षा प्रेमी स्व० सीताराम जी पोद्दार जैसी विभूतिया थी जिनकी विशालहृदयता में कभी ऐसी शंका को स्थान नही था और जो इस सत्य के प्रति आश्वस्त थे कि 'पुण्य कर और कुए में डाल' की मनोवृत्ति समाज के लिये अनिवार्य है। यही वह भावना थी जो उस समय के अर्थ संचयकर्ता समाज के नरश्रेष्ठों के मनोभावो को उद्वेलित करती रहती थी और नवीनतम ढंग से ऐसे ऐसे कार्यों की सफल सम्पूर्ति के रूप में समाज के हितार्थ प्रकट होती थी जिसकी कल्पनामात्र उस काल में होनी एक अनहोनी घटना का स्वरूप धारण कर लेती थी।

अर्थ संकट से त्राण प्राप्ति के साथ सम्मेलन आन्तरिक विरोध की झंझावात के झकोरो से भी लड़खडाता प्रतीत होता था किन्तु अंकुर की लाघवता एवम् पल्लवित विटप की सघनता ने इन का भी सामना सहर्ष किया एव अन्ततः इन विरोधी वायुप्रहारो को भी अपने आपमें समाहित कर यह सस्था विशाल वृक्षाकार के स्वरूप की सार्थकता को सिद्ध करने में सफल हुई है।

सम्मेलन की स्थापना से लेकर आज पर्यंत इसकी प्रवृत्तियो में जो कार्यकर्त्ता सलग्न रहे हैं उन सभी की विशिष्ट सेवाओं का लाभ संस्था के उत्कर्ष में सहकारी रहा है किंतु सर्वश्री महाबीर प्रसाद दाधीच, गौरीशंकर रुइया, श्रीनिवास बजाज। घनश्यामदास पोद्दार व युवक वर्ग में श्री जयदेव मिहानिया व श्री परमेश्वर बगड़ना का उल्लेखनीय सहयोग संस्था को निरंतर प्राप्त हुआ। श्री रामेश्वर साबू ने विषम दैवी प्रकोपों के समय सम्मेलन की सेवाओं का विशिष्ट स्तर अपने अल्पकालीन कार्यकाल में स्थापित किया है गत वर्षों में श्री फतेहचंद झुंझनुवाला जीवन पर्यंत संस्था के विकास में संलग्न रहे। श्री श्रीनिवास बगड़का एवम् श्री मदनलाल जालान के सबल कंधो पर तो प्रारंभ से ही सम्मेलन का भार रहा है किंतु स्वाधीनता काल की प्रभात बेला से सर्वथा निर्लिप्त भाव से संस्था की हर गतिविधि में सर्वाधिक प्रयत्नशील श्री शिवकुमार भुवालका रहे हैं और उनके सफल सहयोगी के रूप में सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला एवम् प्रधान मंत्री श्री रामप्रसाद पोद्दार का सराहनीय योग सम्मेलन को प्राप्त है।

उपयुक्त स्थान व गतिविधियो के संचालनार्थ स्थल के संकोच ने प्रारंभिक काल में सस्था को कष्ट दिया और इस सम्बन्ध में अनेक प्रयोगों के पश्चात् ही आज की सुस्थिरता व निश्चितता का वातावरण कुछ अंशों में निर्माण हुआ है क्यो कि सर्वथा व्यवस्थित होते हुये भी समय की गति के अनुकूल हिन्दी पुस्तकालय विद्यालय एवम् महाविद्यालय को इस कष्ट का अनुभव आज भी हो रहा है और आवास की जिस विषमस्थिति से आज नगरवासी निजी प्रयोग के हेतु भी कष्टो की अकथनीय गाथायें गान करते हैं उसके हल का कोई मार्ग निकलने की निकट भविष्य में संभावना दृष्टिगोचर नही हो रही है।

सम्मेलन की स्थापना का विचार जिन समाज सेवी सज्जनों की मानसिक शक्ति का संयोजन करनेवाला सूत्र रहा है वे वास्तव में एक ऐसे स्वप्न की साकारता के प्रति आशावान रहे होंगे जिसके द्वारा समाज के हर अंग को पुष्ट किया जा सकेगा भोजन, आवास एवं वस्त्र की प्राथमिक आवश्यकताओं से कोई वंचित न रहेगा—स्वहित के साथ साथ समाज व राष्ट्र के हितों को सर्वाधिक महत्वदान देनेवाला दल प्रकट होगा और अन्ततः एक ऐसे सर्वसाधन सम्पन्न समाज का निर्माण संभव हो सकेगा जिसके गौरवशाली अतीत और समुज्ज्वल भविष्य के प्रति शंका को कोई स्थान नही रहेगा।

इस स्वप्न को साकार स्वरूप किस सीमातक समाज के कर्णधार प्रदान करवा सके हैं यह तथ्य तो सामने प्रकट है। सम्मेलन की स्थापना को उस समय संभवतः साधारण महत्व की श्रेणी में ही आंक लिया गया हो पर आज जब कि अपने सेवाकाल के पचास वर्षों की सफल यात्रा सम्पन्न कर यह अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने को तत्पर है तब यह मानना अनिवार्य है कि वास्तव में सम्मेलन की स्थापना एक ऐतिहासिक कदम ही था।

कि तेन हेमगिरिणा रजता द्रिणावा,
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरस्त एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण,
कङ्कोलनिम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः ।।
— भर्तृहरि

उस स्वर्णगिरि व रजतपर्वत से क्या प्रयोजन, जिनके आश्रित वृक्ष, वृक्ष ही रह गये। हम तो उस मलयगिरि की महत्ता को मान देते है, जिसके सम्पर्क से कङ्कोल, नीम व कुटज जैसे कड़वे वृक्ष भी चन्दनमय हो जाते है।

बम्बई के मारवाडी समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में संस्थापित सम्मेलन के बहुमुखी उद्देश्यों के पोषण हेतु अनेक संस्थाओं का आविर्भाव समय समय पर हुआ। राष्ट्रीय विकास की धारा को गतिवान रखना सम्मेलन को अभीष्ट था एवं तदर्थ सहयोगी हर गतिविधि में आगे रहना कार्यकर्त्ताओं का अन्यतम दृढ संकल्प रहता था। आंग्ल दमन चक्र से त्रस्त भारतीय जनमानस में आत्मबल संचारणार्थ तथा अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपनी मर्यादाओं की अक्षुण्यता के रक्षणार्थ सम्मेलन ने ऐसे अनेक जनहितैषी कार्यों का बीडा उस संक्रमण काल में उठाया जो आज हमारे राष्ट्रीय उत्थान के मूलाधार मान्य किये जा रहे है एवं जिनकी संपुष्टि के लिये हमारी प्रादेशिक व केन्द्रीय सरकारें विशेषतः प्रयत्नशील हैं।

सम्मेलन के सर्वप्रथम प्रयासों में राष्ट्र भाषा हिन्दी को गरिमा को समुचित स्थान प्राप्त करवाना रहा और अपनी सभी संस्थाओं को राष्ट्र भाषा माध्यम से संचालित करने का सत्साहस सम्मेलन की अभूतपूर्व परंपरा रही है। उस समय की परिस्थितियों के अनुकूल समाज के लिये उपयोगी ऐसी कोई प्रवृत्ति न थी जिसकी ओर ध्यान नही दिया गया हो तथा उन प्रवृत्तियों को सफलतापूर्वक अग्रसर करने के हेतु विलक्षण सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात भी सम्मेलन की विशेषता रही है।

मारवाडी नगर के अन्य सभी समुदायों की भांति परिवर्तनशील संस्कृति की ओर आकृष्ट थे। प्रत्येक वर्ग में जहा शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक उथल पुथल के चिन्ह परिलक्षित हो रहे थे वहां यह समाज मात्र दर्शक किस भांति रह सकता था बल्कि यहा तो प्रगति की इस दौड़ में अग्रिम चरण रखने की होड सी लगी हुई थी और उत्कर्ष की ओर त्वरित प्रयाण को प्राथमिकता प्रदान करना मारवाड़ी समाज ने कभी अपने मन से विस्मृत नही किया। यह एक निर्विवाद सत्य है कि कार्यारम्भ जितना महत्वपूर्ण उद्देश्य लेकर होता है उसका निर्वाह भी उतना ही कठिन होता है तथा उसके लिये कठिनतम साधना की आवश्यकता पडती है।

परिश्रम और लगन के प्रतीक व धुन के पक्के कार्यकर्त्ता समाज के मर्म से सर्वथा परिचित थे। कहा किस बात की कमी है इस ओर सचेष्ट

थे। इन अदम्य उत्साही महानुभावों ने तत्कालीन व्यवस्थाओं के परिमार्जन हेतु जो कुछ किया और जिस विषम स्थिति के मध्य किया उसका शतांश भी आज किया जा सकता है यह शंकास्पद ही है। साक्षरता की न्यूनतम औसत वाले इस समाज की बौद्धिक चेतना का प्रयत्न उस समय कितना हास्यास्पद लगा होगा और अपने पराये सभी के व्यंग बाणों के आघात नतमस्तक सहन करते हुये आज की पीढ़ी के लिये जो प्रबुद्ध मार्ग उनकी ओर से प्रशस्त हुआ वह वास्तव में अपने आप में एक इतिहास है। उस इतिहास में कितने त्याग व उत्साह के कथानक अंकित हैं उन सभी का विस्तृत उल्लेख यहां सभव नहीं है।

प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भिक चरणो में जब कि मानवता भविष्य के प्रति आशंकित थी–हर समुदाय अपनी स्व-रक्षा की चिन्ता से ग्रस्त था, उस समय किसी भी समाजोपयोगी कार्य का समारम्भ करने का विचारमात्र उस निर्द्वंदता का परिचायक है जो जान हथेली पर लेकर निकल पडनेवाले बहादुरो की ही विरासत है। सन् १९१४ ही वह वर्ष था जब सम्मेलन का बीज अकुरित हुआ–एक ओर युरोपीय राष्ट्रो में संहार का घनघोर चक्कर चल रहा था दूसरी ओर निर्माण की आधारशिला रखने का एक अल्प किन्तु दृढ सकल्प मूर्त रूप धारण कर रहा था–यह कितना विरोधाभास का प्रतीक था पर इसमें विस्मय को कहीं स्थान नही है–यह तो लोकमान्य की रचनात्मक कार्यो की ओर इगित करती हुई ओजस्विनी वाणी के आव्हान का प्रति-उत्तर मात्र था जो आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है–समाज की प्रतिनिधि सस्था के पद पर प्रतिष्ठित है एवं अपने गौरवपूर्ण अतीत में अनेकों निर्माण गाथायें संजोये भविष्य की ओर कदम कदम अग्रसर है।

सम्मेलन की उन्ही निर्माण गाथाओं का संक्षिप्त विवेचन यहा किया जाना समीचीन है। बिना भेदभाव के सभी समुदायों को लाभान्वित करने वाली इन प्रवृत्तियों द्वारा समाज का विविध रूपेण पोषण हुआ है और जीवन को गतिमान रखने के हेतु आवश्यक सभी कार्यो को हाथ में लिया गया है। बालक बालिकाओं के भविष्य निर्माण का स्थल सुलभ करना उतना ही महत्व रखता था जितना नर-नारी की आकाक्षाओं को सबलता प्रदान करनेवाली, उनकी सफल गृहस्थी के रथ की धूरि को नियमित रखनेवाले उपयोगी प्रशिक्षणों को मान प्राप्त था। परावलम्बन की प्रतिक्रियावादी शक्तियों का ह्रास हो तथा स्वावलम्बन की भावनायें विकसित हो यह मूलमत्र था जिसका बृहद् दर्शन इन निर्माण कार्यों में परिलक्षित है।

बम्बई नगर में अनुपातिक जनसख्या की दृष्टि से अर्द्धशताब्दी पूर्व समाज की जो स्थिति थी उसमें किसी भी प्रकार की सर्वथा प्रगतिशील क्रान्ति का स्वप्न चरितार्थ हो सके ऐसी व्यवस्था नही की जा सकती थी फिर भी सम्मेलन ने राष्ट्र भाषा हिन्दी के उत्कर्ष को अपने प्रमुख उद्देश्यो में मान्य कर उसे साकार स्वरूप प्रदान करने की इच्छा से ही एक मात्र हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की–बालको के लिये राष्ट्रभाषा माध्यम से शिक्षण व्यवस्थायुक्त मारवाड़ी विद्यालय का कार्यारम्भ स्वतंत्र रूप से गठित हो चुका था किन्तु बालिकाओं के लिये हिन्दी माध्यम के सर्वप्रथम व एक मात्र विद्यालय का संचालन सम्मेलन द्वारा ही हुआ जिसकी महत्ता आज भी सर्वमान्य है और जिसकी प्रगति का द्योतक है महिला महाविद्यालय जिसकी सर्वाधिक विशिष्टता नगर के एक मात्र हिन्दी माध्यम महाविद्यालय के रूप में है। इन सभी संस्थाओं के क्रियाकलापों एवं सेवाकार्यों का उल्लेख प्रस्तुत किया जा रहा है।

मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय

संत साहित्य की अमरता के अलावा जो कि जनजनार्दन के मृदु कंठो की समवेत स्वर लहरियों में समाहित हो चुकी थी अन्य सभी मार्गों से हिन्दी की रचना वृत्ति के विनाश में निरंतर अंग्रेजी सत्ता तत्पर रही और प्रकाशित साहित्य को किसी क्षेत्र से प्रोत्साहन मिले यह उस समय के शासक वर्ग को सर्वथा असह्य रहा। इन अभावो के मध्य भी सम्मेलन ने विशिष्ट हिन्दी साहित्य के सग्रहालय की स्थापना की। यह सर्वथा नवीन दिशा की ओर समाज को आकृष्ट करने का इगित था–एक ऐसी आदर्शमय दूरदर्शिता थी जिसकी पूर्ति सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता के रूप में आज हमारे समक्ष है।

प्रारम्भ :

आज नरनारायण मन्दिर भवन की द्वितीय मंजिल पर अपने विशाल सभाकक्ष में अवस्थित सर्वांगपूर्ण हिन्दी पुस्तकालय को सर्वप्रथम मुरारजी गोकुलदास मार्केट के एक साधारण स्थल पर तथा दूसरी बार मेसर्स चेनीराम जेसराज के कालवादेवी स्थित निजी स्थान पर कलेवर वृद्धि का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तत्समय "डिबेटिंग युनियन" से नामांकित सम्मेलन ने अनुभव किया कि हिन्दी संग्रहालय के अभाव म हिन्दी व हिन्दी भाषा-भाषियो का जीवन अधूरा है। भाषा उनके पास अवश्य थी पर साहित्य नही था। जो लोग देश व हिन्दी के इतिहास से परिचित है उन्हें यह भली भांति ज्ञात है कि जिस समय इसकी स्थापना हुई बम्बईवासियों के समक्ष कितनी बड़ी समस्या इस दिशा में थी। कांग्रेस में पुनः चेतना जागृत हो रही थी अतः स्वदेशाभिमान-स्वदेशी साहित्य के प्रति रुचि बढ़ती रही थी किन्तु उसको आधार नही मिल रहा था। बौद्धिक चेतना के हेतु एक आधार की जरूरत आम जनता से लेकर जन-प्रतिनिधियो तक को अनुभव हो रही थी जिसकी पूर्ति का प्रयास इन गौरवपूर्ण कार्य की प्रतिष्ठा के साथ किया गया और सम्मेलन गर्व के साथ इस कथन का अधिकारी है कि उसने नगर को सर्वप्रथम और विशाल हिन्दी पुस्तकालय की व्यवस्था का विनम्र उपहार प्रस्तुत किया है।

स्थापनार्थ योगदान :

इस पुस्तकालय के पीछे सम्मेलन के पचास वर्षों की गहन साधना का आलोकित इतिहास और विश्वास है। इस के संस्थापनार्थ कितना अथक परिश्रम करना पडा होगा तथा अर्थ व पुस्तकीय योगदान प्राप्ति के साथ साथ इस के सफल संचालन के निमित्त वातावरण तैयार करने में कितनी शक्ति लगानी पड़ी होगी यह

कल्पनातीत विषय है। पुस्तक क्रय की योजना क्रियान्वित होने के साथ साथ सर्वप्रथम ग्रन्थसंग्रह का प्रयत्न किया गया और हिन्दी पुस्तकों की वृद्धि से संलग्न अंग्रेजी व संस्कृत ग्रंथ भी पुस्तकालय को प्राप्त हुये। श्री सीतारामजी पोद्दार के निजी अंग्रेजी पुस्तक सग्रह से ९५० पुस्तकें प्राप्त होते ही कार्यारंभ हुआ तथा मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास द्वारा वेंकटेश्वर प्रेस के प्रकाशनो में से ९१६ संस्कृत व हिन्दी ग्रन्थों की शीघ्र ही प्राप्ति को विशेष महत्व दिया जाना आवश्यक है। प्रारंभिक अनुदान के रूप में रु. १०००)व रु.१२५२)क्रमश: श्री गौरीशंकरजी गोयका व श्री शिवनारायण जी नेमाणी से हिन्दी की नवीन पुस्तको के लिये प्राप्त हुए थे। श्री मदनलालजी चौधरी के अथक प्रयास से पुस्तकालय को अपने संग्रह की अभिवृद्धि में बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। इस प्रकार समाज के सभी वर्गों के योगदान से उत्थान पथ पर अग्रसर यह संस्था अपने अस्तित्व को स्थायी बनाये हुये है।

संग्रहवृद्धि :

हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट संग्रह के साथ अंग्रेजी, सस्कृत राजस्थानी व गुजराती साहित्य की अभिवृद्धि भी पुस्तकालय की विशेषता रही है। इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, विज्ञान, दर्शन, काव्य, नाटक, उपन्यास, यात्रा विवरण व समीक्षात्मक सभी विषयों के विभिन्न भाषात्मक ग्रन्थो की उपलब्धि यहा हो सकती है। आरंभ के एकादश वर्षो में संग्रहित पुस्तकों की कुल संख्या ५९३० थी वह अब बढकर प्राय. ११००० तक पहुंच चुकी है तथा इस वृद्धि में नगर की विकट समस्या स्थानाभाव बाधा न डालती तो सम्भवतः और अधिक विस्तार इस संस्था का हो सकता था। राजस्थानी साहित्य को अलग संग्रहित करने का प्रयास भी प्रारंभ किया गया है।

सदस्यता अभियान :

पुस्तकालय के प्रथम व द्वितीय श्रेणी के प्रारंभिक सदस्यो की संख्या ६७ थी जब कि तुलनात्मक दृष्टि से आज की सदस्य संख्या सर्वथा सन्तोषजनक है। पुस्तकालय के जीवन सभ्य के रूप में सर्वप्रथम श्री हरगोविन्दराम के नाम का उल्लेख मिलता है। सम्मेलन के आजीवन सदस्यों को पुस्तकालय की सदस्यता भी स्वतः प्राप्त है इससे न केवल सम्मेलन की सदस्य संख्या में वृद्धि हुई अपितु समाज के धनीमानी जनों के सहयोग से पुस्तकालय भी लाभान्वित हुआ।

प्रसार-विस्तार :

समाज में शिक्षा प्रसार और निरंतर साक्षरता अभियानो की सफलता ने पुस्तकालयमें प्राप्त सुविधाओं को विस्तृत आधार पर प्रदान किया एवं सन् १९३४ में सभी पुरातन उपकरणों की सुसज्जा का कार्य सम्पादित हुआ तो सन् १९३६ में विषयक्रम वर्गीकरण को आधुनिकतम स्वरूप प्रदान किया गया। विषयानुक्रमणिका के प्रकाशन की व्यवस्था भी करने का निश्चय हुआ। पुस्तकालय समिति का अलग संगठन भी इसी समय से प्रारम्भ हुआ। सर्वसामान्य जनता संग्रहित साहित्य से पूर्ण लाभ उठायें तथा उसका अधिकाधिक उपयोग करे इस दृष्टि से ग्रन्थवर्धन का मोह त्याग कर उदात्त विचार निर्माण में सहायक पुस्तकों की प्राप्ति का ही प्रयत्न किया गया। सुव्यवस्था एवं सदस्यों की सुविधा के हेतु आदान प्रदान के ढंग में परिवर्तन करने के उद्देश्य से कार्डप्रणाली का समारंभ हुआ। पुस्तकालय की अलग नियमावली तैयार की गई एवं व्यवस्थापिका सभा की स्वीकृति से मुद्रित करवा ली गई। अन्वेक्षण-कर्ताओं के उपयोग हेतु स्थान की अलग व्यवस्था से साहित्य प्रेमी जनों को विशेष सुविधा हुई है।

स्थान-परिवर्तन :

आज जिस सुखद वातावरण में पुस्तकालय अवस्थित है वहा इसकी प्रतिष्ठा दिनांक ८ जून १९४० को हुई जहा धूप हवा की पर्याप्त सुविधा है। मुख्य स्थान के कारण पाठकों की उपस्थित में भी इसका प्रभाव अवश्यंभावी था। पुस्तकों के कपाट जिस क्रमबद्ध ढंग से इसके सभाकक्ष में स्थापित हैं उससे स्थान का अधिकतम उपयोग हुआ है और सौंदर्य अभिवृद्धि में निस्सन्देह सहयोग मिला है। इस सामयिक परिवर्तन से कार्यालय के अन्तर्गत संचालन में आनेवाली कठिनाइयों का भी परिमार्जन हुआ है।

जनसम्पर्क :

बम्बई में अखिल भारत पुस्तकालय संघ के पंचमाधिवेशन सन् १९४२ में पुस्तकालय की ओर से प्रतिनिधि मंडल उपस्थित हुआ तथा "बम्बई एवं यहा के पुस्तकालय" जो उक्त समारोह की स्वागत समिति द्वारा प्रकाशित की गई पुस्तिका थी उसमें संस्था का उल्लेख अंकित हुआ। पुस्तकालय की जनहितैषी प्रवृत्तियों में "भ्रमणशील पुस्तकालय पद्धति" का अनुसरण १ मई १९५३ को किया गया जिससे समयाभाव से स्वयं उपस्थित होकर उपयोग में असमर्थ भाई-बहनों को लाभ हुआ। अल्पावधि में छात्रों एवं महिलाओं को अर्द्धशुल्क में सदस्यता ग्रहण करने की छूट दी गई।

लाभार्थ आयोजन :

सम्मेलन को पुस्तकालय के संचालनार्थ प्रतिवर्ष प्राय: ४–५ हजार की हानि उठाने को बाध्य होना पडता था किन्तु इस तथ्य ने कभी कार्यकर्ताओं को विचलित नही किया। सन् १९४६ में पृथ्वी थियेटर्स के सौजन्य से आयोजित एक मनोरंजक कार्यक्रम से संस्था को लाभ पहुंचा तथा इसी प्रकार सन् १९५४ में पं० इन्द्र लिखित राजस्थानी भाषा के नाटक "चूनड़ी" का प्रदर्शन भी संस्था की आर्थिक हानि की पूर्ति में सहयोगी सिद्ध हुआ।

पठन-पाठन :

पुस्तकालय के सदस्यों में एक ऐसा वर्ग सदैव से रहा है जिन्हें अपनी रुचि के अनुकूल पुस्तक का अध्ययन सभाकक्ष में बैठकर करना ही प्रिय है और इस प्रकार के पठन-पाठन की अभिरुचि वाले पाठको को हर सम्भव रीति से प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। प्रारम्भिक काल से आज तक इस प्रकार के नियमित पाठकों की औसत उपस्थिति कभी सैकडो से नीची नही रही है।

विशिष्ट अतिथि :

नगर में भारत के किसी भी भाग से आनेवाले हिन्दी प्रेमी, लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार एवं कलाविद् का ध्यान इस पुस्तकालय की ओर आकर्षित हुए विना रह नही सकता। आगमन के साथ ही उन के

द्वारा प्रकट उद्‌गारों में इसके उत्कर्ष की गाथा निहित रहती है और वही वास्तव में सच्ची कसौटी है जिससे सम्मेलन की इस समाजसेवी गतिविधि का मूल्यांकन किया जा सकता है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, श्री महाराजकुमार, डा० रघुवीरसिंह, संगीत नाटक एकेडेमी की अध्यक्षा कुमारी निर्मला जोशी, कविवर रामधारीसिंह "दिनकर", डा० राममनोहर लोहिया एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार अनन्त गोपाल शेवडे व श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि के द्वारा अंकित सम्मतियों को गर्व के साथ संस्था ने अपनी अमूल्य निधि स्वीकार करते हुए अपने द्वारा हुई समाज की न्यूनाधिक सेवा से संतोष अर्जित किया है।

इस प्रकार अपने आप में सर्वांगीण विकासकी अलौकिक गरिमा समाहित किये हुये यह पुस्तकालय भी सम्मेलन के साथ ही अपनी सेवाओं के पचास सुखद वर्ष सम्पन्न कर उज्ज्वल भविष्य की ओर आशामय भाव के साथ अग्रसर है।

वाचनालय :

पुस्तकालय के सहकारी विभाग का स्वरूप वाचनालय रहता है। समस्त देश में प्रकाशित पत्रों में आज भी ऐसे अनेक पत्र होंगे जिनका नाम हमारे सम्मुख कभी आ भी न सका हो। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक सभी प्रकार के प्रतिनिधि पत्रों के महत्व को मान्यता देना एक बात है एवं उन्हें क्रय करके अध्ययन की शक्ति जुटाना दूसरी बात और यदि उन विशेष उद्देश्यीय पत्रों को पढ़ा ही न जाय तो उनका प्रकाशन अर्थ भी क्या रखता है। आज जब कि शैक्षणिक सुविधाओं के प्रसारण की आधारशिला पर अवस्थित समाज का बौद्धिक वर्ग अधिकाधिक मननशील होता जा रहा है उसमें पत्रों के उपयोग की प्रतिशत में आंशिक अभिवृद्धि सम्भवतः हुई हो किन्तु अब से अर्ध शताब्दि पूर्व जब सम्मेलन द्वारा वाचनालय को भी पुस्तकालय का अभिन्न अंग मानते हुये उतनी ही महत्ता प्रदान की गई थी उस समय तो क्रय करके पत्र पढ़ना अपराध की श्रेणी में आ जाता था और विशेषत. हिन्दी भाषा-भाषी जनों के लिये तो यह दुरूह समस्या का ही रूप था।

उसी समय से हिन्दी-प्रेमी समाज की ज्ञानपिपासा शांति करने को, संसार में घटित होनेवाली हर गतिविधि से उन्हें जानकार रखने को और समय की सदुपयोगिता के उद्देश्य को सामने रखकर सम्मेलन द्वारा वाचनालय का भी संचालन किया जा रहा है। तत्कालीन प्रकाशित हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी के प्राय सभी पत्र आते थे और प्रभात वेला से रात्रिकालीन समयावधि में वाचकगण अपनी सुविधानुसार उपस्थित होकर अध्ययन किया करते थे। प्रथम प्रकाशित विवरण के अनुसार उस समय आगत पत्रों की कुल संख्या ४९ थी जब कि आज यह संख्या १०५ तक पहुंच रही है।

दैनिक पत्रों के अध्ययनार्थ विशेष प्रकार की व्यवस्था प्रारम्भ से ही रखी गई थी जब कि पाक्षिक, साप्ताहिक व मासिक आदि पत्रों के हेतु विभिन्न व्यवस्थायें समय समय पर की गई और आज पुस्तकालय के सभाकक्ष में ही इसे स्थान प्राप्त है। दैनिक पत्र-अध्ययनार्थी को सहकारी ढंग से पढ़ने की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से अलग कमरे में विशेष प्रकार की मेजें सदैव से प्रस्तुत की गईं।

तत्कालीन पत्रों की सूची से यह ज्ञात होगा कि प्रत्येक भांति की विचारधारावाले पत्रों को स्थान प्राप्त था और उनका समुचित उपयोग होता था जिसके परिणामस्वरूप ही विचारों में परिपक्वता और मनोबल में दृढ़ता का आविर्भाव शनैः शनैः समाज के प्रबुद्ध वर्ग में घर करता जा रहा था जो भावी क्रान्ति के अंकुर अपने आपमें निहित रखता प्रतीत होता था।

सर्वथा निःशुल्क संचालित वाचनालय ऐसी प्रवृत्ति है जिससे सर्वसाधारण जनता पर्याप्त लाभ उठातीहै किन्तु जिसके सफल संचालनार्थ आय की समुचित व्यवस्था अन्य साधनों से ही की जा सकती है। पुस्तकालय में निरंतर चली आ रही आर्थिक विषमता का एक कारण यह भी रहता है किन्तु जिस अनुपात से इस का लाभ समाज के लिये आवश्यक एवं महत्वपूर्ण भाषित है उसे दृष्टिगत रखते हुये अन्य कोई मार्ग नहीं है जिस को स्थानापन्न सुविधा का मान प्रदान किया जा सके।

सम्मेलन के कार्य विवरणों से स्पष्ट है कि वाचनालय का उपयोग अधिकाधिक संख्या में होता रहा है। उपस्थिति अंकन की गणना से औसत निरन्तर अभिवृद्धि की ओर ही लक्षित है और प्रातः एवं सायंकालीन उपस्थिति का नियंत्रण तो यदा कदा कठिनतर हो जाता है। इस प्रवृत्ति को जिस उमंग के साथ प्रारम्भ किया गया था उसी रूप में यह आज भी संचालित है और असन्तुलन और असुरक्षा से भयाक्रान्त जनमानस घात-प्रतिघातों से बचाव का मार्ग ढूंढता रहता है जिसके लिये शिक्षा की आवश्यकता की उसे नितान्त अनुभूति होती है और यही कारण है कि भाषा और व्यवस्था के निर्माण के प्राथमिक प्रयत्न के रूप में इसी प्रकार की प्रवृत्तियों का आश्रय उसे लेने को बाध्य होना पड़ता है। आदिम युग से क्रय करके अध्ययन साधन का उपयोग न के बराबर हुआ है और आज भी वही स्थिति बनी हुई है अतः वाचनालय जैसे स्थल ही इस मनोवृत्ति की तुष्टि के साधन हो सकते है।

पुस्तकों की उपरोक्त संख्या व व्यवस्था के साथ ही साथ समुचित संख्या में सभी प्रकार के पत्रों की सुविधाओं से युक्त इस पुस्तकालय एवं वाचनालय का उपयोग परिदर्शन करनेवाला कोई भी बुद्धिजीवी यह सहज ही अनुमान लगा सकता है कि सम्मेलन ने इनके माध्यम से बम्बई के नागरिकों एवं विशेषतः हिन्दी भाषा-भाषियों की ज्ञान समृद्धि में युगान्तरीय योगदान दिया है।

देश के सुदूर स्थलों से कोने कोने से निकलनेवाले साहित्यिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक प्रकाशनों का चयन एवं संग्रह कर सम्मेलन ने न केवल नागरिक सेवा का स्तर निर्माण किया बल्कि उन तमाम पत्रकारों-साहित्यमर्जकों को बलप्रदान किया है जो तन मन धन से राष्ट्र के नव निर्माण में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा रहे थे।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय

भारतीय संस्कृति में नारी को जो स्थान आदिकाल से प्राप्त है वह किसी की प्रदत्त भेंट नही है अपितु मातृशक्ति की बहुपक्षीय विशिष्टताओं के अभिषेक की प्रतिच्छाया मात्र है। महाविदुषी मैत्रेयी व गार्गी का देश अपनी पुत्रियों के क्रिया कलापों पर गर्व का अधिकार है।

भारत का नारी समुदाय संयुक्त परिवार के सरक्षण का उत्तरदायित्व निरंतर वहन करता आया है और उन्ही की सरक्षता ने हमारे समाज को विशृंखलित होने से उबारा है—बचाया है। कर्तव्य की प्रधानता को अक्षुण्य रखते हुये ही अधिकार का प्रयोग कुटुम्ब के सफल संचालन की प्रथम आवश्यकता है यह अनुभवजनित ज्ञान क्या आज की शिक्षा के अन्तर्गत प्राप्य है?

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि प्राचीनतम संस्कारो के गुणानुवाद मात्र से इस परिवर्तनशील युग के साथ भारत की देवियो की प्रतिष्ठा बनी रह सकती थी। जैसे जैसे परिस्थितियों ने करवट बदली नारी वर्ग की मानसिक चेतनाओं के उद्बोधन के मार्ग प्रशस्त हुये हैं और नर की सही अर्थों में अर्धांगिनी नारी ने अपने निहित गुणों को कुठित होने का अवसर कभी प्रस्तुत नही होने दिया—कन्धे से कन्धा मिलाये वह प्रगति की दौड़ में उस का निरंतर साथ देती रही है।

नारी के सौन्दर्य ने जहा भीषणतम संहारकारी युद्धों का सूत्रपात किया वहां उस की प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक होते हुये भी महान से महान मानव देखे गये। महारानी पद्मिनी के कौशल का लोहा व जौहर का मान क्या विस्मृत करने की बात है। अपनी मर्यादा व प्रतिष्ठा के प्रति इतनी आसक्ति विश्व के इतिहास में भी संभवतः ढूंढे नही मिल सकेगी। इन भारतीय ललनाओं को दूध मुही अवस्था से बिना सिखाये यह शिक्षा प्राप्त हो जाती थी इसका कारण था उनके चहु ओर का व्याप्त वातावरण जिसमें उठते-बैठते सोते जागते यही प्रतिध्वनि का भास होता था कि जीना तो सिर ऊंचा रख के अन्यथा जीना सारहीन है। अतः शिक्षा देने के समय वह शिक्षा, कैसे वातावरण में दी जाती है, इसका भी बहुत महत्व है।

सम्मेलन ने पुस्तकालय व वाचनालय की स्थापना से शैक्षणिक विकास का मार्ग तो प्रशस्त किया किन्तु शिक्षा के सभी उपादानों की ओर अग्रसर होना अभीष्ट था – निश्चित लक्ष्य था अतः मात्र इसी कार्य से सतोष किया जाना उस समय संभव कैसे हो सकता था। सन् १९१२ में मारवाडी विद्यालय एवम् सन् १९१४ में मारवाडी कमर्शियल स्कूल की स्थापना द्वारा हिन्दी माध्यम से आधुनिक शिक्षा का केन्द्र बालकों के लिये तो सुलभ हुआ किन्तु बालिकाओं का शिक्षण प्रारम्भ हो यह विचारणीय तथ्य सर्वदा सामने रहा।

नगर की जनसंख्या में अनुपातिक दृष्टि से उस समय मारवाड़ी समाज तो अधिक नही था किन्तु हिन्दी भाषा-भाषी वर्ग का प्रतिनिधित्व विशेष महत्वपूर्ण था अतः शिक्षण केन्द्र स्थापित कर समाज की बालिकाओं को सुविधा दी जाय यह परमावश्यक तथ्य समाज के तत्कालीन शिक्षाप्रेमी जनों को अभीष्ट था। यद्यपि इसमें अनेक कठिनाईया समक्ष आती हुई दृष्टिगोचर हो रही थी पर बाधाओं ने समाज के कार्य की गति में कभी रुकावट पैदा की हो तथा बढे हुए कदमों को वापस लौटाया हो ऐसा दृष्टान्त कोई ध्यान में आ नही रहा है।

उस समय यातायात आदि की असुविधाओं, जलवायु की विषमताओं एवं अन्य सामाजिक परिस्थितियो के कारण प्रायः मारवाडी सपरिवार बम्बई वास को प्राथमिकता नही देते थे तथा वे स्वयं यहा लम्बी अवधि तक ठहरकर वापस परिवार से मिलने के हेतु राजस्थान की यात्रा बीच बीच में करते रहते थे किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि उन्हें यहा के प्रगति की ओर अग्रसर समाज की रचनात्मक प्रवृत्तियो में कोई रुचि नही थी। उन्ही के माध्यम से यहा करवट बदलते समाज की गतिविधियो का ब्यौरा राजस्थान में प्रचारित होता था और जहा वे प्रतिष्ठापित शैक्षणिक सुविधाओ का लाभ परिवार को प्राप्त करवाने के उद्देश्य से विश्वासपूर्वक यहा आकर बसने को उन्मुख होते थे वहा अपनी जन्मस्थली में ऐसे अंकुर जमा आते थे जो संसार की हलचलों से अनभिज्ञ उस क्षेत्र की जनता में जागरण की विटप लहरी की प्रतिष्ठा के उन्नायक सिद्ध होते थे।

इस प्रकार निरतर विश्वासवृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत यही बस जानेवाले परिवारो के समक्ष अपनी बालिकाओ की समुचित शिक्षा की ज्वलंत समस्या उपस्थित थी और यद्यपि उस समय के सामाजिक बन्धनो से इस ओर अधिक उत्साह की अभिव्यक्ति नही हो पा रही थी फिर भी समाज के कर्णधारोंकी चर्चा का विषय यह अवश्य रहा और उसी के परिणाम स्वरूप इस विद्यालय की स्थापना की ओर कदम बढे।

स्थापना :

रामनवमी के पुनीत पर्व पर विक्रम संवत् १९७३ दिनाक ११ अप्रैल १९१६ को इस बालिका विद्यालय की सस्थापना दादी सेठ अग्यारी लेन में किराये के मकान में हुई जो उस समय की एक बहुत बडी समस्या की पूर्ति के हेतु किया गया अभूतपूर्व रचनात्मक कार्य था। सम्मेलन की प्रेरणा ने अपना योग अवश्य दिया किन्तु इसका श्रेय है शिक्षाप्रेमी स्वर्गीय श्री सीतारामजी पौद्दार को जिन्होंने अहर्निश प्रयत्न कर इसे आधार प्रदान किया और उनके इस स्तुत्य प्रयास का अभिनन्दन समाज ने इस विद्यालय को "पोद्दार बालिका विद्यालय' के नाम से उद्बोधन करके किया।

प्रारम्भिक विकास :

उस समय विद्यालय सचालन का कार्य सर्वथा दुरुह था। आर्थिक हानि की पूर्ति में अनेक बाधायें थी और समाज के ही एक ऐसे वर्ग को भी साथ लेकर चलने में यदा कदा विशेष कठिनाई का अनुभव होता था जो स्त्री शिक्षा के प्रति सर्वथा सशक था। विद्यालय के सौभाग्य से श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला आदि अनेक शिक्षाप्रेमी महानुभावो ने प्रारम्भ में सहयोगी बनने का सत्साहस प्रकट किया लेकिन उदारमना स्व० श्री सीताराम जी पोद्दार ने समस्त घाटे की पूर्ति स्वयं करने की तत्परता प्रदर्शित कर कार्यकर्ताओं को बहुत बड़ी चिन्ता से मुक्त कर

दिया। फाल्गुन कृष्णा ५ संवत् १९७७ में स्वर्गवासी श्री सीतारामजी की विद्यालय के प्रति स्नेहमयी मनोभावनाओ एवं अन्तिम समय प्रकट की गई इच्छाओ को मान्य करते हुये रु. ४००) प्रतिमास सहायता सम्मेलन को उनके फर्म मेसर्स चेनीराम जेसराज की ओर से चालू रही। शनैः शनैः विद्यालय आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ और अब भी उनकी ओर से बराबर रु २५०) प्रतिमास संस्था को प्राप्त हो रहे है। इन सभी उदात्त भावनाओ पर आधारित इस विद्यालय को प्रारंभिक अवस्था में अनेक समस्याओं का समाधान करना पड़ा था। बालिकाओं को घर से विद्यालय लाने व वापस पहुचाने की व्यवस्था की गई तथा मलाड—शान्ताकुज आदि उपनगरो से भी छात्राओ का इस व्यवस्था के अधीन आना जाना सन् १९२९ तक बना रहा था।

प्राथमिक पाठ्य क्रम में हिन्दी को सप्तम और अग्रेजी को चतुर्थ कक्षा तक स्थान प्राप्त था। अध्ययन के अतिरिक्त शिल्प, चित्र, वक्तृत्व व निबन्ध कला के साथ साथ व्यायाम ड्रिल ओर सगीत की शिक्षा भी दी जाती थी। तृतीय कक्षा से अग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था के साथ साथ पंचम से सप्तम कक्षा तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की "प्रथमा" परीक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अग निश्चित किया गया था। सामान्य तौर पर सचालित इस व्यवस्था में अध्यापिकाओ एव विशेष हिन्दी माध्यम की शिक्षिकाओं के अभाव ने कई व्यवधान उपस्थित किये किन्तु सत्कार्य का मार्ग कटकाकीर्ण होता ही है यही मानकर कार्यकर्त्ताओ ने सस्था कार्य को अग्रसर रखा।

नामकरण संस्कार :

विद्यालय के १९ नवंबर १९२२ को आयोजित चतुर्थ वार्षिकोत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह के अध्यक्ष स्व० श्री आनन्दीलालजी पोद्दार के सभापति पद से किये गये प्रस्ताव के अनुसार कार्य कारिणी समिति की स्वीकृति से स्व० श्री सीतारामजी की अप्रतिम सेवा की स्मृति स्थायी रखने के लिये "पोद्दार बालिका विद्यालय" शब्द के आगे स्व० सेठजी का नाम और जोड़ कर इस विद्यालय का नाम "सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय" रख दिया गया।

स्थान प्राप्ति व भवन निर्माण :

संस्थापना के पश्चात् विद्यालय को प्रायः चार बार स्थानान्तरण की समस्या का सामना करना पड़ा। दादी सेठ अग्यारी लेन, हनुमान गली व विट्ठलवाडी के स्थानों का परिवर्तन बढती हुई छात्रा सख्या व अनेक असुविधाओ से विवश होकर किया गया और अन्ततः ठाकुरद्वार रोड स्थित श्री एम० आर० जयकर के बगले में रु. १२५) प्रतिमास पर विद्यालय की व्यवस्था का कुछ मार्ग बैठा किन्तु इसे भी पूर्ण सन्तोषजनक व्यवस्था मानकर सम्मेलन के कार्यकर्त्ता शान्त न रह सके व सिक्कानगर में एक और सुविधाजनक स्थान की व्यवस्था की गई।

विद्यालय में छात्रासख्या निरतर बढ़ रही थी जब कि आय के स्रोत क्षीण होते जा रहे थे। कार्यकर्त्ताओ ने गंभीरतापूर्वक इस उपयोगी संस्था को स्थायित्व प्रदान करने के उपायों पर विचार करना प्रारम्भ किया। स्थायी कोष निर्माण के हेतु बड़ी राशि एकत्र करने की योजना के साथ ही साथ एक सुझाव यह भी चल रहा था कि एक विशाल भवन बनाया जाय जहा सम्मेलन की प्रवृत्तिया संचालित हो सकें और विद्यालय के हेतु स्थानाभाव की समस्या का हल भी निकल जाय एवं आय से घाटे की पूर्ति होती रहे। दोनों विचारधाराओ के आपसी मूल्यांकन के पश्चात् भवन निर्माण को ही प्राथमिकता प्राप्त हुई और चन्दा लिखाने के कार्य में अहर्निश सर्वश्री श्रीनिवासजी बगड़का, मदनलालजी जालान, जमनादासजी अड़ुकिया, रामरिखदासजी परसुरामपुरिया, पण्डित माधवप्रसादजी शर्मा सालीसिटर, व श्री पीरामल माखरिया एवं बहनों में श्रीमती सौभाग्यवतीदेवी दाणी, श्रीमती शान्तिबाई पित्ती, श्रीमती अन्नपूर्णादेवी बालाबक्सजी बगडका आदि का निरन्तर विशेष सहयोग प्राप्त हुआ और समाज को इस सेवाभावी समूह के प्रति आस्था है जिसने घर घर अलख जगा कर मातृसेवा के अनुपम आदर्श स्वरूप इस संस्था को मूर्त रूप प्रदान करने में कोई कसर न छोड़ी तथा समाज में उस समय के दाता महानुभावो के खुले हाथो प्रदत्त दान का मुक्त हृदय से अभिनन्दन आज भी अभीष्ट है।

विद्यालय के इतिहास में उसकी आर्थिक विषमता से लेकर निजी भवन स्थित आत्मनिर्भरतापूर्ण स्थिति में इनका अभूतपूर्व योग रहा है नारी शिक्षा के महत्व को समाज की महिलाओं के हृदय में स्थान मिला और श्रीमती राजकुमारीदेवी मुकुन्दलालजी पित्ती, श्रीमती सुव्रता देवी रुइया, श्रीमती शारदाबाई बिडला, श्रीमती शातिबाई पित्ती राजकुमारीदेवी नारायणलालजी पित्ती आदि बहनो ने श्री मदनलालजी जालान के समयोचित प्रोत्साहन से प्रभावित होकर विद्यालय की तत्कालीन विषम अर्थ व्यवस्था संभालने के हेतु एवं भवन निर्माण तक समुचित अर्थयोग प्रदान किया। समाज एवं विद्यालय उन क्षणो को भूल नही पायेगा जब कि तपती दुपहरियों में मात्र अंगोछा सिरपर रखे श्री श्रीनिवासजी बगड़का विद्यालय की निर्मित होती दिवारों को पानी से भिगोते देखे गये थे। इस पुनीत कार्य की पूर्ति में घर द्वार की सुधि बिसराये ईंटो के ढ़ेर पर आसन जमाये श्री जमनादासजी अड़ुकिया सुबह शाम का भोजन तक वही पाया करते थे। इन अदम्य उत्साही बन्धुओ व बहनों के कर्मशील जीवन का अनुसरण यदि समाज के अग्रगण्य महानुभाव करते रहें तो न जाने कितनी अमर कृतियों का निर्माण संभव हो सकता है।

सन् १९३४ में श्रीगणेश होकर निर्माण हेतु एक असाधारण राशि प्रायः तीन वर्षों के अथक प्रयास से प्राप्त हुई। दाताओं के स्मारक की एक योजना प्रस्तुत की गई और रु. १२३४२६) की लागत से फणसवाड़ी में भवन के लिये ९००वर्गगज जमीन क्रय कर ली गई। भवन निर्माण के हेतु की गई प्रार्थना से प्रभावित मात्र पुरुष ही नही अपितु गृहदेवियों ने भी इस महान यज्ञ में अपना समुचित योग प्रदान किया है यह प्रस्तुत राशि विवरण से स्पष्ट है।

२१००१) श्री राजा पन्नालाल पित्ती
१०००१) „ रामेश्वरदास बिड़ला
५१०१) „ चेनीराम जैसराज
५१०१) „ शिवनारायण रूंगटा
५१०१) श्रीमती बासन्तीदेवी सेक्सरिया
५१०१) श्री मारवाड़ी चेम्बर आफकामर्स लि०
५१००) „ गीगराज जगन्नाथ खेमका ट्रस्ट

५१००) श्री रामनारायण सन्स
५००२) „ गोविन्दराम सेक्सरिया
५००१) „ रामनारायण हरनंदराय रुइया चेरिटीट्रस्ट
५००१) „ नारायणलाल बंशीलाल पित्ती
५०००) „ रामकृष्ण डालमिया
५०००) श्रीमती शांतिदेवी पित्ती
५०००) श्री बैजनाथ जालान
५०००) „ गणेशनारायण पीरामल
४४५५) „ गजाधर सोमानी केद्वारा
२८५१) „ गणेशनारायण ओंकारमल
२६०१) „ कालुराम बृजमोहन
२५०१) „ शिवनारायण नेमाणी
२५०१) „ चतुर्भुज पीरामल
२५०१) „ स्वरूपचद पृथ्वीराज
२५०१) „ आनन्दीलाल रामदेव
२५०१) „ मुकुन्दलाल पित्ती
२५०१) „ बृजमोहन लक्ष्मीनारायण
२५०१) „ गजाधर सोमानी
२५००) „ रामदेव पोद्दार
२४५१) „ घनश्यामदास पोद्दार
२१००) „ जगन्नाथ कन्हैयालाल
२१००) „ आनन्दराम मंगतुराम
२०००) श्रीमती चन्दावति बाई पीलिभीत
१७५१) श्री प्रागदास मथुरादास
१६०१) „ रामरिखदास परसरामपुरिया
१५०२) श्रीमती गणपतिबाई पोद्दार
१५०१) श्री आनन्दीलाल हेमराज
१५०१) „ बृजमोहन सीताराम पोद्दार
१५०१) „ बसन्तलाल गोरखराम
१५०१) श्री चौमनराम मोतीलाल
१५०१) „ श्रीराम रामनिरंजन झुंझनुवाला
१५०१) „ वच्छराज एण्ड कं०
१५०१) श्रीमती जानकीदेवी बजाज
१५००) श्री विश्वम्भरलाल माहेश्वरी
१५००) „ भगवानदास रामचन्द्र
१५००) „ महिला मण्डल, वर्धा
१५००) „ मोतीलाल तार्पाड़िया
१३५२) „ सुखदयाल रामविलास
१२५१) „ वाड़ीलाल नरसिंहदास
१२५१) „ वाड़ीलाल चतुर्भुज
११०१) „ लक्ष्मीनारायण बृजमोहन
११०१) „ हरमुखराय गोपीराम
११०१) श्रीमती कमलाबाई गोवर्धनलाल पित्ती
११०१) श्री गोविन्दलाल पित्ती
११०१) „ हजारीमल किशोरीलाल
११०१) श्री गोरखराम साधूराम
११०१) „ जोहरीमल प्रहलादराय
११००) „ वेंकटलाल पित्ती
११००) „ मोतीलाल भगवतीप्रसाद
११००) „ नौरंगराय कालुराम
११००) „ महावीरप्रसाद मन्नालाल
११००) „ रामभरोसे सत्यप्रकाश
१००१) „ लच्छीराम चुड़ीवाला
१००१) श्रीमती रुक्मिणीबाई सुपुत्री श्री सीताराम पोद्दार
१००१) श्री ताराचन्द घनश्यामदास
१००१) श्रीमती मैनाबाई सूरजमल नेमाणी
१००१) दि सीड्स ट्रेडर्स एसोसियेशन लि०
१००१) श्री लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया
१००१) „ कमला मिल्स लि.०
१००१) „ रामलाल गणपतराय
१००१) „ नन्दराम झाबरमल
१००१) „ जौहरीमल रामलाल
१००१) „ शिवलाल भगवानदास
१००१) „ शान्तिलाल चुन्नीलाल
१००१) „ जे. बसन्तलाल एण्ड कंपनी
१००१) „ वनमाली बापूलाल
१०००) „ विश्वेश्वरलाल चिड़ावेवाला
१००१) „ मूलचन्द पोद्दार
१००१) „ मगनलाल नन्दलाल
१००१) „ लोकनाथ तोलाराम
१००१) „ फकीरचन्द ईश्वरदास
१००१) „ काशीराम सन्तलाल
१०००) „ पन्नालाल पित्ती
१०००) „ रामनिवास रूइया
१०००) „ नारायणलाल पित्ती
१०००) „ दामोदर परमानद
१०००) „ नवनीतलाल ईश्वरलाल
१०००) „ सुरेशचन्द्र भानजी
१०००) „ गुप्तदान
७५१) „ मनोहरदास भैरामल
७५१) „ पालीराम बृजलाल
७५१) „ हरिविलास गंगादत्त
७५१) „ रामचन्द्र बनारसीदास
७५१) „ जमनादास अडुकिया
७५१) „ जुगुलकिशोर मुकुटलाल
७५१) „ मुन्नालाल गोयन्का
७५१) „ देवराम हरवाई
७०१) „ देवकरणदास रामकुमार
७०१) „ दी ग्रेन सीड्स ब्रोकर्स एसोसियशन
५०१) „ विश्वम्भरलाल कन्हैयालाल
५०१) „ त्रिलोकचन्द दलसुखराय

५०१) श्रीमती सौभाग्यवती देवी दानी
५०१) श्री शिवदानमल गंगाराम
५०१) „ रामदत्त श्रीगोपाल
५०१) „ दुर्गादत्त नथमल
५०१) „ गुरुसहायमल रामकिशन
५०१) „ नेमीचन्द हरखचन्द
५०१) „ हरनन्दराय घनश्यामदास
५०१) „ आनन्दराम मुगतुराम
५०१) „ गोरखराम गणपतराम
५०१) „ बालकदास शिवनाथ
५०१) „ जुहारमल मूलचन्द
५०१) „ चम्पालाल रामस्वरूप
५०१) श्रीमती धन्नीबाई रामनारायण पोद्दार
५०१) „ मोहरीबाई हेमराज बुलवाल
५०१) „ दुर्गेश्वरीदेवी गंगाधर
५०१) „ महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार
५०१) „ तुलीबाई जुहारमल रूंगटा
५०१) „ महादेवी पीरामल माखरिया
५०१) „ जानकीदेवी (पीरामलजी की माताजी)
५०१) „ मुन्नीबाई मोतीलाल झुनझुनवाला
५०१) श्री प्रह्लादराय तेजपाल
५०१) „ छोटालाल भीखाभाई
५०१) „ पुजाभाई छोटालाल
५०१) „ हीराचन्द दीपचन्द
५०१) „ छगनलाल खेमचन्द
५०१) „ निवमलाल फकीरचन्द
५०१) „ गुरुदयाल सागरमल
५०१) „ जोहरीमल रामकुमार
५०१) „ देवीसहाय हुकमचन्द
५०१) „ ओंकारमल पोद्दार
५०१) „ चन्द्रकान्त कानजी
५०१) श्रीमती नारायणीदेवी बैजनाथ माखरिया
५०१) श्री गणपतराय रुक्मानन्द
५०१) „ भगवानदास बागला
५०१) दि सीड्स ट्रेडर्स एसोसियशन
५०१) दि हिन्दुस्तानी मर्चेन्ट्स एण्ड क. ए. एसोसियशन लि०
५०१) श्री वासुदेव ज्वालादत्त लोयल्का
५०१) „ मनोहरदास भैरामल
५००) दि बाम्बे काटन ब्रोकर्स एसोसियशन
५००) श्री नारायणदास केदारनाथ
५००) „ बनारसीदास प्रह्लादराय
५००) „ सागरमल मोदी
५००) „ महावीरप्रसाद पन्नालाल
५००) „ आत्माराम भगवानदास
५००) „ धीरूभाई के० ठक्कर
५००) श्री डूंगरसी जीवनदास
५००) „ कन्हैयालाल दीपचन्द
४२०) „ किशनदास विट्ठलदास
४०१) श्रीमती जड़ाव बाई
४०१) श्री रामकुमार मुरारका
४००) „ एल० हरजीवन
४००) „ भगवानदास मुरारजी
३५१) „ भीमराज हरलालका
३५१) „ मूलराज चुड़ीवाला
३५१) „ श्रीहरदयाल नेवटिया
३५१) „ रामलाल हरदेवदास
३०१) „ रामरिसदास हरिबक्स
३०१) „ गोरखराम गोकुलचंद
३०१) „ रामनारायण प्रेमसुखदास
३०१) „ माणिकलाल कन्हैयालाल
३०१) दि ग्रेन सीड्स ब्रोकर्स एसोसियेशन
३०१) श्री तुलसीराम जुगलकिशोर
३००) „ मोहनलाल बेचरदास
३००) „ वल्लभदास जमनादास
३००) „ रतनसी गोपालजी
३००) „ गोकुलदास भीमजी
३००) „ चुन्नीलाल दुर्गाशंकर
२७५) „ भानू काशीनाथ
२५१) „ केशवदेव नेवटिया
२५१) „ विश्वेसरनाथ केदारनाथ भार्गव
२५१) „ महादेव सिंघी
२५१) „ शकरमल बैजनाथ साबू
२५१) „ मिर्जामल रामनारायण
२५१) „ गौरीशंकर सत्यनारायण
२५१) „ श्रीलाल पोद्दार
२५१) „ मटरूमल वेणीप्रसाद
२५१) „ जगन्नाथ किशनलाल
२५१) „ सूरजमल बलदेवसहाय
२५१) „ हरिबक्स रामकुमार
२५१) „ शिवचन्दराय तुलस्यान
२५१) „ बालाबक्स बिरला
२५१) „ ओंकारमल द्वारकादास
२५१) „ देवीदयाल तुलसीराम
२५१) „ रामकिशनदास सागरमल
२५१) „ रामनारायण चिरंजीलाल
२५१) „ रामानन्द शिवनारायण
२५१) „ केशरदेव नागरमल
२५१) „ राधाकिशन ईश्वरदास वैद्य
२५१) „ दुर्गादत्त सेक्सरिया
२५१) „ नरसिंहदास धेलिया
२५१) „ बालचन्द रामेश्वरदास

२५१) श्री बेगराज रामस्वरूप
२५१) „ चिरंजीलाल टीबड़ेवाला
२५१) „ बृजलाल बजरंगलाल
२५१) „ ईश्वरदास देवीदत्त
२५१) „ नरसिंहदास जोधराज
२५१) श्रीमती भूरीबाई जमनादास अटुकिया
२५१) श्री जुगलकिशोर राधाकिशन
२५१) श्रीमती पार्वतीबाई भानीराम रूंगटा
२५१) „ सरस्वतीदेवी विश्वम्भरलाल माहेश्वरी
२५१) „ हरिबाई मगनलाल गोयन्का
२५१) „ कमलादेवी विश्वेमरलाल चिड़ावावाला
२५१) श्री रामदयाल सोमानी
२५१) „ रामकुमार शिवचन्दराय
२५१) श्रीमती चन्द्रावती चिरंजीलाल लोयलका
२५१) „ कृष्णादेवी पूरणमल सिंहानियाँ
२५१) श्री कन्हैयालाल ओंकारमल
२५१) श्री करणीदान परमसुखदास
२५१) दि ग्रेन मर्चेन्ट्स एसोसियेशन
२५१) श्री शिवप्रसाद रूंगटा
२५१) „ मदनलाल जालान
२५१) „ श्रीगोपाल गनेड़ीवाल
२५१) „ सुन्दरलाल
२५१) „ मदनलाल परसरामपुरिया
२५१) „ रामआधार माहेश्वरी
२५१) श्रीमती भीमादेवी शंकरलाल रूंगटा
२५१) श्री बालाबक्स भगवानदास
२५१) „ मनोहरदास भैरामल
२५१) „ जोहारमल रामकरण
२५१) „ रामचन्द्र शारदा
२५१) „ गंगाराम आसाराम
२५१) „ राधाकृष्ण रामचन्द्र
२५१) श्रीमती जड़ावबाई
२५१) श्री बल्लभजी
२५१) „ केशरीसिंह बुद्धसिंह
२५१) „ सोभागमल लोढा
२५१) „ बालमुकुन्द चन्दनमल
२५१) „ मदनलाल राजपुरिया
२५१) „ मुरलीधर चौधरी
२५१) श्रीमती सुन्दरीदेवी
२५१) श्री प्रह्लादराय रामचन्द्र
२५१) „ इन्द्रमल चिरंजीलाल
२५१) „ भीखमलाल फकीरचन्द
२५१) „ शिवनाथ
२५०) श्रीमती जयदेवी बाई
२५०) श्री फतेहचन्द
२५०) „ उमरावलाल भालोटिया
२५०) श्री चौथमल घनश्यामदास
२५०) „ दुलीचन्द मुरलीधर
२५०) „ गोकुलदास लालचन्द
२५०) „ वंशीराम जैसामल
२५०) „ डी. वी. सतपानी
२५०) „ धनराजमल चेतनदास
२५०) „ जैसासिंह चतुर्भुज
२५०) श्रीमती भगवतीदेवी राधाकृष्ण सिंगतिया
२५०) श्री वासुमल टीकमदास

शिलान्यास समारोह :

बम्बई की प्रथम जन प्रतिनिधि सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री बाल गंगाधर खेर के करकमलों द्वारा १३दिसम्बर १९३७ को प्रात ८॥ बजे विद्यालय भवन का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री बैजनाथ मास्करिया ने की तथा उपस्थित अतिथियों में सरदार वल्लभभाई पटेल, बम्बई विधानसभा के अध्यक्ष माननीय श्री मंगलदास पकवासा, भाई युसुफ जे. मेहरअली, श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री गोविन्दलाल पित्ती, श्री पीरामल मास्करिया, सौ. जानकीदेवी जमनालाल बजाज और मातुश्री जानकीबाई कैसरेहिन्द आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। माननीय खेर के अभिभाषण में शिलान्यास प्रस्तर को वर्षों तक भूमि के भीतर दबे रहने की आशंका के भय का निराकरण सरदार पटेल ने किया तथा उन्हें यह आश्वासन दिया कि संभवत.अन्य किसी कटु अनुभव से उन्हें यह कहने को बाध्य किया हो किन्तु मारवाड़ी समाज द्वारा उठाये गये कार्य के बारे में उन्हें विश्वास रखना चाहिये व दो वर्षों के भीतर भवन का उद्घाटन करने को तत्पर रहना चाहिये। अपने दोनों स्वर्गीय नेताओ की स्नेहिल शुभ वाणियोंका ही प्रसाद है कि विद्यालय भवन दो वर्ष में ही तैयार हुआ और आज समाज की गौरव गरिमा की अमिट स्मृति का प्रतीक बना हुआ है।

प्रवेश एवं व्यवस्था :

जून १९३९ से सभी कक्षायें नवीन भवन में स्थानान्तरित हुई तथा नियमित अध्ययनक्रम प्रारम्भ हुआ। पूरे भवन का नाम "विद्याभवन" रखा गया तथा सभाकक्ष का नाम "श्री वंशीलाल पित्ती सभागृह" प्रतिष्ठापित हुआ जो उनके द्वारा तदर्थ प्रदत्त रु. २१०००) के दान की स्मृति को चिरस्थायी रखेगा।

शैक्षणिक गतिविधियां :

हिन्दी माध्यम की गुत्थी जटिल समस्या बनी तथा प्रारम्भ में इसे शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्ति में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्राथमिक कक्षाओं को म्युनिसिपल शिक्षा विभागान्तर्गत मान्यता प्राप्ति में यद्यपि काफी विलम्ब हुआ किन्तु अन्त में विद्यालय की विजय हुई और उसे हिन्दी माध्यम सहित ही मान्य किया गया। १९४१-४२ में माध्यमिक कक्षाओ को भी बम्बई सरकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त हुई। वर्ष १९४३-४४ में पाचवें व उसके अगले वर्ष छठे स्टेंडर्ड की अध्ययन व्यवस्था के साथ यह विद्यालय बालिकाओं को हाईस्कूल तक शिक्षा प्रदान करनेवाला सुविख्यात केन्द्र बनगया व अतीत काल में ५५ छात्राओं

से प्रारम्भ इस विद्यालय में आज १५०० से अधिक बालिकायें एस. एस. सी. तक की सर्वांगपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। सन् १९४६ में प्रथम बार विद्यालय से जो चार छात्रायें मैट्रिक परीक्षा में बैठी उनमें सफलता प्राप्त करनेवाली बालिकाओं में कुमारी सुशीला श्रीनिवास बगड़का का नाम उल्लेख करना समीचीन होगा जो विद्यालय की छात्राओं में प्रथम रही। विद्यालय की स्थापनाकाल से ही जिन शैक्षणिक प्रवृत्तियों पर विशेष ध्यान दिया गया है उनकी संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

१ श्रीमती वासन्तीदेवी गोविन्दराम सेक्सरिया पुस्तकालय :

विद्यालय की छात्राओं एव शिक्षिकाओं के उपयोग में आनेवाली एवं उनके ज्ञानवर्धन में सहयोगी पुस्तकों के सग्रह का अभाव खटकता देखकर दिनांक २९ दिसम्बर १९४१ को पारितोषिक वितरण समारोह के समय विद्यालय की प्रगति से प्रभावित होकर श्रीमती वासन्ती देवी गोविन्दराम सेक्सरिया की ओर से रु १००००) की राशि पुस्तकालय को प्रदान करने की घोषणा हुई। श्रीमती वासंतीदेवी गोविन्दराम सेक्सरिया की इच्छानुसार ही रु ५०००) स्थायी फण्ड, रु ३०००) की हिन्दी व रु १०००) की अंग्रेजी पुस्तकें और रु १०००) फर्नीचर के हेतु निर्धारण की व्यवस्था १७-१०-४१ को कार्यकारिणी ने स्वीकृत की। फर्नीचर पर अधिक हुये व्यय के हेतु रु ११०१) की राशि श्री गोविन्दराम सेक्सरिया द्वारा और प्रदान की गई। पुस्तकालय का सुव्यवस्थित स्वरूप व उसका सज्जित कक्ष बालिकाओं के आकर्षण का केन्द्र रहता है और उनके अध्ययनशील मन की शान्ति का आश्रयस्थल बना हुआ है। पुस्तकालय में उपयोगी पुस्तकों की संख्या निरन्तर अभिवृद्धि पर है।

२ बालिका समिति :

वर्ष १९३९-४० में प्रथम व्यवस्थित प्रयास हुआ कि छात्राओं में अध्ययन के अतिरिक्त भी बौद्धिक विकास व संगठन प्रवृत्ति का प्रसार हो और इसी का मूर्त रूप बालिका समिति का सुदृढ संगठन है। विभिन्न विद्वानों के प्रवचनों का छात्राओं के लाभार्थ आयोजन–छ. माही पत्रिका का प्रकाशन एवं पाठयसामग्री स्टोर का संगठन समिति की प्रारंभिक प्रवृत्तियां रही हैं तो सन् १९४५-४६ में श्रीमती कमला नेहरू मेमोरियल अस्पताल फण्ड में रु ३५००) की राशि भिजवाना, सन् १९४७-४८ में शरणार्थी फण्ड के हेतु ऊनी स्वेटरें बालिकाओं से तैयार करवाना, साक्षरता प्रचार फण्ड में राशि भिजवाना व समिति को अखिल भारत छात्रासघ में प्रतिनिधित्व दिलवाना, सन् १९५२ मार्च से नियमित बालिका पत्रिका का प्रकाशन और उसी वर्ष जनवरी से विद्यालय अनुशासन की दृष्टि से पोशाक निर्धारण के कार्य सफलतापूर्वक समिति ने सम्पन्न किये हैं। समिति ने राष्ट्रीय आव्हान पर दैवी विपत्ति काल में वह चाहे बंगाल बिहार की बाढ़ हो–चाहे अंजार का भूकम्प-चाहे पूना व सूरत की विनाशकारी दुर्घटना हो चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा फण्ड का अभियान सभी में अपना सोत्साह सहकार सदैव दिया है।

यातायात सुविधा :

बालिकाओं को अपने निवासस्थान से विद्यालय आने व जाने के लिये निरापद साधन की व्यवस्था सर्वाधिक आवश्यक समझी जाती थी एवं इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयास सन् १९३४ में हुआ। जब कि श्री ब्रिजलालजी रुंगटा से एक मोटर बस व उसके पूरे एक वर्ष के कुल व्यय का आश्वासन प्राप्त हुआ। छात्राओं की बढ़ती हुई संख्या ने इस साधन को पीछे छोड़ दिया एवं द्वितीय प्रयत्न के फलस्वरूप सन् १९४५-४६ में रु. ११०००) की लागत की १ नवीन बस श्रीमती शान्तीदेवी मातुश्री श्री बृजमोहन लोयलका से प्राप्त हुई जो कालांतर में उपयोग आती रही। इस समय विद्यालय अनुबन्ध के आधार पर तीन बसों की व्यवस्था इस उद्देश्य से रखे हुये है जिनसे न्यूनाधिक सुविधा के साथ कार्य सम्पादित हो रहा है।

वार्षिकोत्सव :

विद्यालय प्रतिवर्ष छात्राओं के कार्य का वास्तविक विश्लेषण करने के उद्देश्य से इस समारोह का आयोजन करता है जिसमें समाज की विशिष्ट विभूतियों की उपस्थिति से लाभान्वित बालिकायें अपने सम्पूर्ण कौशल का उन्मुक्त प्रदर्शन करने को पूर्ण उत्साह से सम्मिलित होती हैं। सन् १९२८ के वार्षिकोत्सव पर कक्षा में प्रथम आनेवाली छात्राओं को रजतपदक प्रदान किये गये और अगले वर्ष ही श्रीमती राजकुमारीदेवी मुकुन्दलाल पित्ती की अध्यक्षता में सर्वोच्च छात्रा को स्वर्णपदक प्रदान करने की घोषणा हुई। श्रीमती सौभाग्यवतीदेवी दाणी के सभापतित्व में सन् १९३२ का पुरस्कार वितरण समारोह विशेष महत्व रखता है। उस समय श्रीमती राजकुमारीदेवी ने रु. ५००) की राशि बालिकाओं के लाभार्थ प्रदान की थी। समाज की प्रगतिशील बहनों में श्रीमती सुव्रतादेवी रुइया, श्रीमती दुर्गेश्वरीदेवी गंगाधर माखरिया और श्रीमती महादेवी पीरामल माखरिया भी समाज की सभी आवश्यकताओं के प्रति सजग रही। १९३४–३५ में वार्षिकोत्सव के समय सर्वप्रथम "मातृशक्ति" नाम से एकाकी नाटक का प्रदर्शन हुआ, अध्यक्ष श्री हेमराज आनन्दीलाल कूलवाल का मुद्रित भाषण प्रचारित किया गया, एक प्रदर्शिनी की भी व्यवस्था हुई और इसी वर्ष से शिक्षा समिति का अलग से गठन प्रारम्भ हुआ ताकि व्यवस्थापक सभा को सहकार प्राप्त हो सके। गत वर्षों से इस अवसर पर सुव्यवस्थित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन छात्रायें करती हैं तथा विशिष्ट अतिथियों को अपनी व अपने विद्यालय की प्रगति का सिंहावलोकन करने का समुचित साधन उपस्थित करती हैं। बम्बई के भूतपूर्व राज्यपाल सर्वश्री महाराजसिंह, हरेकृष्ण मेहताब, श्रीप्रकाश, मुख्य मंत्री सर्वश्री बाल गंगाधर खेर, मोरारजी देसाई, यशवन्तराव चव्हाण एवं एम. एस. कन्नमवार प्रभृति नेतागणों ने इस अवसर से छात्राओं को लाभान्वित किया है और समारोह से परे भी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, डा० राजेन्द्रप्रसाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्री सम्पूर्णानन्द, श्री कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी, श्री भाऊ साहब हिरे, श्री स. का. पाटिल, डा. कैलाश, श्री टी. एस. भरदे, श्री जयनारायण व्यास, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री बसन्तलाल मुरारका श्री सीताराम सेक्सरिया, श्री छगनलाल भारूका, श्री चांदकरण शारदा, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीमती जोकिम अल्वा एवम् श्री व श्रीमती दुलारेलाल भार्गव ने भी संस्था की बालिकाओं को अपने सुविचारों से अवगत करवाया है।

विभिन्न कक्षाओं में प्रशिक्षण कार्य
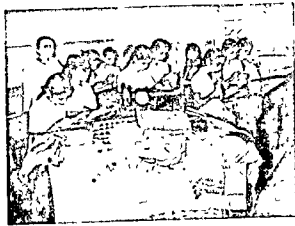
खेलकूद दिवस पर मार्च पास्ट करती बालिकायें

प्रतिमा नृत्य, तितली नृत्य, गरबारास नृत्य

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय का भवन
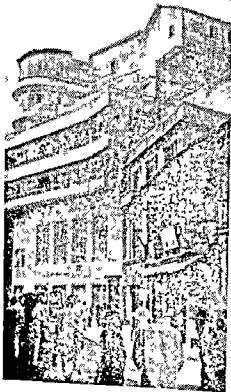
विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झांकी

विविध सोपान :

संस्था की सामयिक आवश्यकताओं के प्रति समाज की जागरूकता में कहीं भी लेशमात्र कमी नहीं रही है। समय के साथ कदम बढ़ाता यह विद्यालय अपने प्रगति पथ पर अग्रसर है। गर्लगाइड दल के गठन से बालिकाओं में स्वरक्षा भावों के साथ साथ सेवावृत्ति का उद्‌बोधन हुआ है। भ्रमण कार्यक्रमों के अन्तर्गत नगर के चतुर्दिशि स्थित रमणीय प्राकृतिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्थलों के प्रत्यक्षदर्शन का लाभ प्राप्त होता है। व्यायाम शिक्षा व प्रतिवर्ष नियमित स्वास्थ्य परीक्षा की व्यवस्था से तन-मन को शक्ति संचय का अवसर मिलता है। पाकशास्त्र, सिलाई संगीत व चित्रादि विविध ललित कलाओं के माध्यम से सांस्कृतिक अध्ययन की नींव पड़ती है। चित्रपट प्रदर्शन यंत्रों के माध्यम से शिक्षण की नवीनतम दिशा में ध्यान जाता है। संस्था के सौभाग्य से बालिका समिति को सन् १९३९-४० में ही श्री घनश्यामदास पोद्दार द्वारा अपने प्रोजेक्टर के उपयोग की अनुमति प्राप्त थी तथा श्री मदनमोहन रूइया द्वारा स्थायी रूप से प्रदत्त प्रोजेक्टर आज संस्था की सम्पत्ति है, अत इसका उपयोग छात्राओं के ज्ञानवर्द्धन का सही साधन सिद्ध हो रहा है। ग्रीष्मकालीन तप्त वायु के झकोरों में राहत प्रदान करनेवाले शीतलजल प्रदायन की सुविधा के लिये संस्था की बालिकाओं का हार्दिक अभिनन्दन श्रीमती दुर्गेश्वरीदेवी गंगाधर मालपानी एवं श्रीमती गोपीबाई भैरुरतन दामाणी को प्राप्त है। श्रीमती कमलाबाई लोयलका के प्रतीक अनुदान रु १२००) से प्रारम्भ असमर्थ छात्रा कोष से आज कितनी आर्थिक संकट से त्रस्त बालिकाओं को लाभ मिलता है।

इस समय बालिका विद्यालय में प्राथमिक एवम् माध्यमिक विभाग के कुल ३३ वर्ग दो पालियों में चलते हैं और उनमें १५०० छात्रा संख्या है तथा १० अध्यापिकायें प्राथमिक विभाग में व ४२ अध्यापिकायें माध्यमिक विभाग में अध्यापन कर रही हैं। विद्यालय में प्रति वर्ष प्राय दो लाख रुपया व्यय होता है जो शुल्क एवम् अनुदान आदि से प्राप्त हो जाता है। विद्यालय का प्रथम छात्रा समूह शालान्त परीक्षा के लिये सन् १९४६ में प्रविष्ठ हुआ था उस समय छात्रा संख्या मात्र ४ थी वहाँ १९६४ की शालान्त परीक्षा के लिये विद्यालय के छात्रा समूह की संख्या १२६ है। विद्यालय की छात्राओं की निरन्तर वृद्धि होती हुई संख्या को देखते हुये, आज स्थानाभाव विद्यालय की प्रगति में एक व्यवधान हो गया।

सभी सामयिक साधनों एवम् उपकरणों से सुसज्ज यह बालिका विद्यालय अपना विशिष्ट स्थान नगर की शैक्षणिक संस्थाओं में बना चुका है यह एक निर्विवाद सत्य है।

राजस्थानी महिला मण्डल

सम्मेलन की उपादेयता का सही स्वरूप उसकी उन प्रवृत्तियों में झलकता है जिनसे समाज को पोषण प्राप्त हुआ है। किसी भी समाज को यदि आगे बढ़ना है तो अपने अंग प्रत्यंग को संभालते हुये ही बढ़ना होगा। मारवाड़ी पुरुष यदि रथ के एक दृढ़ चक्र की भांति त्वरित गति से अग्रसर हो भी जाय तो दूसरे चक्र की मंथर स्थिति उसे धुरि से विलग करते विलम्ब नहीं करती। यही विचार सम्भवत: सम्मेलन के संस्थापक सदस्यों के हृदय में अवश्य रहा होगा अन्यथा यह कदापि संभव नहीं था कि सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक सभी स्थलों पर नारी वर्ग की प्रतिष्ठा को यथोचित रीति से सम्माननीय रखने का अथक प्रयास किया जाता।

मानवोचित निर्बलता का शिकार तो प्रत्येक पुरुष है ही किन्तु उस कमी का भान मारवाड़ी समाज ने कभी प्रकट रूप से होने दिया हो ऐसा नहीं लगता है। समाज हितैषी संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन में जिस उत्साह से पति ने भाग लिया उसी साधना से पत्नि भी जुट गई यह प्रत्यक्षत: परिलक्षित हुआ है। सौ० जानकीदेवी बजाज ने कभी श्री जमनालाल बजाज को यह अनुभव नहीं होने दिया कि उनके राष्ट्र सेवी कार्मों में उन्हें कोई असुविधा हुई हो अथवा वे किसी भी स्थिति में उनसे पीछे रही हों। यही कारण था कि श्री जमनालाल बजाज को बापू का जितना प्यार मिला उससे कहीं अधिक "बा" की सहचरी सेविका वे सिद्ध हुईं। नारी के शोषण की आवाजें बुलन्द करनेवालों को अपने विशेष आवरण से परिवेष्टित नेत्रों द्वारा इस सूक्ष्म तथ्य का अन्वेषण करने में कठिनाई हो सकती है किन्तु मारवाड़ी समाज की साहसी स्त्रियों ने अपने समाज की हित-चिन्तना व विकास प्रवृत्तियों को जितना सहयोग पर्दे के पीछे रहकर भी दिया है वह सर्वथा प्रशंसनीय है।

संगठन के अभाव में मन भटकता है। सामने कोई उद्देश्य न रहने से पथभ्रष्टता के अलावा और चारा ही क्या है। यही कारण है कि अपनों में बैठकर उनका अपना दु ख दर्द बांट लिया जाय तो हल्कापन अनुभव होता है अन्यथा उस भार बोझिल मन को नैराश्य की घटायें घेर लेती हैं और अनायास ही निष्क्रियता से आक्रान्त होकर छटपटाना पड़ता है। इसी उद्देश्य की सम्प्राप्ति के लिये समय समय पर नये नये संगठनों का जन्म होता है और उनकी प्रगति के प्रयत्न होते रहते हैं। प्रयत्नकर्ताओं में दृढ़ मनोबल एवं आत्मविश्वास हुआ तो संसार की कोई भी शक्ति उस संगठन की अभिवृद्धि में बाधक नहीं हो सकती है उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति से नहीं रोक सकती है।

मारवाड़ी समाज के तत्सामयिक अग्रगण्य सज्जनों ने कहीं भी स्त्रियों को पीछे रखने का प्रयत्न नहीं किया। बालकों की शिक्षा के लिये मारवाड़ी विद्यालय का समारंभ जरूरी था तो कन्याओं की शाला के संस्थापन होने तक चैन नहीं लिया गया। विशाल समारोह का सभापतित्व पुरुष ने ग्रहण किया तो स्त्री ने भी उतनी ही कुशलता पूर्वक अध्यक्षपद को सुशोभित किया। नर के हाथों किसी जनोपयोगी कार्य की महत्ता के अनुरूप छोटी राशि निकली तो नारी ने अपने अन्नपूर्णा स्वरूप को प्रतिबिम्बित करते हुये बड़ी से बड़ी रकम दान करने में संकोच को स्थान नहीं दिया। एक दूसरे के पूरक स्वरूप नर और नारी ने समाज

को बराबर योगदान दिया है यह मारवाड़ी समाज के निर्माणकारी प्रयत्नों के इतिहास से प्रतिपादित तथ्य है।

सौ. सौभाग्यवती दाणी, सौ. जानकीबाई "कैसरेहिन्द", सौ. शान्ति देवी पित्ती आदि इसी जीवट की महिलायें रही हैं। जिनके हृदय में समाज के प्रति दर्द था–जिन्हें अपने मारवाड़ी समाज का सर्वांगीण विकास अभीष्ट था। वे ऐसे किसी भी अवसर से चूकना नहीं जानती थी जिससे समाज को लाभान्वित किया जा सके। राष्ट्र की सुविख्यात महिला नेत्रियों से इनका निरन्तर सम्पर्क था और उनकी ओजस्विनी हुंकारों की झकार समाज को इन्हीं के जरिये सुलभ हुआ करती थी।

समय परिवर्तन के साथ साथ जैसे जैसे अधिकाधिक मारवाड़ी परिवारों ने बम्बई में ही वास की व्यवस्था करनी आरम्भ की तथा विवाहादि अवसरों के अतिरिक्त अन्य किसी अवसर का उपयोग आपसी मेल मिलाप व विचार विमर्श की दृष्टि से कठिनतर प्रतीत होने लगा तब एक ऐसे साधन की खोज प्रारम्भ हुई जिसके अन्तर्गत यह सुविधा यथासमय प्राप्त होती रहे। पुरुष वर्ग के लिये तो ऐसे साधनों का सर्वथा अभाव हो ऐसी स्थिति नहीं थी किन्तु नारी समुदाय को अवश्य ही इस दिशा में गंभीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता अनुभव हुई।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है इसी तथ्य के अनुसार एक से अधिक बार यह प्रयत्न किया गया कि राजस्थानी समाज का एक अपना संगठन महिला मण्डल के नाम से हो जो समाज की बहनों का मार्गदर्शन करे। यों तो अनेक प्रवृत्तियों के माध्यम से महिलाओं को लाभ पहुचाने के यत्न हुये हैं किन्तु संगठित रूप से इसी कार्य में सलग्न व्यवस्था का सूत्रपात करना जरूरी माना गया और राजस्थानी महिला मण्डल की नींव डाली गई।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय के वार्षिकोत्सव १९४४-४५ की सभानेत्री श्रीमती सुव्रतादेवी रुइया के विशेष आग्रह पर विद्यालय के तत्वावधान में ही महिला मण्डल की स्थापना का सर्वप्रथम निश्चय प्रकट हुआ। इस विचार की पुष्टि का शुभप्रसंग उपस्थित हुआ सन् १९५२-५३ में जब कि सम्मेलन द्वारा आयोजित होलिकोत्सव के पुण्यपर्व पर राजस्थानी महिलामण्डल की विधिवत स्थापना की घोषणा उत्सव की अध्यक्षा श्रीमती शारदादेवी बिड़ला ने उपस्थित महिलाओं को सम्बोधित करते हुये की तथा इसकी सफलता की हार्दिक मनोकामना प्रकट की। इस कार्य को साकार स्वरूप प्रदान करने व मण्डल के सक्रिय सस्थापन में श्रीमती शाताबाई मारुरिया का महत्वपूर्ण योग रहा है।

स्थापना के साथ ही उमगमय वातावरण में बहनों ने कार्यारम्भ किया। प्रथम कार्यकारिणी समिति की निम्न सदस्यायें निर्वाचित हुईं।

श्रीमती सरस्वतीबाई गाडोदिया	अध्यक्षा
श्रीमती गणपतीबाई पोद्दार	उपाध्यक्षा
डॉ० सुमति गोयन्का	मन्त्रिणी
श्रीमती शाताबाई मारुरिया	स० मन्त्रिणी
,, शशीदेवी गाड़ोदिया	
,, शान्तिबाई पित्ती	
,, भगवतीबाई खेतान	

श्रीमती विद्यावतीबाई पोद्दार
,, त्रिवेणीबाई मारुरिया
,, दुर्गाबाई जालान
,, दुर्गेश्वरीबाई मारुरिया
,, शाताबाई अग्रवाल
,, विजयाबाई मारुरिया
,, मनोयवतीबाई नेवटिया
,, शाताबाई टिबड़ेवाला
,, विद्यादेवी मोदी
,, शाताबाई दारुका
,, भगवतीदेवी सराफ
,, अन्नपूर्णादेवी गोयल
,, ललितादेवी गांधी

अगले वर्ष ही मण्डल के उद्देश्यों की प्रसार व्यवस्था में तेजी लाने के हेतु तथा संगठन को दृढ़ बनाने के लिये विजयादशमी पर अग्रवाल नगर माटुगा में श्रीमती सरस्वतीदेवी गाडोदिया की अध्यक्षता में एक फिल्म प्रदर्शन का आयोजन हुआ। दीपमालिका पर महिला स्नेह-सम्मेलन आयोजित करने की परम्परा भी इसी वर्ष से प्रारम्भ हुई। इसमें बहनों का नृत्य व सगीत कार्यक्रम द्वारा मनोरंजन किया गया। इसी भांति २८ अक्टूबर १९५४ को आयोजित स्नेहसम्मेलन में श्रीमती गाडोदियाने समाज में व्याप्त कुरीतियों के दुष्परिणामों से बहनों को अवगत कराते हुये उनको दूर करने के लिये अनुरोध किया।

दो वर्ष की अल्पावधि में मण्डल की सदस्या संख्या २५३ तक पहुच गई तथा सदस्याओं के समक्ष मण्डल की स्थापना के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण किया गया जो निम्नप्रकार निश्चित हुये थे।

१–औद्योगिक शिक्षण केन्द्र और ललित कला केन्द्रों का संचालन करना।

२ महिलोपयोगी साहित्य का प्रकाशन करना।

३ स्नेहसम्मेलन, प्रदर्शनी, सभा, व्याख्यान, भ्रमण आदि द्वारा महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व सास्कृतिक विकास में सहायता देना।

४ कठिनाइयों में पड़ी हुई बहनों की मदद करना।

५ योग्य छात्राओं को छात्रवृत्ति, पारितोषिक आदि प्रदान करना। सदस्या शुल्क वार्षिक रु. ३) रखा गया। गणगौर के पुनीत दिवस को राजस्थानी लोकगीतों, सगीत, नृत्य और नाटिका के सम्मिलित कार्यक्रम द्वारा आकर्षण का माध्यम बनाया गया।

१९५६–५७ का वर्ष महिला मण्डल के लिये आशा व आकांक्षाओं की पूर्ति का सन्देश लेकर आया। समाज की क्रियाशील सेवा के विविध कार्यों को मण्डल ने हाथ में लिया। औद्योगिक प्रशिक्षण के हेतु सिलाई कक्षा के अन्तर्गत बुनाई, कढ़ाई, सिलाई व मशीन के सभी कार्य सिखाने के उद्देश्य से एक प्रशिक्षित महिला की नियुक्ति की गई तथा इस प्रशिक्षण केन्द्र के लिये श्रीमती सरस्वतीदेवी गाडोदिया, श्रीमती विमलादेवी भुवालका, श्रीमती शाताबाई मारुरिया व श्री एस. एम.

लोयलका ट्रस्ट से सिलाई मशीनें मण्डल को प्राप्त हुई। यह प्रवृत्ति आज भी सफलतापूर्वक सचालित है तथा इसमे ४० बहनें लाभ उठाती हैं।

प्रौढ़ शिक्षण की व्यवस्था समाज की ऐसी बहनो को साक्षर बनाने के उद्देश्य को रखकर की गई थी जिन्हें अवकाश के कुछ ही क्षण गृहस्थ भार को वहन के मध्य प्राप्त होते हैं। अनेक महिलाओं ने इस प्रवृत्ति को अपने इस अभाव की पूर्ति का साधन अब तक बनाया है। विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रमुख राजस्थानी समाज के पर्वों एव त्यौहारों पर प्रस्तुत करने का जो क्रम प्रारम्भ में मण्डल द्वारा निर्धारित हुआ वह आजतक चला आ रहा है। अवसर वही रहते हैं किन्तु कार्यक्रमोंमें निरन्तर परिवर्तन करते हुये उनकी सामयिकता और चित्ताकर्षकता को बनाये रखने का ध्यान सदैव रखा जाता है। चलचित्र प्रदर्शन, रासलीला, भावनृत्य, एकाकी नाटिकायें, भजन व धार्मिक-सांस्कृतिक गीत, सितार-वादन एवं कविता पाठ के कार्यक्रम प्रस्तुत होते रहे हैं।

त्वरित गति से सदस्या संख्या की वृद्धि मण्डल की एक विशेषता रही है। तीसरे वर्ष सदस्याओं की सख्या ३८२ तक पहुच गई। बहनों को स्वावलम्बी बनाने एवं स्वाभिमान के साथ घर में रहकर जीविकोपार्जन के सहायक उद्योग के रूप में पापड़ निर्माण करवाकर विक्रय की व्यवस्था का निर्णय हुआ जिसके अनुसार निरतर पापड़ तैयार करवाये जाते हैं जिसकी बिल्लाई की आय बहनों को प्राप्त हो जाती है जबकि मण्डल न हानि न लाभ के हिसाब से इस प्रवृत्ति का सचालन करता है। विद्याभवन में इस कार्य के लिये स्थानाभाव का अनुभव होने से वर्ष १९५७-५८ में मण्डल कार्यालय ठाकुरद्वार स्थित नाथूराम बाग में स्थानातरित हुआ जहां आज भी मण्डल का स्थायी कार्यालय नवनिर्मित भवन की चतुर्थ मंजिल पर अवस्थित है। इस भवन के नवनिर्माण काल की अल्पावधि में मण्डल ने अनेक स्थानों का उपयोग किया है जिनका उल्लेख आगे इस आलेख में प्रस्तुत किया जा रहा है।

दहेज प्रथा के आमूल विनाश की प्रतिज्ञा मण्डल की अनेक बहनों ने की तथा उसके लिये प्रतिज्ञापत्र भरे। मण्डल की प्रवृत्तियों में वर्ष १९५८-५९ में बाह्य भ्रमण एवं सुविधाजनक शर्तों पर सिलाई यत्र देने की योजनाओं को भी सलग्न किया गया। सामूहिक रूप से नगर के बाहरी वातावरण में पूरा दिन व्यतीत करने के उद्देश्य से भ्रमण योग्य स्थानों का चयन प्रतिवर्ष महिलायें करती है तथा काफी संख्या में इस आयोजन में सम्मिलित होती हैं। समयानुकूल अल्पाहार अथवा अन्य प्रकार की सुविधा कर ली जाती है तथा इस प्रकार पूरा दिन आपसी विचार विमर्श व मनोरंजन के हेतु प्राप्त हो जाता है जिसके कारण अनेक नवीन प्रयासों का श्रीगणेश मण्डल द्वारा होता रहता है।

सिलाई यंत्रों को ऋणरूप में प्रदान कर उचित किश्तों मे उनका मूल्य प्राप्त करने की सुविधा का लाभ महिलाओं ने काफी उठाया है और एक मशीन प्रायोगिक रूप मे देने से प्रारभ हुई इस प्रवृत्ति के अन्तर्गत अब तक कुल १३६ मशीनें बहनों को दी जा चुकी हैं। इस प्रकार अल्प राशि की छूट से बहनों को पारिवारिक बचत का एक उपयोगी साधन प्राप्ति का सुअवसर मण्डल ने प्रस्तुत किया है।

वर्ष १९५९-६० में आयोजित हस्तकला प्रदर्शनी में मण्डल की सदस्याओं के स्वनिर्मित विभिन्न प्रकार के फैन्सी कार्य, चित्रांकन, हाथ से बनी वस्तुओं के सुन्दर नमूने, ऊनी, सूती व रेशमी वस्तुओं की बुनाई, कढ़ाई व सिलाई कार्य और अनेक आकर्षक चीजें रखी गई थी जिसकी विशिष्टता व लोकप्रियता की सर्वाधिक पुष्टि का आधार है दो दिन की निर्धारित अवधि के पश्चात् भी एक दिन के लिये और रखने की माग किया जाना। प्रदर्शनी का उद्घाटन सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री शिवकुमार भुवालका द्वारा हुआ तथा विभागानुसार निम्न वस्तुओं को श्रेष्ठ घोषित किया गया।

		प्रथम	द्वितीय	तृतीय
(क)	एम्ब्राइडरी	बेडकवर	जिराफ नेपकीन्स	साड़ी
(ख)	फैन्सीकाम	टैटिंग	टेबल क्लाथ	बीडपर्स
(ग)	वुलन नीटिंग	पर्स	पुलओवर	—
(घ)	हेण्डीक्राफ्ट	टेम्पल	प्लास्टिकपर वायरकार्य	केनपर्स
(ङ)	पेंटिंग	प्राकृतिक दृश्य	रगाई	मेटरंगाई

वर्ष १९६०-६१ में हस्तकौशल प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था बिड़ला परिवार के सौजन्य से बालिका विद्या मन्दिर, वालकेश्वर, पर की गई। प्रति शनिवार को इस कक्षा का आयोजन किया जाता तथा इसके लिये विशेष प्रशिक्षण प्राप्त महिला की नियुक्ति भी हुई। इसके अन्तर्गत प्रारम्भ में १२ बहनो का नामाकन हुआ किन्तु धीरे धीरे सख्या बढ़ी।

आगामी वर्ष मण्डल की प्रगति का मूर्धन्य मानदण्ड सिद्ध हुआ जब कि महिला मण्डल की सदस्याओं के सद्प्रयत्नों ने तथा अहर्निश परिश्रम ने मण्डल के कोष में प्राय सवा लाख रुपये की वृद्धि की जिसमें श्रीमती रतनीदेवी पोद्दार, मगला बाई खेतान, रुक्मणीदेवी पोद्दार पद्मावाई खेतान, लज्जारानी गोयल, प्रकाशवती अग्रवाल व रुक्मणीदेवी अग्रवाल आदि बहनों का अथक परिश्रम तथा श्री घनश्यामदासजी पोद्दार का समुचित मार्गदर्शन निहित है। इस अभियान की अभूतपूर्व सफलता ने बहनो को प्रोत्साहित किया और उनमें इस आत्मविश्वास की भावना को बल प्रदान किया कि मण्डल की प्रगति के उद्देश्य से किये जाने वाले किसी भी बडे बडे से कार्य का भार सभालने की शक्ति उनमें है। बिडला मातुश्री सभागार में प० इन्द्र लिखित "चूनडी" नाटक इस अवसर पर अभिनीत हुआ जिसमें काफी सफलता प्राप्त हुई। कोष सग्रह ने संस्था को स्वावलम्बी स्वरूप प्रदान किया है।

इस वर्ष प्रशिक्षण केन्द्र की गतिविधियों को भी विस्तार दिया गया और कुछ नवीन प्रवृत्तियों का समावेश उनमें किया गया। पाककक्षा की आवश्यकता निरन्तर अनुभव की जाती रही है। सफल गृहिणी को पाकशास्त्र की जानकारी होना सर्वथा महत्वपूर्ण है। विविध व्यजन निर्माण की आधुनिकतम पद्धति और पुरातन चौके चूल्हे की लाघवता के साथ ही सभी वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग की विधि का प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा प्राप्त कर गृहदेवियां अपने परिवार को अनावश्यक व्यय से राहत दिलाने में और सन्तोष व स्वास्थ्यवर्धन में सहयोगी हो सकती हैं। इस वर्ष का आरभ ३० बहनो के द्वारा हुआ था तथा प्रतिमास एक दिवस तदर्थ निश्चित हुआ था किन्तु इसमें प्रशिक्षणार्थी महिलाओं की सख्या

इस तेजी के साथ बढी है कि दो कक्षाओं की व्यवस्था करने का निश्चय करना पड़ा ।

पुष्पसाजसज्जा का प्रशिक्षण बहनों को अपने घरों की सजावट में कलात्मक पक्ष की ओर अधिक ध्यान देने का साधन समुपस्थित करता है। जापानी पद्धति से पुष्पों का चयन व प्रस्तुतिकरण का ढग बहनो को बताने के उद्देश्य से ही इस विषय की उक्त पद्धति की एक विशेषज्ञा की सेवायें मण्डल ने प्राप्त की है और उनकी देखरेख में ही यह कक्षा नियमित रूप से लगती है जिससे अनेक बहने लाभ उठा रही है।

इन सभी प्रशिक्षण केन्द्रो के संचालनार्थ स्थान की समस्या मण्डल के समक्ष सदैव रही है। नाथूराम बाग के निर्माण काल में यह असुविधा चरम सीमा पर पहुच गयी थी। बिडला बालिका विद्यालय, बालकेश्वर, के सौजन्य से सिलाई कक्षा व पापड निर्माण कार्य को छोड़कर शेष सभी प्रवृत्तियों का सफल सचालन वहा हो जाता है तथा इन गतिविधियो को प्रयोगिक रूप में फणसवाडी में किराये पर प्राप्त भवन में संचालित करने का प्रयास किया गया किन्तु स्थान की तगी से विवश हो सिक्कानिधि वाडी के एक कमरे में इसकी अस्थायी व्यवस्था की गयी। नाथूरामबाग का स्थान प्राय तैयार हो चुका है और अब मण्डल की सब गतिविधियों का सचालन एक स्थान पर ही सभव हो सकेगा।

मण्डल की ६१ आजीवन सदस्याए बनाने का कार्य भी इस वर्ष की विशेषताओ में रहेगा।

वर्ष १९६२–६३ एक युगान्तरकारी परिवर्तन का द्योतक रहा है। राष्ट्र के गौरव के साथ खिलवाड़ करने का दुस्साहस पडोसी देश चीन ने किया और भाई भाई का नारा लगाते हुये धोखा देकर हमारी सीमाओ में घुस आया। इन आक्रान्ताओं को मातृभूमि से निकाल कर बाहर करने के हेतु राष्ट्रीय सरकार को आवश्यक सोना, धन व खून से सिमट सिमट कर झोली भरने की तत्परता सभी ओर प्रकट हुई।

महिला मण्डल की बहिनो नें भी समय की पुकार को हृदयगम किया। दीपावली स्नेह सम्मेलन का स्वरूप ही परिवर्तित हो गया व इंगित मात्र की देर थी कि मुक्तहस्त धन और स्वर्ण दान मे महिलाओ ने अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। इस प्रयास की सफलता से प्रोत्साहित सदस्याओं नें जवानो के ऊनी वस्त्रो की पूर्ति का साहसिक अभियान प्रारम्भ किया एव बहुत थोड़े समय में ही ५०० स्वेटर, मौजे व पुल ओवर आदि तैयार करवा के मोर्चे पर भिजवाये। राष्ट्रीय सुरक्षा की लौ के जगमगाते दीप का मन्द मन्द प्रकाश बहनो के कटकाकीर्ण पथ को आलोकित करता प्रतीत होता था और उन में इस अनवरत परिश्रम से किसी भी प्रकार की थकावट की भावना अथवा निर्बलता व नैराश्य के चिन्ह भी प्रकट नही होते थे।

इन महत्वपूर्ण अल्प सेवाओ को और भी बृहद् रूप प्रदान करने एवं धन एकत्रित करने के साथ-साथ मण्डल की प्रवृत्तियो द्वारा जनमानस को राष्ट्रीय सकट काल में अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक रखने के उद्देश्य से ही श्रीनिकेतनवाटिका मैरिन ड्राइव पर एक "आनन्द मेला" मण्डल ने आयोजित किया जिसकी सम्पूर्ण बचत राष्ट्रीय सुरक्षा कोष मे दे दी गई। विविध वस्तु हाट, क्रीडा, प्रदर्शन, पारितोपिक वितरण एव लघु मनोरंजन कार्यक्रम कठपुतली नृत्य आदि के आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुये। प्रमुख मिलों के खुदरा विक्रय केन्द्रों, बहनों द्वारा घर घर ही तैयार किये गये मिष्टान्न, नमकीन व चाट की दुकानों के अलावा खेल के सामान व खिलौनों की बिक्री भी तेजी पर रही थी। प्रवेश शुल्क और वस्तु क्रय कूपनो से मेले में प्रवेशार्थी नर-नारी इस आयोजन पर मुग्ध थे तथा देश की सुरक्षा के प्रयत्नों में बहनो के इस योगदान की सराहना कर रहे थे। कूपनो पर भाग्य अक से प्राप्त पुरस्कार व अन्य कुछ विशेष वस्तुओ की निलामी से भी अच्छी खासी रकम एकत्रित की जा सकी। इस प्रकार महिलाओं के इस सफल आयोजनो ने उनके राष्ट्रसेवी स्वरूप को प्रस्तुत किया और उनमें समाज के परिष्कार व परिहार की लगन है इस तथ्य को प्रकट करने में सहायता प्रदान की है।

अपने सक्षिप्त सेवाकाल में मण्डल बना-बढ़ा और वटवृक्ष की भाति विस्तृत आकार धारण करने की ओर अग्रसर होता हुआ अपनी शाखा प्रशाखा रूपिणी प्रवृत्तियो द्वारा समाज की महिलाओ को बौद्धिक, मानसिक एव आध्यात्मिक विकास की ओर उन्मुख करने में आशातीत ढग से सफल हुआ है।

नाथूराम बाग के नये भवन की चतुर्थ मजिल पर तीन ब्लाक्स मण्डल ने किराये पर ले लिये है तथा उसी स्थान पर अब सभी गतिविधियो के सचालन को केन्द्रीकृत किया जा रहा है। मण्डल के व्यवस्थित सचालन के हेतु एक अलग नियमावली तैयार कर ली गई है जिसके अधीन प्रतिवर्ष निर्वाचन की व्यवस्था रखी गई है।

मण्डल के कार्यों में बहनो को परामर्श देने एवं उनकी प्रवृत्तियों की निरंतर प्रगति में सहयोग देने के उद्देश्य से सम्मेलन ने एक सम्पर्क समिति का गठन किया जो पारस्परिक विचारो के सामंजस्य का अनूठा प्रयोग है।

श्रीमती भागीरथीबाई मानमल रूइया महिला महाविद्यालय

नारी जागरण की दिशा में जो कार्य सम्मेलन द्वारा हुये हैं उनमें महिला महाविद्यालय की स्थापना को विशेष महत्व प्राप्त है। उच्च शिक्षा की व्यवस्था हिन्दी माध्यम से प्रस्तुत करना एक वाछनीय नवीन प्रयोग है और जिस कार्य के हस्त गत करने में केन्द्रीय एवं राज्य सरकारे अभी एक मत नहीं हो सकी हैं उसकी सुविधा समुपस्थित करना कष्टसाध्य काम है।

अंग्रेजी राज्य की नींव के सुदृढ स्तम्भ व वर्तमान शिक्षण पद्धति के जन्मदाता लार्ड मैकाले के भावों की अभिव्यंजना मात्र कितनी भयावह थी–उसका यह कथन कितना घातक था कि हमें हमारे शासन को सुस्थिरता प्रदान करने के हेतु मात्र लेखपालो की ही आवश्यकता है और वह कार्य शिक्षा की यह प्रणाली समुचित ढग से संपादित कर सकेगी। उस के इस कथन की सत्यता गत दो शताब्दियों के शैक्षणिक विकास से परिलक्षित अवश्य होती है और हमारे विश्वविद्यालय आज भी विशिष्ट औद्योगिक प्रोद्योगिक शिक्षणों को छोडकर अपने शेष पाठ्यक्रमो में ऐसा कोई चमत्कारी परिवर्तन करने में अपनी विवशता ही प्रकट करते हैं जिससे प्रतिवर्ष वृद्धि पाती हुई स्नातको की लेखपाल श्रेणी का झुकाव किसी अन्य प्रयोगिक व क्रियात्मक प्रशिक्षण की ओर आकर्षित किया जा सके। इसका एक प्रमुख कारण है आज भी अंग्रेजी भाषा के प्रति वर्तमान प्रशासकों का मोह तथा अंग्रेजी का अभाव शासन व्यवस्था के स्तर में गिरावट लायेगा यह मान्यता जिसका कोई आधार नही है।

शिक्षण पद्धति के इस हीन प्रभाव से मातृवर्ग को अलग रखने तथा भारतीय संस्कृति जनित भावो का उद्भव उनमें संचारित करने के लिये यदा कदा प्रयोग हुये है और उनकी सफलता असंदिग्ध रूप से विश्व की महानतम विभूतियों ने सहर्ष स्वीकार की है। गुरुदेव के शांतिनिकेतन की भांति ही महाराष्ट्र के महर्षि कर्वे की अमरस्मृति का प्रतीक श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय एक ऐसी ही जागरुक प्रवृत्ति है जिसमें सम्बन्धित विद्यालयो एवं महाविद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रमो को स्थान दिया गया है जो महिलाओं को अपने घर समाज व राष्ट्र के प्रति वास्तविक कर्तव्य का बोध करवाने के साथ ही साथ आत्म निर्भरता की दिशा में अग्रसर करनेवाली गृहविज्ञान सम्बन्धी व अन्य दैनदिन उपयोगी व्यवस्थाओं का प्रशिक्षण प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है तथा साथ ही साथ मातृभाषा व राष्ट्रभाषा के महत्व को अंगीकृत किया गया है।

माध्यमिक शिक्षा तक की व्यवस्था बालिकाओं के लिये सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय में होने के साथ ही सम्मेलन का ध्यान महाविद्यालय में शिक्षा की सुविधा समाज के नारी समुदाय को प्रस्तुत करवाने की ओर लगा। वर्ष १९४४-४५ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर पारित द्वितीय प्रस्ताव में महाविद्यालय की स्थापना को महत्वपूर्ण मानते हुये इसके लिये गभीरता पूर्वक विचार करने का निश्चय प्रकट किया गया। वर्ष १९५१–५२ में प्रकाशित विवरण के निवेदन का मन्तव्य भी उत्तरभारत के विश्वविद्यालयो के विलम्ब से प्रकाशित होनेवाले परीक्षाफलो के साथ राजस्थान व सुदूर प्रदेशो से आगत छात्र-छात्रा समुदाय को प्रवेश प्राप्ति में होनेवाली कठिनाइयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना रहा है। इन प्रयत्नों का अन्त:उद्देश्य सम्भवतः बालको को ही महाविद्यालय सुविधा प्रदान करने का रहा हो किन्तु समय की प्रगति साथ विचार प्रवाह की धारा ने मोड लिया व सन् १९५७–५८ के सत्र से एक नवीन प्रयोग का शुभारम्भ हुआ। जिसकी कल्पना एवम् साकारता श्री जयदेवजी सिंहानिया के अहर्निश प्रयत्नों से ही संभव हो सकी।

इस वर्ष से विद्यालय में एस. एन. डी. टी. विश्वविद्यालय की प्रि. युनिवर्सिटी कक्षा और सन् १९५८–५९ में उक्त व प्रथम वर्षकला परीक्षा की मार्गदर्शिनी कक्षाओं के अध्ययनक्रम की व्यवस्था मारवाड़ी सम्मेलन महिला महाविद्यालय के नाम से की गई। हिन्दी माध्यम से इन परीक्षाओ के हेतु साधन सुलभ करने की दिशा में यह प्रथम कदम था। महिलाओं के लिये सर्वाधिक उपयोगी "गृहविज्ञान" विषय पाठ्यक्रम में अनिवार्य है तथा समय प्रातः ८ से ११ निश्चित हुआ। विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्ति का प्रयत्न तुरन्त चालू कर दिया। अगले वर्ष पहली बार दो छात्राओं को इन कक्षाओ में प्रशिक्षण के आधार पर परीक्षा में बैठाया गया व मान्यता के हेतु किये जानेवाले प्रयासो को त्वरित गति प्रदान की गई।

जून १९६० से महाविद्यालय की पूर्वविश्वविद्यालय (कला) की कक्षा को एस. एन. डी. टी. महिला विश्वविद्यालय ने मान्य किया जिसके फलस्वरूप ही नियमित ढंग से इसके संचालन का सूत्रपात किया गया। इसी वर्ष महाविद्यालय के लिये रु ३००००) का स्थायी कोष रखने का निश्चय सम्मेलन ने किया।

जून १९६१ में प्रथम वर्ष (कला) कक्षा की मान्यता के साथ ही महाविद्यालय में छात्राओ की संख्या में वृद्धि हुई और "पूर्व विश्वविद्यालय" कक्षा की ९ छात्राओ में एक प्रथम तीन द्वितीय और ४ तृतीयश्रेणी में परीक्षोत्तीर्ण हुई। इस वर्ष छात्राओं की सख्या "पूर्व विश्वविद्यालय" एवं "प्रथम वर्ष" कक्षाओ में क्रमश: १७ व ९ थी। महाविद्यालय का पहला प्रयास सफल हुआ और सन्तोषजनक परीक्षा फल के कारण आगत वर्षों में निरन्तर छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई।

महाराष्ट्र प्रशासन की ओर से स्वीकृत रु. ५०००) का अनुदान इस संस्था के लिये उसकी विशिष्टताओं के उपयुक्त उपहार के रूप में प्राप्त हुआ तथा यह आशा बंधी कि यदि प्रशासकीय सहयोग का यही क्रम जारी रहा तो शीघ्र ही संस्था एक सर्वांगपूर्ण महाविद्यालय का स्वरूप ग्रहण कर सकेगी।

इस वर्ष श्रीमती भागीरथीबाई रुइया ट्रस्ट से रु. ७५०००) की दानराशि का वचन मिला तथा महाविद्यालय के हेतु अलग स्थान की व्यवस्था के सम्बन्ध में योजना बनाने का निश्चय किया गया।

छात्राओं की अल्पसंख्या में भी उनकी प्रवृत्तियों के विकास के लिये सभी साधन-सामग्री की व्यवस्था की गई। इसी वर्ष सामाजिक सेवा एवम् चारित्रिक विकास के ध्येय से ही "छात्रा परिषद्" की स्थापना हुई तथा

विद्यालय की बालिकाओं के साथ उनके विविध आयोजनों में महाविद्यालय की छात्राओं की सहयोगी भावनाओं को प्रश्रय प्राप्त हुआ। तेजपाल सभागृह में "छात्रा परिषद" ने प्रथम स्नेह सम्मेलन व वार्षिकोत्सव बंबईप्रदेश कांग्रेस की मंत्रिणी श्रीमती मणीबहन देसाई की अध्यक्षता में मनाया जिसमें प्रस्तुत सभी कार्यक्रमों की अत्यंत सराहना की गई। छात्राओं मे पर्यटन वृत्ति की जागृति के हेतु भी प्रयत्न किये गये तथा नेशनल पार्क बोरिवली इसके लिये प्रथम स्थल चुना गया। छात्रा परिषद् का द्वितीय वार्षिक समारोह दिनांक १९ दिसंबर १९६१ को चौपाटी स्थित भारतीय विद्या भवन में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में हुआ जो काफी सफल रहा। महाविद्यालय की बाह्य गतिविधियों के प्रसार में "छात्रा परिषद" ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कतिपय शर्तों के साथ प्रदत्त रु ७५०००) की उल्लेखनीय दानराशि की स्वीकृति सम्मेलन की साधारण सभा के विशेष अधिवेशन दिनांक २४-३-१९६२ में प्राप्त हुई तथा महाविद्यालय के विकास का मुख्य निमित हुआ।

वर्ष १९६१-६२ मे द्वितीय वर्ष की मान्यता के साथ ही संस्थापना के निर्धारित उद्देश्य की दिशा में एक चरण महाविद्यालय ने और बढ़ाया।

विविध साहित्यिक विषयों पर प्रतिष्ठित विद्वानों के सुरुचिपूर्ण प्रवचनों मे छात्रायें लाभान्वित होने के साथ-साथ महाविद्यालय दिवस आदि महत्वपूर्ण अवसरों पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों व विचित्र परिधान प्रतियोगिताओं सदृश कार्यक्रमों के माध्यम से अपने बाह्यज्ञान की अभिवृद्धि के लिए भी वे प्रयत्नशील हैं। सौहार्दवृद्धि और आपसी मेल-मुलाकात में साधन पर्यटन को भी प्रोत्साहित किया जाता है। दैवी आपदा स्वरूप पूना बाढ़ के संकट में विशेष कोष संग्रह अभियान को सफल बनाकर छात्राओं ने समाज के प्रति अपने कर्तव्य का सही निर्वाह किया है।

वर्ष १९६२-६३ मे महाविद्यालय को बी० ए० (स्पेशल) तक हिन्दी मुख्य विषय की परीक्षा को मान्यता प्राप्त हुई। वर्ष १९६३-६४ में महाविद्यालय को बी० ए० (स्पेशल) परीक्षा के लिये हिन्दी मुख्य विषय व अंग्रेजी-संस्कृत उपविषय और बी०ए० (जनरल) परीक्षा के हेतु हिन्दी, संस्कृत, इतिहास व राजनिति वैकल्पिक विषयों को पढ़ाने के लिये मान्यता प्राप्त है। वर्ष १९६४-६५ के शैक्षणिक वर्ष के लिये संस्कृत मुख्य विषय की भी मान्यता प्राप्त है। इस प्रकार पूर्णतः हिन्दी माध्यम से स्नातक स्तर तक अध्ययन की व्यवस्था से युक्त यह संस्था अपने ढंग की प्रथम व एकमात्र संस्था सिद्ध हुई है। कक्षाओं का संचालन विद्याभवन, फणसवाडी में सातवें खंड पर कतिपय कमरों में संचालित है तथा संस्था को निजी भवन की व्यवस्था से अलंकृत करने का उद्योग किया जा रहा है।

महाराष्ट्र विधान परिषद् के अध्यक्ष श्री० व्ही० एस० पागे के सभापतित्व में आयोजित वार्षिक समारोह के कार्यक्रमों से महाविद्यालय की प्रगति का सही दिग्दर्शन हुआ। महाविद्यालय का चतुर्थ वार्षिक समारोह महाराष्ट्र के शिक्षा उपमंत्री डा० एन० एन० कैलास की अध्यक्षता में 'पाटकर सभागृह' में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। रु० २०००) की प्राप्त एक विशेष उद्देश्यीय दान राशि से वार्षिक रु० १००) का पुरस्कार बी० ए० की छात्रा को विश्व विद्यालय परीक्षा में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने पर देने की व्यवस्था प्रारंभ की गई।

पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला के अंतर्गत छात्राओं को अधिकाधिक उपयोगी पुस्तकों का साधन समुपस्थित होने के साथ ही साथ गृह-विज्ञान व सामान्यज्ञान की क्रियात्मक शिक्षा की सुविधा से छात्रायें लाभान्वित हैं। पुस्तकालय में २२३७ पुस्तकें हैं तथा प्रयोगशाला यद्यपि अभी शैशवावस्था में है फिर भी उसकी उपादेयता असंदिग्ध है।

महाविद्यालय में शैक्षणिक वर्ष १९६३-६४ में छात्राओं की संख्या निम्नलिखित है।

विश्वविद्यालय-पूर्व (प्री- युनिवर्सिटी)	५५
प्रथम वर्ष (एफ० वाय० ए०)	१५
जुनीयर बी० ए०	११
सिनीयर बी०ए०	७
	८८

सन् १९६१ में कु० रीता माथुर को प्रथम श्रेणी व संगीत तथा अनिवार्य हिन्दी विषयों में एवम् सन् १९६२ में श्रीमती शान्ति तिवारी को भूगोल विषय में विद्यापीठ पूर्व कक्षा की परीक्षा में विशेष योग्यता प्राप्त हुई। सन् १९६२ में कु० रीता माथुर को प्रथम वर्ष कक्षा में अंग्रेजी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्ति पर श्रीमती मीठूबाई जालंधरवाला पुरस्कार एवम् सन् १९६३ में कु० प्रेमलता गुप्ता को विद्यापीठपूर्व कक्षा में सांस्कृतिक इतिहास विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्ति पर श्री वनीचंद मोदी पुरस्कार विश्वविद्यालय की ओर से मिला था।

३१ अक्टूबर १९६२ को महाविद्यालय के लाभार्थ आयोजित कार्यक्रम में राजस्थानी भाषा का पं० मुरलीधर दाधीच लिखित नाटक "हूंपलेवै की साधण" प्रस्तुत हुआ। इस अवसर पर विज्ञापन व दानराशि का कुल अंक एक लाख तिरसठ हजार तक पहुंचा जिसमें सर्वथा उल्लेखनीय दान राशि रु० २२०००) मेसर्स चिमनराम मोतीलाल एंड सन्स चेरिटी ट्रस्ट तथा रु० ११११११) मेसर्स बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रूइया ट्रस्ट से तथा शेष अन्य शिक्षा प्रेमी दाताओं से प्राप्त हुई-जो महाविद्यालय की प्रगति से प्रभावित समाज की नारी शिक्षण के प्रति जागरूकता की परिचायक है। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के हेतु राशि एकत्र करने में छात्राओं का सराहनीय योग रहा।

पूर्व निश्चय को क्रियान्वित करने के हेतु महाविद्यालय का नामकरण संस्कार महाराष्ट्र विधान सभा की सदस्या श्रीमती अंजनाबाई मगर की उपस्थिति में दिनांक १७-८-६३ को किया गया और अब यह श्रीमती भागीरथीबाई मानमल रूइया महिला महाविद्यालय इसी नवीन नाम के साथ स्नातक स्तर तक हिन्दी माध्यम के एकमात्र महाविद्यालय के रूप में समाज के नारी समुदाय की सेवा में रत है निजी भवन में स्थानान्तरण के पश्चात् गृह विज्ञान की विशेषशिक्षा बी०ए० में देने की दिशा में महाविद्यालय यत्नशील है।

राजस्थान विद्यार्थी गृह

बंबई नगर जैसे जनसंकुल स्थल पर आवास समस्या ने जो विषम रूप धारण कर रखा है उसमें सभी प्रभावित हैं और विशेषतः मध्यम-वर्गीय परिवारों के नौनिहालों को अपने अध्ययनक्रम को शात व एकात भाव मे चालू रखने में अत्यंत कठिनाई अनुभव होती है। तकनीकी प्रशिक्षण व विशेष उच्च अध्ययन विभागों के केंद्रीकरण ने इस नगर के मुखापेक्षी शिक्षार्थियों के कष्टों में और भी अभिवृद्धि की है। उन्हें जिन विकट परिस्थितियों को अनुभूति यहा आकर रहन-सहन व अपने चहु ओर व्याप्त वातावरण के कारण होती है वह अवर्णनीय है।

प्राचीन गुरुकुलों की प्रशस्ति का मानबिंदु इसी तथ्य पर था कि वहा साम्राज्य का राजकुमार व जनसाधारण के बालक में कोई भेदभाव न था— गुरु की छत्रछाया में यदुश्रेष्ठ कृष्ण और विनयी विप्रवर सुदामा बालकरूप ही थे, उनमें वही प्रगाढ स्नेह की अजस्र धारा का प्रवाह हर क्षण प्रति पल रहता था जो उन गुरुकुलों के सौम्य नैसर्गिक वातावरण की स्वतःस्फूर्त देन थी। शास्त्रीय अध्ययन के साथ-साथ सहकारिता भाव से आत्मीयता वृद्धि करते हुये स्नातकों का जीवन कितना सुखद होगा इसकी कल्पना ही उमंगमय है।

आज के भौतिक युग में विस्तार की ओर दौड़ लगाती आवश्यकताओं ने मानव को अपनी लपेट में कस रखा है। उसकी लालसायें निरंतर अधिकाधिक परावलंबन की ओर उसे खीचती जा रही हैं— प्रकृति के सत्यं शिवं सुदरं स्वरूप को उसके मन से लुप्त करती जा रही है। विशाल अट्टालिकाओं के घेरे में घिरा आज का भौतिकवादी मानव भी प्राचीनता के प्रायः सभी प्रतीकों के प्रति व्यंगात्मक हास्य के भाव मुखरित करता हुआ सदैव ऐसे साधनों की खोज में भटक रहा है जिनसे उसकी आकाक्षाओं के अनुरूप ही सुविधाओं का समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ मिले। इतने बृहदाकार भवनों में संस्थापित शिक्षण स्थलों से इसी अनुपात के आवास स्थलों का संयोग ऐसी ही मानवी इच्छाओं की पूर्ति का दृष्टान्त मान्य किया जा सकता है।

मारवाडी सम्मेलन ने सदैव से प्राचीनता को संरक्षण देने में अथवा प्रगति के मार्ग को किसी भी रूप में अवरुद्ध न करने में अपनी विशिष्टताओं का परित्याग नहीं किया है जिसकी प्रतिरूप उसके द्वारा संस्थापित व संचालित संस्थायें हैं जिनकी उत्कर्ष गाथा में पुरातन व नूतन के सामंजस्य का स्पष्ट बोध है-जिसके क्रिया कलापों में सनातन संस्कृति के मूलमंत्र समाहित हैं तो प्रगतिशील युग की स्वर लहरों से भी वे झंकृत हैं।

विद्यार्थी गृह की कल्पना भी इसी समवेत भाव की एक प्रतिमूर्ति है जिसकी कल्पना प्रायः दो दशाब्दियों पूर्व से ही कार्यकर्ता गण करते आ रहे थे जब कि स्थान प्राप्ति की इतनी दुरूह समस्या भी अध्ययनार्थी के समक्ष न थी। उस समय से ही इन्हीं भावों को प्राधान्यता प्राप्त है कि निश्चितता के साथ सुखद व सौम्य वातावरण में हमारे समाज के बालक अध्ययन करें।

इस दिशा में सक्रिय प्रयास का शुभारंभ वर्ष १९५५-५६ में छात्रावास समिति के गठन के साथ हुआ। विद्यार्थी गृह का कार्य प्रायः डेढ लाख रुपये एकत्र होने पर प्रारंभ करना निश्चित हुआ। प्रथम दान-दाताओं के उदार सहकार से शीघ्र ही रु० १०७६०५) की राशि लिखी गई। गृह की प्रबंध व्यवस्था व निर्माण की स्तरीय देखरेख के लिये एक समिति संगठित की गई।

वर्ष १९५७-५८ में अंधेरी स्थित एक भूमिका भाग (प्लाट संख्या ७१ टी० पी० एस० ६) लल्लूभाई पार्क रोड पर प्रायः ३५०० वर्ग गज क्षेत्र का क्रय किया गया तथा निर्माण कार्य शीघ्रातिशीघ्र चालू हो तदर्थ सम्मेलन की साधारण सभा के असाधारण अधिवेशन में इसके संचालनार्थ निम्नोक्त नाम, नियम व व्यवस्थायें स्वीकृत हुई।

(१) इसका नाम राजस्थान विद्यार्थी-गृह होगा।

(२) मारवाडी सम्मेलन के ट्रस्टी ही इसके ट्रस्टी होंगे एवं इसकी समस्त सम्पत्ति का स्वामित्व उन्हीं ट्रस्टियों का होगा।

(३) विद्यार्थी-गृह के अलग अलग खडों पर नीचे लिखे अनुसार रुपये प्राप्त होने पर उन खंडो पर दाता का या उनके आदेशानुसार अन्य नाम अंकित कर दिया जाय।

(क) जो दाता रु० २५००१) दें उनके द्वारा सूचित नाम विद्यार्थी-गृह के सभागृह पर दिया जाय।

(ख) जो दाता रु० ११००१) दें उनका नाम विद्यार्थी-गृह के ऊपर टावर पर दिया जाय।

(ग) जो दाता रु० १५००१) दें उनका या उनके द्वारा सूचित नाम भोजगृह पर दिया जाय।

(घ) जो दाता रु० ११००१) दें उनका या उनके द्वारा सूचित नाम पुस्तकालय पर दिया जाय।

(ङ) जो दाता रु० ११००१) दें उनका या उनके द्वारा सूचित नाम विद्यार्थी-गृह के उद्यान या खुली नाटयशाला पर दिया जाय।

(च) रु० ११००१) या इससे अधिक देनेवाले दाता का तैल चित्र उपयुक्त स्थान पर लगाया जाय।

(छ) जो दाता रु० ५१०१) दें उनका या उनके द्वारा सूचित नाम विद्यार्थी-गृह के कमरे पर जिसमें ३ विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था होगी, अंकित किया जाय।

(ज) समस्त दाताओं के नाम का एक प्रस्तर लेख विद्यार्थी-गृह के प्रवेश द्वार पर लगाया जाय जिस पर रु० २५०) तक प्रदत्त दान राशि लिखी जाय।

(झ) कमरे के हेतु राशि प्रदान कर्ता का नाम १"×१" के मार्बल पर कमरे के बाहर द्वार पर लगाया जाय।

(ञ) सभागृह के हेतु राशि प्रदान कर्ता का २"×३" आकार का एक तैल चित्र लगाया जाय व उनका नाम भी सभागृह के बाहर अंकित करवाया जाय।

(ट) जो दाता पुस्तकालय, भोजन गृह, खुली नाटचशाला के हेतु राशि प्रदान करेंगे उनके २"×३" आकार के तैल चित्र तथा उनके नाम १"×१" आकार के मार्बल पर अंकित करवा कर योग्य स्थान पर लगा दिये जायें।

(४) कम से कम रु० २५०) प्रदान करने वाले दाता को ही चंदादाताओ के प्रतिनिधित्व का अधिकार होगा।

(५) विद्यार्थी-गृह के उद्देश्य के लिये ही दान देनेवाले व्यक्ति या फर्म सम्मेलन की नियमावली के नियम सख्या १ के अन्तर्गत सम्मेलन के सदस्य नही समझे जायेंगे।

(६) कम से कम १ लाख रुपयों की सहायता के आश्वासन प्राप्त हो जाने के पश्चात् ही एक समिति का सगठन किया जाय जिसमें दो तिहाई सदस्य चदादाताओ के प्रतिनिधि होंगे एव एक तिहाई सख्या के सदस्य मारवाडी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति द्वारा मनोनीत किये जायेंगे। इस समिति को यह अधिकार होगा कि पूर्वोक्त निर्णयो को मान्य रखते हुये विद्यार्थी-गृह के अन्य समस्त कार्य यानि भवन निर्माण वततपश्चात् विद्यार्थी गृह सचालन का समस्त प्रबन्ध करें एव तत्सम्बन्धित नियम भी बना लेवे।

वर्ष १९५८-५९ तक रु० ८२११९) की दानराशि प्राप्त हो चुकी थी तथा रु० ६००००) की राशि के आश्वासन प्राप्त थे। उपरोक्त स्वीकृत नियमों को ध्यानान्तर्गत रखते हुये संस्था के स्वतत्र संगठन का अभियान प्रारभ हुआ। चदादाताओ की गठित नियम उपसमिति के ७ अधिवेशनो में संस्था का सपूर्ण विधान निर्मित हुआ तथा सर्वानुमति से चंदादाताओ द्वारा अपनी दो बैठको में स्वीकार किया गया।

विद्यार्थीगृह का शिलान्यास दिनाक २७ अप्रैल १९६० को छत्रपति शिवाजी जयंती के पुण्यपर्व पर राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री० मोहनलाल सुखाडिया के हाथो सपन्न हुआ जिसमें समाज के विशिष्ट सज्जन बड़ी संख्यामें उपस्थित थे तथा गृह के कार्य व योजना के अनन्य स्नेही व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री फतेहचंद झुनझुनवाला ने समारोह के मुख्य अतिथि के सम्मान में सहभोज का आयोजन किया। उसी वर्ष स्वीकृत विधान के अनुसार संस्था का अलग से पजीकरण भी करवा लिया गया। उस समय तक सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं के प्रयत्न से प्राय सवा लाख रुपये की राशि एकत्रित हो चुकी थी।

भवन निर्माण का कार्य त्वरित गति से अग्रसर हुआ। योजना के अनुसार तीन मजिल के इस भवन मे प्राय २०० छात्रो के आवास की व्यवस्था रहेगी। गृह सदृश्य वातावरण प्रस्तुत करने की हर संभव योजना को सम्मिलित कर सभी प्रकार की सुविधायें प्रदान करना इसकी विशिष्टता रहेगी।

पुस्तकालय, भोजन एवम् सामान्य कक्ष की सेवायें छात्र बंधुओ को अपनापन व सहयोग कामना की ओर गतिवान करने में सहायक सिद्ध होगी तथा व्यायामशाला व खुले चौक मे अवस्थित क्रीड़ा स्थल का उपयोग छात्रगण शारीरिक उत्थान के हेतु कर पायेंगे। भवन को चारो दिशा से परिवेष्टित सुदर उद्यान की नैसर्गिक छटा का लाभ रहेगा जो मन को स्थिरता, चित्त को प्रफुल्लता एवम् हार्दिक भावों को सुकोमलता प्रदान करने में सहायक होगा।

भवन की कुल लागत का अनुमान वर्त्तमान परिस्थितियोंमें प्रायः ६लाख रुपया निर्धारित हुआ है जो समाजके मध्य से ही समाज के बालको की एक ऐसी कृति के समर्पण होगा जिसकी महत्ता का मान सदैव रहा है।

संस्था के लिये यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि उस भवन के निर्माण को शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करवाने एवम् आगामी सत्र से ही छात्रो के प्रवेश को संभव बनानेके उद्देश्य से श्री मदनलालजी राजपुरिया चेरिटी ट्रस्ट की ओर से रुपये डेढ़ लाख की राशि का विशिष्ट दान प्राप्त हुआ है तथा संस्था की साधारण सभा ने अपने अंधेरी स्थित इस भवन का नाम करण 'श्री मदनलाल राजपुरिया विद्यार्थीगृह' करना सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया है।

आशा है इनके इस स्तुत्य दान से संस्था अपनी इस विशेष प्रवृति को राजस्थानी छात्र जगत् के लाभार्थ शीघ्रातिशीघ्र कार्यरत करपायेगी और एक बहुत बड़े अभावकी पूर्ति समाज के साधनो में हो सकेगी।

स्वतन्त्रता आत्मा की एक विशेष स्थिति का नाम है, न कि देश में किसी विशिष्ट शासन का। तोर पिंजड़े में रहकर भी कुछ आज़ाद है, क्योंकि वह आदमी की गाडी नहीं खींचता। बैल और घोड़े खुले रहकर भी गुलाम हैं। क्योंकि वे जुए या साज के नीचे एक टिटकारी पर सिर झुकाकर गर्दन या पीठ लगा देते हैं।

—महात्मा भगवानदीन

प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध सन् १८५७ भारत के जनमानस में क्रान्ति के ऐसे अंकुर बिजारोपित कर गया जिनकी शत शत सघन विटप शाखायें आगत पीढ़ी के क्लान्त तन व थके मन को विश्रामस्थली सदृश आधार प्रदान करने में समर्थ हुई। स्वर्णिम भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के उपरान्त अंधकारकालीन विदेशी परतंत्रता के जुए से जुटा हुआ राष्ट्र अपनी दासता की शृंखलायें छिन्न भिन्न करने को उद्वेलित हुआ और मुगलिया शान शौकत व अंग्रेजी दमन चक्र से आहत प्रत्येक भारतीय के मन में माँ भारती के उजड़े वेश और बिखरे केश का शृंगार व अभिषेक अभीष्ट हुआ।

यह एक संक्रमण काल था जब कि अंग्रेजी सत्ता से टक्कर लेनेवाली सभी शक्तियाँ विशृंखलित हो चुकी थीं—कूटनीतिक घातप्रतिघातों के वार से आत्मबल का ह्रास हो रहा था और सारे देश में एक ऐसे वर्ग का जन्म हो रहा था जिसका एक मात्र कर्त्तव्य यही प्रतीत हो रहा था कि अपने महाप्रभु अंग्रेजों के सभी कृत्यों का पृष्ठपोषण करना और अपना काम बनाना। ऐसे अवसरों पर ही भारत के सौभाग्य से सदैव महापुरुषों का आविर्भाव होता रहा है। इस विषम युग के राष्ट्र कर्णधारों ने किस प्रकार क्रान्ति की उस टिमटिमाती लौ को अपने सर्वस्व त्याग और आत्मबलिदान से प्रज्वलित रखा एवम् उसे एक प्रकाशपुंज का स्वरूप प्रदान किया वह अपने आप में एक इतिहास है जिसकी प्रामाणिकता के प्रति आज सारा विश्व सर्वथा संतुष्ट है।

राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस के संस्थापन में श्री ह्यूम जैसे मानवतावादी अंग्रेज का हाथ होना शंका के लिये कुछ स्थान सम्भवतः छोड़ सकता है किन्तु कांग्रेस के माध्यम से भारत की महान विभूतियों ने देश को जगाया। आबाल वृद्ध को "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का अमर पाठ पुनः स्मरण कराया और अन्ततोगत्वा "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का स्वप्न चरितार्थ करवाया उसे भुलाया नहीं जा सकता। अनेक प्रकार के व्यवधान इस विशिष्ट संगठन के समक्ष आये—बड़े बड़े आघात इसने सहन किये और न जाने कितनी माओं के लाल, बहनों के भाई व कुलवधुओं के सुहाग कांग्रेस के नाम पर, देश की आन पर और राष्ट्र नेताओं के आह्वान पर लुट गये, जेलों में घुट गये एवम् भूमि पर सिर्फ उनके पद चिन्ह छूट गये। इस सारे युगान्तकारी समय

को एक विशेष प्रकार के प्रभाव से सचालित आन्दोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ तथा इसे समाज के प्रत्येक वर्ग, समुदाय एवम् संगठन का सहयोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में मिला जिसने इच्छित फल की प्राप्ति में एक चमत्कारी सयोग उपस्थित किया है।

काग्रेस के पुनर्गठन काल में ही सम्मेलन की स्थापना को इस प्रकार के योग का परिचायक माना जायेगा। इस संयोग को राष्ट्रीय जागरण के साथ मारवाड़ी समाज के जागरण की सज्ञा से भी युक्त किया जा सकता है। लोकमान्य तिलक की हुँकार से चेतना प्राप्त राष्ट्र को सही मार्गदर्शक की प्रतीक्षा थी और अपनी लम्बी जेलयात्रा से वापसी पर उनके द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्य की योजनाओं के सम्बन्ध में परीक्षण प्रारम्भ हुये एवम् जनसाधारण को गभीरतापूर्वक विचार व मनन का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय जिन समस्याओं के गहन अध्ययन में महात्मा गाँधी एवम् राष्ट्र के अन्य नेतागण लगे थे उनमें देश की अनेकता और विभिन्न धर्मों पर आधारित समाज-व्यवस्था मुख्य थी जिनके बन्धन में बन्धी भारतीय जनता को उसके जन्मसिद्ध अधिकार के प्रति जागरुक करना ऐसी विकट समस्या थी जिसका हल निकालने को नेता गण विकल थे।

सारे देश में इस बात को मान्य किया जाने लगा था कि सगठन का अभाव स्वाधीनता के मार्ग का रोडा है तो सगठन की सफलता के हेतु अनेकता के जाल से मुक्ति पाना और धार्मिक बन्धनों को परे रखना सर्वथा वाछनीय है—राष्ट्र के हित के लिये परमावश्यक है। जब इस बुनियादी तथ्य को भारतीय जन के गले उतरते देर न लगी तो फिर उस की प्रतिक्रिया त्वरित गति से परिलक्षित होना स्वाभाविक था।

मारवाड़ी समाज के ध्यान में भी अपने राष्ट्रीय नेतागणों के इस मन्तव्य का आना अवश्यभावी था और यही सबसे बड़ा कारण है कि बम्बई के मारवाडी समाज की प्रवृत्तियों में इन भावनाओं का पूर्णरूपेण समन्वय किया गया एवम् "मारवाडी सम्मेलन, बम्बई" की स्थापना के प्रमुख उद्देश्यों में पारस्परिक प्रेमभाव, एकता व धर्म-निरपेक्षता को प्राथमिकता प्रदान की गई।

राष्ट्रीय जागरण के इस बुनियादी सिद्धान्त को अपनाकर जन्म लेने वाली मारवाडी समाज की इस प्रतिनिधि सस्था सम्मेलन ने न केवल राष्ट्रीय मन्तव्य की अभ्यर्थना की है बल्कि देश की आगे आने-वाली पीढ़ी के समक्ष स्वतंत्रता की सुरक्षा व महत्ता को समझने का आदर्श प्रस्तुत किया है। इन आदर्श परम्पराओं का रक्षण पोषण करती हुई यह सस्था देश के स्वतत्रता आन्दोलन में अपने योगदान के प्रति विनम्र गर्व का अनुभव करती है तथा अपने कार्यकर्त्ताओं के दूर-दर्शितापूर्ण प्रयत्नों का अभिनन्दन करती है जिन्होंने इस आदर्श को निभाया है।

भारतीय सस्कृति को सर्वोपरि महत्व देनेवाले मारवाडी समाज द्वारा इस प्रगतिशील विचारधारा का पोषण एक नई दिशा का सूचक था। भारतीय संस्कृति जो वर्ण व्यवस्था को अपना मूलाधार मानती है, धर्म जिसका प्राण है कर्म जिसका जीवन—उस धर्म व कर्म के रक्षार्थ बलिदानी परम्पराओं की गाथाओं से युक्त इस समाज के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलनों में जो सक्रिय योगदान हुआ उसी ने समाज के एक सपूत को महात्मा गाँधी के पंचम पुत्र की श्रेणी तक पहुँचाया—उसी ने समाज के नरवीरों को अपने शौर्य का, अपनी उदार मनो। भावनाओं का सही मूल्याकन करवाया और उसी ने राजस्थानी को जनजीवन में समुचित स्थान दिलवाया।

धर्मनिरपेक्षता को उद्देश्यों में स्थान देकर सम्मेलन ने राष्ट्रीय भावनाओं में तिरोहित होने का प्रयत्न किया, उसके लिये उसे अपने समाज के ही एक वर्ग विशेष से कटु संघर्ष में उलझना पड़ा। पुराने लेखों से यह स्थिति सामने आती है कि सम्मेलन को जब साथी सहयोगी के हेतु उस समय निवेदन प्रकाश में लाना होता था तो उसी वर्ग द्वारा असहयोग का चक्र चलाया जाता था और उसका एकमात्र कारण था उन पुरातनवादी कट्टर धारणावाले समुदाय का सम्मेलन की धर्मनिर-पेक्ष नीति के प्रति शंका जिसका प्रदर्शन उनकी ओर से सम्मेलन को सुधारक मडली के व्यग्यात्मक विशेषण से अलकृत करके किया जाता था। सम्मेलन ने अपनी राष्ट्रहितैषी एवम् स्वाधीनता सग्राम की पोषक किसी भी परम्परा को इस सामयिक व क्षणिक बाधाओं के जाल में नही फँसने दिया और अपने पथ पर एकाकी बढता रहा— कवीन्द्र रवीन्द्र की "एकला चालो रे" की प्रतिध्वनि उसकी मार्गदर्शिका थी और राष्ट्रीय कल्याण एकमात्र लक्ष्य था। समाज की एकसूत्रता के हिमायती सम्मेलन ने कभी किसी धर्म या समुदाय के लिये घृणा को अपने हृदय में स्थान नही दिया। अपने मूल उद्देश्य की सफलता ही अभीष्ट थी अत "डिबेटिंग युनियन" के अन्तर्गत धार्मिक विचार धारा के प्रवचनों को भी स्थान दिलाकर सम्मेलन ने सहयोगी भावना को प्रोत्साहित किया तथा साथ ही साथ अपने सिद्धान्तों का सौम्यरूप से प्रचार व प्रसार भी किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन का वह काल सार्वजनिक सभाओं के माध्यम से विचार विमर्श को प्राथमिकता प्रदान करनेवाला तथा उन्ही विचारों की पुष्टि के हेतु जहाँ एक ओर देशभक्त कार्यकर्त्ताओं के दल जन-जनार्दन के घर घर अलख जगाते थे वहाँ दूसरी ओर विदेशी सरकार की निसीम सत्ता और उसके पुजारी वर्ग को अपने सशक्त प्रचारतंत्र के साथ राष्ट्रीय जागरण की इस प्रचंडलहरी के दमन हेतु दिन रात एक करता देखा जा सकता था।

सन् १९२३ में सम्मेलन स्वदेशी आन्दोलन की दिशा में बढ़ते कदम का प्रतीक सिद्ध हुआ। सम्मेलन की सभी प्रवृत्तियों की अन्तर्हित नीति सामान्यत. राष्ट्र के उत्कर्ष हेतु योग प्रदान करने एवम् स्वतत्रता आन्दोलन को सशक्त करने में ही निहित थी। ४ फरवरी १९२४ को समाज के गौरवपुत्र श्री जमनालालजी बजाज के अभिनन्दनार्थ मुरारजी गोकुलदास सभागार में आयोजित सार्वजनिक सभा में जिस उत्साह की अभिव्यक्ति थी, उपस्थित विशाल समुदाय में जो उमग थी तथा कार्यकर्त्ताओं की लगन में जो उभार था—वह आनेवाली क्रान्ति का सूचक था—एक ऐसी क्रान्ति जो समाज के व राष्ट्र के स्वरूप को ही बदल देने वाली थी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने अभिनन्दन के उत्तर में स्वदेशी वस्त्रों व वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया—खादी के अधिकाधिक उपयोग व प्रचार का मंत्रदान किया एवम् राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये महान से महान त्याग का उद्बोधन किया।

इस उद्बोधन का चमत्कारिक प्रभाव शीघ्र ही परिलक्षित हुआ। व्यक्तिश: सम्मेलन के जो कार्यकर्त्ता स्वदेशी के प्रयोग में योगदान दे रहे थे उन्होंने सारे समाज का मार्गदर्शन इस दिशा में किया और सम्मेलन व उनके संयुक्त प्रयास स्वदेशी आन्दोलन की ओर ध्यान आकर्षित करने की दिशा में बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुये। वस्तुत: स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग उस समय की सब से बड़ी देशसेवा थी। महात्मा गाँधी ने इस तथ्य को भारतीयों के सामने स्पष्ट किया कि यदि विदेशी वस्तुओं का प्रचलन न रुका तो व्यापार के द्वारा भारत की सत्ता हथियानेवाले अंग्रेजो को इस देश से भगाया नहीं जा सकता और देश के सामने जो अर्थ संकट और परतंत्रता की विवशता है उसका विनाश सम्भव नहीं है। सम्मेलन ने राष्ट्रीय समस्याओं को सही दृष्टिकोण से समझने का सर्वदा प्रयत्न किया और इसी कारण से उसकी समस्त शक्ति का उस समय स्वदेशी आन्दोलन के हेतु केन्द्रीकरण कर दिया गया जो श्री जमनालालजी बजाज के कुशल नेतृत्व में सर्वथा प्रगति पर अग्रसर रहा।

समाचार पत्रों के सहयोग व तत्कालीन बम्बई कांग्रेस कमेटी के सम्पर्क से सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं ने अपनी विविध योजनाओं का प्रतिरूप निर्धारित किया और अधिकांशत: व्यापारी होते हुये भी अपनी संभावित क्षति के प्रति आँख मूंद कर राष्ट्र सेवा की भावना से इस आन्दोलन में सम्मिलित होना उन्होंने अपना पुनीत कर्तव्य माना। व्यवसायिक हानि सहकर भी स्वदेशी के प्रचार को बल प्रदान करने में मारवाड़ी समाज अग्रणी रहा इसमें सम्मेलन का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

सायमन कमीशन का बहिष्कार :

भारतीय जन आन्दोलन में सब से बड़ा योग व भोग यदि किसी भी प्रारम्भिक गतिविधि को प्राप्त हुआ तो वह सायमन कमीशन के बहिष्कार निश्चय को ही हुआ था। यह कमीशन ३ फरवरी १९२८ को भारत के दौरे पर आ रहा था और प्रवेशद्वार पर स्थित बम्बई को सर्वप्रथम मोर्चा लेना था जिसे देश के वरिष्ठ नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त था, जनता का खुला हार्दिक समर्थन था और बच्चे बच्चे के स्वरों में "सायमन लौट जाओ" के गर्जन तर्जन से वातावरण व्याप्त था। उस समय बम्बई के बाजारों में मारवाड़ी समाज का समुचित भार था और सम्मेलन ने इसे ध्यान में रखते हुये ही सर्व प्रथम बम्बई के नागरिकों से कमीशन का विरोध प्रदर्शन करने की अपील की।

पं० नेहरू द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित सर्वदल सम्मेलन विवरण ने यह स्पष्ट कर दिया था कि संगठनात्मक ढंग से सबको साथ लेकर ही इस संघर्ष को चलाया जाय और जिस रूपरेखा का उन्होंने प्रतिपादन किया उसी के अनुरूप सम्मेलन ने सभी मारवाड़ी समाज की सामाजिक व व्यापारिक संस्थाओं को इस महान यज्ञ में आहुति के हेतु आमन्त्रित किया। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स, बॉम्बे काटन ब्रोकर्स एसोसिएशन, ग्रेन एण्ड सीड्स् मर्चेण्ट्स, बुलियन मर्चेण्ट्स, एसोसिएशन, मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, हिन्दुस्तान नेटिव पीस एण्ड गुड्स् मर्चेण्ट्स एसोसिएशन, मारवाड़ी ट्रेडर्स एसोसिएशन व मारवाड़ी एसोसिएशन आदि सभी संस्थाओं का हार्दिक समर्थन सम्मेलन के प्रस्तावित कदम को प्राप्त हुआ और कमीशन के आगमन पर सभी बाजारों को पूर्णत: बन्द रखते हुये विरोध प्रदर्शन का निश्चय किया गया। दैनिक विश्वमित्र व हिन्दू संसार के ४ फर्वरी १९२८ के अंकों में प्रकाशित प्रस्तावों से उस समय के समाज की मनोवृत्ति की स्पष्ट झलक प्रकट होती है तथा सम्मेलन के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री प्यारेलाल गुप्त व पं० माधवप्रसाद शर्मा, सोलिसिटर ने समाज के सभी वर्गों के लोगों को एक स्थान पर राष्ट्रसेवा के व्रत का अनुष्ठान करने की प्रेरणा सम्मेलन द्वारा अनुप्राणित करवाने में अग्रणी होकर बहुत सूझ बूझ का परिचय दिया और उसी का परिणाम है कि समाज की सभी संस्थाओं ने सम्मेलन के नेतृत्व के प्रति आस्था रखी व राष्ट्रीय अभ्युत्थान के प्रत्येक कार्य का सम्पादन सम्मेलन के माध्यम से होता रहा।

सायमन कमीशन को बम्बई में जिस वातावरण का प्रथम दर्शन हुआ वह सारे भारत में उसके विरोध की चिनगारी का प्रतिबिम्ब मात्र था किन्तु इसी से अपने भविष्य की भयावह स्थिति का आभास कमीशन को भली प्रकार हो गया। इस समय सम्मेलन का सभी ने साथ दिया और सम्मेलन के साथ ने—समाज की अन्य सभी संस्थाओं के सहयोग ने और बम्बई के दृढ़संकल्पी नागरिकों की भावनाओं ने ऐसा एक सूत्रीय सामञ्जस्य धारण किया कि इस जन आन्दोलन से कोई विलग न रहे—सभी एकाकार प्रतीत हुये और सबने सब कुछ किया जिसके फलस्वरूप ही अभूतपूर्व सफलता हस्तगत हुई; यह एक निर्विवाद सत्य प्रकट हुआ।

सम्मेलन के रचनात्मक इतिहास में जनहितैषी व राष्ट्रीय संकटकालीन स्थितियों के परिमार्जनार्थ प्रयत्नों का विस्तृत आलेख हुआ है तथा समय समय पर सम्मेलन ने विशाल कोष संग्रह कर सेवाभावी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया है किन्तु तिलक स्वराज्य फण्ड एक क्रान्तिकारी आन्दोलन का ही स्वरूप था। राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य युद्ध का एक दृढ़ दुर्ग था जिसका बृहद् लक्ष्य महात्माजी के सहयोग से एक करोड़ की धनराशि, एक करोड़ चर्खे और एक करोड़ जनों को राष्ट्रीय महासभा की सदस्यता ग्रहण करवाने का निर्धारित किया गया था। फण्ड को निश्चित लक्ष्य तक पहुँचाने में सम्मेलन का योग और समाज के उदारमना राष्ट्र सेवी बन्धुओं का खुला समर्थन काफी सहकारी रहा तथा देश के सभी स्थलों के सभी समुदायों की भाँति बम्बई के मारवाड़ी समाज की ओर से भी समुचित राशि फण्ड में दी गई। विदेशी सरकार जितनी कुटिलता से इसकी सफलता में बाधायें डाल रही थी तथा व्यापारी वर्ग को जिन हथकंडों से बहकाया जा रहा था उसका लेशमात्र प्रभाव समाज पर नहीं पड़ा और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरूप से विशाल राशियां फण्ड के हेतु मारवाड़ी समाज की ओर से अर्पित हुई जिन सभी का उल्लेख यहाँ सम्भव नहीं है किन्तु सम्मेलन के तत्कालीन सभापति श्री रामदेवजी पोद्दार के पितृश्री आनन्दीलालजी पोद्दार ने तीन लाख की राशि प्रेषित की व अन्य बड़ी बड़ी रकमें भी दी गयी थी जो उस समय समाज के धनिक वर्ग के राष्ट्र सेवा संकल्प की परिचायिका है।

परोक्षरूप से राष्ट्रीय आन्दोलन के संचालन में अर्थयोग की रीढ़ को दृढ़तम रखने में तथा प्रत्यक्षरूपेण मोर्चे पर आजाने में अर्थ के इस

स्त्रोत की अवरुद्धि से बचाव के लिये सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं को सर्वदा मध्यममार्गी पद्धति का अनुसरण करने को विवश होना पड़ा था तथा प्रत्यक्षत: संघर्षरत व्यक्तियों को हरसंभव सहयोग प्रदान करने एवम् स्वयम् मौन सेवा से संतोष व प्रकाश में आने की तथा नेतृत्व प्राप्ति की लालसा से दूर रहकर समाज की ओर से सम्मेलन ने जो सहकार स्वाधीनता संग्राम को दिया वह उस समय एक संतुलित दृष्टि से किया हुआ निर्णय था जिसकी पुष्टि समय के घटना चक्र से स्वत: सिद्ध हो गयी।

तिलक स्वराज्य फण्ड में समाज के सराहनीय योग के अतिरिक्त भी अनेक जनोपयोगी कार्यों के हेतु मारवाडी समाज के अर्थदान ने उनकी प्रबल राष्ट्र प्रेमी विचार धारा की सम्पुष्टि की है तथा उनसे न केवल सम्मेलन व उसकी प्रवृत्तियां एवम् उनके माध्यम से समाज का वर्ग विशेष ही लाभान्वित हुआ है बल्कि सभी समुदायों के लोगों को उनमे उत्कर्ष की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त हुआ है।

जन आन्दोलन :

जिन मारवाडी बन्धुओं ने आन्दोलन काल में जेल यातनायें सहन की उन्हें बधाई देने तथा अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित करने का सार्वजनिक आयोजन सम्मेलन द्वारा दिनांक २९–५–१९३० को श्री केशवदेवजी नेवटिया के सभापतित्व में बुलियन एक्सचेंज हाल मे हुआ जिसमें समाज के विशिष्ट जन काफी बडी संख्या में उपस्थित थे।

सर्वश्री मदनलाल जालान, सावलराम शर्मा, सावलराम सराफ व रतनलाल जोशी आदि समाज के इन अदम्य उत्साही बन्धुओं को ससम्मान जुलूस में सभास्थल पर लाया गया तथा राष्ट्र के प्रति उनकी सक्रिय सेवाओं का पूर्ण अभिनंदन किया गया।

दिनांक ५ अप्रैल १९३४ के अपने भाषण में महात्माजी ने सत्याग्रही प्रयोगों के नवीन घटनाक्रमों से अपनी असहमति प्रकट करते हुये सत्याग्रह वापस लेने का निर्णय किया था उसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों में वह एक अविस्मरणीय निश्चय था जिसकी विविध रूपेण प्रतिक्रियायें सारे देश में हुई किन्तु सम्मेलन ने इस प्रकार के असमंजसपूर्ण वातावरण में भी अपने आपको किंकर्तव्यविमूढ़ न होने दिया और स्थगन के पश्चात् भी निर्वाचन आदि राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों को समाज में सफल बनाने का प्रयास तत्परतापूर्वक सम्मेलन की ओर से होता रहा।

इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि में अनेक ऐसी बातें है जो इस संक्षिप्त आलेख का भाग नही बन सकती किन्तु उनसे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय के कार्यकर्त्ताओं में कितनी लगन थी, क्या अदम्य उत्साह था; जिसने सम्मेलन जैसी संस्था को प्राणवान बनाये रखा जिनकी अहर्निश कार्यसाधना के आधार पर आज का सम्मेलन अपना विशाल रूप धारण कर सका है। बोरीबन्दर पर धरने के समय श्री गोविन्दलालजी पित्ती ने जो सत्साहस प्रदर्शित किया–नौकरशाही संगीनो से घिरे आजाद मैदान में कार्यकर्त्ताओं की प्रत्येक सुविधा असुविधा का ध्यान रखते हुये दिन रात एक किया, वह उनकी व्यक्तिगत सेवायें होते हुये भी सम्मेलन के प्रतिनिधित्व को सहर्ष उन्होंने साकार किया और इस प्रकार एक अनुपम आदर्श उन लोगों के समक्ष रखा जो संस्था के माध्यम से ख्याति अर्जन का स्वप्न लेते हैं जब कि प्रत्येक संस्था हितैषी का उन्हीं की भांति उद्देश्य यह होना चाहिये कि अपने कार्यों से सम्मेलन के नाम को समुज्ज्वल करे ताकि समस्त राष्ट्र की दृष्टि में सम्मेलन का सर्वोपकारी स्वरूप अवस्थित रहे। इसी प्रकार के अन्य भी अवसर आये हैं जब कि सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं ने तन-मन-धन से राष्ट्र सेवकों की प्रथम पंक्ति में अपने आपको प्रस्तुत किया है और इसके लिये बडे से बडा त्याग करने में भी उन्हें कोई संकोच नही हुआ है। जेल जाने, दंडप्रहार सहन करने और दमन के चक्र में अपना सर्वस्व लुटा देनेवाले देशसेवकों मे मारवाडी समाज के मनस्वी कार्यकर्त्ता ही अपना व सम्मेलन का गौरव अक्षुण्य रखे हुये थे और उनकी इस देशसेवा की महत्ता को राष्ट्र के कर्णधारों ने सहर्ष स्वीकार किया है।

सत्याग्रह स्थगन के तुरन्त बाद जन प्रतिनिधित्व के आधार पर धारासभाओं का निर्वाचन होने का समय उपस्थित होने पर प्रान्तीय राष्ट्रीय महासभा समिति द्वारा मनोनीत उम्मेदवार श्री कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुंशी और डा. जी वी देशमुख का समर्थन करने के हेतु दिनांक १० नवबर १९३४ को नरनारायण मन्दिर में श्री जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में एक विराट सभा का आयोजन हुआ जिसमें उम्मेदवारों के अतिरिक्त श्री गणपति शंकर देसाई, श्री रामदेव पोद्दार के भाषण हुये और इसी सन्दर्भ में दिनांक १२ नवम्बर १९३४ को श्री मदनलाल जालान व श्री श्रीनिवास बगड़का के अधिनायकत्व में विभिन्न स्थलों पर सभायें आयोजित हुई, विज्ञापन प्रचारित हुये और व्यापारी व अन्य मतदाताओं से विशेष निवेदन किये गये। १४ नवम्बर निर्वाचन के दिन काफी उत्साह था और मतदाताओं को लाने के हेतु सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय की बस व निम्नोक्त अन्य महानुभावों की मोटर गाडियाँ कार्यरत थी–सर्वश्री आनन्दीलाल पोद्दार, चतुर्भुज पीरामल, आनन्दीलाल हेमराज, गोविन्दराम सेक्सरिया, ईश्वरदास देवीप्रसाद, तुलसीराम गुरुदासराय, मोहनलाल मालानी, जगन्नाथ किशनलाल, चिरंजीलाल लोयलका और भगवानदास बागला।

भारतीय विधान १९३५ के अन्तर्गत गठित होनेवाली बम्बई विधान सभा के निर्वाचन दिनांक १७ फर्वरी १९३७ में भी राष्ट्रीय कांग्रेस समर्थित उम्मीदवारों को विजयश्री हस्तगत करवाने में सम्मेलन ने अथक परिश्रम तथा योगदान दिया। इससे पूर्व सम्मेलन ने उक्त विधानसभा में समाज की प्रभावशाली व्यापारिक संस्था मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स द्वारा एक स्थान की माँग का समर्थन करते हुये श्री गोविन्दलालजी पित्ती के परामर्शानुसार प्रतिवेदन (डि–लिमिटेशन कमेटी) स्थान निर्धारण समिति को प्रेषित किया था। बम्बई सरकार के संचालनार्थ कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल का गठन निर्वाचन में अभूतपूर्व सफलता के बाद हुआ तथा उसने पदारूढ होते ही जनसाधारण के हितार्थ जो प्रशंसनीय कार्य किये उनके लिये सम्मेलन की ओर से मंत्रीमण्डल को बधाई देने का प्रस्ताव पारित कर भेजा गया जिसमें विशेषत: हरिजन मन्दिर प्रवेश कानून का उल्लेख किया गया था।

राष्ट्रीय महासभा के निश्चयानुसार तथा लाहौर कांग्रेस में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता लक्ष्य निर्धारण पर्व की स्मृति के रूप में २६ जनवरी १९३९ स्वतंत्रता दिवस मनाने का आयोजन

अत्यन्त उत्साह के साथ किया गया और पुस्तकालय विद्यालय तथा सभी प्रवृत्तियों का अवकाश रखा गया व विभिन्न कार्यक्रम उस अवसर के अनुरूप आयोजित किये गये एवम् विद्याभवन पर श्री के० एम. मुंशी के हाथों झण्डारोहण सम्पन्न हुआ।

भारत छोड़ो जनक्रान्ति :

द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने ही प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों के सत्ता-त्याग का अध्याय प्रारम्भ हुआ तथा अंग्रेज शासन द्वारा युद्ध प्रयासों में सहयोग की आकांक्षाओं का उत्तर जननेताओं ने तत्काल उत्तरदायी शासन व्यवस्था की मांग रख कर दिया जिसे स्वीकार नहीं होने पर बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस महासमिति द्वारा राष्ट्र को "करो या मरो" तथा "अंग्रेजो भारत छोड़ो" के दो उद्‌बोधक नारे महात्मा गांधी ने दिये जिसे सारे देश ने थाती के रूप में धरोहर की भांति अपनाया और रातोंरात जब सभी नेता जेलों में पहुँचा दिये गये तो इन्हीं नारों के द्वारा घर घर गली गली क्रान्ति की लौ प्रज्वलित हुई। सभी नेताओं के जेल जाने की प्रतिक्रिया जनमानस पर विपरीत प्रभाव डाल रही थी और नेतृत्व के अभाव में सही मार्गदर्शन सुलभ नहीं था।

इस प्रकार कर्तव्यक्षेत्र में अग्रगण्य मारवाड़ी सम्मेलन के कार्य-कर्त्ताओं में अनेक भूगर्भ स्थिति में रहते हुये इस अगस्त क्रान्ति के जनक डा. राममनोहर लोहिया, श्री जयप्रकाश नारायण, श्री अच्युत पटवर्धन, श्रीमती अरुणा असफअली आदि के आन्दोलन संचालन करने में, उनकी निजी सुरक्षा में तथा आवश्यक सभी साधनों के जुटाने में तत्प-रतापूर्वक हर समय सन्नद्ध रहे यह सर्वविदित तथ्य है। मारवाड़ी परि-धान में महीनों तक क्रान्ति की देवियाँ मारवाड़ी परिवार की सदस्या की भांति रहीं और अपना कर्तव्य बिना किसी बाधा के पूर्ण करती रहीं।

बम्बई ने अगस्त आन्दोलन के सफल संचालन में तथा अपने राष्ट्रनेताओं के सन्देश को सही रूप में चरितार्थ करवाने में जो अथक परिश्रम किया उसमें सम्मेलन एवम् उसके कार्यकर्त्ताओं का भी योग कमोबेशी अंश में रहा ही है। अर्थ योग तो सभी क्षेत्रों में प्राप्त हुआ ही किन्तु जन आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर उसे जीवित रखने में भी मारवाड़ी कभी पीछे नहीं रहे हैं तथा सर्वश्री श्रीनिवास बगड़का, पशुपतिनाथ कानोडिया, बाबूलाल माखरिया, शिवचन्द गुप्ता एवम् मदनलाल पित्ती आदि ने विषम जेलयातनायें सही हैं तथा देश के प्रत्येक भाग में मारवाड़ी समाज इस राष्ट्रीय यज्ञ में आहुति रूपेण अपना योग दे रहा था वहाँ बम्बई में यह किससे पीछे रह सकता था।

स्वतंत्रता प्राप्ति एवम् उसका संरक्षण :

अंग्रेज शासक युद्ध की विभीषिका से त्रस्त थे। सन् बयालीस की जनक्रान्ति, नौसेना विद्रोह, बंगाल के अकाल एवम् नेताजी सुभाष की आजाद हिन्द फौज के बढ़ते कदमों ने उन्हें यह विचारने को बाध्य किया कि अब भारतीयों को पराधीनता के जुए में जकड़कर रखा नहीं जा सकता। इस सत्य के दर्शनोपरान्त भी अपनी कूटनीतिज्ञता का चमत्कार क्रिप्स कमीशन, मंत्रि परिषद् सदस्य प्रतिनिधि मण्डल और लार्ड माउण्ट बेटनके माध्यम से प्रकट करते हुये हमारे यह दो शताब्दियों के शासक देश के दो टुकड़े करवाके यहाँ से विदा हुए और विभाजन की उनके द्वारा बीजारोपित विषबेलि के कटु फल राष्ट्र को चखने पड़े जिसके फलस्वरूप भयंकर साम्प्रदायिक मारकाट व जनसंख्या परावर्तन की समस्याओं का राष्ट्र को सामना करना पड़ा। उस विकट परिस्थिति में सम्मेलन ने अपने कर्तव्य की सम्पूर्ति के हेतु जो किया वह आप सम्मे-लन के रचनात्मक इतिहास में अंकित पायेंगे।

१५ अगस्त १९४७ को चिरअभिलाषित शुभ वेला का आगमन हुआ। हमारा देश पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में विश्व के प्रांगण में उदय हुआ। इस महान पुनीत पर्व को सम्मेलन ने पूरी उमंग के साथ मनाया तथा १४ अगस्त की अर्धरात्रि में ठीक बारह बजे स्वाधीनता की घोषणा के साथ ही सम्मेलन कार्यालय में जयध्वनि व वाद्यवृन्द घोष के मध्य ध्वजवन्दन कार्य सम्पन्न हुआ और दूसरे दिन प्रात:काल ९ बजे सुप्रसिद्ध समाजवादी जननेता श्री जयप्रकाशनारायण के हाथों राष्ट्रीय ध्वज विद्याभवन पर लहराया गया तथा कार्यालय व विद्याभवन तोरण-पुष्प, विद्युतप्रकाशदीप एवम् राष्ट्रीय पताकाओं से सुसज्जित किये गये।

इसके साथ ही भारत के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय पूर्ण हुआ और अब राष्ट्र के सामने किसी अन्य से संघर्षरत रहकर कुछ प्राप्ति का प्रश्न नहीं रहा अपितु अनेक अभावों पर विजय के लिये प्रयत्नशील होने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसे पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा विकास की प्रगतिशील नीति के अनुरूप हमारी राष्ट्रीय सरकार करने को सचेष्ट है और उसमें निहित अनेक निर्माणकारी कार्यों में जहाँ सफलता प्राप्त हुई है वहाँ नवीन नवीन समस्याओं की उत्पत्ति ने बाधायें भी उपस्थित की है। रक्तहीन क्रान्ति से स्वाधीनता अर्जन का कुछ मूल्य सामयिक कष्ट भुगतकर संभवत: देशवासियों को और चुकाना पड़े तथा सही माने में बापू के रामराज्य का हमें लाभ मिल सके तदर्थ हर संभव प्रयत्न प्रत्येक नागरिक द्वारा किया जाना परमावश्यक था। अपरिमित त्याग और महान बलिदान से प्राप्त इस स्वतंत्रता की रक्षा हर कीमत पर करने को हमें कटिबद्ध रहना था एवम् उसका अवसर भी राष्ट्र के समक्ष बहुत शीघ्र ही उपस्थित हुआ व आज भी उसका विषम प्रभाव व्याप्त है।

राष्ट्रीय सुरक्षा कोष :

नियोजित विकास पथ पर अग्रसर हमारे राष्ट्र की समृद्धि पड़ोसी राष्ट्रों की आँख का काँटा बन गई। अपनी भ्रान्तिकारी योज-नाओं में बुरी तरह असफल विश्वासघाती चीन ने भाई भाई के नारों के आवरण में दुर्दान्त अमानवीय सीमा अतिक्रमण का अभियान अक्टू-बर १९६२ में प्रारम्भ कर एक अघोषित युद्ध की सी स्थिति प्रस्तुत कर दी ताकि हमारे सभी निर्माण कारी कार्यों में रुकावट पैदा हो और हम युद्ध रत राष्ट्र के रूप में विनाश की ओर अग्रसर हों।

स्वाधीन राष्ट्र पर निर्माण काल में पथ से विचलित करने का इससे अचूक व अमोघ अस्त्र और क्या हो सकता था किन्तु इस विष घूंट का पान करके भी राष्ट्रीय सरकार ने अपने नियोजन कार्यक्रम में कोई परिवर्तन नहीं आने दिया। हाँ शत्रु को अपनी शक्ति का वास्त-विक ज्ञान करवाने के उद्देश्य से सरकार ने संकटकालीन स्थिति की घोषणा करते हुये समस्त राष्ट्र को इस आपत्ति के निवारणार्थ सन्नद्ध होने का आव्हान करना पड़ा और सभी ओर से मुक्त सहयोग प्राप्त कर राष्ट्र को इस विशेष स्थिति में सर्वथा समर्थ करने की ओर हम उन्मुख हुये।

सम्मेलन अपने संस्थापन काल से राष्ट्र हितैषी हर कार्य में अग्रगण्य रहा है अतः उसकी तमाम प्रवृत्तियां इस सकटकाल में राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रत्येक आयोजन को सफल बनाने के हेतु जुट गई। सास्कृतिक आयोजनों के द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षाकोष के निमित्त कोष सग्रह और जन जागृति के विविध सोपानो से युक्त कार्यक्रमो से जिस उत्साहपूर्ण वातावरण का निर्माण सम्मेलन ने किया वह वस्तुत स्तुत्य है। दीपावली स्नेह सम्मेलन के अवसर पर आधा घण्टे के निवेदन से प्रभावित जन-समूह ने प्राय एक लाख रुपये सुरक्षा निधि में प्रदान करने के वचन दिये एवम् हमलावर चीनियो को भारत भूमि से बाहर खदेड़ने को प्रतिज्ञाबद्ध होने के लिये सार्वजनिक सभा का आयोजन चौपाटी पर हुआ था उसमें जुलूस के रूप में जाकर सम्मेलन व समाज की अन्य सस्थाओ के सदस्य बहुत बडी सख्या में सम्मिलित हुये।

समाज की बहनो में चीनी आक्रमण के विरुद्ध काफी रोष व जोश था तथा सम्मेलन द्वारा सचालित राजस्थानी महिला मण्डल की कार्यकत्रियो द्वारा किये गये निवेदन पर बहनो ने स्वर्ण व धनराशि प्रदान करने मे अनुकरणीय उत्साह प्रदर्शित किया। सुरक्षा निधि के लिये समुचित राशि एकत्र करने मे बहनो को अपनी विशिष्ट कार्य-क्षमता का मूल्याकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। राजस्थानी महिला मण्डल के विभिन्न आयोजनो से ४८० ग्राम सोना, ३८ गिन्नी एवम् ९,६२०-६० की धनराशि एकत्र हुई जो सुरक्षा कोष में भेज दी गई।

विजय के लिये मतदान का आयोजन भी बम्बई में सुरक्षा निधि सग्रह के उद्देश्य से किया गया जिसमें सम्मेलन की ओर से मतदाताओ को अधिक से अधिक नोट मतपेटिका मे डालने को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से निरतर प्रचार किया गया। इसी प्रकार सम्मेलन द्वारा सचालित श्रीमती भागीरथीबाई मानमल रुइया महिला महाविद्यालय के लाभार्थ आयोजित कार्यक्रम "हथलेवे की साथण" नाटिका के प्रदर्शन में एकत्र जनसमूह द्वारा भी सुरक्षा कोष के लिये बडी राशियां प्रदान की गई।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय की बालिकाओ ने भी इस पुनीत कार्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा कई बालिकाओ ने तो बाल्यकाल से अब तक एकत्र अपनी कुल जमा पूंजी राष्ट्र के हितार्थ प्रदन कर देने का उत्साह दिखाया। बालिकाओं के इस उत्साह को समुचित मान महाराष्ट्र के मुख्य मत्री ने स्वयम् बालिका समिति की मत्रिणी से एकत्र राशि प्राप्त करके दिया।

उक्त सभी राशियों एवम् स्वर्णादि को दो विभिन्न आयोजनो के समय महाराष्ट्र के मुख्यमत्री स्व० एम० एस० कन्नमवार व पूर्ति मत्री श्री होमी जे० तल्यार खान को क्रमशः सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमलालजी झुझनूवाला और राजस्थानी महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती रुक्मीदेवी पोद्दार द्वारा अर्पित कर दी गई जो कुल मिला कर १४७४-४५० ग्राम सोना ६९ गिन्नी व रु० ५२७४५-१४ हुई जिसका कुल मूल्य प्राय. एक लाख रुपये से ज्यादा होता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रारभिक काल से जिन भावनाओं के उद्रेक से मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकर्त्ता देशहित में सलग्न थे वही राष्ट्र प्रेम आज भी समाज में उसी रूप में परिलक्षित है तथा स्वाधीन भारत की प्रतिष्ठा पर आँच आये ऐसा कोई अवसर समुपस्थित होने के पूर्व ही कमर कस कर बडे से बडे त्याग की अभिलाषा दिल में सजोये कठिन से कठिन मुहिम पर अग्रसर होने को तत्पर है। जिस देश में इन भावनाओ को आश्रय देनेवाले कार्यकर्त्ताओं का अभाव न कभी रहा है और न आगे रहने की आशका ही है उसकी स्वतत्रता को अपहरण का प्रयास करने की इच्छा से आगे बढनेवाली शक्ति को मुंह की खानी पडेगी। स्वतत्रता की जिस ज्योत को देश के लाडले सपूतो ने अपने रक्त मज्जा की आहुति से प्रज्वलित किया था उसे बुझाने की किसे हिम्मत हो सकती है जब की चालीस कोटि जन उस लौ की जगमगाहट के रक्षण हेतु हर समय-प्रतिपल प्रस्तुत हैं।

रियासती आन्दोलन एवम् सम्मेलन :

अग्रेजी शासन के मोहरे देश को प्रतिपल अपने महाप्रभुओं के इगित मात्र से विनाश की ओर ढकेलते जा रहे थे और इसका सबसे बडा प्रमाण था वे देशी रियासतो जहाँ सामतशाही का खुला दमनचक्र निरतर लोकमानस को परवशताजनित जडता से अभिभूत करता जा रहा था और आँग्ल कोष में स्वर्ण राशि व हीरे जवाहरातो के अम्बार लगा रहा था, जो उन्हे इस अत्याचारी शासन व्यवस्था की प्रमाणिकता के प्रमाणपत्र दिलवाने मे तथा समय-असमय जघन्य अपराध पर बैठने को प्रेरित करता रहता था।

सभी राजे-महाराजा एक ही श्रेणी में रखे जायँ यह हमारा मन्तव्य नही है। ऐसे भी प्रगतिशील देशी राज्य थे जहाँ समय की पुकार के साथ उत्तरदायी शासन व्यवस्था का त्वरित श्रीगणेश हुआ है तथा जनकल्याण के प्रत्येक कार्य में राज्य के शासक का सर्वोपरि योग रहा है किन्तु राजस्थान में एक विचित्र स्थिति जनता के समक्ष रही।

प्रमुख रियासतों के महाराजाओ के अधीन ऐसे ठिकाने थे जिनके लिये निर्धारित सीमा मे उनका एक छत्र शासन था। वैधानिक सत्ता के कोई लक्षण मात्र भी वहाँ दृष्टिगोचर नही होते थे। राजा-ठाकुर के मुह से निकले शब्द ही कानून थे और राह चलते न्याय अन्याय के निर्णय किये जाते थे। अधिकाश ठिकानेदार राजा-ठाकुर विभिन्न मानवीय दुर्बलताओ के शिकार थे तथा नागरिक सुरक्षा के कोई साधन प्राप्त नही थे।

सम्मेलन के सामने जहाँ एक ओर वैधानिक रूप से संगठित अग्रेजी सरकार से टक्कर लेने का प्रश्न था वहाँ दूसरी ओर एक ऐसे वर्ग से जनता को त्राण दिलवाना था जो किसी कानून मे बँधा नही था। राजस्थान के वासी भी अग्रेजी शासन के अन्तर्गत प्राप्त नागरिक सुविधाओं का लाभ क्यों न उठायें तथा राष्ट्रीय जागरण की बेला में समग्र भारत के लोगों के समकक्ष रहते हुए अपने अधिकारो की माँग में पीछे क्यो रहे, यह सम्मेलन के प्रत्येक कार्यकर्त्ता के सामने एक प्रश्न चिन्ह बना हुआ था किन्तु यह ऐसे जीवट का कार्य था जिसे हाथ में लेने का साहस तुरन्त ही कोई कैसे कर सकता था। इस सम्बन्ध में काफी विचार विमर्श के पश्चात् ही यह निश्चय किये गये थे कि देशी राज्यो मे भी जनता के ऐसे संगठन निर्मित हों जिनके द्वारा इस दिशा मे आगे बढा

जाय और कोई ऐसा मार्ग ढूंढा जाय ताकि जनता की न्यूनतम मांगों की स्वीकृति राजा महाराजाओं से प्राप्त हो सके।

इन प्रयत्नों के प्रति देशी राज्यों के अधिष्ठाता सशंक थे और साथ ही सजग भी थे। देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना से यही भावना कार्य कर रही थी और उसे प्रत्येक रियासत ने कुचल डालने में कोई कोर कसर कभी छोड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

अविद्या के अन्धकूप में साधनविहीन जीवनयापन की अभ्यस्त भोली राजस्थानी जनता को इन मूरताओं से मुक्ति का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था अत. सम्मेलन ने अपनी रचनात्मक योजनाओं का विस्तार राजस्थान तक करने का अथक प्रयास किया जिसके फल-स्वरूप ही उसके सम्पन्न कार्यकर्त्ताओं ने शनै शनै जन्मस्थलीय गाँव-नगर में शैक्षणिक एवम् अन्य समाजोपयोगी सुविधायें प्रदान करने की योजना बनाई जिनका विरोध चाह कर भी सामंतशाही कर नहीं सकी तथा इस प्रकार एक ऐसा मार्ग मिल गया जिसके द्वारा सामंतों के अभेद्य दुर्ग में प्रवेश का साधन सुलभ हो सका।

मात्र राजस्थान में ही नहीं अपितु काठियावाड़ व मध्यभारत की ओर मैसूर आदि रियासतें भी इसी प्रकार के अत्याचारों का गढ़ बनी हुई थी और वहाँ की जनता भी दमन से ऊबना कर कुछ कर बैठने को तत्पर प्रतीत हो रही थी। सम्मेलन ने ऐसे किसी अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया जिसके द्वारा इन रियासती राजाओं की शक्ति क्षीण की जा सकने की संभावना हुई।

देशी राज्यों की जनता भी ब्रिटिश राज्य के नागरिकों के साथ साथ स्वाधीनता संग्राम को बल पहुँचाये इस नीतिका प्रतिपादन राष्ट्र के कर्णधार भी करने लगे तथा पं० जवाहरलाल नेहरू ने देशी राज्य लोक परिषद् का अध्यक्षपद ग्रहण कर इसे बल प्रदान किया और सम्मेलन के अल्प से प्रयास को इतना वृहद् स्वरूप प्राप्त हुआ यह श्रेय परिषद् के उत्साही कार्यकर्ता सर्वश्री श्री जयनारायण व्यास, विजयसिंह 'पथिक', माणक्यलाल वर्मा, अर्जुनदास सेठी, ठाकुरगोपालसिंह खरवा बाबा नरसिंहदास, रामनारायण चौधरी, पं० निरंजन शर्मा अजित एवम् अन्य लोगों को है जिन्होंने न जाने कितनी विषम स्थितियों के मध्य इस कार्य को सफलता की सीढ़ी तक पहुँचाया था।

सम्मेलन ने अपनी प्रवृत्तियों मे जिन राष्ट्र हितैषी कार्यों का समावेश किया उनमें सर्वाधिक महत्व इस कार्य को ही प्राप्त था तथा सम्मेलन के वार्षिक विवरणों के आधार पर तत्कालीन परिस्थितियों में घटनाचक्र पर मनन किया जाय तो ऐसे रहस्यों का सूत्रपात हो सकता है जिनमे राज्य व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप प्रकट हो किन्तु इस आलेख में यह अभीष्ट नहीं है यहाँ तो सिर्फ सम्मेलन के सहकार की चर्चा मात्र ही प्रासंगिक है।

सन् १९२७ में सीकर राज्य में चुंगी की दरों में हुई अभिवृद्धि के कारण काफी असन्तोष फैला और इस कर वृद्धि के विरुद्ध सम्मेलन की ओर से विशेष अभियान चलाया गया तथा रावराजा से निरंतर सम्पर्क स्थापित कर इस व्यवस्था में सुधार करवाने का प्रयत्न किया गया जिसमें सफलता प्राप्त हुई। इसी प्रकार शेखावाटी प्रदेश के अन्य ठाकुरों द्वारा अनुचित रूप से लागू की गई जगात को भी जनता के अधिकारों का हनन मानते हुये सम्मेलन ने हटवा देने के हेतु संघर्ष किया।

जोधपुर राज्य ने "मारवाड़ राज्य प्रजा सम्मेलन" के सन् १९२९ वर्ष के अधिवेशन पर अकारण रोक लगाकर अपनी दमन नीति का प्रत्यक्ष प्रमाण उपस्थित किया इससे सम्मेलन के कार्यकर्ताओं में काफी रोष उत्पन्न हुआ एवम् श्री जमनादास अडुकिया की अध्यक्षता में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में इस कार्यवाही की भर्त्सना की गई और विरोध में पारित प्रस्ताव को महाराजा जोधपुर, एजेण्ट आबू एवम् वायसराय को प्रेषित किया गया।

रामगढ़ (शेखावाटी) ने हिन्दु-मुस्लिम विग्रह को अनावश्यक तूल देकर जो स्थिति राज्याधिकारियों ने सन् १९३२ में निर्माण की उससे वहाँ के शान्ति प्रिय हिन्दुओं का जीवन दूभर हो गया तथा उन्हें निरपराध होते हुये भी कारावद्ध कर देने की धृष्टता से सम्मेलन को काफी संताप हुआ और स्थानीय नरनारायण मन्दिर में श्री दुर्गादत्तजी सावलका की अध्यक्षता में आयोजित सभा में उन संतापित हिन्दुओं को आवश्यक सहायता प्रदान करने का निश्चय हुआ एवम् तदनुसार व्यवस्था भी की गई जिससे वहाँ के वातावरण में कुछ सुधार हुआ।

केन्द्रीय धारासभा में प्रस्तावित "देशी राज्य रक्षण बिल" का विरोध करने के उद्देश्य से सम्मेलन की व्यवस्थापक सभा के १९३४ के निर्देशानुसार धारासभा अध्यक्ष श्री बी० दास तथा गृह सचिव केन्द्रीय सरकार को तार पत्रादि दिये गये तथा इससे क्रूर शासकों के हाथों और सत्ता का हथियार जा रहा है इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया।

दिनांक २६-८-१९३४ को मारवाड़ी विद्यालय के सभागार में सम्मेलन, बोम्बे काटन ब्रोकर्स एसोसिएशन व हिन्दुस्तानी देशी व्यापारी एसोसिएशन के सयुक्त तत्वावधान में एक सभा श्री गोविन्दलालजी पित्ती की अध्यक्षता में हुई। सेठ गोविन्ददास, श्री जमनादास माधवजी मेहता, श्री अमृतलाल द० सेठ व श्रीमती लीलावती मुंशी आदि के अतिरिक्त समाज के विशिष्ट वर्ग, प्रमुख पत्रों के सम्पादकों व संवाददाताओं की उपस्थिति में बीकानेर विदेशी बिल के विरोध में निम्नोक्त प्रस्ताव पारित किया गया।

"बम्बई निवासी और राजपूताना प्रवासी जनता की यह सार्वजनिक सभा बीकानेर के प्रस्तावित विदेशी बिल को गंभीर आशंकाओं की दृष्टि से देखती है। हमें भय है कि इसका उपयोग उत्तरदायित्व पूर्ण शासन की ओर ले जानेवाली रियासत की राजनीतिक उन्नति को दबाने में किया जा सकेगा। अतएव यह सभा बीकानेर दरबार से अनुरोध करती है कि इस बिल को वापस ले।"

मैसूर राज्य की शान्त प्रजा पर नृशंस गोलीबार और दमन का चक्र सन् १९३८ में चालू हुआ उससे वहाँ पुलिस राज्य का सा आतंक फैल गया। इस वातावरण में सुधार करने और जनता की आवाज का सम्मान करते हुये उत्तरदायित्व पूर्ण शासन व्यवस्था का अधिकार प्रदान करने की मांग का समर्थन सम्मेलन ने किया।

सीकर आन्दोलन को कुचलने के उद्देश्य से शान्ति रक्षा व अनुशासन पालन की आड़ में जयपुर राज्य की सेनाओं द्वारा शहर को

नौ अगस्त १९४२ के ऐतिहासिक दिवस पर बम्बई में हुई राष्ट्रीय नेताओं की आकस्मिक गिरफ्तारी से रियासती प्रजा में अत्यन्त रोष फैला और जगह जगह से हड़तालों, जुलूसों और मोर्चों के समाचार प्राप्त होने व उन्हें दबाने के हेतु क्रूरतापूर्ण कार्यवाहियों की जानकारी मिलने पर सम्मेलन ने राजस्थान की व अन्य रियासतों की जनता की सुरक्षा के हेतु गंभीर मंत्रणायें की तथा हर तरह से उनकी सहायता की।

उपरोक्त कतिपय विशेष अवसरों के अलावा भी सम्मेलन एवम् उसके कार्यकर्त्ताओं को स्थानीय ठिकानों के दैनदिन अत्याचारों से पीड़ित जनता की रक्षा के लिये अनेक बार प्रयत्न करने पड़े जिनको सफलता मिली और इस प्रकार रियासती जन आन्दोलन को सफलता प्राप्त हुई। गोवध विरोध से लेकर प्रमुखतम आन्दोलनों में रियासतों के संगठनों को जिस रूप में और जिस पद्धति से सम्मेलन ने योग दिया वह आज भी उनके आपसी सुमधुर सम्बन्धों को और दृढ़तम करनेवाला सिद्ध हो रहा है।

राष्ट्र की स्वतंत्रता के उदय काल में एक विचित्र समस्या सामने आई। पराभूत ब्रिटिश सत्ता ने देश की ६०० रियासतों को सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य का स्तर प्रदान कर अपना रास्ता नाप लिया तथा उनका अन्तर्हित ध्येय रहा होगा अराजकतापूर्ण स्थिति का निर्माण करना और उससे नवसंस्थापित राष्ट्रीय सरकार की सफलता में बाधा डालना किन्तु देश के सौभाग्य से लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का जादू चल गया और शनैः शनैः रियासतों के संघों और महासंघों का निर्माण होते होते आज उनके नाम ही नक्शों से अदृश्य हो गये हैं तथा उनके शासक भी जनता से वोट दो की भीख मांगने मैदान में उतर चुके हैं। इस प्रक्रिया में काश्मीर के अलावा हैदराबाद, और जूनागढ़ को सही मार्ग निर्देशन के हेतु क्रमशः सरकार को पुलिस कार्यवाही व रियासती जनता को जनआन्दोलन का मार्ग पुनः अपनाना पड़ा था।

जनमत की परवाह किये बिना जूनागढ़ के नवाब द्वारा पाकिस्तान में रियासत के विलय की योजना का षड्यन्त्र वहाँ की प्रजा में काफी उत्तेजना व आक्रोश उत्पन्न करने का कारण बना जिसके फलस्वरूप श्री अमृतलाल सेठ व सामलदास गांधी आदि के प्रयत्नों से बम्बई में "आरजी जूनागढ़ सरकार" का गठन हुआ जिसका समर्थन सर्वप्रथम सम्मेलन द्वारा खुले तौर पर किया गया और जूनागढ़ की ओर अभियान के लिये की जानेवाली प्रत्येक कार्यवाही में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

इस प्रकार सम्मेलन ने राष्ट्र के गतिमान रथ की धुरी कांग्रेस सचालन हेतु अपना सहकार देने में किसी भी अन्य सामाजिक, राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक संगठन से कम योग नहीं दिया है और इस परम्परा का निर्वाह उतने ही उमंगमय वातावरण में आज भी करने को प्रयत्नशील है।

घेर कर जनता पर जघन्य अत्याचार एवम् रेल के डिब्बों में राजपूतों पर अन्धाधुन्ध गोलीचालन तथा नागरिको पर लाठीवर्षा के कुकृत्यो को छिपाने के उद्देश्य से बनाई गई झूठी जाँच समिति को धोखे का स्वाग बताते हुये सम्मेलन द्वारा विरोध प्रदर्शन के प्रस्ताव महाराजा जयपुर, पब्लिक कमेटी सीकर व समाचारपत्रो को प्रेषित किये गये। साथ ही सस्थाओ के सम्बन्ध मे बनाये गये जयपुर राज्य के काले कानून प्रजा की सगठित शक्ति को छिन्न भिन्न करने का कुटिल प्रयास बताते हुये उसका भी विरोध सम्मेलन द्वारा किया गया। ७ मई १९३८ को जयपुर नगर में श्री जमनालाल बजाज के सभापतित्व में राज्य प्रजा मण्डल के अधिवेशन की सफलता का कामना सन्देश सम्मेलन ने प्रेषित किया। न्दौर राज्य कौन्सिल द्वारा हरिजनो के हितार्थ पारित कानून के लिये सम्मेलन ने कौसिल को अभिनन्दन सन्देश भेजा।

जयपुर सत्याग्रह की पृष्ठभूमि विचित्र ही है। अकालजन्य स्थिति का अध्ययन करने तथा पीडितो के राहत कार्य को व्यवस्थित करने एवम् जयपुर राज्य प्रजामडल की गतिविधियो में सक्रियता लाने के उद्देश्य से श्री जमनालाल बजाज जयपुर जाने को उद्यत हुये थे किन्तु राज्य सरकार की दृष्टि मे यह अपराध था अत उनके प्रवेश पर रोक लगा दी गई। सम्मेलन की व्यवस्थापक सभा ने दिनाक ३१-१२-१९३८ की बैठक में इस निषेध को अनुचित बताते हुये इसके विरोध में प्रस्ताव पारित किया। श्री जमनालाल बजाज ने इस प्रतिबन्ध को अनुचित व अन्यायपूर्ण मानते हुये उसकी अवज्ञा की तो राज्य सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर छोड़ दिया। भूख से आकुल जनता अपने प्रिय नेता के प्रति राज्य सरकार के इस व्यवहार को क्षमा न कर सकी और सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया।

इस जनयुद्ध मे अपना विशिष्ट योगप्रदान करने के उद्देश्य से २१-२-१९३८ को सम्मेलन के मानद् मत्री श्री श्रीनिवास बगडका के नेतृत्व में सर्वश्री हीरालाल प्रहलादका, सोहनलाल अग्रवाल, दाऊ दयाल व मोहनलाल इन ४ सत्याग्रहियो का प्रथम दल रवाना हुआ। दल को भावभीनी बिदा दी गई तथा विदाई समारोह में अपूर्व उत्साह व उमंग का वातावरण देखा गया। दूसरे दल में श्री इन्द्रमल मोदी के अधिनायकत्व में सर्वश्री नवलकिशोर शर्मा, रामनिवास शर्मा, गोविन्दराम गूजर व नारायणप्रसाद बजाज यह चार महानुभाव थे और तीसरा दल श्री राधाकृष्ण खेमका के सचालन में प्रस्थान करने को तत्पर था जिसमें सर्वश्री सावलराम शर्मा, द्वारकाप्रसाद हरितवाल एवम् अनतराम अग्रवाल आदि सज्जन सम्मिलित थे। चौथादल श्री मदनमोहन लोहिया के नेतृत्व में जाने को तैयार था। उसी समय महात्मा गाधी के आदेश से सत्याग्रह के स्थगन का निर्णय प्राप्त होने से यह नही जा सके। जयपुर राज्य प्रजा मण्डल की समस्त गतिविधियो का केन्द्र स्थल उस समय सम्मेलन कार्यालय ही हो गया था और बम्बई में आन्दोलन के सफल संचालन का भार सम्मेलन के कार्यकर्ता श्री मदनलाल जालान के जिम्मे था।

इसी प्रकार राजकोट की जनता द्वारा सन् १९३८ मे अपने नागरिक अधिकारो के रक्षणार्थ छेडे गये सत्याग्रह का भी सम्मेलन ने हार्दिक समर्थन किया तथा वहाँ पर किये गये अमानुषिक अत्याचारो, बडी संख्या में गिरफ्तारियों व गोलीबार आदि की निन्दा करते हुये राज्य सरकार, राजनैतिक प्रतिनिधि एवम् वायसराय से लगातार पत्रव्यवहार जारी रखा और सरदार वल्लभभाई से राज्य सरकार द्वारा किये गये समझौते को न मानने पर महात्मा गाँधी के आमरण अनशन ने इस मसले को विशद् रूप प्रदान किया और अन्ततः राज्य सरकार को झुकना पड़ा।

शेखावाटी जकात के मामले ने जब पुनः जोर मारा तथा उसके विरुद्ध जो आन्दोलन छिडा उसके फलस्वरूप श्री मातादीन भगेरिया की गिरफ्तारी व जेल यात्रा ने एक नयी क्रान्ति का सूत्रपात किया। समस्त शेखावाटी प्रदेश ठाकुरो के इस अमानवीय व्यवहार का प्रतिकार करने को सन्नद्ध हुआ तथा सम्मेलन ने भी इसके सम्बन्ध में अपनी तत्परता प्रदर्शित करते हुये आन्दोलन का समर्थन और अन्यायपूर्ण कार्यवाहियो का कट्टर विरोध किया। इस मामले का समाधानकारी हल निकलने पर ही यह जन आन्दोलन शान्त हो सका था।

सन् १९३८ में लोकनायक जयनारायण व्यास व उनके साथी पुन. जोधपुर में काराबद्ध हुये और मारवाड़ लोकपरिषद् गैरकानूनी घोषित हुई। महात्मा गाँधी की अनुमति प्राप्त कर अहिंसात्मक सत्याग्रह का सूत्रपात वहाँ हुआ जिसकी विपरीत प्रतिक्रिया जोधपुर पुलिस पर हुई और शान्त व निहत्थी जनता को पुलिस के क्रूरतापूर्ण लाठी प्रहार का सामना करना पडा जिससे अनेक आहत हुये तथा जेलो में स्थान न रहा। सम्मेलन ने इन कार्यवाहियो का खुलकर विरोध किया तथा पीडित बन्धुओ को हर सभव सहयोग प्रदान किया।

बीकानेर राज्य ने वर्ष १९४१-४२ से नवीन आय कर लागू करने का निश्चय किया जिसे वहाँ की जनता ने स्वीकार नही करने का दृढ निर्णय कर लिया था। सम्मेलन ने भी इसकी अनावश्यकता पर प्रकाश डालते हुये अपना विरोध राज्य सरकार को प्रकट किया तथा अपने विरोध द्वारा भारत के कोने कोने से इसके विरुद्ध प्रतिनिधित्व करवाने एवम् इसकी वापसी के लिये पूर्ण प्रयत्न किया।

अजमेर झंडा केस के अन्तर्गत जेलयातना सहन करनेवाले श्री कृष्णगोपाल गर्ग के साथ पुलिस द्वारा की गई ज्यादती के विरोध में फैले जनता के असन्तोष के फलस्वरूप वहाँ एक आन्दोलन छिड गया जिसे बल प्रदान करने के उद्देश्य से सम्मेलन ने महात्मा गाधी, भारत सरकार और अजमेर मेरवाडा के अधिकारी वर्ग से सम्पर्क स्थापित किया एवम् इसके समुचित समाधान का प्रयत्न किया।

उस समय मान मर्यादा एवम् व्यक्तिगत अधिकारो के प्रति समाज का कितना मोह था तथा उसकी रक्षा के हेतु बडे से बडा मोर्चा लेते हुये भी कोई हिचकिचाहट व्यक्ति विशेष को अथवा सस्था को नही होती थी। रेल्वे कर्मचारियो के अभद्र व्यवहार से त्रस्त एक सदस्य की प्रतिष्ठा के लिये सम्मेलन ने अधिकारियो से टक्कर ली। जोधपुर जन आन्दोलन को समाप्त करने के अन्य उपायो की असफलता से खीझकर दमन चक्र को तेज करने में संकोच न करते हुये कैदियो पर अमानुषिक अत्याचार किये गये तथा उन्हें अन्य साधारण कैदियो से भी बुरी स्थिति मे रखा गया। सम्मेलन व्यवस्थापक सभा ने दिनाक ९-६-१९४२ को इस स्थिति की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करवाने और कैदियो की न्यायपूर्ण माँगों की स्वीकृति के हेतु आग्रह करने व आवश्यक कार्यवाही करनेका निश्चय किया।

नौ अगस्त १९४२ के ऐतिहासिक दिवस पर बम्बई में हुई राष्ट्रीय नेताओं की आकस्मिक गिरफ्तारी से रियासती प्रजा में अत्यन्त रोष फैला और जगह जगह से हड़तालों, जुलूसों और मोर्चों के समाचार प्राप्त होने व उन्हें दबाने के हेतु क्रूरतापूर्ण कार्यवाहियों की जानकारी मिलने पर सम्मेलन ने राजस्थान की व अन्य रियासतों की जनता की सुरक्षा के हेतु गंभीर मंत्रणायें की तथा हर तरह से उनकी सहायता की।

उपरोक्त कतिपय विशेष अवसरों के अलावा भी सम्मेलन एवम् उसके कार्यकर्ताओं को स्थानीय ठिकानों के दैनदिन अत्याचारों से पीड़ित जनता की रक्षा के लिये अनेक बार प्रयत्न करने पड़े जिनको सफलता मिली और इस प्रकार रियासती जन आन्दोलन को सफलता प्राप्त हुई। गोवध विरोध से लेकर प्रमुखतम आन्दोलनों में रियासतों के संगठनों को जिस रूप में और जिस पद्धति से सम्मेलन ने योग दिया वह आज भी उनके आपसी सुमधुर सम्बन्धों को और दृढ़तम करनेवाला सिद्ध हो रहा है।

राष्ट्र की स्वतंत्रता के उदय काल में एक विचित्र समस्या सामने आई। पराभूत ब्रिटिश सत्ता ने देश की ६०० रियासतों को सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य का स्तर प्रदान कर अपना रास्ता नाप लिया तथा उनका अन्तर्हित ध्येय रहा होगा अराजकतापूर्ण स्थिति का निर्माण करना और उससे नवसंस्थापित राष्ट्रीय सरकार की सफलता में बाधा डालना किन्तु देश के सौभाग्य से लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का जादू चल गया और शनैः शनैः रियासतों के संघों और महासंघों का निर्माण होते होते आज उनके नाम ही नक्शों से अदृश्य हो गये हैं तथा उनके शासक भी जनता से वोट दो की भीख मांगने मैदान में उतर चुके है। इस प्रक्रिया में काश्मीर के अलावा हैदराबाद, और जूनागढ को सही मार्ग निर्देशन के हेतु क्रमशः सरकार को पुलिस कार्यवाही व रियासती जनता को जनआन्दोलन का मार्ग पुनः अपनाना पड़ा था।

जनमत की परवाह किये बिना जूनागढ के नवाब द्वारा पाकिस्तान में रियासत के विलय की योजना का षड्यंत्र वहाँ की प्रजा में काफी उत्तेजना व आक्रोश उत्पन्न करने का कारण बना जिसके फलस्वरूप श्री अमृतलाल सेठ व सामलदास गांधी आदि के प्रयत्नों से बम्बई में "आरजी जूनागढ सरकार" का गठन हुआ जिसका समर्थन सर्वप्रथम सम्मेलन द्वारा खुले तौर पर किया गया और जूनागढ को ओर अभियान के लिये की जानेवाली प्रत्येक कार्यवाही में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

इस प्रकार सम्मेलन ने राष्ट्र के गतिमान रथ की धुरी के सरस सचालन हेतु अपना सहकार देने में किसी भी अन्य सामाजिक, राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक संगठन से कम योग नहीं दिया है और इस परम्परा का निर्वाह उतने ही उमगमय वातावरण में आज भी करने को प्रयत्नशील है।

रचनात्मक प्रवृत्तियों का प्रसार

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ।।
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।।
—गीता अ० ३ श्लो० १०, ११

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि को प्राप्त होवो और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं के देनेवाले हों तथा तुम लोग इस यज्ञ द्वारा देवताओं की उन्नति करो और वे देवतालोग तुम लोगों की उन्नति करें । इस प्रकार आपस में कर्तव्य समझ कर उन्नति करते हुये परम कल्याण को प्राप्त होवोगे ।

लोकमान्य तिलक के माण्डले जेलयात्रा काल ने इस महान विभूति को यद्यपि भारत भूमि से एक लम्बी अवधि के लिये दूर रखा किन्तु बर्मा के इस एकान्त-शान्त स्थल से जो उद्घोष "गीता-रहस्य" के नाम में उनकी वाणी से झंकृत हुआ उसने कर्मक्षेत्र के भारतीय लाडलों को एक महान् सन्देश दिया । उस अमर भाष्य में कर्म के महत्व का जो विश्लेषण लोकमान्य की लेखनी से हुआ है वह युग की परम्पराओं के अनुकूल था—हर व्यक्ति को ऐसे कार्य करने का निर्देश था जिससे देश के नवनिर्माण में योग मिले एवं रचनात्मक कार्यसम्पादन की उत्कण्ठा जन जन के हृदय में संचरित हो ।

नेतृत्व परिवर्तन के उस काल में लम्बे संग्राम के बाद जनता को मार्गदर्शन की आवश्यकता थी । तिलक का तेजस्वी शौर्य अमरता का पथिक हो चुका था और भारत के रंगमंच पर एक नवीन प्रकाश की किरणों का मद्धिम मद्धिम उजाला उभर रहा था । उस प्रकाश पुंज में जनसाधारण के अन्तःकरण तक में झाँक जाने का ओज था—हृदय की गहनतम अनुभूतियों को हिला देने का सुमधुर संगीत था । वह शक्ति थी महात्मा गांधी जो आगत अर्द्धशताब्दि में देश की डगमगाती नौका के कर्णधार बने जिन्होंने राष्ट्र के एक नहीं अनेक हितों के हेतु अहिंसात्मक ढंग से इतने विशाल साम्राज्य के अधीश्वर अंग्रेजों से टक्कर ली और उन्हें यह मानने को बाध्य किया कि भारतीयों की क्रियात्मकता उनकी निर्माणकारी प्रवृत्तियां एवं उनके रचनात्मक आदर्श किसी भी महान राष्ट्र के नागरिकों से तुलनात्मक दृष्टि में समान स्तर पर हैं ।

इस मान्यता के पीछे एक रहस्य है—एक ऐसा अमिट इतिहास है जो बारबार विध्वंसता के प्रबल प्रहारों के आघात सह सह कर भी अपनी सांस्कृतिक थातियों को—अपनी सुललित रचनाओं को एवं अपने विशिष्ट निर्माण चिन्हों को सुरक्षित रखे हुये है । ऐसे अवसर अनेक आये हैं जब कि देश का वातावरण सर्वथा उद्विग्न होता । चारों तरफ प्रलयंकारी युद्धघोष होते तथा विनाश के भीषणतम दृश्य उपस्थित रहते किन्तु किसी भी परिस्थिति का अपना विपरीत प्रभाव यहां कभी स्थायी नहीं हो सका । धरती की गोद में समाविष्ट अवशेषों पर नवयुग के प्रतीक संस्थापित होते, पुराने मिटे तो नये प्रकट होते एवं उन नयों में प्रगति के मापदण्ड का दर्शन निरंतर अभीष्ट रहता । संस्कृति का

साहित्य हो—सामाजिक अथवा राजनैतिक परम्परा हो एवं अन्य किसी भी व्यक्तिगत और सामूहिक हित अहित का प्रश्न हो यह सत्याचरण सदैव अपने सही रूप में स्थित रहता और विध्वंसात्मक प्रक्रियाओं का सामना रचनात्मक प्रवृत्तियों के माध्यम से करने को प्रेरित करता रहता। अतीत की बातें छोड़ भी दे तो स्वतंत्रता आन्दोलन में भी बीच बीच स्थगित संग्राम के तुरंत बाद रचनात्मक कार्यों में संलग्न हो जाना सक्रियता का द्योतक रहा। कार्यकर्त्ताओं की भावनाओं में निष्क्रियता घर न कर ले इसी दृष्टि से यह क्रम चला और इसका परिणाम इतना सुखद हुआ कि उन कार्यों से लाभान्वित जनसाधारण का विश्वास स्वाधीनता प्राप्ति के प्रति दृढ़तर होता गया।

रचनात्मक कार्यों की रूपरेखा निर्धारण के समय यह ध्यान रखा जाता था कि वे सभी की हित कामना के साधक हों, उनसे ऐक्य भावना का निर्माण हो तथा समाज के प्रत्येक वर्ग व श्रेणी के व्यक्ति के लिये उसकी उपयोगिता हो। शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनैतिक किसी भी उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्हें हाथ में लिया गया हो किन्तु आदर्श "सर्व जन हिताय" का ही उनमें निहित रहता था।

जीवनदानी देशभक्तों ने अपने आत्मोत्सर्ग से लोगों की मनोभावनाओं को झकझोर डाला—उन्हें मातृभूमि को परतंत्रता से मुक्त करने को मरमिटनेवाला व साथ ही साथ राष्ट्र निर्माण के सर्वांगीण विकास के विविध सूत्रोंवाला मंत्र दिया जिसमें बलिदान का महत्व था—त्याग की भूमिका थी और था एक ऐसे समाज का भावी स्वप्न जहां हर व्यक्ति की निर्माणकारी प्रवृत्तियों को व रचनात्मक कार्यपद्धतियों को समादर की दृष्टि से देखा जाता।

देश के सभी भागों में राष्ट्रनेताओं द्वारा निर्धारित मार्ग का अनुसरण करने वाले प्रयत्नों का मूर्त रूप प्रकट होने लगा। नवसूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत लोगों ने अपनी अपनी रुचि के अनुकूल काम चयन कर लिये और फिर जुट पड़े जी जान से उन्हें सफल बनाने को। प्रारंभिक प्रयासों के कुछ अटपटे अनुभवों ने भी उन्हें निराश नहीं होने दिया और अन्तत. सफलता उनकी बाट जोह रही है इसी आशा को हृदय में रखे हुये इन कार्यों की पूर्ति में किसी प्रकार की दुर्बलता कहीं भी देखने को नहीं आई।

रचनात्मक अभियान की प्रतीक गतिविधियों के समारंभ में भलेही कष्ट अनुभव हुआ हो किन्तु उसकी सफल परिणति ऐसे स्थलों के रूप में हुई जहां से आन्दोलन काल में बड़े बड़े उलझनपूर्ण कार्य पूरे करवाने में कभी कोई कठिनाई नहीं हुई। उनके द्वारा ऐसे समूह प्रकट हुये जिन पर क्रूर से क्रूर दमन का कोई भी असर न हुआ—उनके दृढ़ मनोबल को डिगाने में कोई साधन समर्थ नहीं हुआ और उनके हाथों कभी किसी की हानि का अनुमान तक नहीं किया गया—यही कारण था कि उनके प्रति सम्मान की भावना शासकवर्ग के दमनकारियों तक के हृदय में रहती थी।

सम्मेलन के संस्थापकों में भी यही भाव स्फूर्त रहे होंगे, वे भी ऐसे रचनात्मक कार्यों की योजना प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझते होंगे जिनमें तत्सामयिक भावनाओं का स्त्रोत समाया हो—जिनमें समाज के जागरण का मूल्यांकन निहित पाया हो और जिन में भविष्य की सुखद कल्पना का उन्हें मधुर स्वप्न आया हो।

उस समय जैसी परिस्थितियां थी तथा मारवाड़ी समाज का जो स्वरूप था उसमें इस दिशा की ओर अग्रसर होना ही असीम साहस का परिचायक माना जा सकता था। बम्बई नगर की जनसंख्या में अनुपात की दृष्टि से मारवाड़ी समाज उस समय नाम मात्र को ही था किन्तु उसमें अप्रभावित समाज के हितैषीगण समय की पुकार पर अग्रसर होने में नहीं हिचकिचाये। उन्होंने आगे बढ़कर यह प्रकट किया कि वे राष्ट्र के निर्माण में हर प्रकार सहयोगी हैं तथा रहेंगे।

यों तो नवसूत्री कार्यक्रम में किसी एक ध्येय को अपने समक्ष रख कर तत्कालीन कार्यकर्त्ता अग्रसर हो सकते थे किन्तु सभी क्षेत्रों में सभी कुछ करने की साध लिये हुये वे बढ़े और शनैः शनैः ऐसी उपयोगी प्रवृत्तियों को अपने विकास कार्यक्रम का अंग बनाते गये जो वस्तुतः समाज को उचित मार्ग निर्देशन की परिचायिका सिद्ध हुईं।

सम्मेलन की आधार स्वरूप "डिबेटिंग युनियन" अपने आप में ऐसा अल्प किन्तु बलिष्ठ साधनों से युक्त संगठन था जिसने वह मंच निर्माण किया जहां समाज के भावी कृत्यों का साकार स्वरूप निर्धारित होनेवाला था। वहां के कार्यक्रमों का प्रसार तथा वहां प्रकट की गई भावनाओं की हवा जन जन के मन में विचार सूत्र का बीज आरोपित करती थी जो भविष्य में विशाल छत्र छायास्वरूप कुंजावली का आकार धारण करनेवाली थी।

वैसे देखा जाय तो स्वयं "डिबेटिंग युनियन" भी अपने आप में रचनात्मक कार्यों की प्रतिबिम्ब ही है तथा वहां जिन विचारधाराओं के प्रवाह का उद्गम स्थल दृष्टि गोचर होता है वे ही प्रभावकारी सरिता बनकर समाज के आदर्श निर्माण कार्यों को सींचित करनेवाली शक्ति का प्रतीक होनेवाली थी; इस तथ्य का सही रूप भावनात्मक दृष्टि से किये गये उन रचनात्मक कार्यों से परिलक्षित होता है जिनपर आज समाज को गर्व है।

सम्मेलन द्वारा जिन रचनात्मक कार्यों का श्रीगणेश किया गया। उन्हें यथाविधि संचालित किया गया तथा उनसे समाज के जिन तत्वों का पोषण हुआ उनपर विचार करने के पूर्व यह आवश्यक है कि उस समय समाज के मानस में तरंगित विचारधाराओं के सम्बन्ध में कुछ ध्यान दिया जाय।

समाज के ही वर्ग विशेष के लोगों में धार्मिक सहिष्णुता के भावों का अभाव होने के कारण यदा कदा गंभीर संकट उपस्थित हुये। धार्मिकता के प्रति आस्था एक चीज है जब कि अपनी मान्यताओं को बलपूर्वक ही अन्यों के गले उतारने का प्रयास एक दूसरी समस्या बन जाती है। जिनमें कट्टरता थी—जो प्रगति के प्रत्येक चरण को समाज की हितसाधना के विपरीत मानते थे उन्होंने किसी भी ऐसे कार्य को प्रोत्साहित करने में कोई रस नहीं लिया जिससे की रचनात्मक प्रवृत्तियों को योगदान मिला हो किन्तु दूसरी ओर अपनी संस्कृति व प्राचीनता के लिये उतना ही सम्मान हृदय में सुरक्षित रखे हुये उत्साही जन आगे आये जिन्होंने इन व्यवधानों को पार पाने के भरसक प्रयत्न किये और अन्तत. उनके प्रयासों को सफलता मिली—भटके हुये राहपर आये एवं सभी के समवेत स्वरों से एक ही वाणी प्रसारित हुई कि किसी भी मूल्य पर निर्माण की शृंखला टूट न पाये निरंतर अबाधगति से अग्रसर होती रहे।

इसी प्रकार दैनंदिन व्यवहार के अनेक क्षणों में भी मितव्ययता के नाम पर कृपणता, सादगी के नाम पर धन संचय एवं प्रतिष्ठा के नामपर झूठे आडम्बरों का दिखावा भी ऐसी ही रुकावटें अनुभव की जा रही थी जिनकी दिशा परिवर्तन आवश्यक थी और वह हुई भी पूरी उमंग के साथ जब कि समाज के लोगों की भावनाओं के प्रवाह का ज्ञान उन्हें हुआ। इन सब परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में जिस चमत्कार का प्रभाव था वह समाज के भावी निर्माण की आधारशिला थी जिसपर राष्ट्र के विशाल प्रासाद को अवस्थित किया जानेवाला था।

इन सामाजिक विषयों के अतिरिक्त भी दैवी आपत्ति के विषम काल में सेवावृत्ति के जिन साधनों का होना अनिवार्य था वे तुरंत ही तैयार किये जाने वाले उपादान नहीं थे। उनको आत्मसात् करने के लिये निरंतर सेवाकार्य एवं अनुशासन भावनाओं को प्रश्रय प्रदान करते हुये लगे रहना पडता था। समाज की सभी सेवाभावी संगठन शक्तियों के सहयोग से ही रचनात्मक सहकार का सम्मिलित साधन समुपस्थित किया जा सकता था जिस ओर सम्मेलन सदैव से साधना सहित संलग्न है।

सम्मेलन द्वारा संचालित संस्थाओं ने समाज के लिये अपनी उपयोगिता जिस रूप में सिद्ध की है उसकी जानकारी अन्यत्र आलेख में प्रस्तुत हुई है तथा इन सक्रिय सेवाओं के अतिरिक्त भी सम्मेलन ने समय समय पर जिन रचनात्मक कार्यों को हाथ में लिया व उनसे समाज को लाभ हुआ उसका संक्षिप्त विवरण अंकित करना समीचीन रहेगा।

अकाल–जलप्रलय–भूकम्प :

प्रकृति के प्रकोप से अनेक बार देश के विभिन्न स्थलों पर विध्वंस लीलायें हुई–घर उजडे एवं विनाश के भीषणतम दृश्य उपस्थित हुये। दैवी आपदा के इन दुःख दक्षणों में सारा देश पीड़ितों के आर्तनाद से विव्हल हो उठता था–उनकी पुकार पर दौड पडता था। सम्मेलन ने ऐसे किसी भी अवसर पर समाज के महत्व को गौण न रहने दिया और अपनी सेवाभावी रचनात्मक प्रवृत्ति के अनुकूल आगे बढ़कर ऐसे संकट काल में कार्यरत हुआ।

अपने प्रारंभिक काल में सन् १९१६–१७ के भयानक अकाल से पशुधन की रक्षार्थ विशेष द्रव्यराशि संग्रहित कर अनेक पिंजरापोल आदि गौ व पशुधन हितैषी संस्थाओं को राहतकार्य में सहयोग देने के सर्वप्रथम प्रयास में काफी सफलता सम्मेलन को प्राप्त हुई। गुजरात के जलप्रलय की संहारकारी परिस्थितियों में भी इसी प्रकार सम्मेलन अग्रिम रहा था जबकि सम्मेलन के कार्यकर्ता श्री जमनादासजी अडुकिया की अधिनायकत्वता में बहुत बडा दल इस संकटकाल में सेवार्थ उपस्थित हुआ जिससे प्रभावित गुजराती समाज के प्रमुख समाचारपत्र 'जन्मभूमि' 'बम्बई समाचार' आदि ने इस आपसी सहयोग के लिये सम्मेलन व उसके कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन करते हुये इस सम्पर्क का उपयोग भविष्य में निरंतर जनहितार्थ करने का दृढ़संकल्प घोषित किया।

विहार भूकम्प ने समस्त भारत में एक सिहरन सी पैदा कर दी और सारे देश की पीड़ित जनसमुदाय के प्रति समवेदना सभी रूपों में प्राप्त हुई। जिस अटूट लगन के साथ इस हृदयविदारक विनाश का प्रतिकार राष्ट्रीय भावना से अभिभूत होकर देश का बच्चा बच्चा करने को अग्रसर हुआ वह संकटकालीन ऐक्य का एक आदर्श स्वरूप था जिसकी अभिव्यक्ति न केवल महानुभूति प्रदर्शन तक ही सीमित रही बल्कि सक्रिय सेवा की अनोखी गाथाओं से यह युक्त रही है। सम्मेलन ने भी इस कार्य में अपना पूर्ण योग प्रदान किया तथा समाज को (अपील) निवेदन के रूप में निम्नोक्त प्रस्ताव ता २१–१–१९३४ को स्वीकार कर प्रसारित किया।

"मारवाडी सम्मेलन की यह सभा उन कोटि कोटि भूकम्प पीड़ित प्राणियों के प्रति हार्दिक समवेदन प्रकट करती है, जिनकी इस प्रलयंकर प्रकोप से जान और माल की असीम हानि हुई है। यह सभा बम्बई की समस्त मारवाड़ी तथा व्यापारी संस्थाओं से अपील करती है कि वह उन आपदग्रस्त प्राणियों की यथाशक्य सहायता करे।"

प्रस्ताव के साथ साथ "ज्वालामुखी" नाम से अभिनीत एक नाटक के माध्यम से समुचित अर्थ संग्रह एवं जनता के मनोभावों का मार्गदर्शन करने का सफल प्रयास किया गया।

२५ जुलाई १९४३ में खारी नदी की भयंकर बाढ के संकट से अनेक स्थल ग्रस्त हुये तथा धन-जन की जो अपार क्षति हुई उसका वर्णन संभव नहीं है। विपत्तिग्रस्त राजस्थानी बन्धुओं की अप्रत्याशित हानि के समाचार प्राप्त होते ही सम्मेलन ने मारवाडी चेम्बर आफ कामर्स के सभाकक्ष में हिन्दुस्तानी देशी व्यापारी आदि संस्थाओं एवं नगर के अग्रगण्य लोगों की एक सभा श्री गोविन्दराम सेक्सरिया के सभापतित्व में आयोजित की तथा राजपूताना बाढ पीडित सहायता समिति (फ्लड रिलीफ कमिटी) का संगठन करवाया जिसकी अपील पर सहायता कार्य के हेतु समाज के उदारमना नर-नारियों से कुल रु १२५०९६–१४–१० एकत्रित हुये। समिति द्वारा निर्दिष्ट योजना के अधीन सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं के तीन दल बाढ पीड़ित स्थानों पर पहुंचे जिनका अधिनायकत्व श्री रामेश्वर साबू और जमनादास अडुकिया ने ग्रहण किया।

बम्बई स्टूडेन्टस् युनियन, मारवाडी मित्र मण्डल, मारवाडी छात्रसंघ, मारवाडी व्यापारी स्कूल, मारवाड़ी विद्यालय और सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय का सराहनीय योग इस पुनीत कार्य में अर्थ संचय के निमित्त प्राप्त हुआ। मित्रमण्डल द्वारा अभिनीत "अन्धश्रधा" नाटक की तथा रावसी सिनेमा के मालिक मेसर्स कपूरचन्द एण्ड सन्स ने "विस्मत" फिल्म से एक दिन की आय समिति को प्रतीकस्वरूप प्राप्त हुई। बाढ दिवस की घोषणा के साथ छात्र-छात्रायें वस्त्र व धन-राशि एकत्र करने निकले पड़े तथा दैनिक "जन्मभूमि" के श्री अमृतलाल सेठ ने उपलेटा फण्ड के रुपये ११२७२–७ समिति के भारतीय स्तर पर सहायता के स्वरूप से आश्वस्त होकर इसी फण्ड में सम्मिलित करवा दी एवम् मेवाड कमेटी को भी समिति से संयुक्त करवा दिया।

श्री रामेश्वर साबू ने दलबल सहित अजमेर पहुंचते ही डिप्टी कमिश्नर के सभापतित्व में तथा श्री भागचन्द सोनी के उप-सभापतित्व में जनप्रतिनिधियों एवं सरकार की ओर गठित संयुक्त समिति से सम्पर्क स्थापित किया तथा एकत्र राशि उक्त समिति को सौंप देने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप में सक्रिय कार्य की इच्छा व्यक्त की जिसके

सन् १९३८ में स्थायी स्वयंसेवक दल की आवश्यकता एवं महत्व को विविध अवसरों पर आयोजित महोत्सवों एवं सभादि की व्यवस्था और अन्यान्य प्रकार से सामाजिक व राष्ट्रीय सेवा के अन्तर्गत स्वीकार किया गया। सन् १९३८ में राजस्थानी कार्यकर्ता सम्मेलन के अवसर पर "मारवाड़ी स्वयंसेवक दल" की स्थापना सम्मेलन द्वारा की गई थी। इस स्वयंसेवक दल ने अपने शैशवकाल में ही सभी राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ किया। बम्बई प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में होनेवाली सभी सार्वजनिक सभाओं की व्यवस्था में दल का पूर्ण सहयोग रहा तथा १२ फरवरी १९३९ की बैठक में इसकी सक्रियता में अभिवृद्धि के उद्देश्य से इसे "हिन्दुस्थानी सेवा दल" के साथ संयुक्त कर देने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

देश में व्याप्त अशान्तियों के अवसर पर यदा कदा विषम समस्या उपस्थित हुई है। सन् १९४७ में सम्मेलन ने परिपत्र एवं समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रसारित करवाते हुये अपने सदस्यों और बम्बई के नागरिकों को अधिकाधिक संख्या में नागरिक सेवा दल (होमगार्डस्) संगठन में सक्रिय भाग लेने का आव्हान किया था। १८ मार्च १९४९ को सम्मेलन ने सेवा विभाग की स्थापना की जहां रोगग्रस्त लोगों को थर्मामिटर, बर्फ की सेक की थैली, एनिमा उपकरण व बेडपान्स जिन्हें जुटाने में कभी कभी बहुत कठिनाई अनुभव होती है प्रदान करने की व्यवस्था रखी गई।

सम्मेलन की सेवा समिति के अन्तर्गत वर्तमान समय में भी भूलेश्वर स्थित शीतला देवी के मन्दिर पर चैत्र कृष्णा अष्टमी को होनेवाले मेले की व्यवस्था व दर्शनार्थियों की सुविधा का कार्य नियमित रूप से प्रतिवर्ष सम्पन्न हो रहा है तथा जयंती वर्ष में सुदृढ़ स्वयंसेवी जनों की इकाई संगठित करने का प्रयास किया गया है। सामूहिक सेवाभाव के जिस आदर्श की अभिव्यंजना एवं अनुपम अनुशासन की जो अनुभूति इसके माध्यम से होती है उसका मूर्त स्वरूप यदि सम्मेलन की कोई प्रवृत्ति विशेष रही है तो वह है अधोलिखित लाजपत व्यायामशाला जिसका प्रारंभ सम्मेलन के स्फूर्त प्रयत्नों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और जिसके द्वारा शारीरिक पुष्टि के साथ साथ विशिष्ट अनुशासन एवं सेवाकार्यों के प्रशिक्षण में समाज के लोगों की अभिरुचि बढ़ी है।

श्री लाजपत व्यायाम शाला

राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व को स्वाभिमान का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत करने वाले पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की पुण्य स्मृति को स्थिरता प्रदान करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना हुई थी। पंजाब की क्रूर नौकर शाही के हाथों असंख्य दंड प्रहार सीने पर झेलने वाला यह सेनानी लाहौर स्टेशन पर साइमन कमिशन के बहिष्कार की लौ जगाकर लेटा तो चिरनिद्रा में ही निमग्न हो गया। सम्मेलन ने श्रद्धांजलि अर्पित करना व शोक संदेश प्रेषित करना ही उचित न समझकर कुछ सक्रिय कार्य करने का निश्चय किया।

नवंबर १९२९ में घटित इस दुर्घटना से जहां राष्ट्र भर में रोष का वातावरण था वहां उस रोष को स्वयम् के विनाश की ओर अग्रसर होने से रोककर शक्तिवर्द्धन व आत्मबल के मार्ग पर डालना अनिवार्य था। नगर में अनेक समुदायों की व्यायामशालायें नियमित रूप से संचालित थी किंतु मारवाड़ी समाज के लिये इसका अभाव ही था। यहां की निरंतर परिवर्तनशील जलवायु के प्रभाव से समाज में शारीरिक व्याधियां अभिवृद्धि की ओर थी तथा लोगों को जैसे प्रतीक्षा ही थी कि इस कार्य का शुभारंभ हो और हम उसमें लाभ उठायें।

इन भावनाओं को स्थायित्व प्रदान करने के हेतु उसी महीने में लाजपत व्यायामशाला का प्रारंभ हुआ। जिस स्थल पर इसकी व्यवस्था की गई उसके आसपास कोई सार्वजनिक व्यायामशाला न थी जिसका उपयोग उस क्षेत्र के लोगों को प्राप्त हो। यही कारण था कि स्थापना के प्रथम ३ मास में ही इसने आशातीत उन्नति की। तीन मास की अल्पावधि में १३५ सदस्यों के नामांकन से उत्साहित कार्यकर्ताओं ने इसकी भावी व्यवस्थाओं के बारे में विचार करना उचित समझा।

पंजीकृत सदस्यों में ६५ बालक और ७० प्रौढ़ जन थे तथा प्रतिदिन औसत उपस्थिति ९२ थी। इतनी अधिक संख्या में शिक्षार्थी जनों की सुविधा के लिये दो व्यायाम प्रशिक्षकों की व्यवस्था थी जिन में एक प्रातः एवम् सायं दोनों समय उपस्थित रहते थे और दूसरे का प्रातःकालीन समय ही निश्चित था। स्थान को स्वच्छ व सामान को सुरक्षित संभाल का उत्तरदायित्व एक अन्य व्यक्ति पर था। सर्वप्रथम व्यायामशाला स्थल गायवाड़ी कान्देल स्ट्रीट हरिभाई लेन स्थित एक मकान में रखा गया जिसका किराया रु० ७५-०० प्रतिमास तथा उसके निकट ही एक खुला स्थान रु० १५-०० प्रतिमास के हिसाब से लिया गया था ताकि अभ्यास आदि की सुविधाओं से व्यायामशाला वंचित न रहे। इस प्रकार एक रचनात्मक प्रवृत्ति का समारंभ सम्मेलन द्वारा हुआ।

प्रदर्शन

सदस्यों ने अपने कौशल का प्रदर्शन करने में कभी हिचकिचाहट अनुभव नहीं की। खुला मैदान हो अथवा नाट्य गृह का रंग मंच उन्होंने निस्संकोच अपनी कला को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया। प्रथम वर्ष ही व्यायामशाला को चार प्रदर्शनों का अवसर प्राप्त हुआ। तीन बार मारवाड़ी नाट्य परिषद् द्वारा अभिनीत "सामाजिक क्रान्ति" नाटक से संलग्न और एक बार श्री अग्रसेन जयंती के अवसर पर मांगवाड़ी थियेटर में लाठी, लेजिम व जुजुत्सु क्रीड़ाओं के साथ-साथ लोहे की जंजीरें तोड़ने, लोहे की सलियां गले व हाथ में डाल कर मोड़ देने और अन्य विविध करतबों से उपस्थित जनता प्रभावित हुई जिसके फलस्वरूप व्यायामशाला में सदस्य संख्या २५० तक पहुंच गई।

इस प्रवृत्ति को सर्वप्रथम बल प्रदान करने में समाज के कतिपय विशिष्ट महानुभावों का हाथ था। सर्वश्री रामेश्वरदास बिड़ला, नारायणलाल पित्ती, रामदेव पोद्दार, दुलीचंद डालमिया आदि सज्जनों के अर्थयोग व श्री० इन्द्रमल मोदी के सक्रिय प्रयास ने इसे आत्मनिर्भरता की ओर अभिमुख करने में काफी योग दिया है।

श्री० रामचन्द्र वैद के सभापतित्व में दिनांक ३ फर्वरी १९३० को नरनारायण मंदिर के प्रांगण में वसंतोत्सव का समारोह आयोजित हुआ जिसमें बहुत बड़ी संख्या में जनता उपस्थित थी। सदस्यों द्वारा किये गये प्रदर्शनों में विशेष रुचिकर मोटर रोकना, शरीर के ऊपर से निकालना, डबल बार, ट्रेपिज तथा रोमन रिंग आदि विविध कार्य सुदक्षता पूर्वक प्रदर्शित किये गये।

विद्यार्थी गृह अंधेरी का निर्माणान्तर्गत भवन

भवन के शिलान्यास अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुये श्री० फतेहचंद झुंझनुवाला

सन् १९३८ में स्थायी स्वयंसेवक दल की आवश्यकता एवं महत्व को विविध अवसरों पर आयोजित महोत्सवों एवं सभादि की व्यवस्था और अन्यान्य प्रकार से सामाजिक व राष्ट्रीय सेवा के अन्तर्गत स्वीकार किया गया। सन् १९३८ में राजस्थानी कार्यकर्ता सम्मेलन के अवसर पर "मारवाड़ी स्वयंसेवक दल" की स्थापना सम्मेलन द्वारा की गई थी। इस स्वयंसेवक दल ने अपने शैशवकाल में ही सभी राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ किया। बम्बई प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में होनेवाली सभी सार्वजनिक सभाओं की व्यवस्था में दल का पूर्ण सहयोग रहा तथा १२ फरवरी १९३९ की बैठक में इसकी सक्रियता में अभिवृद्धि के उद्देश्य से इसे "हिन्दुस्थानी सेवा दल" के साथ संयुक्त कर देने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

देश में व्याप्त अशांतियों के अवसर पर यदा कदा विषम समस्या उपस्थित हुई है। सन् १९४७ में सम्मेलन ने परिपत्र एवं समाचार पत्रों में विज्ञप्ति प्रसारित करवाते हुये अपने सदस्यों और बम्बई के नागरिकों को अधिकाधिक संख्या में नागरिक सेवा दल (होमगार्ड्स्) संगठन में सक्रिय भाग लेने को आव्हान किया था। १८ मार्च १९४९ को सम्मेलन ने सेवा विभाग की स्थापना की जहां रोगग्रस्त लोगों को थर्मामिटर, बर्फ की सेक की थैली, एनिमा उपकरण व बेडपान्स जिन्हें जुटाने में कभी कभी बहुत कठिनाई अनुभव होती है प्रदान करने की व्यवस्था रखी गई।

सम्मेलन की सेवा समिति के अन्तर्गत वर्तमान समय में भी भूलेश्वर स्थित शीतला देवी के मन्दिर पर चैत्र कृष्णा अष्टमी को होनेवाले मेले की व्यवस्था व दर्शनार्थियों की सुविधा का कार्य नियमित रूप से प्रतिवर्ष सम्पन्न हो रहा है तथा जयंती वर्ष में सुदृढ स्वयंसेवी जनों की इकाई संगठित करने का प्रयास किया गया है। सामूहिक सेवाभाव के जिस आदर्श की अभिव्यंजना एवं अनुपम अनुशासन की जो अनुभूति इसके माध्यम से होती है उसका मूर्त स्वरूप यदि सम्मेलन की कोई प्रवृत्ति विशेष रही है तो वह है अधोलिखित लाजपत व्यायामशाला जिसका प्रारंभ सम्मेलन के स्फूर्त प्रयत्नों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और जिसके द्वारा शारीरिक पुष्टि के साथ साथ विशिष्ट अनुशासन एवं सेवाकार्यों के प्रशिक्षण में समाज के लोगों की अभिरुचि बढ़ी है।

श्री लाजपत व्यायाम शाला

राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व को स्वाभिमान का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत करने वाले पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की पुण्य स्मृति को स्थिरता प्रदान करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना हुई थी। पंजाब की क्रूर नौकर शाही के हाथों असंख्य दंड प्रहार सीने पर झेलने वाला यह सेनानी लाहौर स्टेशन पर साइमन कमिशन के बहिष्कार की लौ जगाकर लेटा तो चिरनिद्रा में ही निमग्न हो गया। सम्मेलन ने श्रद्धांजलि अर्पित करना व शोक संदेश प्रेषित करना ही उचित न समझकर कुछ सक्रिय कार्य करने का निश्चय किया।

नवम्बर १९२९ में घटित इस दुर्घटना से जहां राष्ट्र भर में रोष का वातावरण था वहां उस रोष को स्वयम् के विनाश की ओर अग्रसर होने से रोककर शक्तिवर्द्धन व आत्मबल के मार्ग पर डालना अनिवार्य था। नगर में अनेक समुदायों की व्यायामशालायें नियमित रूप से संचालित थी किंतु मारवाड़ी समाज के लिये इसका अभाव ही था। यहां की निरंतर परिवर्तनशील जलवायु के प्रभाव में समाज में शारीरिक व्याधियां अभिवृद्धि की ओर थी तथा लोगों को जैसे प्रतीक्षा ही थी कि इस कार्य का शुभारंभ हो और हम उससे लाभ उठायें।

इन भावनाओं को स्थायित्व प्रदान करने के हेतु उसी महीने में लाजपत व्यायामशाला का प्रारंभ हुआ। जिस स्थल पर इसकी व्यवस्था की गई उसके आसपास कोई सार्वजनिक व्यायामशाला न थी जिसका उपयोग उस क्षेत्र के लोगों को प्राप्त हो। यही कारण था कि स्थापना के प्रथम ३ मास में ही इसने आशातीत उन्नति की। तीन मास की अल्पावधि में १३५ सदस्यों के नामांकन से उत्साहित कार्यकर्ताओं ने इसकी भावी व्यवस्थाओं के बारे में विचार करना उचित समझा।

पंजीकृत सदस्यों में ६५ बालक और ७० प्रौढ जन थे तथा प्रतिदिन औसत उपस्थिति ९२ थी। इतनी अधिक संख्या में शिक्षार्थी जनों की सुविधा के लिये दो व्यायाम प्रशिक्षकों की व्यवस्था थी जिन में एक प्रात एवम् सायं दोनों समय उपस्थित रहते थे और दूसरे का प्रातःकालीन समय ही निश्चित था। स्थान को स्वच्छ व सामान को सुरक्षित संभाल का उत्तरदायित्व एक अन्य व्यक्ति पर था। सर्वप्रथम व्यायामशाला स्थल गायवाड़ी काव्हेल स्ट्रीट हरिभाई लेन स्थित एक मकान में रखा गया जिसका किराया रु० ७५-०० प्रतिमास तथा उसके निकट ही एक खुला स्थान रु. १५-०० प्रतिमास के हिसाब से लिया गया था ताकि अभ्यास आदि की सुविधाओं से व्यायामशाला वंचित न रहे। इस प्रकार एक रचनात्मक प्रवृत्ति का समारंभ सम्मेलन द्वारा हुआ।

प्रदर्शन

सदस्यों ने अपने कौशल का प्रदर्शन करने में कभी हिचकिचाहट अनुभव नहीं की। खुला मैदान हो अथवा नाट्य गृह का रंग मंच उन्होंने निस्संकोच अपनी कला को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया। प्रथम वर्ष ही व्यायामशाला को चार प्रदर्शनों का अवसर प्राप्त हुआ। तीन बार मारवाड़ी नाट्य परिषद् द्वारा अभिनीत "सामाजिक क्रान्ति" नाटक से संलग्न और एक बार श्री अग्रसेन जयंती के अवसर पर भागवाड़ी थियेटर में लाठी, लेजिम व जुजुत्सु क्रीड़ाओं के साथ-साथ लोहे की जंजीरें तोड़ने, लोहे की सलियां गले व हाथ में डाल कर मोड़ देने और अन्य विविध करतबों से उपस्थित जनता प्रभावित हुई जिसके फलस्वरूप व्यायामशाला में सदस्य संख्या २५० तक पहुंच गई।

इस प्रवृत्ति को सर्वप्रथम बल प्रदान करने में समाज के कतिपय विशिष्ट महानुभावों का हाथ था। सर्वश्री रामेश्वरदास बिड़ला, नारायणलाल पित्ती, रामदेव पोद्दार, दुलीचंद डालमिया आदि सज्जनों के अर्थयोग व श्री० इन्द्रमल मोदी के सक्रिय प्रयास ने इसे आत्मनिर्भरता की ओर अभिमुख करने में काफी योग दिया है।

श्री० रामचंद्र वैद के सभापतित्व में दिनांक ३ फर्वरी १९३० को नरनारायण मंदिर के प्रांगण में वसंतोत्सव का समारोह आयोजित हुआ जिसमें बहुत बड़ी संख्या में जनता उपस्थित थी। सदस्यों द्वारा किये गये प्रदर्शनों में विशेष रुचिकर मोटर रोकना, शरीर के ऊपर से निकालना, डबल बार, ट्रेपिज तथा रोमन रिंग आदि विविध कार्य सुदक्षता पूर्वक प्रदर्शित किये गये।
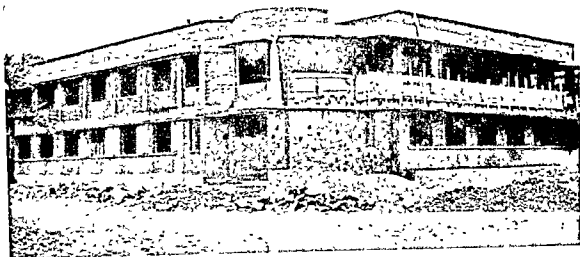
विद्यार्थी गृह अंधेरी का निर्माणान्तर्गत भवन
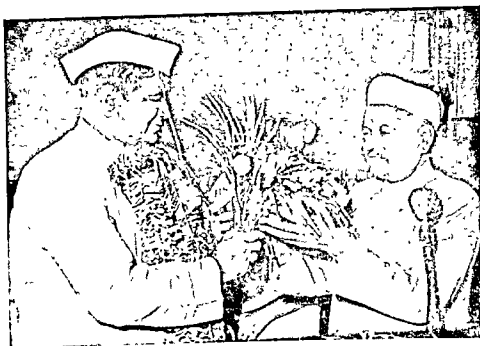
भवन के शिलान्यास अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुये श्री० फतेहचंद झुंझनुवाला
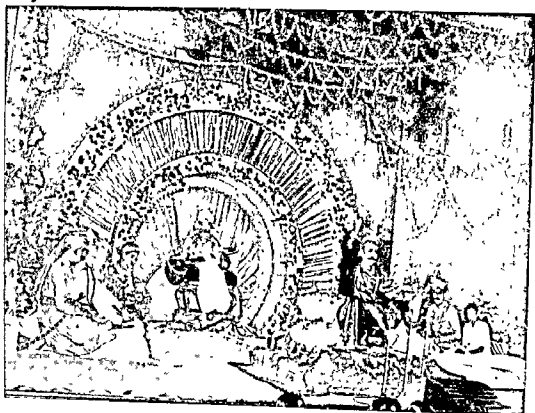
कवि दरबार

कवि सम्मेलन

इसी प्रकार का एक और प्रदर्शन आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को श्री अग्रसेन जयंती के अवसर पर किया गया जिसके लिये कोई विशेष तैयारी अथवा पूर्वाभ्यास का भी समय नही प्राप्त हुआ था।

इस वर्ष अर्थ योग के रूप में काफी अच्छी रकम होने पर भी व्यायामशाला घाटे में रही तथा सदस्यों की नियमित उपस्थिति भी निरंतर कैम होती जा रही थी। इस स्थिति का सामना करने के लिये सदस्यो ने नव उत्साह से कार्यरत होने का दृढ संकल्प किया तथा अधिकाधिक सदस्य बनें इसके लिये प्रयत्न प्रारभ किया गया जिसमें आशिक सफलता प्राप्त हुई।

सदस्य वृद्धि के इस अभियान के कारण यद्यपि कुल सख्या ३६५ तक पहुंच गयी किंतु नियमित उपस्थिति का अंक ११४ तक ही सीमित रहा फिर भी सचालकों के उत्साह में कोई कमी दृष्टिगोचर नही हुई।

अन्य व्यायाम कलाविद् अपने से कुछ लें व बदले में कुछ दें ऐसी व्यवस्था की नितात आवश्यकता अनुभव करते हुये गणपति सप्ताह में गामदेवी हिन्दू महासभा के निमंत्रण पर व्यायाम शिक्षक के प्रयत्नों से शाला के सदस्यों का दल कौशल प्रदर्शनार्थ सम्मिलित हुआ। महाराष्ट्रीय जनता से साधुवाद प्राप्त कर सदस्यों ने गर्व अनुभव किया और स्थानीय उत्सव समिति की ओर से शाला के व्यायाम शिक्षक को पदक प्रदान किया गया।

सन् १९३२ तक व्यायामशाला से ५५४ व्यक्ति लाभ उठा चुके थे। यद्यपि इस वर्ष भी संस्था ने गणपति सप्ताह में कई स्थानोपर अपने सदस्यों के करतबों का प्रदर्शन किया तथा दो स्थानो से रजत कप भी प्राप्त किये किंतु मारवाड़ी समाज के शारीरिक उत्थान की मूलभूत नीतिपर संस्थापित इस प्रवृत्ति की ओर उदासीनता के भाव देखे गये यह एक विचारणीय प्रश्न है। शरीर रक्षा किसे अभीप्ट नही है किंतु फिर भी इस संस्था को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा।

प्रारंभ से ही जो मासिक सहायतायें निर्धारित हुई वे यदि नियमित रुप से नही मिलती रहती तो यह सस्था जो कुछ उपयोगी कार्य अपने सक्षिप्त कार्यकाल में कर सकी वह भी न कर पाती।

मानव निर्मित समस्यायें :

प्रकृति की लीलाओं के सम्मुख तो मानव असहाय है परतु अपने ही कृत्यो पर नियंत्रण रखने में तो वह समर्थ हो सकता यदि उसके भावों में सात्विकता, हृदय में विशालता और मन में स्थिरता हो। अर्द्धशताब्दि के संक्षिप्त काल में ही दो दो विश्वयुद्धो की विभीषिका से मानवता पीड़ित हुई। सांप्रदायिक भावनाओ के उभारने का कटु फल राष्ट्र के शातिप्रिय विविध समुदायों को अस्तव्यस्त कर देने के रूप में चखने को बाध्य होना पड़ा और विशाल जन समूह का परावर्त्तन शरणार्थी के रूपमें निरंतर हुआ इसका उदाहरण मात्र भारत में ही प्राप्त हो ऐसी बात नही है किंतु जहा कही ऐसी प्रवृत्तिया अपना सर उठाती है जनता के कप्टों की गाथायें स्वतः प्रारंभ हो जाती है-फिर वह समय चाहे यहूदियो के सामूहिक वध का हो अथवा भारतीय सत्ता हस्तातरन कालीन हत्या काड का, सभी में इन्हीं क्रूर भावो की अभिव्यक्ति है अतः इन्हें स्वयम् मनुप्य द्वारा उपस्थित की गई समस्याओं के अंतर्गत ही हमें मान्यता प्रदान करनी होगी।

अप्रैल १९४१ में जब बंबई नगर में अचानक हिन्दु-मुस्लिम दंगे का सूत्रपात हुआ उस समय तक सौमनस्यता के साथ जीवनयापन करनेवाले नागरिकों को आपस में मरने कटने का स्वप्न तक नही था। जनता के मन से आतंक का भय हटाने के उद्देश्य से सम्मेलन ने त्वरित व्यवस्थायें की तथा दिनांक २७ मई १९४१ की व्यवस्थापक सभा ने निश्चय किया कि इस कार्य में सक्रिय रूप से सलग्न सभी संस्थाओं को सर्व प्रकार सहायता प्रदान की जाय।

१ सितंबर १९४६ को पुनः यहा दंगे प्रारभ हुये सम्मेलन शात न रह सका और व्यवस्थापक सभा की दिनाक ४ सितबर १९४६ की बैठक में दगो से पीड़ित एवम् भयग्रस्त नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक मारवाड़ी रिलीफ कमेटी संगठित की जिसमें मारवाड़ी चेंबर तथा हिंदुस्तानी देशी व्यापारी एसोसिएशन का भी पूर्ण सहयोग सम्मेलन को प्राप्त हुआ। कमेटी को स्थायी रूप देने व एक एम्बुलेन्स की व्यवस्थाका भी निश्चय किया गया। नागरिकों को असुरक्षित स्थलों से निकालने व सेवा केंद्रों में लाने के सत्साहसपूर्ण कार्य को उत्साह से कार्यकर्त्ताओंने स्वीकार किया। दगे के दिनो में सम्मेलन की तीन मोटर लारिया कार्यरत रही तथा इनमें एक बस जो सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय से प्राप्त हुई थी "कांग्रेस शाति दल" के उपयोग में निरंतर आती थी दूसरी यात्रियों को सुरक्षित रेल्वे स्टेशन लाने लेजाने के काम में लगी रहती थी व तीसरी निराश्रितो को सेवा केंद्रों में पहुचाती थी जो दोनो लारिया रिलीफ कमेटी को इंडिया युनाइटेड मिल्स लि० के सौजन्यसे उपरोक्त सेवा कार्य हेतु प्रयोग में लेने के लिये प्राप्त हुई थी। सेवाकेंद्र नाथूरामजी पोद्दारवाडी, सिंघानिया वाडी और पंचापतीवाडी में सचालित होते थे। प्राय १५०० लोगो के आवास व भोजन की व्यवस्था यहा की गई तथा शाताकूज के चतुर्थ केंद्र पर भी दुग्ध विक्रेता १००० लोगों के रहने, खाने पीने व अन्य आवश्यक वस्तुयें दिलाने की भी व्यवस्था सम्मेलन द्वारा हुई। आहतों की दवा मरहमपट्टी तथा निराश्रितों को प्रायः ४,००० गज कपडा भी कमेटी ने वितरित किया। इस तरह से कमेटी एक बलवती सेवा सगठन का स्वरूप धारण कर सकी।

संस्था सहकार :

सम्मेलन ने जहा एक ओर नवीन-नवीन प्रवृत्तियो के द्वारा समाज को अनेक उपयोगी साधन प्रस्तुत किये वहा समाज की अन्य सेवा सस्थाओं के साथ आदान-प्रदान की परंपरा को स्थिर रखा है। सन् १९३८ में नव सचालित "सम्मेलन डिबेटिंग सोसायटी" एक इसी प्रकार की नवीन प्रवृत्ति का रूप है इसके छः अधिवेशन प्रथम वर्ष में ही संपादित हुये तथा उनमें अनेक सामयिक व सामाजिक विपयो पर वादविवाद रखे गये जिनमें तर्क व वक्तृत्व शक्ति के विकास की उपादेयता निहित है।

सन् १९३७ में राजपूताना शिक्षा मंडल और फेलोशिप लीग के आवेदन पर सम्मेलन ने अपने कार्यालय का एक भाग उक्त संस्थाओं के उपयोग हेतु नि.शुल्क प्रदान कर इन सस्थाओं के प्रति ममत्व भावना का प्रदर्शन किया और इसी वर्ष "बाम्बे क्रानिकल" के यशस्वी संपा-

दक श्री० एस० ए० ब्रेलवी की अध्यक्षता में हुई वाद-विवाद सभा का विषय "समाजवाद ही भारत के लिये हितकर है" उस समय रखना सम्मेलन की समाजवाद के प्रति आस्था की भावना का प्रमाण मान्य किया जा सकता है। इसी प्रकार २३ अप्रैल १९३९ को सम्मेलन डिबेटिंग सोसायटी का विषय राजनैतिक विषय त्रिपुरी कांग्रेस से सबधित था। अतः यह निस्संकोच स्वीकार किया जा सकता है कि विविध विषयान्तर्गत वाद-विवाद सभाओ को सभी विचार धाराओं वाले तथा सभी वर्गों की प्रतिनिधि संस्थाओ के आपसी सामजस्य के आधारस्थल का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

वर्ष १९३९-४० में सम्मेलन ने हिन्दी पुस्तकालय सभाकक्ष का नि.शुल्क प्रयोग समाज की उपयोगी संस्थाओ प्रतापगढ प्रजा संघ, मध्यभारत देशी राज्य प्रजा परिषद् एवम् मेवाड़ प्रजा मडल को करने दिया। सहयोगी सस्थाओं को यथाशक्ति सहायता पहुचाने का प्रयत्न सम्मेलन ने सहर्ष किया है। मथुरा वैश्य युवक मडल व अग्रवाल सभा को उस समय श्री अग्रसेन जयती महोत्सव के आयोजनो में सहयोग देते के साथ ही साथ राजस्थान मित्र मडल, माटुगा-मारवाड़ी क्लब व मारवाड़ी छात्र सघ आदि को सामयिक सहकार सम्मेलन ने प्रदान किया। मित्र मडल द्वारा भी सम्मेलन के प्रत्येक आयोजन की सफलता के हेतु पूर्ण प्रयास किया गया।

स्व० सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रयत्नो से एकीकृत राजस्थानी रियासतो के बृहद् राजस्थान संघ निर्माण को सफलता के हेतु सम्मेलन ने जहां प्रस्ताव स्वीकार कर अधिकारी वर्ग को प्रेषित किये वहा राजपूताने की विभिन्न प्रजामडल इकाइयों, अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य लोक-परिषद और राजपूताना रीजनल कान्फ्रेन्स आदि से सहयोग व संपर्क रखते हुये इसकी त्वरित आवृत्ति के हेतु अथक प्रयास किया तथा समस्त प्रवासी बधुओं की एक समिति सगठित कर अखंड राजस्थान का मूर्तस्वरूप निर्माण करने में अपना योगदान किया। राजस्थान के सौभाग्य से यह संघ शीघ्र ही वास्तविक रुप में निर्मित हुआ और इस प्रकार एक ऐसे अध्याय का सूत्रपात यहा की जनता के हितार्थ हुआ जिसकी रचना के लिये अनेक प्रकार के आत्मबलिदानी कार्य करने में राजस्थान का नरवीर कभी भी किसी दृष्टि से पीछे न रहा था।

विविध प्रसंग :

सम्मेलन की बृहद् रचनात्मक प्रवृत्तियों के मध्य मे कुछ ऐसे सुखद अनिवार्य और कभी कभी कष्टसाध्य प्रयोगो का शुभारभ सामयिक स्थितियों की अनुकूलता को ध्यानगत रखते हुये हुआ जिससे समाज लाभान्वित हुआ। इन्ही में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयोजन सस्ता वस्तु भंडार के रूप मे किया गया था।

१—सस्ता वस्तु भडार · युद्धकालीन व्यवस्थाओ के अतर्गत जनता को खाद्य सामग्री आदि की प्राप्ति में अत्यत कष्ट का अनुभव होता था। दिनाक २७ जुलाई १९४२ को विद्याभवन में यथाशक्ति जनता के इस कष्ट में सहकार के उद्देश्य से एक दुकान प्रारभ की गई जिसमें लागत मूल्य पर सभी आवश्यक सामान विक्रय करने का ध्येय रखा गया था। जनता ने इसकी उपयोगिता अनुभव की। प्रतिदिन प्रायः आठ नौ सौ बिल कटते थे तथा कुल मिलाकर इस भण्डार से इक्कीस हजार गृहस्थ लाभान्वित हुए। सरकार की ओर से इस लोकोपयोगी वृत्ति के हेतु दिये गये आश्वासनों की पूर्ति यदि होती रहती तो सभवतः और अधिक उपयोगी सेवा भडार के द्वारा हो सकती थी किंतु "फूड कट्रोल" के उस विकट युग में वह संभव नहीं हो सका था।

२—पुस्तकसग्रह विभाग· जो राजस्थानी छात्र बम्बई आकर अपना अध्ययन कार्य सम्पन्न करते थे उनकी सुविधा की दृष्टि से यह नया विभाग सन १९५२-५३ में प्रारम्भ किया गया। इन विद्यार्थियो के लिये उपयोगी पुस्तकों का सग्रह अध्ययन समाप्त कर आगे की कक्षाओ में अग्रसर होनेवाले शिक्षार्थियो से अथवा विद्यानुरागी महानुभावों से जिसके पास ऐसी पुस्तकें हो सम्मेलन ने करना प्रारभ किया। इस विभाग से उपरोक्त विद्यार्थियो की आवश्यकता की सहज ही पूर्ति संभव हो सकी।

३—वृत्ति योजना समिति सम्मेलन ने समाज के नवयुवकों में व्याप्त बेकारी की समस्या पर भी गभीरतापूर्वक विचार किया। सन् १९५६-५७ में प्राविधिक (टेकनीकल) कार्यों के प्रशिक्षण की ओर उन्हें प्रोत्साहित करने तथा उपयोगी कार्यों में रत होने के कतिपय साधनो की व्यवस्था को महत्व प्रदान करने के उद्देश्य से सम्मेलन द्वारा एक समिति का सगठन किया गया जो पदाभिलाषी एवम् नियुक्तिकर्ताओं के मध्य सहयोग का भाव अपनाते हुये इस कार्य को अग्रसर करने को तत्पर हुई। उद्योग व्यापार के प्रतिनिधियो का सामयिक सहयोग इस योजना को प्राप्त हुआ तथा अनेक व्यक्ति अपनी योग्यता के बलपर इस माध्यम का लाभ उठाने में सफल हुये।

४—सहकारी प्रतियोगिता : राजस्थानी ग्रेज्युएटस् एसोसिएशन के सहयोग से राजस्थान के राजस्व मंत्री श्री० दामोदरलाल व्यास की उपस्थिति में दिनाक ८ जनवरी १९५६ को सर बद्रीलाल पित्ती सभागृह में इस प्रतियोगिता का समारभ हुआ तथा इसमें समाज की भावी पीढ़ी के नवयुवक वक्ताओ ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया व विषय के पक्ष विपक्ष का प्रतिपादन व खडन अत्यधिक रुचिकर ढग से किया।

५—डाक हड़ताल सेवा कार्य : दिनाक १२ जुलाई १९६० को केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल ने नगर की डाकसेवा को अत्यन्त अस्तव्यस्त कर दिया। इस संकटकाल में जनसहयोग की भावना से सम्मेलन ने अपने कार्यकर्त्ताओं की सेवाये प्रस्तुत करते हुये महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री, केंद्रीय सपर्क अधिकारी, पश्चिमी व मध्य रेल्वे के मैनेजर एवम् पोस्टमास्टर जनरल से संपर्क किया तथा मुख्य डाकघर, बबई में सम्मेलन के सदस्यो, कर्मचारियो व अध्यापिकाओ आदि ने डाक की छंटनी व पत्रादि टाइप करने के कार्य सपन्न किये तथा जनता की इस आकस्मिक कठिनाई के परिमार्जन मे अपना सहयोग दिया।

६—छात्रवृत्ति योजना. विविध परीक्षाओं मे अच्छे अंक प्राप्तकर सफल होने वाले राजस्थानी छात्रो को कोई प्रोत्साहन किसी दिशा से प्राप्त नही होता था। इस अभाव की ओर सम्मेलन का ध्यान गया और वर्ष १९६०-६१ में यह योजना इस संबंध में स्वीकार की गई जिसके अनुसार इस वर्ष दो छात्रवृत्तिया एस० एस० सी० परीक्षा मे उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के लिये और एक एक छात्रवृत्ति क्रमशः इंटर आर्टस्, कामर्स, साईस, बी० ए०, बी० काम०, एम० ए० और एल.एल. बी० परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी के लिये निर्धारित हुई। यह छात्र-

वृत्तियां बंबई और उपनगरों के राजस्थानी विद्यार्थियों में से उपरोक्त परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होनेवाले को दिये जाने का निश्चय हुआ। एम० एस० सी० के लिये १५०) व १००) तथा अन्य परीक्षाओं के लिये १५०) छात्रवृत्ति की रकम निश्चित की गई। प्रथम वर्ष में ही इसके अधीन दो एस० एस० सी० छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसी वर्ष विदेश में मेकेनिकल इन्जिनियरिंग के अध्ययन हेतु भी रु० २५००) की छात्रवृत्ति एक छात्र को दी गई जो राशि सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला से प्राप्त हुई थी।

शिक्षार्थियों में आपसी स्वस्थ स्पर्धा भाव एवम् प्रतियोगितात्मक भावनाओं को जागृत रखने के उद्देश्य से ही इन छात्रवृत्तियों को प्रारंभ करने का निश्चय किया गया था तथा साथ ही साथ विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर सम्मेलन की ओर से उन्हें सार्वजनिक रूप से पुरस्कृत करने की व्यवस्था उनमें आत्मगौरव की अनुभूति उत्पन्न करने का साधन बनी यह एक तथ्य है। इस योजना के अंतर्गत ही सन् १९६२ की परीक्षाओं के परिणामों के अनुसार छात्रवृत्ति व पुरस्कार प्राप्ति के अधिकारी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने के उद्देश्य से सर्व प्रथम समारोह का एक आयोजन दिनांक १८ सितंबर १९६२ को सर वंशीलाल पित्ती सभागृह, फणसवाडी में किया गया।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय से एस० एस० सी० परीक्षा में भी सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाली छात्रा कु० कुसुमलता रघुनंदनप्रसाद अग्रवाल को ७३.९४ प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर स्वर्ण पदक एवम् रु० २०) प्रतिमास की छात्रवृत्ति इस वर्ष के लिये दी गई। बी० ए० में हिन्दी प्रमुख विषय लेकर प्रथम श्रेणी में आनेवाली छात्रा को भी प्रतिवर्ष रु० १००) का पुरस्कार देने की योजना स्वीकृत की गयी।

अनिवार्य आयोजन :

सभी भावी आयोजनों का भार वर्तमान पीढ़ी पर है-पूर्वजों के प्रसाद की गरिमा ने समाज के मस्तक को गौरवपूर्ण ढंग से उच्चता की ओर अभिमुख रखा है। उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों पर गर्व करने का अधिकार आज समाज के बच्चे बच्चे को है

तात्पर्य यही है कि सम्मेलन के रचनात्मक इतिहास की यह संक्षिप्त गाथा भूतकालीन विशिष्टताओं, वर्तमान उदारताओं एवम् भविष्य की कल्पनाओं का एक सन्तुलित चित्र समुपस्थित करने का प्रयास मात्र है तथा इसमें समाज की सही दिशा में संचालित शक्ति का प्रवाह अवरुद्ध न होकर निरंतर गतिशील रहे यही कामना हर समाज सेवी के हृदय को उद्वेलित करती रहे यह सभी की सद्भावना है।

राजस्थान लोकरंजक वादक-गायक भोपा

सांस्कृतिक समृद्धि के सुयत्न

सामवेद के सर्जक सृष्टि नियता द्वारा समवेत स्वरो की सतत साधना को दिया गया सर्वतोपरि स्थान ससार के समस्त सजीव श्रेणी समूह को स्वभावतः उसकी श्रेष्ठता स्वीकृत कराने के सत्प्रयत्न स्वरूप ही समुपस्थित किया है। स्वर व साधना के सहायक साथियों का सौम्य, शांत साकारता के सफल साधनों में सांस्कृतिक समाकृतियाँ एवम् सुसम्य श्रेष्ठाभिनय से संयुक्त सूत्रों का सौंदर्य समाहित है।

भारतीय संस्कृति के आदिकाल से कला का जीवन में जो अभूतपूर्व स्थान रहा है उसकी सुस्पष्टता उपरोक्त तथ्यों से परिलक्षित है। कला के विविध उपादानों के उत्कर्ष की चरम सीमा यदि कही दृष्टिगोचर हुई है तो वह इसी देश में हुई। ऐसा कोई क्षेत्र बाकी नही रहा होगा जिस ओर भारत के आदि कालीन महर्षियो का ध्यान न गया हो। जिस सोमसुधा के श्रवणमात्र को आज का मानव मानसिक व्यथाओं से मुक्ति का मंत्र मानता है वह वैदिक सभ्यता की गृहव्यवस्था के अनिवार्य अंग के रूप में मान्य थी। सोमरस का पान उस समय आकंठ तृप्ति का ही योग था किन्तु सोमसुधा से झकृत मनवीणा के तार तत्कालीन तपोनिष्ठो को ही नही अपितु आज के अहंवादी अधिनायकों की अनीश्वरतापूर्ण अनुभूतियो तक को अधिकाधिक अंशो में अभिभूत कर देती है।

जिस जलाशय के पानी लाने वाले दरवाजे बराबर खुले रहते हैं, उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती। उसमें सदा ही स्वच्छ जल लहराता रहता है और कमल के फूल खिलते रहते हैं। कूपमंडूकता और दुनिया से रूठ कर अलग बैठने का भाव संस्कृति को ले डूबता है।

—कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर'

संगीत मात्र को ही कला मान लेना संभवत. अभीष्ट नहीं है किन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव के मन में इसके प्रति जो ममत्व है वही इसकी महत्ता व मानमर्यादा की मान्यता का माध्यम रहा है। शास्त्रीय विधियों से निरन्तर परिमार्जित व परिष्कृत भारतीय संगीत शास्त्र के उन्नायकों ने कितनी गहन तपस्या की होगी इसकी कल्पना मेघ-मल्हार, दीपक, भैरवी आदि राग-रागिनियों के सही श्रोताओं की वह श्रेणी ही सम्भवतः कर सके जिसे इनमें अन्तर्हित भावों का सूक्ष्मज्ञान हो तथा जो निराकारी भक्त की दृष्टि से नहीं अपितु उसमें साकारता की अनुभूति को सार्थक करने में सफल हो सकें।

अभिनय का सम्बन्ध अतीत युग से कलापक्ष की प्रबलता को प्रभावित करता रहा है। सुन्दर, सरस अभिनय के परिदर्शन से वह अभिव्यक्ति क्षणों के अन्तर्गत सम्पन्न हो सकती है वह वर्षों के अभिभाषणों, उपदेशों एवम् प्रशिक्षणों के द्वारा भी सम्भव नहीं है। एक क्रूर

आक्रान्ता के क्रियाकलापों की कष्टकथा हो चाहे करुणायुक्त क्रन्दन की अकथनीय कहानी अभिनय वह माध्यम है जिसका सीधा सम्पर्क मनुष्य के मन-मस्तिष्क की गहनतम गहराइयों से सम्बन्धित है और यही कारण है कि अभिनय से मंत्रमुग्ध वह अभिनेता के साथ हंसता, गाता, रोता, चीखता, चिल्लाता, चौकता और चैतन्यचित्त से चाव के साथ चकित भाव की चरम सीमाओं का बन्धन तक तोड कर तन्मयता से तल्लीन होता पाया जाता है। कला के जिस सोपान में इतनी शक्ति का सचय है उसकी सर्वोत्कृष्टता के प्रति संदिग्धता का सवाल भी सामने नही आता है तथा उसकी सर्वमान्यता के फलस्वरूप ही सभवत. समस्त संसार के सभी श्रेणी के समुदायो का स्नेहमय सौजन्य सम्प्राप्ति के सफल सयोजन का सूत्रपात सहर्ष सग्रहित कर सकने में यह अंग समर्थ हो सका है।

पुरातनता का प्रदर्शन व नवीनता की नाटकीय नटलीला के वास्तविक चित्राकन की चरमसीमा को चित्रकला की चर्चा मे चिरकालीन चमत्कारका चहुँमुखी स्वरुप प्रदान किया जा सकता है जो कला की बहुमुखी बृहद् वृत्तियों में एक दृढ संकल्प से समर्पित श्रेष्ठतम सी कृति की सही साधिका सिद्ध हो सकती है। राष्ट्र की महानतम कृतियो में इसी के सामजस्य की सम्पन्नता निहित है और वे अमरता प्राप्त है क्योंकि शताब्दियो के सामयिक सहारो से सत्रस्त रह कर भी उनके कलेवर में किसी प्रकार का कल्पनातीत अन्तर नही आया है–अजन्ता, एलोरा कन्हेरी, सारनाथ, सांची सभी की समाकृतियों का सौंदर्य सदैव से सघन स्वरूप सचित किये हुये है।

वस्तु कला की महानता में ही मूर्धन्य मानवीय मनोकांक्षाओं का मान मर्यादित है। समय-समय पर संकड़ो सालो की संस्कृतियों के संमिश्रण की शृंखलाओं के साकार अवशेष ही अपने अतीत की अग्नि परीक्षाओं के अग्रगण्य उदाहरण अपने में अन्तर्हित किये हुये अर्वाचीनता के अंग अंग में अनुवेष्ठित है। सोमनाथ देवालय की सर्व श्रेष्ठता के समकालीन साधनो ने ही वर्तमान सृष्टाओं के स्वप्नों को साकारता प्रदान की थी अन्यथा उनके अभाव से आहत रहकर उन अवशेषों का उतना उत्कर्ष आज के मानव से उसी रूप में नही हो सकता था। इसे सौभाग्य का सूचक भी माना जाना चाहिये कि सोमनाथ अपने सही स्वरूप में पुन. प्रतिष्ठापित हुआ और उसी वस्तु कला की अनुपम झलक अपने में तिरोहित किये हुये है जिस की विध्वंसता पर भारत का जन जन अश्रुप्लावित हुआ था।

साहित्यदर्शन से उन सभी समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है जो सारे समाज के सम्यक् साधनो का संयोग प्रस्तुत करती हैं। ऐसे साधनो को गद्य-पद्य-भावगीत अथवा अन्य किसी भी रीति से भाषा एवम् भावना के ताने बाने में बुना जा सकता है तथा इनके प्रभाव की चिरतनता का बोध उन्ही को हृदयगत हो पाता है जिनकी अभिरुचि इनमे किसी एक माध्यम की ओर भी हो। मीरा को ही अपने अन्त.करण के अनहद नाद की झंकार का अनुभव क्यो हुआ–भक्त सुन्दरदास की रसमय रचनाओ से प्रसूत भावो का मर्म उनके साहित्य के रसिकों की अपनी धरोहर रही ऐसा क्यों? तथा भारतीय वांगमय के अमरतत्व डिंगल के आदि सृष्टाओ को उद्बोधनकारी वाणी का प्रसाद आज राष्ट्र भाषा की सहायता का प्रतीक बन सका यह क्यों? इन सभी का एक ही उत्तर हो सकता है कि साहित्य का निर्माण वह सृष्टि है जिसका आदिकाल से मानव की अनुभूतियों के प्रतिपल स्फुर्त स्पन्दनों से और जिसमें नवीनतम भावों एवम् पद्धतियों का निर्झर निरन्तर प्रवाहित रहता है। साहित्यकारों की समर्थ लेखनी का चमत्कार मानसिक उद्वेलन का भी कारण बन सकता है तथा शीतल, स्नेहिल, सुधामय सौजन्यता की अभिव्यक्ति का आधार भी वही प्रस्तुत कर्ता हो सकता है अत उसका सर्वव्यापी प्रभाव निस्संकोच स्वीकार करने में किसी भी प्रकार की आपत्ति आ नही सकती क्योंकि अन्यथा स्थिति में साहित्य, संगीत, कलाविहीन साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः" की उक्ति चरितार्थ हो सकती है।

मारवाड़ी सम्मेलन के राजनैतिक व सामाजिक स्वरूप का अन्तर्दर्शन आलेख के प्रथम अध्यायो से प्राप्त हो सकता है किन्तु जनजीवन की सर्वांगीण विकासधारा के प्रत्येक मोड का अपना महत्व सर्वमान्य होता है। इस दृष्टि से सम्मेलन के उन प्रयत्नों के सम्बन्ध में सूक्ष्म विवरण देना समीचीन रहेगा जिन के द्वारा समाज में साहित्य के प्रति अभिरुचि ललित कलाओं के लालित्य की ओर लगनशीलता एवम् सांस्कृतिक दृष्टिसे सर्वांगपूर्ण समृद्धि के हेतु सुयत्नों के सद्प्रसार के सशक्त लक्षण प्रकट हुये है।

मारवाड़ी समाज की सांस्कृतिक इकाई का व्यवस्थित स्वरूप बम्बई में सर्वथा स्वीकृत तथ्य है अत: यह अनिवार्य उत्तरदायित्व सम्मेलन जैसी समाज की प्रतिनिधि संस्था के कंधों पर ही आ जाता है कि इस मान्यता में किसी भी रूप से कोई कमी का आभास न आने पाये तथा जिस संस्कृति का प्रतिनिधित्व हम कर रहे हैं उसके महान अतीत और सुखद भविष्य का प्रसाद पूर्णत: सुदृढ स्वरूप धारण किये हुये समाज के सभी वर्गों को जीवन के अभिन्न अंगकला की ओर सर्वदा उन्मुख एवम् आकर्षित रखे।

सम्मेलन की बहुमुखी प्रवृत्तियों में अभिनय द्वारा समाज के प्रमुखजन समय के सन्देश को घर घर जन जन के हृदय में विकसित करने के यत्न निरंतर करते रहे हैं।

पूर्वकाल में तो सम्मेलन इस दिशा में स्वयम् संगठित प्रयत्न की ओर अग्रसर नही था तथा समाज की अन्य तद्विषयक कार्यरत संस्था यथा मारवाडी नाट्य परिषद मारवाड़ी मित्र मण्डल, आदि के तत्वावधान में जो जो आयोजन होते वे सम्मेलन के ही आयोजन कहलाते थे तथा उन में अधिकाश अभिनेता भी प्राय: सम्मेलन के कार्यकर्ताओं में से ही होते थे। अत: यह मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती कि सम्मेलन ने अभिनयकला के प्रोत्साहन हेतु ऐसे आयोजनो को सर्वथा महत्वपूर्ण माना है और उन के द्वारा समाज में जागृति का सन्देश पहुँचाने का स्तुत्य कार्य स्थापना काल से ही करता आ रहा है।

साहित्य, संगीत और अन्य सास्कृतिक साधनो का सदुपयोग समाज के सर्वांगीण विकास के हेतु करने के जो प्रयास सम्मेलन द्वारा हुये है तथा प्रारंभिक काल से अबतक जिन जिन सामयिक परिस्थितियों के उतराव चढाव का प्रभाव उनपर भी परिलक्षित हुआ है यह एक विचारणीय तथ्य है।

स्वाधीनता संग्राम के समय इस तरह की किसी भी प्रवृत्ति का एक मात्र उद्देश्य समाज में भावनायें उत्पन्न करने की ओर निश्चित रहता था जिनमे राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पालन की सजगता हर व्यक्ति के हृदय में बनी रहे। दूसरी ओर ऐसे अवसर भी उपस्थित हुये हैं जब कि प्रकृतिजन्य प्रकोपों से त्रस्त जनों के हितार्थ एवम् राष्ट्रीय संकटकालीन स्थितियों के परिहारार्थ इनका लाभ उठाया गया और सम्मेलन के सभी प्रकार के आयोजनों में इनका महत्व मान्य किया गया।

समय की गति के साथ सम्मेलन ने भी कदम बढ़ाये तथा उसकी प्रवृत्तियों के मुख्य अंग के रूप में सांस्कृतिक गतिविधियों को शनैः शनैः मान प्राप्त हुआ। आज के युग में सांस्कृतिक अभियान का जो चक्र देश के प्रत्येक विभाग में तथा सभी समाजों में दृष्टिगत हो रहा है उनमे सर्वथा नूतन अभिनव प्रयोग सम्मेलन ने संपादित करने के प्रयास निरंतर किये हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ साथ राजस्थानी भाषा के सुललित सौन्दर्य से समाज के लोगों को मंत्रमुग्ध कर देनेवाले ऐसे आयोजन सम्मेलन द्वारा हुये हैं जिनकी महत्ता को अन्य समाजों ने व विभिन्न पत्रों ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया है।

मारवाड़ी समाज के सभी सामाजिक व्यवहारों की विशिष्ट शैली और मंगलमय अवसरों पर गेय लोक गीतों की मधुरतम ध्वनि को सही रूप में प्रस्तुत करने और उनकी साहित्यिक सम्पन्नता की सौष्ठवता सिद्ध करने के उद्देश्य को भी सम्मेलन ने सफलतापूर्वक संपादित करने का प्रयास किया है। लोकगीतों के अभिनव प्रयोग के साथ ही साथ डिंगल की नवरस युक्त रचनाओं का सम्यक् प्रस्तुतिकरण समाज के समक्ष करने का सत्साहस सम्मेलन के सर्वथा नवीन कार्यक्रमों का अंग बना और इस दिशा में शोध व अनुसंधान के सभी प्रयत्नों को समाज की जानकारी में लाने के उद्देश्य से उनके नियमित प्रकाशन का उत्तरदायित्व अपने मुख पत्र द्वारा ग्रहण करने की ओर सम्मेलन सदैव उन्मुख रहा। इन सभी प्रयासों का अन्तत. प्रयोजन यही रहता था कि सम्मेलन को समाज व राष्ट्र के विकास की सभी प्रक्रियाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान करना है तथा मारवाड़ी समाज के सांस्कृतिक स्वरूप की सुरक्षा में संलग्न रहना है तो निश्चय ही ऐसे सभी कार्यक्रमों की आयोजना में तत्पर रहना अनिवार्य होगा और तभी सम्मेलन सांस्कृतिक उत्थान में सहयोगी सिद्ध हो सकेगा।

साहसिक प्रारम्भ :

सम्मेलन के प्रारम्भिक काल में कतिपय ऐसी असभ्द्रताओं की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया गया जिनके कारण अन्य समाजों की दृष्टि में हमारी व्यावहारिक सौमनस्यता बनी रहे। कार्यकर्त्ताओं ने सम्मेलन की ओर से होली व घुलडी के त्यौंहारों पर तत्कालीन पद्धतियों के त्यागने के सम्बन्ध में बहुत प्रचार किया। अनेक सभाओं एवम् समाचार पत्रों के माध्यम से इस आन्दोलन को बल प्रदान किया कि होली के अवसर पर जो भी आयोजन हो वे कलात्मक एवम् राजस्थानी संस्कृति के सह दिग्दर्शक बन सकें तथा सभी उनमें मुक्त रूप से सहयोगी बनकर भाग ले सकें। सन् १९१५ और तत्सामयिक समाचार पत्रों के पृष्ठ इस सम्बन्ध में किये गये प्रयत्नों से भरे पड़े हैं जिनमें सम्मेलन द्वारा इन अभद्र परिपाटियों को त्यागकर सुरूचिपूर्ण और शुद्ध कलात्मक प्रवृत्तियों को स्थान देने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है।

शान्तिमय परिस्थितियों के नये दौर से परिवेष्ठित उस काल में समाज की अन्य प्रायः प्रवृत्तियों में नीरसता व रूक्षता के भावदृष्टिगोचर होते थे किन्तु सम्मेलन इन राजनैतिक प्रक्रियाओं की क्रान्तिकारी उथल पुथल से संलग्न रहते हुये भी कलात्मक प्रवृत्तियों के प्रति उदासीन नहीं था। इन गतिविधियों को अग्रसर करने का माध्यम सम्मेलन ने भी तभी से त्यौंहारों को ही चुना था और उन्हें सात्विक व सुरूचिपूर्ण ढंग से मनाने की योजनाओं का निर्माण किया व तदनुकुल आचरण का प्रयत्न भी सम्मेलन व उसके कार्यकर्त्ताओं द्वारा हुआ।

प्रथम कवि सम्मेलन :

सर्व प्रथम सन् १९३२ में हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन भी सम्मेलन की अपनी विशिष्टता रही थी। उस समय यद्यपि बम्बई में हिन्दी साहित्यिकों की संख्या न के तुल्य थी किन्तु फिर भी इस प्रथम प्रयास में सम्मेलन को काफी सफलता प्राप्त हुई तथा इसमें स्थानीय एवम् बाहर के अनेक सुप्रसिद्ध कवियों ने अपनी सुललित रचनायें प्रस्तुत की।

संत समाधि प्रकरण :

महात्मा सुन्दरदासजी की फतेहपुर (सीकर) स्थित समाधि के सम्बन्ध में समुपस्थित अप्रिय प्रसंग है जिसमें उनके शिष्य द्वारा बेची गई समाधि की पृष्ठ भूमि के अधिपत्य को लेकर वहाँ के नागरिकों एवम् भूमि क्रेता के मध्य विवाद उपस्थित हो गया था तथा वहाँ एक जन आन्दोलन इसके लिये प्रारम्भ हो चुका था। संत साहित्य की अमर कृति सुन्दर विलास के प्रणेता की प्रियस्थली का यह अपमान सम्मेलन को सह्य नहीं हुआ तथा सीकर नरेश को सारी स्थिति का खुलासा करते हुये न्याय प्रदान करने का निरंतर जोर सम्मेलन की ओर से डाला गया।

दीपावली स्नेह सम्मेलन एवम् होलिकोत्सव :

प्रीति सम्मेलन का आयोजन स्थापना काल से ही होता रहता था किन्तु २४ मार्च १९३५ को विशेष प्रकार के आयोजन का शुभारम्भ हुआ। इस वर्ष के आयोजन में सम्मेलन के सदस्यों के अतिरिक्त भी समाज के अन्य विशिष्ट जन भी प्रायः २०० की संख्या में प्रीति भोज समारोह में सम्मिलित हुये थे। सान्ताक्रुज स्थित जुहू के रमणीय सागर तट पर सम्मेलन के सभापति श्री रामदेवजी पोद्दार की ओर से प्रीति भोज खेल संगीत आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। अनेक मित्रों के आपसी मिलन, समुद्र स्नान की सुविधा और हास परिहास के वातावरण में अत्यन्त उमंग के साथ इस कार्यक्रम की सम्पन्नता सर्वथा सफल रही।

द्वितीय होलिकोत्सव भी जुहू में ही ८ मार्च १९३६ को आयोजित हुआ एवम् प्रीतिभोज तथा मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तुत करने का समस्त भार सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुकुन्दलालजी पित्ती द्वारा वहन किया

गया। यह आयोजन एक स्थायी स्वरूप धारण कर पाया और आज तक भी इसका सम्यक प्रयोग निरंतर जारी है।

होलिकोत्सव की भाँति ही दीपमालिका के अवसर पर भी स्नेह सम्मेलन के आयोजन की परंपरा का श्रीगणेश सन् १९३९ में हुआ जबकि प्रथम बार दीपोत्सव के अवसर पर दि ग्रेन एण्ड सीड्स ब्रोकर्स एसोसियेशन के सभाकक्ष में श्री गोविन्दरामजी सेक्सरिया की अध्यक्षता में इसका प्रथम आयोजन हुआ। मारवाड़ी समाज के सभी श्रेणी के सज्जन बहुत बड़ी संख्या में इस महोत्सव में सम्मिलित हुये थे।

दीपोत्सव एवम् होलिकोत्सव सम्मेलन के स्थायी कार्यक्रमों के अंग बन सके एवम् आगामी वर्षों में भी निरंतर उनका आयोजन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में किया जाता रहा। होलिकोत्सव के लिये स्थान प्राय. जुहू तट ही चयन होता रहा क्योंकि नगर के कोलाहल से दूर शांत रमणीक स्थल पर मेल मुलाकात का मौका भी मिलना संभव नहीं हो सकता था। यह सर्वथा अभिनंदनीय स्थिति रही है कि इस आयोजन के लिये वर्ष प्रति वर्ष क्रमश: बिड़ला बंगला, जानकी कुटीर, किलाचन्द बंगला और कई वर्षों तक रुइया पार्क का उपयोग सम्मेलन द्वारा इस प्रवृत्ति के हेतु किया जाता रहा था। जिसमें प्राय: १५०० की विशाल संख्या उपस्थित रहने लगी।

अनेक सुन्दर कार्यक्रमो का आयोजन इस अवसर पर होता रहा है, विशेषत. कवि सम्मेलन, जादू के खेल, कव्वाली प्रतियोगितायें एवम् एकाकी नाटक एवम् तत्पश्चात् दादा पोता व अन्य संक्षिप्त नाटिकायें काफी रुचिकर व प्रभावोत्पादक सिद्ध हुई और चीनी आक्रमण के संक्रमण काल में इस अवसर पर "विश्वास घात रो बदलो" जनजन के हृदय उद्वेलित कर देनेवाली रचना का रूप धारण कर सकी थी।

इसी प्रकार दीपोत्सव के अवसर पर आयोजित स्नेह सम्मेलन का भी अपना महत्व है और वह आज भी उसी उमंग के साथ सम्पन्न होता है।

इस अवसर का उपयोग सर्वमान्य है। समाज के सभी लोग एक स्थान पर एकत्र होकर नव वर्ष की शुभकामनाएँ व्यक्त करे तथा एक ही स्थल पर सबको सबसे भेंट नमस्कार का सुअवसर प्राप्त हो। गत वर्षों से यह निरंतर नर नारायण मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है जिसमें समाज के बहुत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित होते हैं। ऐसे अवसरों पर जबकि लोग मात्र मिलन की अभिलाषा लिये आते हैं और शीघ्र ही अन्य स्थलों पर जाने को उत्सुक होते हैं किसी विशेष कार्यक्रमका आयोजन नही होकर शीतल पेय या पान, सुपारी, इलायची से सामयिक स्वागत आगत बन्धुओं का किया जाता है और सम्मेलन की प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विवरण प्रचारात्मक उद्देश्यसे किया जाता है। राजस्थानी महिला मण्डल की ओर से भी इन वर्षों में लगातार इस शुभ अवसर पर महिला स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया जाता है जिसमें समाज की बहिनें भी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित होती हैं।

इस प्रकार यह दोनों प्रवृत्तियाँ ही सम्मेलन के सांस्कृतिक आयोजनों के स्थायी स्तम्भों का स्वरूप धारण किये हुये हैं तथा इनका सोत्साह आयोजन प्रतिवर्ष होता रहता है।

लोक कला आयोजन :

भारतीय संस्कृति की अभिन्न अंग स्वरूपा राजस्थानी शैली के प्रति विशिष्ट आकर्षण जन जन के मन में रमा हुआ है। इस अलौकिक शैली का स्फुरण चित्र, काव्य, संगीत एवम् लोकगीत सभी में सन्निहित रहा है और मारवाड़ी सम्मेलन ने सदैव अत्यन्त गर्व के साथ इसके किसी उपादान को जनता के समक्ष उपस्थित करते हुये संकोच नहीं किया है।

बम्बई नगर की कलाविद् जनता एवम् विशेषत: राजस्थानी कला के स्नेही जनों को सर्वप्रथम उदयपुर स्थित भारतीय गीतों एवम् नृत्यों का सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मेलन द्वारा दिनांक ८ जनवरी १९५५ को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता बम्बई के तत्कालीन राज्यपाल श्री मंगलदास पकवासा ने की तथा कार्यक्रम बहुत सफल हुआ और उसकी कुल आय प्राय: ८५००) की राशि लोक कला मण्डल को सम्मेलन की ओर से प्रदान कर दी गई।

सांस्कृतिक समिति का गठन :

सम्मेलन की सांस्कृतिक गतिविधियों में एकरूपता लाने एवं व्यवस्थित रूप मे कार्यक्रम प्रस्तुत करने व उसकी पूरी निगरानी का उत्तरदायित्व वहन करने के उद्देश्य से वर्ष १९५५-५६ में अलग से एक सांस्कृतिक समिति का गठन कर दिया गया जिसके सर्वप्रथम संयोजक श्री जयदेवजी सिंहानिया निर्वाचित किये गये। समिति के तत्वावधान में ही तबसे निरंतर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। समिति ने जिन विशिष्ट कार्यक्रमों के द्वारा सम्मेलन की सांस्कृतिक सेवाओं के स्तर में अभिवृद्धि की है उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

बसन्तोत्सव :

संगठन के प्रथम वर्ष के हेतु निर्धारित कार्यक्रम का शुभारंभ २६ फरवरी १९५६ को भारतीय विद्या भवन में प्रस्तुत बसन्तोत्सव के द्वारा हुआ। राजस्थानी काव्य, संगीत, नृत्य और नाटिका संयुक्त यह विविध मनोरंजक कार्यक्रम बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। विद्यालय की बालिकाओं का "राजरानी सीता" नाटक भी इस अवसर के उपयुक्त ही रहा जिसे सफलतापूर्वक अभिनीत करने का सुन्दर प्रयास बालिकाओं द्वारा किया गया।

लोकगीत-राजस्थान, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और मालवा के लोकगीतों का यह कार्यक्रम ८ अप्रैल १९५६ को प्रस्तुत हुआ। सुप्रसिद्ध राजस्थानी लोक गीत गायक श्री नूरमहम्मद लंगा और श्री सुमार ने गीतों में निहित प्राकृतिक शैली व लोकरंजन भावों से लोगों को परिचित किया तथा इनके श्रवण से जिन जीवंत भावनाओं का स्वाभाविक उभार मन में प्रस्फुटित होता है उसका प्रत्यक्ष प्रभाव इन गीतों के श्रोताओं पर परिलक्षित हुआ।

कवि दरबार : समिति द्वारा प्रस्तुत आयोजन श्रेणीगत दृष्टि से परखने पर तो एक से एक बढ कर ही संभवत: सिद्ध हों किन्तु यह सर्वथा सत्य स्थिति है कि जो भावावेश इस कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रोता व अभि-

नेता दोनों के मध्य उपस्थित देखा गया वैसा शायद ही अन्य किसी अवसर पर दृष्टिगोचर हुआ हो। कवि दरबार का सांस्कृतिक कार्यक्रम कला के क्षेत्र का एक अभिनव प्रयोग रहा तथा संगीत नृत्य नाट्य और काव्य की जो अजस्र धारा प्रवाहित हुई उसमें तिरोहित श्रोतागण सुधबुध बिसराये से प्रतीत हुये थे। समिति ने यह आयोजन १९ व २० अगस्त १९५६ को स्थानीय सेंट जेवियर्स कालेज के रंगमंच पर प्रस्तुत किया था जिसमें निम्नलिखित सज्जनों ने भाग लिया था।

श्री जयदेव मिश्रा	महाकवि चन्द
श्रीमती गीता सेन	भक्त मीराबाई
श्रीरामराजसिंह	महाकवि दुरसाजी आढा
श्रीद्वारकाप्रसाद	कवि कृपाराम खड़िया
श्रीरामरिख "मनहर"	महाकवि पृथ्वीराज राठौड
श्रीदयाशंकर आर्य	कविराज बांकीदास
श्रीगोपाल शर्मा	स्वामी सुन्दरदास
श्री अमरनारायण माथुर	कविराज केशरीसिंह बारहठ
प्रा० सत्यप्रकाश जोशी	महाकवि सूर्यमल मिश्रण
कुमारी शारदा बरड़िया	पुजारिन

इस प्रकार के काव्यात्मक एवं भाव युक्त सांस्कृतिक नवीन प्रयोगमें सम्मिलित कलाकार तो जनता की दृष्टि में सम्माननीय हुये ही किन्तु दर्शकों की मन्त्रमुग्ध स्थिति एवं तल्लीनता विशेष महत्व रखती थी जिन्होंने राजस्थानी भाषा के डिंगल महाकाव्यों की नव रसों से परिपूर्ण लालित्यमय रचनाओं का आधुनिकतम पद्धति से अवलोकन कर उसे चाव से हृदयंगम करने का प्रयास किया। इस कार्यक्रम की कल्पना एवं सफल प्रस्तुतिकरण संलग्न त्रिमूर्ति श्री जयदेवजी सिंहानिया, श्री जयदेव मिश्रा, प्रो० सत्य प्रकाश जोशी ने जितना परिश्रम इसे परिष्कृत करने में किया उससे अधिक आनन्द का बोध श्रोतागणों के समुचित सहयोग से प्राप्त हो सका यह एक निसंदेह मान्यता उस समय रही थी और आज भी इस मान्यता में कोई कमी नहीं आ पाई है।

राजस्थानी कवि सम्मेलन :

कवि दरबार के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम आधुनिक राजस्थानी कवियों की रचनाओं के पाठ का रखा गया था। राजस्थान से जिन कवियों ने इसमें भाग लेकर आयोजन की सफलता में हाथ बंटाया तथा जो स्थानीय कविगण उपस्थित हुये उनके नाम निम्न प्रकार हैं। आगत कविगणों में सर्वश्री नारायणसिंह भाटी, रेवतदान चारण, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक तथा स्थानीय कवियों में पं० इन्द्र प्रो० सत्यप्रकाश जोशी श्री रामरिख मनहर श्री दयाशंकर आर्य श्री अम्बिकेश शर्मा "कुन्तल" व श्री तुलसीराम शर्मा का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

मराठी साहित्य के वयोवृद्ध नाटककार मामा वारेरकर की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक यह आयोजन सम्पन्न हुआ। मामा वरेरकर ने अध्यक्षीय भाषण में देश की इस विशिष्टता के प्रति अपनी शुभाकाक्षायें प्रस्तुत की यहा साहित्य और संस्कृतियों के समुदायिक स्वरूप होते हुये तथा उनमें भिन्न भिन्न आचार व्यवहार का योग रहकर एकत्व की भावना निहित है। कवियों की वाणी से मुग्ध जन बार बार रचनाओं को सुनने के लिये व्यग्र थे तथा निरंतर माग कर रहे थे। बम्बई नगर में प्रथम राजस्थानी कवि सम्मेलन को इतनी सफलता प्राप्त होगी इसकी कल्पना भी संभवतः किसी को न होगी।

कवि गोष्ठी :

इसी वर्ष राजस्थान के एक विशिष्ट कवि श्री विश्वनाथजी शर्मा विमलेश के बम्बई आगमन पर उनके सम्मान में एक गोष्ठी का आयोजन मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय के सभाकक्ष में किया गया जिस समारोह की अध्यक्षता श्री सत्यप्रकाश जोशी ने की। स्थानीय कवियोंकी कविता पाठ के साथ साथ श्री विमलेश व श्री राधारमण मिश्र की कविताओं का रसास्वादन भी श्रोताओं ने किया। प्रथम साक्षात्कार में ही श्री विमलेश ने अपनी चटकीली व्यंगात्मक शैली का प्रभाव स्थानीय राजस्थानी श्रोतागणों को हृदयंगम करवाने में सफलता प्राप्त कर ली तथा तबसे निरंतर उनकी माग राजस्थानी भाषा के प्रत्येक काव्यात्मक आयोजन में की जाने लगी। कवि विमलेश संभवत: पहले राजस्थानी कवि रहे हैं *जिनकी रचनाओं को समझने व आनन्द लेने का सामूहिक प्रयास बम्बई* नगर में किया गया।

इस तरह की गोष्ठियां भी निरंतर आयोजित होती रही है जिनमें भाग लेने को राजस्थान से अनेक कविवर समय समय पर आते रहे हैं इस संक्षिप्त गोष्ठियों की लोकप्रियता के इस दिशा में किये गये प्रथम प्रयत्न का सुफल आज सभी को प्राप्त है। कवि गोष्ठी के माध्यम से जनरंजन की भावना को प्रश्रय प्रदान करने में सम्मेलन का बहुत बड़ा हाथ रहा है यह एक निर्विवाद सत्य है।

सांस्कृतिक समिति ने द्वितीय बसन्तोत्सव का आयोजन ५ फरवरी १९५७ को सेंट जेवियर्स कालेज के सभागृह में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर वसन्तकालीन राजस्थानी गीतों की एक गीत-माला और नाटिका का प्रदर्शन आयोजित किया गया। गीतमाला में उत्सवों एवं त्यौहारों के अवसरों पर जिन राजस्थानी गीतों को गाया जाता है उन्हें स्वरबद्ध रीति से वाद्य के साथ प्रस्तुत करने का अभिनव प्रयोग सम्मेलन की ओर से किया गया। इन गीतों को लिखने व सवारने का कार्य पं० इन्द्र ने सम्पन्न किया तथा उन्हें स्वरबद्ध व संगीतमय स्थिति में सम्पन्न करने का समस्त भार पं० मुरलीधर दाधीच पर रहा। *राजस्थानी संस्कृति को गीतों के* माध्यम से प्रचारित करने का यह आयोजन काफी प्रभावशाली रहा।

गीत माला के अतिरिक्त भी इस अवसर पर एक नाटिका "दहेज प्रथा" प्रस्तुत की गई जिसके द्वारा समाज में व्याप्त इस कुरीति पर व्यंगात्मक उपहास का साधन समुपस्थिति करने के साथ साथ लोगों की भावना में इसके त्याग के प्रति दृढ़ता लाने का सद्प्रयास किया गया नाटिका में समिति के सदस्यों में से सर्वश्री मदनलाल जालान, जमनाप्रसाद पचेरिया, मुरलीधर दाधीच एवं जयदेव मिश्रा ने भी अभिनय किया था जिसका समुचित प्रभाव सम्मेलन की समाज सेवी प्रवृत्तियों के प्रसारण में तो परिलक्षित हुआ ही किन्तु साथ ही साथ दर्शक वृन्द के मनोभावों पर भी इसका प्रभाव अवश्यंभावी बना होगा यह एक मान्य तथ्य है।

कवि सम्मेलन :

प्रथम वृहद् कवि सम्मेलन से प्रोत्साहन प्राप्त कर समिति ने शीघ्र ही दूसरा कवि सम्मेलन आयोजित करना चाहा एवं तदनुसार ७ अप्रैल १९५७ को स्थानीय नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री हरिशंकर द्विवेदी की अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन मारवाडी विद्यालय के सभाकक्ष में हुआ। कवि सम्मेलन में राजस्थान से आये हुये कवियों में सर्वश्री विमलेश, रेवतदान चारण, गजानन वर्मा ने कवितायें प्रस्तुत की तथा स्थानीय कवियो ने भी अपना काव्य पाठ किया। इस अवसर पर उपस्थित श्रोताओ को सास्कृतिक समिति की ओर से जानकारी प्रस्तुत की गई कि मारवाड़ी सम्मेलन और शैक्षणिक गतिविधियो के अलावा सास्कृतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियो में भी अपने प्रारंभिक काल से ही योग देता रहा है। राजस्थानी काव्य को बम्बई में प्रसारित प्रचारित एवंलोक प्रिय करने का श्रेय भी मारवाडी सम्मेलन को प्राप्त है और वह इसी प्रकार के सास्कृतिक आयोजनो के माध्यम से होता रहा है यह एक निर्विवाद सत्य है। कवितापाठ का यह दूसरा आयोजन भी काफी सफल रहा और इसमे भाग लेने वाले कवि गणों का सम्मान समाज की दृष्टि में बहुत बढा अनेक स्थलो से इन्हे उपहार और पुरस्कार भी तदनन्तर बम्बई में मारवाड़ी समाज के लोगो की ओर से प्राप्त हुये जो उनकी काव्य रचना के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति का स्वरूप थी।

बसन्तोत्सव :

बसन्तोत्सव की तृतीय आवृत्ति २ फरवरी १९५८ को एक विविध मनोरंजक कार्यक्रम के रूप में सर बंशीलाल पित्ती सभागृह फणसवाडी में हुई। गीत नृत्य नाटिका का एक मिला जुला आयोजन इस अवसर पर प्रस्तुत किया गया। लोक गीतो को संगीत व समूह नृत्य के साथ रगमंच पर प्रदर्शित किया गया तथा राजस्थान के पुराने कलाकार श्री मूलचन्द मारवाडी के भावना प्रधान सुरीले गीतों को श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कलंक रेखा नाटिका तथा गरबा व इस अवसर के उपयुक्त व विशिष्ट कार्यक्रम कृष्ण रुक्मिणी नृत्य भी प्रस्तुत किये गये। दर्शकों ने कार्यक्रम की विविधता से प्रभावित होकर भाग लेने वाले कतिपय कलाकारो को पुरस्कृत भी किया।

देवताः सम्मेलन द्वारा सचालित सस्थाओं के लाभार्थ सास्कृतिक समिति ने एक भावनाप्रधान सम्पूर्ण राजस्थानी भाषा का पं० इन्द्र लिखित देवता नाटक मारवाडी के रगमचपर १ व ८ अप्रैल १९५८ को प्रस्तुत किया। दहेज प्रथा व विनाशकारी प्रभावों का दिग्दर्शन मैत्री भाव की चरमसीमा के प्रतीक एवं मनवाछित उदारता की साक्षी का स्वरूप समाज के समक्ष इस नाटक के माध्यम से चरितार्थ करवाया गया तथा वास्तव में नाटक के मुख्य पात्र को कुलीनता एवं सदाचार का प्रति स्वरूप चरितार्थ किया गया था जिसका प्रभाव अवश्यभावी था। दर्शकों को नाटक के संवाद गीत एवं भाव सर्वदा रुचिकर और प्रशंसनीय लगे। प्रायः सभी कलाकारो के सुन्दर अभिनय ने तो नाटक में सजीवता एवं सौन्दर्य प्रतिष्ठित किया। इस नाटक के आयोजन से रु. ३००००) की आय संस्था के लाभार्थ प्राप्त हुई नाटक की विशिष्टता का भान इसी तथ्य से प्रकट होता है कि उससे बम्बई के फिल्मी क्षेत्र भी प्रभावित हुये और यह गर्व का विषय है कि सम्पूर्ण राजस्थानी भाषा की प्रथम फिल्म "बाबासारी लाडली" इसी के कथानक का प्रस्तुतीकरण करने का सफल प्रयास सिद्ध हुई। न केवल बम्बई मे बल्कि कलकत्ते में भी देवता नाटक की पुनः पुनः आवृत्तियां प्रस्तुत की गईं। इस प्रकार यह भी समिति का एक अनूठा प्रयोग ही सिद्ध हुआ।

सावण के गीत :

बसन्तोत्सव के आयोजन तो निरंतर सम्मेलन की सांस्कृतिक समिति द्वारा आयोजित हुये हैं किन्तु वर्षाकाल में जिस सुरम्य वातावरण का प्रत्यक्ष दर्शन राजस्थान की मरूभूमि में होता है उसकी कल्पना मात्र भी बम्बई में बैठे संभव नहीं है। समिति ने उसी वातावरण का निर्माण अपने २३ अगस्त १९५८ को के० सी० कालेज हाल में आयोजित सावण के गीत कार्यक्रम के द्वारा करने का प्रयास किया। इस कार्यक्रम में राजस्थानी लोकगीतो के अतिरिक्त आधुनिक गीत भी राजस्थानी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया। गीतों के रचयिता पं० इन्द्र रहे हैं एवं वर्षा के स्वागत के समय खेतो में निनाण के समय झूला झूलते समय पनिहारी, राखीविरह, विदाई एवं समूह गीतों को लोक साहित्य का अभिव्यंजन अभिनय के साथ करने की तत्परता इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हुई। इस प्रसंग पर केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री श्री राजबहादुर एवं बम्बई सरकार से उप स्वास्थ्य मंत्री डा० कैलाश एन० एन० भी उपस्थित थे तथा कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

कवि सम्मेलनों की परंपरा में नवीन स्वरूप में आयोजित १९ दिसंबर १९५८ का कार्यक्रम काफी सफल रहा। बाहर से आगत कवियों में श्री विश्वनाथ शर्मा विमलेश, देवराज दिनेश, शिवबहादुरसिंह भदौरिया रामकुमार चतुर्वेदी व कुमारी रमासिंह एवं स्थानीय कवियों की रचनाओ ने समा बांध दिया तथा कार्यक्रम की सफलता से प्रभावित होकर समिति ने इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने की सर्वांगपूर्ण योजना बनाई।

वृत्त चित्र प्रदर्शन :

भारत सरकार के चलचित्र विभाग की ओर से निर्मित होने वाले ऐसे वृत्त चित्रों का प्रदर्शन जो समाज को लाभ पहुंचाने वाला एव सामान्य ज्ञान वृद्धि में सहयोगी सिद्ध होने वाला हो समय समय पर आयोजित किया जाता रहा है और इसी प्रकार का एक आयोजन समिति ने २९ दिसबर १९५८ को किया जबकि पवित्र हिमालय लोकगीत, बुनियादी शिक्षा, व अंकुर विषयान्तर्गत चित्रों का सम्यक् प्रभावशाली प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया।

आखड्या पण पड्या कोनी :

बसन्तोत्सव के अवसर पर १३ फरवरी १९५९ को बिरला मातुश्री सभागार में प० इन्द्र लिखित गीतो को सुमधुर संगीत से स्वर बद्ध कर प्रस्तुत करने में सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक श्री जमाल सेन ने अपना चमत्कारिक स्वरूप प्रकट किया। इन गीतों के अन्तर्गत मीरा के भजन बसन्त व होली की राख, भोपा भोपी, नणद भौजाई, धमाल, लूवर, गीदड़, जाट जाटणी, कठपुतली के नृत्य आदि की क्रमबद्ध सयोजित रूप रेखा ने उपस्थित लोगो को अत्यन्त प्रभावित किया। कार्यक्रम के उत्त-

राद्ध में पं० मुरलीधर दाधीच लिखित एकांकी हास्य नाटिका "आवड्या पण पड्या कोनी" के चुटीले संवादो एवं विशिष्ट शैली से समाज की कुरीतियों पर कसे गये व्यंगों में जो हास्य विलास दृष्टिगोचर हुआ तथा उसे जितना पसन्द किया गया वह एक अभूतपूर्व घटना ही का स्वरूप है । नाटिका के अधिकाधिक प्रभावशाली निर्माण के उद्देश्य से सम्मेलन के कतिपय सदस्यो एवं समाज के ही प्रमुखजनों ने इसमें अपनी अभिनय कला को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया । सर्वश्री मदनलाल जालान, जमनाप्रसाद पचेरिया, शेखर पुरोहित, मोहन मोदी, कैलाशचन्द्र अग्रवाल, मिश्रीलाल राजस्थानी, मुरलीधर दाधीच एवं सुमतिलाल गाधी ने इस नाटिका के विभिन्न पात्रों के रूप में रंगमच पर आये और अपने सफल अभिनय मे श्रोताओं को बहुत प्रभावित करने में समर्थ हुये ।

मीरा जयन्ती :

सम्मेलन की ओर से राजस्थान की अमर विभूति राजरानी मीरा बाई के स्मृति दिवस ५ अगस्त १९५९ को सर बंशीलाल पित्ती सभागृह फणसवाडी में मीरा जयन्ती का आयोजन किया गया । मीराबाई राजस्थानी साहित्य को अपने सुमधुर पदों के माध्यम से समृद्धि की ओर अग्रसर करने वाली महान साधिका थी जिसे राजस्थान के साहित्य भक्ति और कला का आदर्श प्रतीक के रूप में मान्य किया जाना चाहिये । मीरा के पदो का संगीतमय लालित्य न केवल राजस्थानी व हिन्दी साहित्य बल्कि समस्त विश्व की श्रेष्ठतम भावात्मक अभिव्यक्तियों से भी तुलनात्मक दृष्टि से समान ही है । इस पुनीत दिवस पर मीरा के संगीत के साथ नृत्यादि का भी आयोजन रखा गया था ।

वर्ष १९५९–६० में भी कवि सम्मेलनों की दृष्टि से सर्वथा सम्पन्न रहा एवं क्रमश: ३ स्थलो पर इसका आयोजन हुआ । १४ अक्टूबर १९५९ को आयोजित कवि गोष्ठी में विमलेश के अतिरिक्त अम्बू शर्मा तन्मय बुखारिया, सरस्वतीकुमार दीपक एवं अन्य स्थानीय कवियो की रचनाओं का भी रसास्वादन करने का अवसर समिति ने प्रस्तुत किया । ३१ दिसंबर १९५९ व २७ मई १९६० को आयोजित कविता पाठ के कार्यक्रमो में कुछ नवीन भावों की काव्य रचनाओं का आनन्द श्रोताओं को प्राप्त हुआ ।

नौका विहार :

इस वर्ष १५ जनवरी १९६० को एक सर्वथा नवीन प्रयोग का सूत्रपात समिति की ओर से किया गया और वह था चादनी रात में नौका विहार का कार्यक्रम जो बहुत आकर्षक सिद्ध हुआ । पूर्ण चन्द्र की धवल चादनी में बम्बई बन्दरगाह की चारो दिशाओ में परिभ्रमण का यह अनोखा आयोजन गेट वे आफ इडिया अपोलो बन्दर से शोभना नामक जहाज के द्वारा प्राय: २–३ घंटे तक समुद्र की लहरो के साथ साथ झकोरे भरते हुये सुखद काल की स्मृति का प्रतीक बन गया था । सम्मेलन के सदस्य एवं राजस्थानी महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा सपरिवार बहुत उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में सम्मिलित होना इस बात का परिचायक सिद्ध हुआ जिसके अनुसार नवीनतम प्रकार के आयोजनों की एक शृंखला प्रारभ करने का सत्साहस समिति को हुआ ।

१८ फरवरी १९६२ को पुन: इसी प्रकार का एक आयोजन रखा गया तथा उसके अन्तर्गत एक विशेष आयोजन और संयुक्त कर दिया गया जिसके अनुसार समुद्रतल पर जहाज में अवस्थित स्थिति में भी साज संगीत गायन-वादन और अन्य मनोरंजन के कार्यक्रमों का आनंद भी साथ ही साथ उठाया जा सके और इस तरह इस प्रवृत्ति ने लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित किया ।

हिमालय हमारा है :

सम्मेलन के प्रति वर्ष अपनी प्रवृत्तियों को संचालन में आर्थिक असन्तुलन का सामना करना पड़ता था अत: गत वर्षों के घाटे की पूर्ति के उद्देश्य से उपरोक्त नामाकित नाटक का आयोजन दिनाक २३ फरवरी व १ मार्च १९६० को प्रिंसेस थियटर भागवाड़ी में किया गया । इस नाटक के लेखन कार्य का उत्तरदायित्व पं० मधुर पर एवं दिग्दर्शन का भार शेखर पुरोहित व पं० मुरलीधर दाधीच ने ग्रहण किया था । सामयिक ज्वलंत सीमा समस्या पर आधारित इस नाटक ने लोगो का ध्यान इस ओर केन्द्रित करने में अंशत: सफलता प्राप्त की ।

१० फरवरी १९६१ को सास्कृतिक समिति ने बिड़ला मातुश्री सभागार में "आवड्या पण पड्या कोनी" की पुनरावृत्ति सफलता पूर्वक आयोजित की और उससे इस नाटक के प्रति जन रुचि में प्रसार ही हुआ तथा इसके माध्यम से नये नये फैशनो में संलग्न गृहस्थों व देवियो को प्रेरणा प्रद सन्देश प्राप्त हुआ जिसे जीवन में स्थान देकर वे अपने समाज के प्रति उत्तरदायित्व को निभाने में सफल हो सकेंगे ऐसी भावनाओं का निर्माण होता देखा गया ।

पुण्याई आड़ी आई :

समिति ने २० मई १९६१ को एक नवीन सामाजिक, सम्पूर्ण राजस्थानी भाषा का नाटक भारतीय विद्या भवन के रगमंच पर अभिनीत किया । नाटक के लेखक व दिग्दर्शक पं० मुरलीधर दाधीच की यह कृति निसदेह शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक सिद्ध हुई । इसमें आधुनिकतम् नाटय शैली का समावेश था तथा सम्पूर्ण आयोजन और विधिवत् प्रदर्शन भी सर्वथा सफल रहा था इसी नाटक का दूसरा प्रयोग भी १० जून १९६१ को पुन. जनता की माग पर भारतीय विद्या भवन में किया गया । नाटक से हुई आर्थिक आय का उपयोग सम्मेलन के घाटे की पूर्ति के उद्देश्य से ही किया गया । कार्यक्रम पुस्तिका में विज्ञापन एवं टिकिट की आय के द्वारा इन दो प्रयोगों का समस्त व्यय बाद होने के पश्चात् रु. २४४९०) की राशि सम्मेलन के खाते में जमा हुई । इस प्रकार यह अवसर सम्मेलन के लिये आर्थिक दृष्टि से एवं विशिष्ट ढंगसे जीवन शैली के आयोजन की सफलता अथवा विफलता के परीक्षण से काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ ।

वायलिन वादन: :

कु० राजेन्द्रसिंह द्वारा वायलिन पर सभी प्रकार की धुनें बजाने में जो सिद्धहस्तता प्रदर्शित की गई उससे इसकी बाल प्रतिभा का मूल्यांकन संभवत: नहीं किया जा सका किन्तु मात्र १०–११ साल के इस बालक की नन्ही नन्ही अंगुलिया जिस त्वरित गति से वायलिन के स्वरों

को झंकृत करती है वह एक अद्भुत प्रयास सा लगता है। सर वंशीलाल पित्ती सभागृह फणसवाडी में २६ अगस्त १९६१ का आयोजित इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम से न केवल बाल कलाकार को ही प्रोत्साहन प्राप्त हुआ बल्कि यह निश्चित हो गया कि जन्मजात प्रतिभा का होना तो अनिवार्य है ही किन्तु अभ्यास से भी काफी अंतर पडता है।

हथलेवें की साथण :

पं० मुरलीधर दाधीच लिखित राजस्थानी भाषा के इस नवीन नाटक को महिला महाविद्यालय के लाभार्थ बिरला मातुश्री सभागार में ३१ अक्टूबर १९६२ को प्रस्तुत किया गया। आधुनिक नाट्य शैली और साज सज्जा से सज्जित इस शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक के अमित प्रभाव की अभिव्यक्ति समाज को शीघ्र ही हुई तथा इसमें निर्देशित भावों को जीवन में स्थान देकर समाजहित में संलग्न होने की परम्परायें सभवतः निर्माण हो सकी।

इस प्रकार सम्मेलन के इन प्रयत्नों से इस कथन की साकारता के प्रभाव परिलक्षित होते हैं कि साहित्य-कला-सगीतादिसे विहीन समाज पशु की सज्ञा सयुक्त होता है जबकि मारवाड़ी समाज में इन गुणों के अभाव को दूर करने में सम्मेलन निरंतर प्रयत्नशील है। जिस संस्कृति का विशिष्ट प्रतिनिधित्व मारवाडी समाज को अभीष्ट है उसकी समृद्धि के सुप्रयत्नो में सम्मेलन की सेवाये अर्पित है यह इस आलेख मे सर्वथा सिद्ध हो जाता है।

★
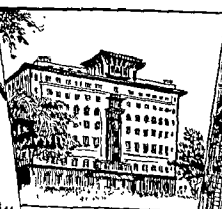
सी. पी. बालिका विद्यालय — बम्बई अस्पताल — मारवाड़ी विद्यालय

समाज के स्फूर्त प्रयत्नों की साकारता के प्रतीक

सामाजिक क्रांति

राजनीतिक और आर्थिक परिवर्त्तनों का यह अनिवार्य परिणाम है कि उनसे सामाजिक परिवर्त्तन उत्पन्न होते हैं; अन्यथा न तो हमारे वैयक्तिक जीवन में समन्वय रह सकता है, न राष्ट्रीय जीवन में। ऐसा नहीं हो सकता कि राजनीतिक परिवर्त्तन और औद्योगिक प्रगति तो हो, किंतु, हम यह मानकर बैठे रह जांय कि सामाजिक क्षेत्र में हमें कोई परिवर्त्तन लाने की आवश्यकता नहीं है। राजनीतिक और आर्थिक परिवर्त्तनों के अनुसार समाज को परिवर्तित नहीं करने से हम पर जो बोझ पड़ेगा, उसे हम बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे, उसके नीचे हम टूट जायेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू

राष्ट्र के सामूहिक हितों के समक्ष व्यक्तिगत लाभ सर्वथा गौण है अपितु यदाकदा ऐसे प्रसंग भी उपस्थित हो जाते हैं जबकि समाज के क्रान्तिकारी स्वरूप की सुरक्षा के हेतु सामूहिक प्रयास अवश्यम्भावी हो जाते हैं। व्यक्तियों के समूह को ही समाज की संज्ञा से विभूषित किया *गया है और किसी भी विकासशील राष्ट्र के उत्कर्ष के हेतु यह सर्वथा* आवश्यक है कि समाज के सर्वतोमुखी उत्थान की प्रक्रिया भी निरंतर जारी रहे।

भारतीय संस्कृति में समाज रचना के विविध विधान आदिकाल से प्रचलित हैं किन्तु आधार भूत दृष्टि से सर्वमान्य सिद्धान्तों का प्रति-*पादन वैदिक सभ्यता के अन्तर्गत ही निहित हुआ है वैदिक कालीन* सामाजिक संगठन में सुदृढ़ता किन्तु लचीलापन सदैव समाहृत हुआ तथा कोई कठोर बन्धनकारी आदेश समाज के आचार-व्यवहार के प्रति निर्देशित नहीं हुये। मुख्यतया ध्यानस्थ तथ्य एक ही रखा जाता था कि सदाचार एवं कुलीनता की सीमाओं में मर्यादित रहते हुये ही प्रत्येक सामाजिक प्राणी का अपनी दिनचर्या एवं समाज में अपने क्रिया कलापों *की सम्पूर्ति में संलग्न रहना होता था।*

कर्मगत आचरण के अनुकूल विविध श्रेणीभेद किये जाते थे तथा इन्हीं कर्मणाविभेदों की परिणिती अन्ततः जातियों में हुई और शनैः शनैः इन जाति गत समूहों की व्यवस्था कर्मों से नहीं किन्तु जन्मगत मान्य की जाने लगी जिसके फलस्वरूप कट्टर जातिवाद का विषम प्रभाव भारतीय समाज के अंग अंग में व्याप्त हुआ। समय के प्रवाह और वैज्ञानिक साधनों से युक्त भौतिकवादी सभ्यता के निरंतर सम्पर्क से यद्यपि यह बन्धन ढीले पड़ते जा रहे हैं किन्तु फिर भी सदियों से समाज की प्रत्येक गतिविधि पर इनका अमिट असर रहा है।

इसी प्रकार देश पर बाहरी शक्तियों के अनेक आक्रमणों के फलस्वरूप जिन नये लोगों या यहां के सामाजिक रीति-रिवाजों से सम्पर्क हुआ एवं निरंतर निकट रहने से आपसी आदान प्रदान का जो क्रम प्रारंभ हुआ उसका प्रभाव समाज के सभी अंगों पर पड़ना अनिवार्य था और फलतः ऐसी मिश्रित सामाजिक व्यवस्था का विकास भी सनातन संस्कृति के साथ साथ संलग्न रहा और उसी के कारण जातिगत श्रेणी के अन्तर्गत निर्धारित कतिपय कठोर नियमों के पालन में अपवाद का

आश्रय लिया जाने लगा और उनके उत्तम गुणो को अपने आचार-व्यवहार में संयुक्त करने का सफल प्रयास भारतीय समाज व्यवस्था की विशिष्टतम पद्धति का आधार बना रहा ।

इन विपरीत परिस्थितियों से प्रभावित समाज में कुछ ऐसी बातो का समावेश स्वत. ही हो गया जिनके परिमार्जन हेतु विशेष आन्दोलनकारी वृत्तियो का सहारा लेने को समाज के प्रगति शील वर्ग को उन्मुख होना पडा । इनमें सर्वाधिक कटुता युक्त परिस्थिति का निर्माण जातीय कट्टरता के परिणाम स्वरूप हुआ था । जन्मजात क्षत्रिय, ब्राह्मण अथवा वैश्य बनें यहा तक किसी कष्टजनक स्थिति का बोध नही होता है किन्तु जब ब्रह्म मुख से उत्पन्न का श्रेय प्राप्त किये हुये ब्राह्मण वर्ग ने अपनी श्रेष्ठता को सम्मानित करवा लिया, तलवार के बल पर क्षत्रिय ने भी अपनी उत्कृष्टता व अपने को ही राजसत्ता का एक मात्र अधिकारी मान लिया तथा अपने चातुर्य व बुद्धिबल से वैश्य का स्थान भी सर्वोपरि सुरक्षित हो लिया तब समाज का एक ही वर्ग ऐसा बचा रहा जिसके प्रति उपरोक्त श्रेणी समूह के हृदय में किसी प्रकार की स्नेहमय भावना की अभिव्यक्ति सभवत. नही हुई है ।

इसी प्रकार विविध सभ्यताओ के सम्पर्क की अबाध गति से अनेक ऐसी कृतिया समाज मे अन्तर्हित हुई जिन्हे कुरीतियो के रूप मे मान्यता दी गई । किन परिस्थितियो के मध्य बाल-विवाह एव वृद्ध विवाह जैसी प्रवृत्तिया प्रारभ हुई उसे इस आलेख का विषय बनाना अभीष्ट नही है किन्तु इसका समाज में प्रचलन जिस त्वरित गति से हुआ उसके लिये जो व्यवस्था समाज के सचालन में अग्रणी जनो की ओर से की गई वह अवश्य ही इसके विपरीत प्रभावो की सशक्त रोक का साधन नही बन सकी अपितु किन्ही अवसरो पर तो इसका दुष्परिणाम प्रभावित जनो को बहुत बड़ा मूल्य चुका कर भी करना पड़ता था । ऐसी ही एक विशेष वृत्ति समाज में दहेज के रूप में प्रचलित रही है जिसका सम्बन्ध कन्या जन्मदाता हर सामाजिक प्राणी से रहा है । सुयोग्य सुशिक्षित एवं सौम्य स्वभावी बालिका को भी दहेज के अभाव में अपने माता पिता के लिये कष्टदायक स्थिति का निर्माण करने का कारण बनना पड़ता हो यह वास्तव में विचारणीय प्रश्न समाज के समक्ष सदैव से रहा है ।

अनेक ऐसी ही परिस्थितिया है जिनसे समाज के सर्वांगीण विकास का मार्ग अवरुद्ध होता है । इन सभी के परिहार का प्रयत्न समाज की उन शक्तियों का ही उत्तरदायित्व है जो समय की गति के साथ कदम कदम बढने को अग्रसर हो और जिन्हें युग की धारा के प्रवाह की अनुकूलता का आभास हो । भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग स्वरूप विकासशील सामाजिक व्यवस्थाओं का मनन करने को तत्पर होने पर इस सत्य का ज्ञान शीघ्र ही हो जाता है कि यहा परिवर्तन यदि शुभ दिशा में हुआ है तो वह क्रान्ति विशेष के माध्यम से ही हुआ है और उस क्रान्ति के सूत्रधार समाज के ही सपूत रहे हैं ।

मारवाड़ी सम्मेलन के प्रारंभ का जो समय है वह इसी प्रकार के सामाजिक उथल पुथल के युग का प्रतीक है । वर्षो की पराधीनता ने भी ऐसी जडता से भारतीय जनो को ग्रस्त कर दिया था कि उनसे मुक्ति का मार्ग खोजने पर भी अगोचर ही था । समाज में भेदभाव के बीज अंकुरित थे सवर्ण हरिजन की भावना उपस्थित थी एवं अनेक ऐसे आडम्बर तथा एक दूसरे की होड़ लगाने की वृत्तिया व्याप्त थी जिनसे छुटकारा पाना संभव नही था ।

शिक्षा की दृष्टि से सर्वथा साधारण स्वरूप वाले मारवाडी समाज को नवीन भावनाओ से सलग्न करने का प्रयास सम्मेलन के स्फूर्त प्रयत्नो ने जिस समय प्रारभ किया होगा किस प्रकार की स्थिति बनी होगी इसकी कल्पना भी आज संभव नही है । सम्मेलन के सामने सर्वप्रथम जो समस्या थी वह वास्तव में समाज के लोगो में शिक्षा का सर्वथा खटकता हुआ अभाव ही था । सारे समाज में तार का उथला हिन्दी में सुना देने वाले अगुलियो पर गिने जा सकते थे और इसके अलावा भी अक्षरज्ञान को उतना महत्व उस समय प्राप्त नही था। यदि मुडी (महाजनी) अक्षरो का ज्ञाता है तथा हिसाब किताब ढंग से रख लेने की कला में शीघ्र ही पारंगत हो जाता है तो वह चतुर मान्य कर लिया जाता था । इस तरह की परिस्थितियों में सम्मेलन के सामने जो सर्वाधिक आवश्यक कार्य प्रस्तुत था वह शिक्षा के प्रसार का ही था और आलेख में निहित विवरण से यह तो स्पष्ट हुआ ही है कि इस दिशा में सम्मेलन ने सर्व प्रथम कदम बढाये थे एव शिक्षण उपादानो में पुस्तकालय-शिक्षणालय की स्थापना को सर्वोपरि प्राथमिकता प्रदान की थी ।

शिक्षित समुदाय ससार की विविध हलचलों एव नवीनतम् क्रियाकलापों को हृदयगंम करने में समर्थ होता है तथा अपने मानसिक विकास के साथ ही साथ समाज में व्याप्त अनावश्यक प्रतिबन्धों एवं जड़ता जन्य कट्टरताओं से मुक्त होता है । यही कारण है कि जैसे जैसे शिक्षा का प्रचार हुआ उन सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन आता गया और मारवाड़ी समाज भी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होकर ऊंच नीच वर्णानुसार भेदभाव एव अन्य विविध बुराइयो को समाज से समूल विनष्ट करने के उद्देश्य से ही सम्मेलन जैसी सस्था को संगठित स्वरूप प्रदान करने की ओर उन्मुख हुआ था । संगठन के सहारे से सामाजिक बहिष्कार का डटकर प्रतिरोध करने तक की शक्ति संचय की जा सकती है तथा किसी भी ऐसी अन्यायपूर्ण कार्यवाही का खुलकर विरोध किया जा सकता है जिससे समाज के सामूहिक अहित की सभावनायें दृष्टिगोचर होती हैं ।

शिक्षा समाज को सबलता देनेवाली शक्ति अवश्य है किन्तु उसके साथ ही साथ अन्य भावों को आश्रय प्रदान करना भी सर्वथा स्वीकृत तथ्य है । सम्मेलन ने इस स्थिति को सदैव ध्यान मे रखा कि सामंजस्य भावना के माध्यम से ही अग्रसर होने में लाभ है । कट्टरता एवं उदारता के मध्यममार्ग सहृदयता को अपना कर ही सम्मेलन समाज की सेवा में तत्पर हुआ और संभवतः सामाजिक दृष्टि बिन्दु से ऐसा कोई कार्य सम्मेलन ने अपने कार्यक्रमो के अन्तर्गत अपनाने में कभी हिचक प्रकट नही की होगी जिससे अन्ततः समाज को पूर्णत. लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ हो ।

शिक्षण के अतिरिक्त भी अन्य सभी साधनो को सम्मेलन ने समाज के तत्सामयिक स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन के उद्देश्य से

अपनाया था तथा अपने स्वीकृत सिद्धान्तों के अनुकूल कार्यरत रहते हुये मारवाड़ी समाज को भी उन उद्देश्यों के अनुसार ही लाभ पहुंचाने के साधन समुपस्थित किये। वैसे मारवाडी समाज की जिन विविध दुर्बलताओं को मिटाने को सम्मेलन कृत संकल्प हुआ था उनमें ऐसी कोई कट्टर भावना निहित नही थी किन्तु फिर भी उनके परिमार्जन का स्थल सम्मेलन ने निर्माण किया यही उसकी सबसे बड़ी सफलता मानी जा सकती है।

सम्मेलन ने जो आधारभूत कार्य सम्पादित किये उनमें सर्वथा अग्रणी समाज का वह वर्ग रहा जिसे पर्दा प्रथा से पीड़ित माना जाता था। यह एक तथ्य है कि पर्दाप्रथा का प्रसार न केवल राजस्थान में अपितु समस्त उत्तर भारत में रहा है। उसके कारण की तह में न जाने हुये भी इस मान्यता में कोई भूल नही है कि यह प्रथा न्यूनतम रूप से समाज के प्राय: सभी वर्गों में व्याप्त थी किन्तु साथ ही साथ यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि पुरुष वर्ग को सामाजिक हितों की ओर उन्मुख करने वाली शक्ति यदि कोई रही है तो वह नारी ही है और यह बात मारवाडी समाज पर भी उतनी ही दृढ़ता के साथ लागू होती है। मारवाडी सम्मेलन को इस आद्य शक्ति का अनुभव अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति के उत्कर्ष में दृष्टि गोचर हुआ था अत. इस मान्यता में कोई बल नही है कि पर्दे ने संस्था द्वारा समाज के सेवा कार्य में कभी कोई बाधा उपस्थित की हो बल्कि समय के साथ साथ एवं सम्मेलन की पुकार पर शनै: शनै: एक ऐसी स्थिति में मारवाड़ी समाज को उसके नर व नारियों के सम्मिलित सहयोग ने पहुँचा दिया है जिसमें सम्मेलन की स्थापना के चरम ध्येय सामाजिक क्रान्ति के अंकुर प्रस्फुटित हुये प्रतीत हो रहे हैं।

सम्मेलन ने होली के हुल्लड को सांस्कृतिक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से जो लड़ाई लडी उसका उल्लेख अन्यत्र आ चुका है किन्तु यह संभवत: सम्मेलन की सर्वप्रथम क्रान्तिकारी योजना थी जिसके द्वारा सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करने की ओर कार्यकर्त्तागण उन्मुख हुये।

नारी जागरण में योगदान :

सम्मेलन सदैव से नारी वर्ग के सर्वांगीण विकास को उतना ही महत्वपूर्ण समझता रहा है जितना अपनी अन्य निर्धारित उद्देश्यों के अन्तर्गत संचालित प्रवृत्तियों को अग्रसर करते रहना।

जिस समय शारदा बिल विधान परिषद् में विचारार्थ प्रस्तुत हुआ तथा जनमत के हेतु प्रचारित हुआ उस समय सम्मेलन नारी समुदाय के हितों के हेतु इस बिल की परमावश्यकता को अनुभव करते हुये त्वरित गति से कार्यरत हुआ तथा अपनी ओर से बिल में संयुक्त करने के उद्देश्य से निम्नोक्त संशोधन प्रस्तावित किये जिनकी प्रतियां समाचारपत्रों, सामाजिक संस्थाओं, सरकारी विभागों, मन्त्री विधान परिषद् एवम् प्रस्तावक श्री हरिविलास शारदा को प्रेषित की थी।

१ बिल में बाल विवाह को नाजायज ठहराने की जो व्यवस्था रखी गई है वहां पर दंड की व्यवस्था रखी जाय।

२ विवाह के समय वर की आयु १८ वर्ष तथा कन्या की आयु १२ वर्ष रखी जाय।

इन संशोधनों पर समुचित विचार किया गया और बिल के संशोधित स्वरूप में इनकी प्रतिच्छाया परिलक्षित हुई। आज की परिस्थितियों को देखते हुये यह प्रयास कोई विशेष महत्व का परिचायक प्रतीत नहीं होता किन्तु उस समय जबकि बाल विवाह का समाज में विशेष प्रचलन था तथा सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त लोग इस दिशा में कट्टरपन के भाव रखते थे उस समय इस साहसिक अभियान के लिये जो कुछ सम्मेलन ने किया वह वस्तुत समाज के परिवर्तनशील दृष्टिकोण का मानबिन्दु सिद्ध हुई। मारवाडी सम्मेलन के प्रयास से महिलाओं ने भी इस बिल के समर्थन में अपनी आवाज उठायी तथा यह संयुक्त प्रयत्न वास्तव में सामाजिक व्यवस्था की ऐसी मूलभूत नीति का सूत्र कार्यकर्त्ताओं के हाथों प्रस्तुत करने में समर्थ हुआ जिससे नारी समाज में जागृति की लहर सर्व व्यापी स्वरूप धारण कर सकी।

नारी समुदाय और स्वाधीनता संग्राम :

मारवाड़ी समाज की महिलाओं ने स्वाधीनता संग्राम के प्रत्येक कदम में पुरुष के साथ साथ अपना योगदान देने में कभी हिचकिचाहट प्रदर्शित नही की। १३ अप्रेल १९३० को सर्व प्रथम आयोजित विशाल महिला सभा में समाज की ७०० से अधिक महिलायें उपस्थित थी तथा श्री रामेश्वरदास बिड़ला की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सभा ने इन बहनों के हृदय में राष्ट्रप्रेम की लौ प्रज्वलित करने में भारी योग दिया। सभा की प्रमुख वक्ता श्रीमती सरोजनी नायडू एवम् श्रीमती अवन्तीका बाई गोखले थी जिनके प्रभावशाली भाषण के अन्तर्गत उस समय की सर्वाधिक ज्वलंत समस्याओं पर पूर्ण प्रकाश समाज की महिलाओं के हितार्थ डालते हुये उन्होंने विशेषत: विदेशी वस्त्र बहिष्कार और स्वदेशी प्रचार विषयों पर अपनी ओजस्विनी वाणी के द्वारा महिलाओं का उद्बोधन किया और उससे समाज के नारी वर्ग में एक अद्भुत सी सिहरन स्वत स्फूर्त हुई जिसके फलस्वरूप विदेशी वस्त्रों की होली करने में यही समुदाय सबसे आगे रहा।

समाज की अनेक बहनों ने जो सक्रिय भाग स्वतन्त्रता आन्दोलन में लिया वह इसी प्रकार के आयोजनों का फल था तथा वे इस दिशा में समाज को अग्रसर करने का आधार बनी।

साक्षात शक्ति स्वरूपा नारी के सहयोग ने स्वतन्त्रता युद्ध में पुरुष को साहस व उमंग से परिपूर्ण रक्खा उसे परिवार की चिन्ताओं से मुक्ति दिलाकर दत्तचित्त देश सेवा में संलग्न रखने का प्रयत्न निरंतर किया। आन्दोलन काल में सर्वाधिक लगन के साथ काम करने वाली महिलाओं में श्रीमती सौभाग्यवती देवी दाणी का उल्लेख आवश्यक है तथा बम्बई प्रवास पर आमन्त्रण के साथ ही समाज के नारी वर्ग में अत्यधिक उत्साह का संचार करने का सशक्त साधन श्रीमती जानकीदेवी बजाज के समान जीवट वाली महिलाओंके ही वश की बात रही है सम्मेलन और इसकी प्रवृत्तियों से एवम् विशेषत. बालिका विद्यालय के संस्थापन संचालन से तो इनका विशेष लगाव सदैव से रहा ही है। इसी प्रकार पर्दा विरोधी परिषद् के सफल आयोजन प्रगतिशील विचारों वाली महिलाओं ने समाज के विकास में नारी का सबल सहयोग सिद्ध किया है।

नारी वर्ग की प्रगति में सहायक साधन के रूप में एक योजना का सूत्रपात भी सम्मेलन द्वारा करने का निश्चय किया गया जिसके

अन्तर्गत विविध उपादानों के माध्यम से विकास पथ पर समाज की महिलायें निरंतर अग्रसर हो सके ऐसी व्यवस्था रखी गई।

मातृ मंदिर :

विद्याभवन के ही एक खण्ड में महिलाओ के लाभार्थ विशिष्ट केन्द्र स्थापित की व्यवस्था के अन्तर्गत निम्न प्रकार एक मातृ मंदिर की स्थापना के हेतु एक योजना सम्मेलन की व्यवस्थापिका सभा ने स्वीकृत की।

मारवाडी समाज की महिलाओं के लाभार्थ सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय के तत्वावधान मे ही मातृ मंदिर के संचालन का लक्ष्य निर्धारित रखा गया। समाज की स्त्रियों में साक्षरता अभियान प्रारम्भ करने उन्हें सुशिक्षिता, व्यवहार कुशल, महत्वाकांक्षिणी सेवा भावी सद्‌वृत्तियो से युक्त करने व कलात्मक भावो का सचार करने का उद्देश्य रखा गया। गृह शासन, आरोग्य शास्त्र, शिशुपालन, धातृशिक्षा और विभिन्न प्रकार के स्त्रियोपयोगी कला कौशल, पुस्तको तथा प्रयोगों द्वारा सिखाने की व्यवस्था भी रखी गई। व्याख्यान, शिक्षण पद्धति और निर्माण कला में कुशलता प्राप्ति के साधन प्रस्तुत करने का भी विचार रखा गया। शरीर विज्ञान की शिक्षा के साथ साथ व्यायामशाला द्वारा गृह खेल तथा व्यायाम व आसन आदि की शिक्षा का महत्व भी अंगीकृत हुआ था। पुस्तकालय-वाचनालय की सहकारी प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत करने और समाज तथा देश सेवा का व्रत ग्रहण करने वाली समाज की विधवा देवियों के हेतु छात्रवृत्तियों आदि की भी व्यवस्था इस योजना के ही अन्तर्गत रखी गई थी। समस्त मारवाडी समाज एक परिवार के रूप में सगठित हो इस प्रकार की सामाजिक क्रान्ति के सुस्पष्ट लक्षण सदैव प्रस्तुत करने की इस प्रवृत्ति का समुचित प्रयोग किया जाता।

इस प्रकार सम्मेलन ने नारी जागरण में अपने महत्वपूर्ण योगदान द्वारा मारवाडी समाज की स्थिति में सुधार का सुप्रयत्न पूर्ण उत्साह के साथ सम्पन्न किया। समाज की महिलाओं के जागृत स्वरूप ने सदैव सही साधनो के प्रस्तुत करने का आधार निर्माण किया तो उसी आधार शिला पर निरंतर समृद्धिशाली रचनात्मक प्रवृत्तियों के प्रसाद उभरते रहे।

राजनैयिक चेतना :

नारी जागरण के साथ ही साथ समाज के पुरुष वर्ग में राजनैतिक चैतन्यता के प्रयास भी सम्मेलन ने निरंतर किये हैं। स्वतन्त्रता का उल्लेख अंकित हो चुका है किन्तु स्थानिक प्रवृत्तियों में समाज के लोगो की रुचि परिष्कृत करने के उद्देश्य से ही म्युनिसिपल कारपोरेशन में सर्व प्रथम मारवाड़ी का प्रवेश करवाने के गौरवपूर्ण अध्याय का प्रारंभ भी सम्मेलन के संरक्षक श्री नारायणलालजी पित्ती सन् १९३४-३५ में कारपोरेशन सदस्य निर्वाचित हो जाने पर हुआ। इसमें विशेष गर्व का विषय तो यह भी रहा कि वे मारवाडी समाज के ही सर्व प्रथम सदस्य नहीं थे बल्कि उस वर्ष निर्वाचित होने वालो में सर्वप्रथम भी वे ही रहे थे। श्री पित्तीजी के पश्चात् इस दिशा मे अग्रसर होने का शीघ्र प्रयत्न किसी ओर से नही किया गया।

सन् १९३५-३६ में मारवाड़ी समाज के उत्साही नवयुवक श्री० चिरजीलाल लोयलका चुनाव मैदान में आये जिसका उत्साहपूर्ण स्वागत सम्मेलन की ओर से हुआ और सम्मेलन की पूर्ण शक्ति उनके चुनाव अभियान को सगठित स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से सलग्न हुई एवम् समाज में जोरदार प्रचार के परिणाम स्वरूप उन्हें निर्वाचन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई व इस प्रकार सम्मेलन को अपना व समाज का दूसरा सदस्य कारपोरेशन में भेजने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कांग्रेस देश की राष्ट्रीय सस्था के रूप में आदर्श का प्रतीक थी तथा सभी निर्वाचनो में कांग्रेस को सफलता दिलवाने मे सदैव सम्मेलन का बहुत बडा हाथ रहा है।

सम्मेलन को अपने एक कर्मठ बन्धु पर भी गर्व है जो कि सन् १९३८ में बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस समिति के सदस्य निर्वाचित हुये और वे हैं समाजवादी विचारधाराओ को अग अग में आज तक समाहित किये हुये श्री मेहरअली के अनन्य उपासक श्री बाबूलालजी धीरामल मालरिया जिनके समान कम उम्र का कोई व्यक्ति उस समय तक प्रांतीय समिति का सदस्य नही बना था। राष्ट्रीय आन्दोलनों में निरतर सक्रिय सहयोगी यह कर्मशील व्यक्तित्व आज भी समाजवादी क्षेत्रो में मारवाडी समाज के स्थान का समुचित प्रतिनिधित्व करने में सर्वथा समर्थ है।

सन् १९३५ मे नवीन विधान के अधीन निर्धारित किये गये बम्बई विधान परिषद् के स्थानो में व्यापारी संस्थाओं के जो स्थान जितनी सख्या में निश्चित हुये थे उनमें एक स्थान मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के प्रतिनिधि का भी जो आज वेस्टर्न इंडिया चेम्बर आफ कामर्स के नाम से ख्यात है निर्धारित करवाने के उद्देश्य से डि-लिमिटेशन कमेटी के समक्ष अपना प्रतिनिधित्व प्रस्तुत किया था जिसका हार्दिक समर्थन सम्मेलन की ओर से किया गया तथा तत्सम्बन्धित विस्तृत विवरण सहित आवेदन पत्र शीघ्र ही प्रस्तुत करवाने सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यवाही का भार सम्मेलन के क्रियाशील सदस्य श्री गोविन्दलाल जी पित्ती पर छोड़ा गया। इस प्रकार जन प्रतिनिधित्व के हेतु प्रथम प्रयास में सहयोगी सिद्ध होकर सम्मेलन ने न केवल समाज का सही स्तर निर्माण करने का उपक्रम किया अपितु धारासभा जैसे स्थल पर अपने समाज के एक प्रतिनिधि की व्यवस्था से गौरवान्वित सम्मेलन ने राजनैतिक दृष्टि से मारवाड़ी समाज के समुचित सम्मान का साधन प्राप्त करने की क्रिया का सफल संचालन किया।

नागरिक कर्त्तव्य :

सम्मेलन ने मारवाड़ी समाज को बम्बई के जागरूक नागरिकों के रूप में मान्यता प्राप्ति के सभी सभव प्रयत्न सदैव से किये हैं तथा प्रत्येक अवसर पर अपने अधिकारो एवम् कर्त्तव्यो के प्रति उन्हें सजग रखने का प्रयास किया है। नये शासन विधान के अनुसार जो नई विधान परिषद् १९३५ में बननेवाली थी उसके चुनाव में भाग लेने के अधिकारी मतदाताओ की सूची का प्रकाशन होने पर उसमें अप्रकाशित रहे हुये प्राय. ७०० तक समाज के अधिकृत व्यक्तियो का नामांकन करवाने का कार्य सम्मेलन ने अपने हाथ मे लिया। इस कार्य के लिये एक आदमी की विशेषतः नियुक्ति करने और सफलतापूर्वक इसे सम्पन्न कराने के प्रयत्नो से सम्मेलन की समाज के नागरिक कर्तव्यों के पालन की गभीरता का भान होता है।

७ जुलाई १९३६ को व्यवस्थापिका सभा के निश्चयानुसार बम्बई म्युनिसिपल कारपोरेशन के कमिश्नर को हार्नबी-बैलार्ड मार्ग की सुरक्षा व सुधार के सम्बन्ध में निम्न आशय का पत्र प्रेषित किया गया। "हार्नबी-बैलार्ड पथ बड़ा खतरनाक है। इसका प्रमाण यही है कि श्री रामविलास पोद्दार के अवसान के अतिरिक्त और भी अनेक इसी प्रकार के करूणाजनक अकस्मात् उस स्थान पर हुये है। अत. म्युनिसिपल कारपोरेशन उस जगह सागर की ओर मजबूत दीवार खिचवादे और रास्ते को और भी चौड़ा कराने का यथाशीघ्र प्रबन्ध करे। म्युनिसिपल कमिश्नर की ओर से उक्त पत्र का सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त हुआ था।

मारवाड़ी शब्द के अनर्गल अर्थ को लेकर सम्मेलन को अनेक बार कदम उठाने पड़े है जो उसकी मारवाडी समाज की सुयोग्य नागरिकता सम्बन्धी नीति के अन्तर्गत ही निश्चित कार्य का स्थान ले सकी है। व्यर्थ के वितण्डावाद एवम् अनावश्यक प्रचार-प्रसार के झझटों से मुक्त रहकर मारवाड़ी समाज के प्रति हुये किसी घातक प्रहार का परिमार्जन करने को सम्मेलन सर्वथा अग्रणी रहा है। इस सम्बन्ध में अपनी सक्रिय कार्यवाहियो के द्वारा सम्मेलन ने एक नही अनेक अवसरो पर खुलकर प्रयत्न किये है कि इस तरह की गलत धारणाओं पर रोक लगाने के लिये कानूनी अधिकारो का उपयोग किया जाय।

श्री जैन मण्डल मद्रास से दो विज्ञप्तियां इस आशय की प्राप्त हुई कि एन० एन० त्रिपाठी कपनी पुस्तक विक्रेता और प्रकाशक बम्बई ने अपनी न्यू पाकेट "गुजराती –इग्लिस डिक्सनरी" में मारवाड़ी शब्द का अनर्गल व अपमानजनक अर्थ किया है। इस सम्बन्ध में सम्मेलन ने शीघ्र ही अपने दो सदस्यों सर्व श्री पं० माधवप्रसाद शर्मा सालिसिटर एवम् महावीरप्रसाद दाधीच एडवोकेट की एक समिति इसकी जाँच के हेतु निर्मित की। समिति ने जाँच करके पता लगाया कि उक्त डिक्सनरी में प्रकाशित इस तरह के अश सन् १९३२ के संस्करण मे हटा दिये गये है किन्तु वलसारे सम्पादित और आर० एम० शाह द्वारा प्रकाशित "गुजराती, अग्रेजी डिक्सनरी" जो अधिक मूल्य की पुस्तक है उसमें इस तरह के अर्थ का प्रयोग हुआ है। सम्मेलन ने इससे सम्बन्धित समस्त स्थिति का अध्ययन "मारवाड़ी छात्र सघ कलकत्ता" और "अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कलकत्ता" के सहयोग से किया और सयुक्त प्रयास द्वारा इसके सुधार को प्रयत्नशील रहा।

गुजराती पत्र "सिनेमा विलास" और हिन्दी के स्थानीय साप्ताहिक पत्र "मनस्वी" के अको में क्रमश ८ मार्च १९४१ एवम् ६ जुलाई १९४१ को प्रकाशित मारवाड़ी समाज के प्रति अनुचित लेख के प्रकाशन और आक्षेपयुक्त सम्पादकीय टिप्पणियो का प्रतिवाद सम्मेलन ने त्वरित रूप से किया तथा पत्रों को अपने व्यवहार के प्रति खेद प्रकट करने को बाध्य होना पडा और इसी प्रकार वर्ष १९५४–५५ में प्रदर्शित एक चल चित्र "रेलवे प्लेटफार्म" में समाज के अपमानजनक चित्रण के विरुद्ध एक संगठित आन्दोलन का स्वरूप सम्मेलन ने प्रस्तुत किया तथा उस पर देशव्यापी रोक लगवाने का यत्न किया एवम् अनेक स्थानो पर इसके प्रदर्शन पर समुचित रोक लगी।

अन्य समाजों से आपसी सौमनस्य की भावना से मुक्त मारवाडी समाज के प्रति इस तरह के घृणित ढग के प्रचार से जो अनुत्तरदायी स्थिति का निर्माण पूना, बडौदा, एवम् गोंडल से प्रकाशित मराठी, अंग्रेजी एवम् गुजराती कोषकारो द्वारा की गई और जिनका विरोध स्थानीय हिन्दी दैनिक "नवभारत टाइम्स" के २५ व २६ मार्च १९५८ के अकों में किया गया था उस सम्बन्ध मे सर्व सहयोग से आवश्यक कार्यवाही की ओर सम्मेलन उन्मुख हुआ व अग्रेजी सम्पादक द्वारा क्षमा मांगने व शब्द हटवाने का आश्वासन प्राप्त करने मे सम्मेलन सफल हुआ।

समाज के व्यवधान :

मारवाडी समाज में व्याप्त कतिपय कुरीतियो के विरुद्ध सम्मेलन ने अपनी स्थापना काल से ही सक्रिय रहकर उनमें आवश्यक सुधार के प्रयत्न अथवा उन्हें समुचित हटाने के आन्दोलन में निरतर भाग लिया है। मात्र प्रस्ताव पारित करके ही सम्मेलन ने सतोष नही कर लिया है। बल्कि अवसर आने पर समाज के सर्वथा प्रतिष्ठित समुदाय से भी विरोध बांध कर सम्मेलन ने अपने समाज सुधारक मतव्य को स्थिर रखा है।

सम्मेलन की व्यवस्थापक सभा ने " शारदा एक्ट " के निर्माण काल से आज तक समाज को बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल सम्बन्ध और दहेज के अभिशाप से मुक्त करने के प्रयासो में कोई कमी कभी नही आने दी है। विशेषत: बाल विवाह और वृद्धविवाह के विरोध में तो सम्मेलन को अपने दो अन्यतम स्नेही एवम् स्थापना काल से सहयोगी बन्धुओं के सामने ही आना पडा था और उनकी व्यक्तिगत भावनाओं को ठेस पहुँचाये बिना ही इस स्थिति का सतोषजनक हल निकालने का सत्प्रयास किया गया था।

इसी प्रकार दहेज का प्रश्न भी मारवाडी समाज के सम्मुख एक ज्वलत समस्या का स्वरूप धारण किये हुये था जिसका परिमार्जन सगठित रूप मे अनेक बार करने के सम्मेलन के प्रयासों को वाछित सफलता प्राप्त नही हुई यह एक विषम परिस्थिति की ही द्योतक अवश्य है किन्तु इसके अन्तर्गत जिन भावनाओं का समिश्रण है उन्हें नियम बनाकर अथवा अन्य वैधानिक नियमों से विरत रखने के उपायों में उतनी ही सफलता प्राप्ति की आशायें नही रह जाती है जितनी समाज को विश्वास में लेकर वातावरण तैयार करते रहने एवम् हृदय परिवर्तन में विश्वास रखते हुये निरंतर प्रयत्नशील रहने से सभवत हो सकती है। राष्ट्रीय सरकार की मूलभूत नीति के अन्तर्गत दहेज पर रोक लगाने वाले विधेयकों की स्वीकृती तक के कार्य में तो सभी वर्गों का सहयोग सरकार को प्राप्त हो सकता है किन्तु जिस समय सभी विलग हो जाते है तो समाज की किसी श्रेणी का मुक्त सहकार प्राप्ति का कोई प्रयत्न पूर्णत: सफल नही हो पाता है।

विवाहादि अवसरो पर अपव्यय एवम् अनावश्यक आडम्बरो के फलस्वरुप तो हानि होती ही है किन्तु देखा देखी और दिखावे के मोह से ग्रस्त समाज के सम्पन्न सज्जनो के कृत्यों का भार मध्यम श्रेणी के परिवारो की कमर तोड़ डालता है और उसमे सामाजिक और नैतिक

चारित्रिक ह्रास से समाज ग्रस्त होता है उस पर विचार करते हुये ही समाज के जनजन के मनों में दहेज के प्रति घृणा के भाव संचारित करने में सम्मेलन जैसी समाज हितैषी सस्थाओं का सहयोग प्रदान किया जा सकता था और वह किया भी गया है। लोग स्वेच्छया निर्धारित प्रतिबन्धो को मान्यता प्रदान करने मे संभवत. सहयोगी हो किन्तु जोर जबरदस्ती से कार्य होना प्राय: असभव हो जाता है और सुधार का निश्चित कदम उठाना कठिन बन जाता है। इन्ही उद्देश्यो को घ्यान में रखते हुये सम्मेलन ने कुछ सुझाव वर्ष १९५७ –५८ मे तैयार किये व समाज को प्रस्तुत किये है जो निम्न प्रकार है :–

१ दहेज या गहने देने (लड़की के लिये, लडके के पक्ष की ओर से) के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष बोध नही करना।

२ दिखावा किसी भी प्रकार का न किया जाय।

३ लडके या लडकी को देखने के समय हाथ में कुछ नही लिया जाय। उनके साथ मे आने वाले भाई भतीजे आदि के लिये भी कुछ नही लिया जाय।

४ मिलाई (क) औरतो की मिलाई में रु ४) से ज्यादा नही लिये जायें।

(ख) मिलाई के समय लड़की वाले की ओर से कलेवा नही लिया जाय।

(ग) मिलाई के समय लडके के हाथ में अधिक से अधिक रु० ११) लिये जायें।

५ तिलक के रु० ११) से ज्यादा नही लिया जाय।

६ बटेरा सगाई से विवाह तक के समय में सिर्फ एक बार से ज्यादा नही बाँटा जाय।

७ बनौरी नही निकाली जाय।

८ कब्जा प्याला आदि जो लिये जाते है वे सगाई और विवाह के समय सिर्फ एक बार ही और एक एक नग लिया जाय। इसके साथ कोई गहना नही लिया जाय और कचोले के साथ तील न ली जाय रु० १०१) से ज्यादा नहीं लिया जाय।

९ हरे भरे के साथ रु० १०१) से ज्यादा नक्द नही लिया जाय।

१० आगी मेवा झोल और कुवारी मिठाई नही ली जाय।

११ चाव एवम् हाथ में सिर्फ मिलनी के रु० ४) एक जगह ही ले लिये जायें व तील न ली जाय।

१२ बारात में बच्चो एवम् नौकर सहित कुल मिलाकर ५१ आदमियो से अधिक नही जावे और आने तथा जाने का किराया लडकी वालो से नही लिया जाय।

१३ बैठा विवाह; लडके वाला लडकी वाले को बैठा विवाह करने के लिये दूसरे स्थान से आने के लिये बाध्य न करे।

१४–बरात के स्वागत के समय खाने पीने की दो वस्तुओ से ज्यादा नही प्रदान की जाय। सगाई आदि सादगी से एवम् आडबर रहित की जाय।

१५– ढुकाव के समय कुल दो तील से ज्यादा न ली जाय। ठोड़माठी नही लिये जाय।

१६– मिजमानी "सज्जन गोठ" के अलावा किसी भी समय "मिजमानी" नही ली जाय।

१७– पहरावनी के समय निम्नलिखित नियम पालन किये जायें।

(क) नक्द रु. ५०१) से ज्यादा नही लिया जाय।

(ख) पलग और चौकी यदि लिये जाय तो बिना चादी के हों।

(ग) बर्तन वगैरह बिल्कुल नही लिये जाय।

(घ) सब पहरावनी कुल मिलाकर रु. २५००) से अधिक मूल्य की न ली जाय।

१८– गहना घालना–सगाई से लेकर विवाह तक लडकी को लड़के वाले के द्वारा चार गहनो से अधिक नही पहनाये जाय एवम् उनका मूल्य रु २५००) से अधिक न हो।

१९– अन्य नेग साध खिचडी छूछक एवम् तालूआ बिल्कुल नही लिया जाय।

इस प्रकार वैवाहिक कार्यो से संबंधित सभी पहलुओं पर विचार करके यह योजना तैयार कर ली गई तथा इस सबध में ठोस कार्यवाही और सक्रिय सहयोग आमंत्रण के उपायो पर विचार करना अनिवार्य समझा गया व तदनुकूल व्यवस्था की रूपरेखा निश्चित की गई।

सुझाव तैयार होने के पश्चात् अगले वर्ष दहेज समिति का निर्माण हुआ और समिति ने समाज में व्याप्त इस विषय प्रथा के प्रतिकार का वातावरण प्रस्तुत करने के उद्देश्य से एक आदोलन का सूत्रपात किया और इसी उद्देश्य के ४ व १३ सितबर १९५८ को सार्वजनिक सभायें आयोजित की गई।

इन सभाओं मे काफी विचार विमर्श के पश्चात् स्वीकृत योजना के अनुसार दहेज न लेने के प्रतिज्ञा पत्रों पर समाज के अनेक व्यक्तियो ने हस्ताक्षर किये। सम्मेलन के सदस्यों मे यह भावना निस्सन्देह व्याप्त है कि दहेज की प्रथा वास्तव में समाज के लिये सर्वथा घातक है तथा उसे जिन उचित साधनो से समाप्त किया जा सके करने को प्रयत्नशील समाज के सभी वर्गों के लोगो को रहना चाहिये। सम्मेलन की व्यवस्थापक सभा के शिष्ट मडल कतिपय सज्जनो से विवाह के अवसर पर व्यक्तिशः मिला भी तथा पत्रो द्वारा भी उन्हें दहेज न लेने की प्रार्थना की गई। दहेज के लेन देन में स्वत: स्फूर्त घृणा भाव ही इसके परिष्कार का एक मात्र साधन हो सकता है।

दहेज पर प्रतिबंध लगाने सबधी ससद् के समक्ष प्रस्तुत विधेयक का पूर्ण समर्थन प्रकट करने वाली सम्मेलन की एक मत राय भारत सरकार को प्रेषित की गई किंतु कोई भी सामाजिक सुधार या क्रांति का सूत्रधार मात्र कानून के जोर पर हो नही सकता जब तक वह सर्वथा हृदयगम न हो तथा मनोवृत्तियों में परिवर्तन न आ जाय। सम्मेलन के प्रयास तभी इस दिशा में सफलता की आशा से निमग्न रह सकते है जबकि उसके सदस्य दहेज व लेनदेन स्वत. के हेतु बंद करे तथा समाज

के अन्य लोगों को इसकी बुराइयों से परिचित करवायें और तभी एक वास्तविक सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। विशेष प्रयत्न—बंबई के प्रथम जनप्रतिनिधि सरकार द्वारा कुछ विशेष कर संपत्ति एवम् विक्रय पर लगाने का उद्देश्य शराब बन्दी की योजना कार्यान्वित करना निश्चित किया गया। शराब से मनुष्य के शारीरिक व मानसिक ह्रास का जो आधार प्रस्तुत होता है उसे विनष्ट कर सुखी समाज की कल्पना साकार करने के इस प्रयत्न का पूर्ण समर्थन सम्मेलन द्वारा ३० जुलाई १९३९ को आयोजित एक विराट सभा में किया गया तथा विशेष आमंत्रित श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की उपस्थिति में निम्नोक्त प्रस्ताव पारित किया गया।

"मारवाड़ी सम्मेलन बंबई की यह सार्वजनिक सभा बंबई सरकार के शराबबंदी के कार्य का हृदय से स्वागत करती हुई इस महत्तम कानून को अनेक विघ्न और बाधाओं के रहते हुये भी कार्यरूप में लाने के प्रशंसनीय साहस के लिये सरकार के कांग्रेसी मंत्रिमंडल का अनेक बार अभिनंदन करती है। सभा का यह विश्वास है कि शराबबन्दी से होने वाले घाटे की पूर्ति के लिये सरकार ने जो जायदाद कर लगाया है वह कार्य की महत्ता और इससे होने वाले लाखों परिवार के कल्याण को देखते हुये अनुचित नहीं है।

इसी प्रकार बंबई म्युनिसिपल कारपोरेशन द्वारा नगर से निरक्षरता के सरल नाश हेतु अनिवार्य शिक्षा योजना का भी सम्मेलन ने मुक्त समर्थन प्रदान किया व समाज से इस कार्य में कारपोरेशन का सहयोग प्रदान करने का आव्हान किया।

शेखावाटी के कुछ कस्बों में ठिकानेदारों द्वारा अनुचित रूप से प्रवास में आने जाने वालों की तलाशियों का विरोध सम्मेलन द्वारा किया गया तो बीकानेर रियासत में डा० घनपतराय पर लगाई गई अनुचित रोक के संबंध में भी आवश्यक कदम सम्मेलन ने उठाये। चिमूर अष्टी-कांड के अभियुक्तों को दी जाने वाली फांसी की सजा में दया प्रदर्शन के निवेदन सरकार को प्रेषित करने में सम्मेलन अग्रणी रहा और इस प्रकार समाज को अनेक अवसरों पर संस्था की सक्रियता से लाभ पहुंचा।

सम्मेलन के उपरोक्त सभी प्रयत्नों का एक मात्र ध्येय परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल समाज की व्यवस्था संगठित रखने और सामाजिक क्रान्ति के सद्भव भावनाओं को आत्मसात करने वाले प्रयत्नों को सफल बनाना ही रहा है।

ॐ सरस्वती साधयन्ती धियं न,
इळा देवी,भारती विश्वतूतिः।
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदम-
च्छिद्रं यान्तु शरणं निषध ॥

ऋक् २-३-८

हे भगवन् ! हमारी बुद्धि को पवित्र बनानेवाली सरस्वती-विद्या, मातृभाषा तथा सबसे विशेष मातृ-भूमि–ये तीनों देविया अपनी धारण शक्तिके साथ हमारे आत्मरूपी यज्ञ-स्थान में आश्रय लेकर दोषरहित रीति से हमारी रक्षा करें। विद्या, भाषा और मातृभूमि ये तीनो देविया बड़ी शक्तिशालिनी हैं। अपनी शक्तिसे ये हमें आश्रय देकर हमसे इस जीवन का सफल यज्ञ संपन्न करायें। भगवन् ! यही हमारी हार्दिक प्रार्थना है।

भारतीय वाङमय में भाषा के महत्व के प्रति सर्वोच्च भाव स्फूर्त हुये हैं तथा समस्त विश्व की भाषाओं की जननी के रूप में भारती अर्थात् संस्कृत की प्रतिष्ठा को सर्वत्र मान्यता प्राप्त हुई है। देश में आदि काल से अनार्य सभ्यता को भी अपने में संलग्न किये हुये संस्कृत का सम्मान सदा सर्वदा सुरक्षित रहा है क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियो में वही जनसाधारण की भाषा का भी स्वरूप धारण किये हुये थी। कालचक्र की तीव्र गति से छिन्न–भिन्न संस्कृत के अपभ्रंश स्वरूप जनता के समक्ष प्रकट हुये जो शनै. शनैः विविध प्रक्रियाओ के मध्य से अपना मार्ग-निर्माण करते हुये भारत के सभी प्रादेशिक भाषाओं के सौष्ठव को अपने सुललित अंग विन्यास से सुसज्जित करते हुये और जनता की भाषा के रूप में डिंगल आदि की साहित्य सर्जना को आधार प्रदान करते हुये अग्रसर हो रहे थे। इन अपभ्रंशी स्वरूपों के आधार पर ही निर्मित भाषा के अनेक खंड उपखंड हुये एवम् प्रादेशिक बंधनों से जडित रहकर अवधी, बृज, डिंगल, खड़ी बोली के विशेषण अपने साथ संयुक्त कर लिये किंतु अंततोगत्वा इन सभी की चरम परिणिती का आधारस्थल एक भाषा बन सकी है जिसे राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त हुआ और वह भाषा है हिन्दी। राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हो जाने के पश्चात् भी हिन्दी अपने अधिकारपूर्ण अभिषेक से अभीतक वंचित सी रही है इस के कतिपय कारणो का विश्लेषण यहां समुपस्थित किया जाना समुचित होगा।

भाषा वह आधारभूत शक्ति है जो प्रशासनिक दृष्टिसे तथा आपसी भावाभिव्यंजना के साधन स्वरूप भी मानव के उपयोग में निरंतर आती रही है। देश के सभी प्रादेशिक भागों को एक सूत्रता में आबद्ध करने का सर्वोपयोगी मंत्र यदि है तो वह भाषा ही है। कदम-कदम पर बोली में अंतर आना तो स्वाभाविक है किन्तु भाषा तो एक मूलाधार है जिस पर राष्ट्र की महानतम कृतियों तक को अवलंबित रहना होता है। भाषा, भेद डालनेवाली भावनाओ की प्रसूता नही है अपितु ऐक्य तंत्र की मूर्धन्य मान्य बिंदु रही है। राष्ट्र की विविध संस्कृतियो में सामंजस्य का अजस्त्र स्त्रोत यदि प्रवाहित रहा है तो वह सर्वमान्य भाषा के माध्यम से ही रहा है। पूर्वकाल में जो शक्ति इस कार्य के संपादनार्थ संस्कृत को प्राप्त थी वह आज भारत भर में अल्पाधिक रूप से हिन्दी को मिली हुई है। देश के किसी भाग को अपने प्रभाव से हिन्दी ने मुक्त नही रखा होगा तथा राजनैतिक हानि लाभ का परित्याग करके यदि गंभीरतापूर्वक शोध

की जाय तो यह स्पष्ट हो जायगा कि कतिपय न्यस्तस्वार्थ जनों के अलावा आज सारे देश में हिन्दी के प्रति ममत्व बढता जा रहा है । विदेशों के अतिथि वृन्द को जब ज्ञात होता है कि हमारे राष्ट्र की निर्धारित राष्ट्र-भाषा अवश्य है किंतु हम अब भी अंग्रेजी का मोह त्याग नहीं सके है तो उन्हें हमारी मानसिक दुर्बलताओं का स्वतः बोध हो जाता होगा तथा यह भावना उनके हृदय में अवश्य घर कर लेती होगी कि जिस देश के वासी अपनी भाषा को अपनाने में अभी तक सकोच कर रहे हैं वह भला एक राष्ट्र का स्वप्न चरितार्थ करने में किस प्रकार समर्थ हो सकते हैं ।

राष्ट्र को यदि जीवित रहना है तथा विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों की पक्ति में अपना स्थान सुरक्षित रखना है तो निज भाषा के महत्व को अंगीकार करना सर्वथा आवश्यक तथ्य है । अंग्रेजी से किसी का कोई द्वेष नहीं है । ससार में अधिकाधिक उपयोग में आनेवाली यदि वह है तो उसके अतर्राष्ट्रीय प्रयोग को मान्यता दिलवाने में कहीं सकोच करना भूल है तथा जिन्हें अपने व्यापार व्यवसाय अथवा अन्य विषयक कार्यों की महत्ता अभीष्ट है वे सहर्ष इसका विशेष अध्ययन करने को तत्पर हो सकते हैं किंतु यह मान्यता किसी भी राष्ट्र की विवश दयनीयता की ही द्योतक समझी जाती रहेगी कि उसकी निर्धारित राष्ट्रभाषा का अभी समुचित विकास नहीं हो पाया है अत. सभी दृष्टियों से अंग्रेजी को प्रमुखता प्रदान करते रहने की अवधि अनिश्चित काल तक को स्थापित होती रहे इस से बढकर राष्ट्र के हितों के साथ कोई खिलवाड संभव नहीं प्रतीत होता है ।

अपनी भाषा के विकसित होने के साधन समुपस्थित करने के स्थानपर उसकी अभावगत स्थिति का लगातार ढिंढोरा पीटना रहना तो वास्तव में सच्ची राष्ट्रीयता के उत्कर्ष में बाधक स्थिति का ही द्योतक है । प्राविधिक विधियों के अध्ययन का क्रम विशृंखलित हो जायेगा यह भ्रान्ति जब तक हमारे हृदय से विगलित नहीं होगी उस समय तक हमारे स्फूर्त प्रयत्न कदापि राष्ट्रभाषा के उन्नयन की ओर अभिमुख नहीं होंगे क्योंकि परावलम्बी के भाव तो तब तक विद्यमान रहेंगे ही । उपदेश-कर्त्ता प्रस्तुत है कि जब अंग्रेजी का भरापूरा सर्वांगपूर्ण साहित्य समस्त विश्व में उपयुक्त हो रहा है तो फिर उसी का उपयोग क्यों नहीं अपने विशिष्ट ज्ञान की अभिवृद्धि के उद्देश्य से कर लिया जाय– क्यों यह कष्ट किया जाय कि इस आवश्यकता की पूर्ति के हेतु राष्ट्र भाषा के साधनों को सबल किया जाय यही कारण है कि हिन्दी को जो स्वरूप अथवा जो सबल साहित्य पूर्व व मध्यम कालीन साहित्यसेवियों की लेखनी से प्राप्त हो चुका है उसका शतांश भी आज सभवत. नहीं हो पा रहा है जब कि प्रोत्साहन के सर्वसाधन प्रस्तुत करने को सभी ओर से लालसायें प्रस्तुत की जा रही हैं ।

तात्पर्य यह है कि यदि देश को अभीष्ट है कि उस की वर्तमान व भावी पीढी को राष्ट्र के उत्कर्ष के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व वहन करना है तो यह परमावश्यक है कि आज के शासन और समर्थ साहित्यकारों को अपने सभी साधनों को संलग्न करके देश की सर्वमान्य एक राष्ट्र भाषा को एक राष्ट्र निर्माण के महद् उद्देश्य में सलग्न करना होगा ।

मारवाडी संम्मेलन ने अपने स्थापना काल से ही इस तथ्य को हृदयंगम कर लिया था कि राष्ट्रभाषा का स्वरूप हिन्दी की समृद्धि से ही सर्वथा सुरक्षित रखा जा सकता है । राजस्थान के प्रवासी जनों को बंबई में बैठकर अपनी सर्व प्रथम सुसंगठित इकाई के प्रमुखतम उद्देश्यों में हिन्दी के प्रचार व प्रसार को महत्ता दिलवाने वाले स्वप्न द्रष्टावों को अर्ध शताब्दि पूर्व ही यह मूर्त कल्पना रही होगी कि अन्तत. हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होना है । क्यों नहीं उस समय मारवाडी या राजस्थानी भाषा के विकास को इस समाज ने अपने उद्देश्यों में प्रमुखता प्रदान की– क्यों कर हिन्दी का ही चयन सस्था के उन आदि सस्थापकों ने किया इसका उत्तर आज तो सर्वथा स्पष्ट है । किंतु उस समय समाज के समक्ष अपने इस उद्देश्य की मान्यता का क्या स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया गया होगा यह कल्पनातीत विषय है ।

सम्मेलन की मूल भूत नीतियों से मेल खाती हुई ऐसी कोई प्रवृत्ति इस प्रभाव से अछूती नहीं रही होगी । डिंगल के सशक्त स्वरूप में हिन्दी के साथ साहित्य का गर्वपूर्ण अधिकारी मारवाडी समाज ने डिंगल साहित्य व राजस्थानी भाषा को भी हिन्दी के वृहद् स्वरूप में ही अन्तर्हित पाया था तभी उत्साहपूर्वक हिन्दी के विकास को अपने उद्देश्यों में स्थान दिलवाने में समर्थ हुआ था यह एक स्वीकृत तथ्य ही है ।

हिन्दी में अभाव हो सकते हैं इस सबध में किसी को संभवतः उतनी आपत्ति न हो किन्तु उन अभावों को दूर नहीं किया जा सकता हो यह मान्यता संभवत. सम्मेलन की नहीं थी । सम्मेलन ने मारवाडी समाज के हृदय में इस सत्य के अंकुर को बीजारोपित करने में सामयिक सफलता प्राप्त की थी यह सर्वथा सही दिशा में अग्रसर होने की सूचना है किंतु मात्र सम्मेलन सदृश्य सीमित साधन सपन्न संगठन की शक्ति ही तो इस कार्य की सफलता का साधन समुपस्थित नहीं कर सकती थी इस के लिये तो आवश्यक रूप से देश के सभी समाज अनवरत श्रम एवम् श्री संपन्न श्रद्धा से संलग्न हो तभी संभवतः साहित्य सर्जकों के संत्रस्त मन को शांति का स्वरूप स्पष्ट हो सके और वे अपनी सृजन शक्ति का सद्व्यय राष्ट्र भाषा के सही विकास में संलग्न कर सकेंगे ।

सम्मेलन की जिन प्रवृत्तियों ने समाज के चरण दिशा इस में अग्रसर किये उनका विवरण प्रस्तुत करने के पूर्व एक सामान्य तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करवाना अनिवार्य समझते हुये ही यह बता देना समुचित होगा कि समेलन के सृष्टानों में हिन्दी के स्नेह का संचरण सामयिक आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये कदापि नहीं रहा है बल्कि इस देश के विपरित सम्मेलन को तो अपने बालिका विद्यालय की सरकारी मान्यता में सर्वथा अनावश्यक विलंब का कष्ट अनुभव करना पडा था किंतु उस तथ्य ने भी कभी उत्साह में कभी न आने दी निराश नहीं होने दिया जिसके परिणाम स्वरूप ही हिन्दी माध्यम के साथ मान्यता प्राप्त तथा प्रशिक्षण का एक मात्र स्थल समाज के हितार्थ प्रस्तुत करने का अधिकार सम्मेलन को हो सका था ।

इसी प्रकार सम्मेलन को अपने उद्देश्यों के अंतर्गत हिन्दी के विकास को समुचित स्थान दिलवाने के पश्चात् भी अनेक प्रयोग अनिवार्यतः प्रस्तुत करने पड़े होंगे ताकि समाज को आश्वस्त होने का सुअवसर प्राप्त हो सके कि हिन्दी का विकास वास्तव में सम्मेलन का ध्येय है । उन प्रयोगों में कहीं कहीं पूर्ण सफलता प्राप्त हुई किंतु दूसरी और तत्कालीन शासन व्यवस्था की दृष्टि में हिन्दी के उत्कर्ष हेतु किये जाने वाले प्रयत्नों की

रचनात्मकता के प्रति शंका को स्थान प्राप्त था क्योंकि शासकों ने हिन्दी के प्रसार-प्रचार को भी एक आंदोलन का ही स्वरूप मान्य कर लिया था एवम् उस ओर सर्वदा सतर्क रहना अवश्यम्भावी था। सम्मेलन इस स्थिति में भी विचलित नही हो पाया था क्योंकि उसका मुक्त समर्थन व सक्रिय योग तो स्वतंत्रता आंदोलन को स्पष्ट रूप से था ही फिर हिन्दी विकास में संलग्नता के प्रति शासन की सतर्कता से अप्रभावित रहते हुये निरंतर इस दिशा में सम्मेलन उत्साह पूर्वक अग्रसर रहा है।

सम्मेलन की जिन विशिष्ट प्रवृत्तियो के माध्यम से हिन्दी को संपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है तथा उनमें भाषा के रूप में हिन्दी के उपयोग से समाज लाभान्वित हुआ है उनका विवरण संचालित संस्थाओं के अंतर्गत विस्तारपूर्वक समुपस्थित हुआ है। सम्मेलन की उन अन्य प्रवृत्तियो का संक्षिप्त आलेख इस स्थान पर प्रस्तुत करना समयोचित रहेगा जिस के फलस्वरूप ही मारवाड़ी समाज का, अपनी परम्परागत संस्कृति के मान को सुरक्षित रखते हुये देश के हित में योगदान हिन्दी के एक राष्ट्रभाषा स्वरूप को स्थायायित्व प्रदान करने के स्फूर्त प्रयत्नों का प्रतीक सिद्ध हुआ है।

सम्मेलन की नीति निर्धारण के आदि काल पर यदि विवेचनापूर्वक शोध की जाय तो यह तथ्य स्पष्ट हो जायेगा कि हिन्दी को अपनाने का ध्येय मुख्य रहा होगा। सर्वसमुदायो के आवास स्थल बंबई नगर की विभिन्न संस्कृतियो व भाषाओं में ताल मेल रखने में समाज के लोग समर्थ हो सकें और साथ ही साथ भविष्य की जो जो कल्पना उन नीति निर्धारणकर्त्ताओं के मस्तिष्क में होगी वह यही रही होगी कि बिना हिन्दी के मारवाड़ी समाज प्रगति के इस युग में त्वरित गति से अग्रसर नही हो सकेगा।

सम्मेलन का जो स्वरूप डिबेटिंग युनियन के रूप में समाज के समक्ष आया उसमें जिन विषयों पर विचार विमर्श होता था उन्हें हिन्दी माध्यम से ही सबके समक्ष रखा जा सकता था। यही भावना रहती थी कि प्रकट किये गये विचारों का प्रसार अधिकतम हो उन्हें समझने में सभी समर्थ हो तथा उससे भावी राष्ट्रभाषा के स्वरूप को सहकार प्राप्त हो। सम्मेलन की प्रारंभिक प्रवृत्तियों में ही हिन्दी के इस अतिशय महत्व का इसके अलावा और क्या रहस्य हो सकता था कि दूरदर्शिता से युक्त समाज के तत्कालीन विशिष्ट जनो की दृष्टि सुदूर भविष्य में प्रभावित प्रकाश के सूक्ष्मतम कणों में उज्ज्वल प्रकाश का बोध कर पा रहे थे। यही कारण था कि समेलन द्वारा निर्धारित निति के अंतर्गत राष्ट्र भाषा हिन्दी को इतना श्रेष्ठ स्थान प्राप्त हो सका था।

प्रयासों की शृंखला :

सन् १९१६–१७ में सम्मेलन द्वारा एक रात्रि पाठशाला का प्रारंभ इस उद्देश्य से किया गया था कि प्रात: व सायं समय में वे लोग जो दिन में किसी कार्य में संलग्न रहते हैं अपना हिन्दी व अंग्रेजी ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से उस शाला की कक्षाओं में उपस्थित हो सकें। इस प्रथम प्रयास को सम्मेलन ने सन् १९२० तक लगातार चालू रखा और उससे लाभ उठाने वालों के मन में सम्मेलन के इस अभिनव प्रयास का प्रभाव अवश्यंभावी हुआ। इससे पूर्व संमेलन द्वारा प्रस्तुत की गई हिन्दी पुस्तकालय एवं वाचनालय की सुविधाओं का भी लाभ समाज द्वारा निरंतर उठाया गया।

सार्वजनिक मंच से हिन्दी के महत्व का प्रतिपादन निरंतर करते रहने का स्फूर्त प्रयत्न सम्मेलन द्वारा किया जाता रहा है। नगर निगम की ओर से संचालित बहुसंख्यी विद्यालयों में हिन्दी माध्यमवाले बालक-बालिकाओं के समक्ष सदैव से कठिनइयां उपस्थित थी और उसका प्रतिकार करने व निगम हिन्दी माध्यम से भी शिक्षा की सुविधा प्रस्तुत करने को बाध्य हो इसके लिये जनमत का अनुमत निगम को हृदयंगम करवाना वाछनीय था।

सम्मेलन ने २० अगस्त १९२३ को मारवाड़ी विद्यालय के सभा-कक्ष में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन इसी उद्देश्य से किया था कि म्युनिसिपल कार्पोरेशन की प्राथमिक शालाओं में भी हिन्दी शिक्षा प्रचार का आधार निर्माण किया जा सके। सभापतित्व श्री रणछोड़-दासजी ने ग्रहण किया तथा बडी संख्या में उपस्थित जनसमूह के समक्ष विशिष्ट विद्वानों ने हिन्दी के प्रचार प्रसार एवं उसे राष्ट्र भाषा पर अभिषिक्त करने के हेतु महत्वपूर्ण प्रवचन प्रस्तुत किये जिनका सामयिक सुंदर प्रभाव जनता के सभी वर्गों पर बहुत अधिक पड़ा। इस प्रकार के सार्वजनिक आयोजनों के परिणामस्वरूप ही हिन्दी का स्थान भी निगम पाठशालाओं में शनै शनै सुरक्षित रहना प्रारंभ हुआ और हिन्दी के माध्यम से अध्ययन की व्यवस्था रखी जाने लगी।

सन् १९२५ में सम्मेलन ने हिन्दी के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान देने के उद्देश्य से एक नवीन उद्योग का समावेश अपने कार्यक्रमों में रखते हुये किया। बंबई में जिन म्युनिसिपल स्कूलो में गुजराती व मराठी माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी वहा हिन्दी के प्रचारार्थ तथा अहिन्दी भाषी बालसमूह के सुकोमल हृदय में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी ममत्व जागरण करने के उद्देश्य से ही इन अहिन्दी भाषी बालक-बालिकाओं को शिक्षा देने के हेतु छात्रवृत्तिया नियत की गई। इसी वर्ष सम्मेलन ने हिन्दी स्पर्धा परीक्षा का आयोजन भी प्रारंभ किया और कालबादेवी रोड पर पूर्णत. हिन्दी माध्यम से शिक्षण प्रदान करनेवाली एक शाला का प्रारंभ भी नगर निगम द्वारा इस साल किया गया था।

हिन्दी स्पर्धा परीक्षा में सम्मिलित छात्र-छात्राओं की कुल संख्या ५०० थी जिनमें म्युनिसिपल कार्पोरेशन स्कूलो के गुजराती एवम् मराठी विभागो के दोनो तरह के परीक्षार्थी उपस्थित थे। परीक्षा परिणाम की घोषणा के तुरंत बाद आयोजित उत्सव को अत्यन्त समारोह के साथ श्री बेणीप्रसादजी डालमिया की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेवाली प्रत्येक विभाग की एक एक परीक्षार्थिनी को सम्मेलन की ओर से दो स्वर्ण पदक प्रदान किये गये और अन्य उपस्थित छात्र-छात्राओं को भी यथोचित पुरस्कार दिये गये। इस परीक्षा में अग्रणी चार बालिकाओं एवम् २ बालकों को १ वर्ष के लिये उनकी योग्यतानुसार २), १।।) और १) मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इस प्रकार यह सर्व प्रथम समारोह हिन्दी की सेवार्थ सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

हिन्दी शिक्षण वर्ग : सम्मेलन अपनी अन्तर्गत संस्थाओं द्वारा नगर मे हिन्दी के प्रचार को तो प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील था ही किन्तु वर्ष १९३४-३५ मे इस उद्देश्य को विस्तृत स्वरूप प्रदान करने के लिये एक योजना निश्चित की गई । हिन्दी की नियमित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से रात्रिकालीन शिक्षण वर्गों को प्रारम्भ किया गया । इन वर्गो का समय १ घण्टा रात को नौ से दस तक का रखा गया तथा हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा एव मद्रास हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं की सहायक सभी परीक्षाओं की सुविधा यहा के शिक्षण क्रम के अन्तर्गत निहीत थी तथा प्रारम्भ में ही सन्तोष जनक स्थिति छात्रसख्या की दृष्टि से इन वर्गों की रही ।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन में योग राष्ट्रीय महासभा के बम्बई में होनेवाले अडतालीसवें अधिवेशन के समय ही राष्ट्र भाषा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था । सम्मेलन की व्यवस्थापक सभा ने ३० सितम्बर को एक अस्थायी उपसमिति की नियुक्ति इसके सफल सम्पादन में सक्रिय सहयोग देने के उद्देश्य से बनाई तथा आर्थिक सहायता भी तदर्थ स्वीकृत की । काका कालेलकर की अध्यक्षता में सम्पन्न इस अधिवेशन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत करने के सम्बन्ध में अनेक प्रकार से विचार विमर्श हुये तथा प्रस्ताव पारित किये गये ।

प्रेमचन्द दिवस : मुशी प्रेमचन्द के निधन से हिन्दी के हितों पर वज्राघात सा हुआ । ऐसे सहृदय साहित्य सेवी का असमय ससार से विदा होने समस्त साहित्य ससार को शोकमग्न कर दिया । २० दिसम्बर १९३६ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा निर्धारित तिथि को पुस्तकालय समिति ने प्रेमचन्द दिवस के रूप मनाया । हिन्दी के विख्यात लेखक डा० धनीराम प्रेम की अध्यक्षता में आयोजित शोक सभा में अनेक विद्वान वक्ताओं ने मुशीजी के प्रति अपनी श्रद्धाजलिया प्रस्तुत करते हुए प्रस्ताव स्वीकृत किया एवं अपनी समवेदना उनके सतप्त परिवार को प्रेषित की तथा साथ ही साथ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से मुशी प्रेमचन्द स्मारक बनाने, काशी नागरी प्रचारिणी सभा से स्वर्गस्थ आत्मा को स्मृति ग्रन्थ समर्पण करवाने और बम्बई में साहित्यिक कार्यो की सम्पूर्ति के उद्देश्य से उनके आदर्शों के अनुरूप कोई साहित्यिक सस्था बनाने का कार्य हाथ में लेने के हेतु एक उपसमिति का निर्माण करने का सक्रिय प्रयास किया गया । सम्मेलन द्वारा मुशी प्रेमचन्द की सभी रचनाओं का समाज में प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से भी आवश्यक संग्रहादि की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया ।

बम्बई विश्वविद्यालय में हिन्दी : म्युनिसिपल कार्पोरेशन के विद्यालयो में हिन्दी को समुचित स्थान दिलवाने के प्रयत्नो की सफलता से प्रोत्साहित सम्मेलन ने सन् १९३६ में यह प्रयास भी करना प्रारम्भ किया कि बम्बई विश्वविद्यालय अपनी उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में हिन्दी विषय को भी सम्मिलित कर लेवें । इस सम्बन्ध में काफी प्रचार किया गया । सिनेट व सिण्डिकेट के सदस्यो से व्यक्तिगत सम्पर्क व पत्रव्यवहार करने, समाचार पत्रो व अन्य हिन्दी संस्थाओं एव राष्ट्रीय नेता गणो का निरतर इस ओर ध्यान आकर्षित करना प्रारम्भ किया । सम्मेलन द्वारा औपचारिक रूप से यह विषय विश्वविद्यालय सगठन के विचाराधीन रखने के प्रयत्नो का श्रीगणेश में ही हिन्दी को पाठ्यक्रम में स्थान प्राप्त हो चुका था और इस प्रकार हिन्दी की समृद्धि के हेतु किये गये इस प्रयत्न में काफी सफलता प्राप्त हुई ।

पुस्तक सहकार : बम्बई में गात रास्ता पर नवस्थापित हिन्दी पुस्तकालय को सम्मेलन द्वारा ७७१ पुस्तकें आदि सन् १९३७ में प्रदत्त की गई । सम्मेलन की इस सहकारिता पूर्ण भावना से इस सस्था के कलेवर में तो वृद्धि हुई ही किन्तु आपसी सहकार के इस स्तुत्य प्रयत्न के फलस्वरूप सम्मेलन की सदाशयता के प्रति समाज में सद्भावनायें निर्मित हुई और उसकी गतिविधियो के सर्व व्यापी स्वरूप को स्वीकार किया गया ।

सम्मेलन ने अपनी उपरोक्त गतिविधियों द्वारा हिन्दी साहित्य एवम् उसके सफल सर्जकों को समुचित सम्मान दिलवाने की दिशा में तत्परता प्रदर्शित की तथा अपनी सक्रिय सेवाओं के द्वारा हिन्दी की समृद्धि के सभी कार्यों में अग्रसर रहा । श्री जयशकर प्रसाद के निधन पर सम्मेलन ने शोक प्रस्ताव के हेतु जो सभा आयोजित की उसकी अध्यक्षता श्रीमती लीलावती मुशी ने की थी । प्रसादजी की अमर रचनाओं के महत्व पर प्रकाश डालने और हिन्दी के उत्कर्ष में उनके सर्वांगीण प्रयास का आदर्श जनता के समक्ष समुपस्थित करने का उद्देश्य सम्मेलन ने बनाया और आज तक उसी ध्येय की पूर्ति में पूर्ण उत्साह के साथ सलग्न है । सम्मेलन को यह जानकर कितना हर्ष हुआ कि बंगाल धारा सभा के लिये निर्वाचित श्री मुगनुराम रुइया ने प्रथम बार हिन्दी में अपना अभिभाषण १९४३-४४ में पढा था । इस तरह का सत्साहस प्रदर्शित करनेवाले हिन्दी स्नेही समाजसेवी सज्जनो का समुचित सम्मान सम्मेलन का उद्देश्य रहा है । तथा उनके आदर्श पर समाज के अन्य लोग चलें इस तरह का वातावरण निर्माण करने का पूर्ण प्रयास सम्मेलन द्वारा अपनी गतिविधियो के माध्यम से निरतर किया जाता रहा है ।

विक्रम महोत्सव: सम्मेलन की मध्यकालीन प्रवृत्तियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयोजन जिसे अखिल भारतीय स्वरूप दिया गया था विक्रम महोत्सव के रूप में सन् १९४४-४५ में व्यवस्थित रूप से मनाया गया । एक वर्ष पूर्व ही इस सम्बन्ध में निश्चय किया जा चुका था उसे इस वर्ष क्रियान्वित करने व सफल बनाने के उद्देश्य से सभी कार्यकर्ताओं ने बडी लगन और उत्साह के साथ इस राष्ट्रीय योजना को सुचारू रूपसे संचालन किया । भारत के सभी भागों से प्रकाण्ड विद्वान कवि, लेखक वक्ता व समाजसेवी नेतागण समारोह में व्यक्तिशः उपस्थित हुये अथवा अपनी शुभकामनाये प्रेषित की ।

आर्य सभ्यता के भेद-भाव हीन राष्ट्रीय भावो की गरिमा से युक्त इस पुनीत योजना का भारी स्वागत स्वातंत्र्य प्रचार स्वरूप में ही संयुक्त था । दैनिक पत्रो मे इस सम्बन्ध में प्रकाशित ऐतिहासिक लेखो कथानकों में विक्रम युगीय संस्कृति को साकारता प्रदान करने का प्रयत्न किया गया तो काव्य के माध्यम से अतीत स्वर्ण युग की गरिमा को छन्द बद्ध किया गया । निर्वाचित समितियों ने अनेक महासभाएं और महोत्सव आयोजित किये ।

इसे राष्ट्रीय महापर्व दिवस के रूप में आयोजित करने के हेतु सम्मेलन के तत्वावधान में एक प्रभावशाली स्वागत समिति का गठन किया गया जिसमें सभी श्रेणी व वर्गो के लोगो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

स्वागताध्यक्ष श्री रामदेव पोद्दार और संयुक्त स्वागत मंत्री श्री गजाधर सोमानी और घनश्यामदास पोद्दार नियुक्त हुये तथा अर्थ संग्रह प्रचार स्वयं सेवक मनोरंजन एवं कवि सम्मेलन आदि के आयोजन के हेतु उप समितियां गठित की गई जिसमें नगर के गणमान्य महानुभाव व्यापारी बन्धु एव समाजसेवियों ने सोत्साह भाग लिया।

स्वागत समिति ने २५ से २७ मार्च १९४४ तक के तीन दिवस कार्यक्रम के लिये निश्चित किये। प्रथम दिवस समारोह के प्रारंभ पर एक विशाल सार्वजनिक सभा आयोजित करने और शेष दो दिन अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का कार्यक्रम प्रस्तुत की योजना बनाई गई तथा उक्त कवि सम्मेलन में निम्नोक्त पुरस्कार निर्धारित किये गये।

१ विक्रम पुरस्कार–सम्राट विक्रमादित्य के सम्बन्ध में सर्वश्रेष्ठ कथात्मक काव्य का सर्जन करने वाले को रु. ५०१) का प्रथम तथा सौ सौ रुपये के दो और पुरस्कार निश्चित हुये।

२ कालिदास पुरस्कार–महाकवि कालीदास सम्बन्धित कविताओं पर रु. १५१) का प्रथम तथा रु १०१) का द्वितीय पुरस्कार निर्धारित हुआ।

३ सम्मेलन पुरस्कार–उत्तम कला पूर्ण कविताओं पर रु. १०१) के दो पुरस्कार दिये जाने का निर्णय हुआ।

४ समस्या पूर्ति पुरस्कार–इसके लिये भी रु १०१) के दो पुरस्कार निश्चित हुये।

स्थानीय कवियों के अतिरिक्त बाहर के अधिकाधिक कविगण उपस्थित हों उनके लिये सभी प्रकार की सामयिक व्यवस्थाएं–यात्रा खर्च आवास, भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध सम्मेलन की ओर से हुआ तथा आगत निमंत्रित सभी कवियो को न्यूनतम ५१) भेंट स्वरूप देने का निश्चय हुआ इस प्रकार समस्त योजना निर्मित हो जाने पर माधव बाग में महोत्सव अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश श्री के० एम० जवेरी की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ।

स्वागत सत्कार के पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री रामदेव पोद्दार ने अपने भाषण में सम्राट विक्रम के गुण व ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित विद्वद्वर एवं वक्ताओं द्वारा सम्राट विक्रम की बहुविधि गरिमा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित होने के पश्चात् उनके जीवन वृत्त पर प्रकाश डालने वाले अभिभाषण प्रस्तुत किये गये।

कवि सम्मेलन का द्विदिवसीय कार्यक्रम भी सानंद सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं० रामनरेश त्रिपाठी ने की थी। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से आये हुये सर्वश्री अनूप शर्मा, हरिशंकर शर्मा, अरुण, देवेन्द्र, गोपालसिंह नेपाली, शिवमंगलसिंह सुमन, देवल, गिरीश, भरतव्यास, विदेह आदि कवि गण एवं सर्व श्रीमती विद्यावती कोकिल, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा आदि कवयित्रियों ने अपनी विक्रम सम्बन्धी एवं स्वतन्त्र सुललित रचनायें सुनाई। कवि सम्मेलन का आकर्षण इस मात्रा में था कि दोनों दिनों के अधिवेशन में भी विख्यात कवियों के अतिरिक्त किसी को दूसरी बार कविता पाठ का अवसर जनता की माग पर भी नही दिया जा सका।

इस प्रकार सम्मेलन ने हिन्दी के उद्भट विद्वानों गायकों, काव्य मर्मज्ञों एवं विद्वानों को रगमंच पर एकत्रित करने का साधन समुपस्थित किया तथा घोषित पुरस्कार भी वितरित किये गये हिन्दी के संभवत: प्रथम कवि सम्मेलन का बम्बई में यह सफल आयोजन रहा तथा इससे हिन्दी का महत्व जनजनार्दन के हृदयगम हुआ।

हिन्दी कवियो का सम्मान :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन के अवसर पर सन् १९४७ में सम्मेलन ने विशेष रूप से रुचि प्रदर्शित की। उस अधिवेशन में सम्मिलित हिन्दी के विख्यात कविगणों को सम्मानित करने के उद्देश्य से सम्मेलन ने एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया था। हिन्दी साहित्य और कवियों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से इस कवि सम्मेलन में भाग लेने वाले आठ सर्वश्रेष्ठ कवियों को सौ सौ रुपये का पुरस्कार दिया गया।

स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान करने के हेतु संसद् में किये गये अभियान में सम्मेलन का योग सदैव रहा है। देश के सभी भागो ने सहर्ष हिन्दी को अपनाया तथा उत्साह पूर्ण वातावरण में ससद् द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। हिन्दी के हितो का जो संग्राम अर्द्धशताब्दि पूर्व सम्मेलन जैसी सीमित साधन वाली संस्था और सुगठित साहित्य सम्मेलन व नागरी प्रचारिणी सदृश्य विशाल सगठनो द्वारा लड़ा गया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है और उसमें निहित भावनाओं की अन्तरतम गहन अनुभूतियों का अनुभव करने का प्रयास यदि प्रारंभ से लेकर अब तक किया जाता तो प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय हितों में ही संलग्न पाया जाता। राष्ट्र की एकता परम लक्ष्य के रूप में मिलती तो एक राष्ट्रभाषा उसकी सम्प्राप्ति का सबल साधन समुपस्थित करने में समर्थ होती। आज जिन प्रादेशिक विवादो के चक्कर में पड़कर राष्ट्र के एक रहने के दृढ मंतव्य पर निरंतर चोट पहुंचाई जा रही है तथा एक राष्ट्रभाषा के मार्ग को अवरुद्ध करने के कुटिल क्रियाकलापों का जो रूप समाज के समक्ष प्रकट हो रहा है उससे मुक्ति पाना सर्वथा अवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि स्वाधीन भारत में समाज के सभी अंगों का एक मात्र सफल राष्ट्र के विकास में सहकारी होने का ही अत्यावश्यक रूप से रहे तभी संभवत: इनसे मुक्ति पाने का कोई साधन हम ढूढ़ पायें अन्यथा नही। सम्मेलन के समक्ष भी यह समस्या उपस्थित थी और क्योंकि राष्ट्रीय सरकार ने जनमत की माग के अनुरूप हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित तो कर दिया किन्तु मात्र इतने से तो कुछ चमत्कार हो नही सकता था। आवश्यकता इस बात की थी कि हिन्दी को सर्वांगपूर्ण एवं सशक्त भाषा के रूप में विकसित करने और आज के वैज्ञानिक युग से सम्बन्धित सभी सूत्रों का संयोग उसमें करने का पूर्ण प्रयत्न किया जाय। सम्मेलन ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस दिशा में जो कदम बढ़ाये उनका विवरण आलेख में प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

मारवाड़ी सम्मेलन पत्रिका

हिन्दी की समृद्धि के प्रयास पत्रों के माध्यम से करने का प्रयत्न सम्मेलन के इतिहास में कोई नवीनता का द्योतक नही है। इससे पूर्व भी प्रयत्न किये गये थे किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् सम्मेलन की गतिविधियों के प्रवाह में जो मोड़ दृष्टिगोचर हुआ उसके दिग्दर्शन का साधन, जो

प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण सिद्ध हो, पत्र-प्रकाशन ही कई दिनों से सदस्यों के ध्यानगत था किन्तु अनेक बाधाओं के कारण शीघ्र ही इसकी व्यवस्था संभव नहीं हो सकी। सम्मेलन के मुखपत्र के रूप में प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र की रूपरेखा निर्धारित की गई और अप्रैल १९५६ से "मारवाड़ी सम्मेलन पत्रिका" के नाम से एक हिन्दी मासिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।

इस पत्रिका के द्वारा समाज और देश की समस्याओं पर विचार करने और हिन्दी साहित्य के प्रचार और प्रसार करने में सहायता मिली एवं समाज के उदीयमान लेखक-कविगणों को अपनी रचनायें प्रकाशित होने से लेखन कार्य में प्रोत्साहन का मार्ग खुला। पत्रिका में राजस्थानी साहित्य के गवेषणात्मक निबन्धों को स्थान प्राप्त था तो हिन्दी साहित्य के विशिष्ठ साहित्यिकों एवं काव्यकारों का सहयोग भी निरन्तर प्राप्त रहा है।

पत्रिका प्रकाशन का भार प्रचार समिति पर डाला गया और सर्वप्रथम सयोजक के रूप में श्री परमेश्वर बगड़का ने पत्रिका के सम्पादन का समस्त दायित्व भी स्वयं ही सम्हाला था तथा उन्हें सभी कार्यकर्ताओं का मुक्त सहयोग प्राप्त हुआ था। विशेषत श्री जयदेव सिंहानिया के सहकार ने उनका बोझ बहुत कुछ हलका कर दिया था वैसे यह युगल साहित्यकार समाज के लिये नवीन नहीं थे क्योंकि इनके ही सम्पादन में दो प्रमुख पुस्तकें 'बम्बई के मारवाड़ी समाज का परिचय' और 'जय जय प्रकाश' प्रकाशित हो चुकी थीं अत पत्रिका के प्रकाशन में इनका आपसी सहयोग उसकी सफलता का कारण बना और पत्रिका नियमित ढंग से प्रकाशित की जाती रही। शीघ्र ही सम्पादन का भार श्री जयदेव सिंहानिया पर आया और काफी परिश्रम व मनोयोग पूर्ण ढंग से अपने इस उत्तरदायित्व को उन्होंने निभाया। इस समय आर्थिक दृष्टि से पत्रिका को समर्थ बनाने के अभियान में श्री रामरिख 'मनहर' पूर्ण लगन के साथ सलग्न है और इसे आत्म निर्भरता पूर्ण स्थिति में लाने को सर्वथा प्रयत्नशील हैं।

सम्मेलन तथा उसके द्वारा सचालित सस्थाओं की प्रवृत्तियों से समाज को इस माध्यम से अवगत करने का प्रयत्न किया जा रहा है। पत्रिका के अन्तर्गत एक स्तम्भ हमारी संस्थायें भी प्रारभ किया गया जिसके द्वारा समाज से सम्बन्धित सस्थाओं की प्रवृत्तियों की जानकारी प्रदान की जा सके। समाज में प्रचलित कुरीतियों को किस प्रकार दूर किया जाय इस प्रश्न पर विचार प्रकाशित करने की व्यवस्था भी पत्रिका में की गई। सम्मेलन समाचार, राजस्थानी वाता व राजस्थानी समाचार आदि पत्रिका के विशेष स्तभ भी निर्धारित हुये।

पत्रिका के तृतीय वर्ष में प्रकाशित दीपावली विशेषांक में प्राय सभी लेख राजस्थान की सांस्कृतिक, औद्योगिक व आर्थिक विकास के सम्बन्ध में थे। सम्मेलन द्वारा पत्रिका प्रकाशित करने का ध्येय यही रहा है कि समाज की उन प्रचलित कुरीतियों को जिन्हें हम हटाने में समर्थ हैं प्रकाश में लाई जा सकें, उनके परिष्कार व परिमार्जन का मार्ग निकल सके तथा सभी प्रकार की सामाजिक गतिविधियों की सूचना प्रसारित की जा सके। प्रकाशन वर्ष से ही पत्रिका सदस्यों के पास नि.शुल्क प्रेषित की जाती रही है किन्तु पत्रिका के आर्थिक बोझ से सम्मेलन को राहत दिलाने के उद्देश्य से तथा उसका कार्य और भी सुचारु रूप से संचालित करने के हेतु नाममात्र का शुल्क निर्धारित किया गया और अधिकाधिक सदस्य पत्रिका के बनाने का प्रयास प्रारंभ किया गया। सदस्यवृद्धि अभियान के साथ साथ सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठानों के विज्ञापन प्राप्ति का प्रयास भी पत्रिका समिति करने को अग्रसर हुई और कई स्थायी विज्ञापनों की व्यवस्था शीघ्र ही पत्रिका के लिये संभव हो सकी।

नवीनतम प्रयोगों का अनुष्ठान पत्रिका के अन्तर्गत करने के उद्देश्य से समय समय पर कतिपय परिवर्तन एव परिवर्द्धनों की आयोजना की जाती रही है तथा दीपावली होली पर तो प्राय विशेषांक निकालने का प्रयास किया गया है। इन विशेषांकों में सग्रहित सामग्री का उपयोग समाज ने काफी अंशों में उठाया तथा उनसे हिन्दी साहित्य और राजस्थानी के वाङमय की समृद्धि के सुलक्षण प्रकट हुये।

वर्ष १९५८-५९ में पत्रिका का स्तर बढ़ाने के लिये विशेष प्रयत्न किये गये जिनमें काफी सफलता प्राप्त हुई। पत्रिका अधिकाधिक लोकप्रिय हो इसी आशय से अगस्त १९५९ से इसका नाम "समाजवाणी" रख दिया गया। सम्मेलन के सदस्यों के लिये नाम मात्र का शुल्क रु १) ५० वार्षिक निर्धारित किया गया जबकि सामान्य वार्षिक शुल्क रु. ३) निश्चित था। पत्रिका के स्वावलम्बन का इसके सिवाय और मार्ग ही क्या था कि या तो सदस्य वृद्धि हो अथवा विज्ञापन राशि की आय बढ़ाई जाय और इन दोनों दिशाओं में प्रगति करने का सबल लेकर ही पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा जा रहा है।

पत्रिका का उपयोग समाज की विचारधाराओं में परिपक्वता तथा साहित्य निर्माण की दिशा में अग्रसर होने के दृढ़ संकल्प की मूर्तिमंतता में ही निहित होता है। नवीन पीढ़ी के तरुण लेखकों की लेखनी से जिस क्रान्तिकारी साहित्य का निर्माण होता है वह यद्यपि छन्द बंध से सर्वथा मुक्त एवं दिशा व्यवहार की दृष्टि से सामयिक उपयोग का सिद्ध होता है किन्तु जिस बृहद् उद्देश्य से पत्रिका का प्रकाशन सम्मेलन द्वारा किया जा रहा है उसमें सभी प्रकार के भावों का स्रोत प्रवाहित रहना परमावश्यक है तथा नई पुरानी पद्धति के चक्कर से सदैव पत्रिका को बचाते हुये सामयिक परिस्थितियों के तादम्य से कार्यरत रहना ही पत्रिका को अभीष्ट है यही मान कर चलना चाहिये।

समाजवाणी श्रेष्ठतम पाठ्य सामग्री, अधिकतम जानकारी एवं आदर्श परम्पराओं से युक्त भविष्य की लोकप्रिय पत्रिकाओं में अपना स्थान बनाये और न केवल सम्मेलन की ही बल्कि राजस्थानी हिन्दी प्रतिनिधि पत्रिका बने इसके लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहना है।

राष्ट्र के अभिनदनार्थ एव एक राष्ट्रभाषा के निरंतर विकास की ओर गतिमान चरणों की अग्रसारिता संचालनार्थ पत्रिका सदृश्य प्रयत्नों की प्रतिष्ठापना जरूरी है और सम्मेलन इस दिशा में दृढ़ता पूर्वक विविध कटुप्रसगों को टालते हुये जो सद् प्रयास समाजवाणी के प्रकाशन द्वारा कर रहा है उससे न केवल मारवाड़ी समाज का व्यक्तिश. लाभ वृद्धि की ओर उन्मुख होता है बल्कि उसके माध्यम से स्वय सम्मेलन को भी अपनी प्रवृत्तियों के प्रतिफलों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सशक्त साधन प्राप्त हो रहा है।

साहित्य पुरस्कार योजना

साहित्यिक अभिरुचि में वृद्धि का उद्देश्य सामने रख कर तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी के विशेष विषयों की अलभ्य लेख मालाओं से युक्त पुस्तकों का साधन समुपस्थित करने के उद्देश्य से ही इस योजना को प्रकाश में लाया गया। इस योजना के अन्तर्गत सम्मेलन द्वारा हिन्दी, राजस्थानी और मराठी इन तीन विषयों की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के लेखकों को प्रतिवर्ष रु. ५००) के तीन पुरस्कार देने का निश्चय किया गया।

सर्व प्रथम सन् १९६० में प्रकाशित ग्रन्थों पर विशिष्ट विद्वानों की सम्मति के अनुसार पुरस्कार निम्नलिखित विषयों की पुस्तकों पर दिया जाना निश्चित हुआ।

हिन्दी–प्राविधिक (टैक्नीकल) अथवा विज्ञान विषयक रचना
राजस्थानी–किसी भी विषय की रचना
मराठी–साहित्य शोध विषयक रचना

सन् १९६० में प्रकाशित ग्रन्थों की सर्वश्रेष्ठता का निर्णय करने वाले दल की नियुक्ति होकर इस वर्ष की हिन्दी व राजस्थानी पुस्तकें उक्त निर्णायक मण्डल के पास प्रेषित की गई। राजस्थानी भाषा की इस वर्ष की प्रकाशित पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत रचित "गिर ऊंचा ऊंचा गढा" घोषित हुई अत रु ५००) का उक्त पुरस्कार उन्हें देने की घोषणा सम्मेलन ने की। यह राशि सम्मेलन को अपने उपाध्यक्ष श्री शिवकुमार भुवालका से प्राप्त हुई थी। हिन्दी विषय की पुरस्कार हेतु आगत पुस्तकों की संख्या भी कम थी तथा निर्णायकों का चयन भी विलम्ब से हुआ अत यह पुरस्कार आगामी वर्ष के लिये सुरक्षित कर दिया गया क्योंकि प्रेषित रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ डा० निहालकरण सेठी लिखित "चुम्बकत्व और विद्युत" पर दिया जाना निश्चित हुआ था। पुरस्कार हेतु रु. ५००) की यह राशि सम्मेलन को अपने अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला से प्राप्त हुई थी।

सन् १९६१ में राजस्थानी भाषा के अन्तर्गत सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार के अधिकारी श्री नरोत्तमदास स्वामी हुये जो उनकी अपनी रचित "संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण" पर दिया गया। हिन्दी मराठी विषयक रचनायें १९६१ में बहुत कम प्राप्त हुई तथा १९६२ में प्रकाशित हिन्दी व राजस्थानी भाषा की उपरोक्त विषयक पुस्तकों पर दो दो पुरस्कार देने का निर्णय हुआ जिसमें प्रथम पुरस्कार रु० ५००) का और द्वितीय पुरस्कार रु० २५०) का निर्धारित किया गया। इस योजना से सर्वश्रेष्ठ रचना को प्रकाश में आने का साधन प्रस्तुत होता है।

प्रकाशन ऋण योजना :—सम्मेलन ने उन साहित्यकारों को बल प्रदान करने के उद्देश्य से यह योजना वर्ष १९६१–६२ में विचारार्थ प्रस्तुत की थी। अगले वर्ष इस योजना का बृहद् स्वरूप अंगीकृत किया गया और इस तरह से अप्रकाशित राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने के हेतु लेखकों को बिना व्याज से वापसी की शर्त पर रु. २५००) तक ऋण देने की योजना तैयार की ताकि स्वावलम्बन के भाव से लेखक को भी अपनी रचना प्रकाशित करवाने का अवसर प्राप्त हो सके। उक्त ऋण योजना के निम्नोक्त नियम निश्चित किये गये हैं।

१–लेखक अपनी जिस पुस्तक को प्रकाशित करवाना चाहे उसकी हस्तलिखित अथवा टाइप की हुई दो प्रतियां प्रार्थना पत्र के साथ सम्मेलन कार्यालय में भिजवायें। यह प्रार्थना पत्र सम्मेलन से नि:शुल्क उपलब्ध हो सकेगा।

२–पुस्तक राजस्थानी भाषा में या राजस्थानी विषय पर हिन्दी में होनी चाहिये।

३–लेखक अपनी अप्रकाशित पुस्तकों के लिये ही सहायतार्थ आवेदन पत्र भेज सकेंगे। एक बार भी प्रकाशित पुस्तक पर विचार नही किया जायेगा।

४–सहायता की राशि एक पुस्तक पर अधिक से अधिक रु २५००) हो सकेगी और किसी भी एक समय में कुल सहायता की रकम ५०००) से अधिक सम्मेलन नही देगा।

५–प्रार्थी का यह कर्त्तव्य होगा कि पुस्तक प्रकाशित हो जाने के पश्चात् पुस्तक क्रय से जो धन प्राप्त हो वह पहले सम्मेलन से ली हुई सहायता के रुपये चुकाने के हेतु काम में लाये। इस सम्बन्ध में सम्मेलन एव प्रार्थी। और या प्रकाशक में एक समझौता किया जायेगा।

६–प्रार्थी को पुस्तक प्रकाशन का सारा अनुमान पत्रक प्रार्थना पत्र के साथ व्यवस्थापिका सभा के विचारार्थ भेजना आवश्यक होगा।

७–व्यवस्थापिका सभा की स्वीकृति प्राप्त होने पर ही सहायता दी जा सकेगी। व्यवस्थापिका सभा बिना कारण बताये प्रार्थना पत्र अस्वीकृत कर सकती है।

इस योजना का एक मात्र उद्देश्य राजस्थानी साहित्य के प्रकाशन का समर्थन एव उत्साह प्रदान करना है।

सम्मेलन की गतिविधियों के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनी प्रतिष्ठा स्थिर रखने में सहयोग मिला यह इस आलेख से स्पष्ट होता है तथा सम्मेलन की सेवाओं का बृहद् स्वरूप जिसमें अन्य विविध रचनात्मक प्रवृत्तियों का समावेश है इस दिशा की ओर निरंतर अग्रसर रहा जिसके अनुसार उसका वह आद्य स्वप्न एक राष्ट्रभाषा के रूप में प्रत्यक्ष होकर समाज के माध्यम से राष्ट्रभाषा और राष्ट्र की सेवाओं का सुअवसर चरितार्थ हो सके।

★

महान विभूतियों की दृष्टि में सम्मेलन

स्वेनात्मना चक्षुरिव प्रणेता,
निशात्यये तमसा संवृतात्मा ।
ज्ञानं तु विज्ञानगुणेन युक्तं,
कर्माशुभं पश्यति वर्जनीयम् ।
—महाभारत

जब रात बीत जाती है और अंधकार का आवरण हट जाता है, उस समय जैसे चलने में प्रवृत करने वाला नेत्र अपने तैजस स्वरूप से युक्त हो रास्ते में पड़े हुये त्यागने योग्य कांटे आदि को देखते हैं, उसी प्रकार बुद्धि भी मोह का पर्दा हट जाने पर ज्ञान के प्रकाश से युक्त हो त्यागने योग्य अशुभ कर्म को देखती है ।

किसी भी संस्था के लिये यह अवसर सर्वथा सौभाग्यशाली एवम् साथ ही साथ अग्नि परीक्षा सदृश सिद्ध होता है जब कि उसकी प्रवृत्ति को किसी महान् विभूति के समक्ष उपस्थित करने का प्रसंग आता है । जिस उत्साह के साथ निरीक्षणार्थ उनके आगमन की प्रतीक्षा की जाती है उसमें कुछ आशंकायें भी हृदय में समाहित रहती हैं कि इन के उद्‌गारों का क्या स्वरूप रहेगा व संस्था की उपयोगी गतिविधियों का मूल्यांकन वे किस रूप में करेंगे ।

राष्ट्र के विशिष्टतम निर्माण कार्यों का अवलोकन करने वाले इन महान मानवों की तीक्ष्ण दृष्टि से किसी भी कमी को ओझल नहीं रखा जा सकता । ये मर्म की ही वस्तुस्थिति पर नजर गड़ाते हैं तथा मृदुतम अंग को ही पुरस्कृत करते हैं । संस्था के इतिहास में उनका आगमन ऐतिहासिक स्वरूप धारण कर लेता है तो तत्कालीन कार्यकर्ताओं के लिये अपने कार्यों की सफलता अथवा असफलता पर प्रकाश पड़ता है । महान् पुरुषों का आदर्शमय जीवन और प्रभावशाली व्यक्तित्व ही वह चमत्कारिक प्रसाद है जिसे समाज के लाभार्थ एवम् राष्ट्र के हितार्थ-समर्पित करने में ही उनके कर्मठ जीवन का रहस्य अन्तर्हित होता है ।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि संस्थाओं को इस प्रकार के विशिष्ट जननेता अथवा श्रद्धेय नरपुंगव के प्रति कोई विशेष प्रकार की सतर्कता अथवा आडंबर की व्यवस्था से अपने वास्तविक स्वरूप को छिपाने व सामयिक दिखावे की व्यवस्था से किसी प्रकार का परिवर्तन उन मानस के दृष्टिकोण में समुपस्थित होगा । दिन प्रतिदिन संस्था के कार्य व्यवहार से परिचित जनसाधारण को इस प्रकार के किसी भी अटपटे प्रदर्शन पर हंसी ही आयेगी तथा यदाकदा ऐसे अवसर ही समयन. प्रकट हो जबकि लोकव्यवहार से असंगति रखने वाले इन प्रयत्नों का विरोध या समर्थन भी जनता के द्वारा किया जाने लगे ।

स्वाभाविक गुणों का प्रकट होना तथा उनके द्वारा जिस प्रभाव का संचार स्वतः स्फूर्त मानव के मन में संचालित हो उसका सामने आना नितान्त आवश्यक है अन्यथा यह संभव नहीं होता है कि कटु समालोचना अथवा अभाव के किसी भी अंग का अनुभवजन्य ज्ञान संस्था के भविष्य का निर्माण करने में सहायक हो क्योंकि यह एक तथ्य ही है कि आगत अतिथि आने किये गये आतिथ्य के अधीन निर्धारित

आचरण संहिता के नियमों से परे जा कर कोई कटु सत्य संस्था के सम्बन्धमें कह देने को तत्पर हो किन्तु यदि ऐसे कोई विचार अप्रकट रूप से हृदयस्थ कर लेने की अपेक्षा तो यह अधिक उपयोगी हो कि उनको संस्था सचालको व जनजनार्दन के समक्ष वे विचार उपस्थित हो ताकि उनके परिमार्जन की व्यवस्था सस्था द्वारा की जा सके।

सम्मेलन की विविध प्रवृतियो को समय समय पर इसी प्रकार के महान पुरुषो से साक्षात्कार का अवसर प्राप्त हुआ है तथा उन्होंने उनके राष्ट्र निर्माणकारी स्वरूप और सुदृढ सगठन की प्रशसा की है तो अभावो की ओर से कार्यकर्त्ताओं को सतर्क व सचेष्ट भी किया है। उनके उद्‌गारो से सस्था को लाभ हुआ है तथा उनके सुझावों का क्रियान्वय सस्था के उत्कर्ष का आधार बना है। सम्मेलन एक सामाजिक सघटन है उसको समाज के समक्ष अपने कर्तव्यो का उत्तरदायित्व वहन करना है तथा समाज ने अपना जो मुक्त विश्वास व भावी निर्माण का साधन सम्मेलन के हाथो अर्पित किया है उसका लेखा जोखा निरतर समाज के समक्ष प्रस्तुत करते को उसे तत्पर रहना है।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर प्रतिवर्ष प्राय समाज के विशिष्ट जन तथा जननेताओ का आगमन होता रहता है तथा उनके समक्ष सस्था के कार्यो की जो रूपरेखा प्रस्तुत होती है उससे उन्हें अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है और इसी सन्दर्भ में उनकी वाणी से कभी कभी ऐसे उद्‌बोधक उद्‌गार प्रकट हो जाते हैं कि शनै शनै सस्था की प्रवृतियो के प्रसार में अथवा अनावश्यक गतिविधियो से निस्तार में काफी योग मिल पाता है। समाज की प्रारंभिक कालीन महिलानेत्रियो ने तो इस अवसर का उपयोग समझ बूझकर इसी उद्देश्य के हेतु किया है और फलस्वरूप विद्यालय में नवीन नवीन प्रयोग प्रारभ हुये हैं।

हिन्दी पुस्तकालय सर्वथा आकर्षण का केन्द्र रहा है तथा लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यिक बन्धुओं एवम् सुप्रसिद्ध कवि गणों के स्वागत का अवसर निरंतर इसे प्राप्त हुआ। इसके सभाकक्ष में अनेक मनस्वियो के स्वागत समारोह आयोजित हुये हैं तथा इसकी विविध व्यवस्थाओं एवम् सुन्दर संग्रह से प्रभावित होकर जिस अमूल्य सम्मति का अंकन उन्होंने किया वे आज तक संस्था की सुरक्षित थाती अथवा धरोहर है क्योंकि वही वास्तव में इस के मूल्याकन का आधार है।

इसी प्रकार अन्य प्रवृत्तियो से सम्बन्धित विचार प्रवाहो का भी महत्व है और उस महत्व को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य में सम्मेलन सर्वथा सफल हुआ है और उनके भावो को आत्मसात करते हुये समाज के विकास की ओर सदैव अग्रसर रहा है। गत ५० वर्षों में ऐसे अवसरो की बहुसंख्या में विस्तारमय से इस आलेख के अन्तर्गतार्थ मात्र उन्ही प्रसगो को समुपस्थित किया जा रहा है जिन में समाज को उद्‌बोधन सन्देश निहित हुये हैं।

श्री जमनालाल बजाज का अभूतपूर्व स्वागत ४ फर्वरी १९२४ को मुरारजी गोकुलदास हॉल में सम्मेलन की ओर से सम्पन्न हुआ। अत्यधिक उत्साहपूर्ण वातावरण में बहुत बडी उपस्थिति के समक्ष श्री जमनालालजी ने सम्मेलन के कार्यों के प्रति सतोष व्यक्त करते हुये देश की तत्कालीन व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला तथा राष्ट्रहित के प्रत्येक कार्य में अग्रगण्य रहने को सम्मेलन तथा उपस्थित जन समूह को उद्‌बोधन किया।

लाला लाजपतराय पर हुये नृशस लाठीवार तथा उनके असामयिक निधन पर आयोजित शोक सभा में समाज के मनस्वियों की लालाजी के प्रति भावनात्मक अनुभूतियों को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से सम्मेलन ने सक्रिय ठोस प्रवृति के रूप में लाला लाजपतराय व्यायामशाला के सस्थापन का दृढ तथा सर्वोपयोगी निर्णय किया तथा उसे क्रियान्वित किया।

लोकमान्य बालगगाधर तिलक की पुण्यस्मृति में उनकी श्राद्ध जयन्ती के अवसर पर सन १९२८ में एक विराट सभा का आयोजन सम्मेलन द्वारा श्री नरनारायण मन्दिर में हुआ जिसकी अध्यक्षता बम्बई प्रदेश के प्रसिद्ध राष्ट्र सेवी जननेता श्री बालूभाई टी देसाई ने की और देशभक्त वीर सावरकर तथा समाज के अन्य महानुभावो ने अपने श्रद्धाञ्जलि लोकमान्य को अर्पित करते हुये उनके विचारो और राष्ट्र सेवाओ से सार सग्रह करने की ओर समाज को अग्रसर होने का प्रेरणास्पद सदेश जनसाधारण को प्रदान किया।

मारवाडी विद्यालय हॉल में ६ अगस्त १९३४ को समाज के एक सम्माननीय सदस्य को मुख्य न्यायाधीश पद पर प्रतिष्ठित पाकर सम्मेलन ने मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स और दि हिन्दुस्तानी देशी व्यापारी एसोसियेशन के सयुक्त तत्वावधान में एक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया। नगर के सुप्रसिद्ध जजो में न्यायमूर्ति सर्वश्री वाडिया, तैय्यबजी, दिवेटिया, एस० ए० करवा, श्री इन्द्रवदन मेहता व हाईकोर्ट तथा स्मालकॉज कोर्ट के अनेक जज तथा प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट भी उपस्थित थे। सभा की अध्यक्षता श्री आनंदीलाल पोद्दार ने की तथा इन नेताओं ने अपने उद्‌गारो से सम्मान के भाव प्रसूत किये व सम्मेलन को की सामाजिक सेवाओं की सराहना की।

सम्मेलन को समाज के विशिष्टजनों का प्रारभिक काल में स्वागत सत्कार करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था उन में मुख्यतः २९ अगस्त १९३४ को सेठ गोविन्ददास, नवंबर १९३६ को श्रीरामकृष्ण डालमिया व जयदयाल डालमिया का विदेशयात्रा गमन पर, २४ जनवरी १९३७ को श्री गोविन्दलाल पित्ती का उनके कौंसिल में निर्वाचन पर १७ अप्रैल १९३९ को श्री बृजलाल बियाणी तथा ३ सितबंर १९३४ को मगरोल सेख पर गोवध प्रसंग पर विजय प्राप्त कर लौटे हुये श्री रामचन्द्र शर्मा 'वीर' का एवम् ३ जनवरी १९३९ को हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेकर सफलता प्राप्त करने पर श्रीरामकृष्ण धूत के अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुये तथा उनके अनुभवो से सस्था को काफी लाभ पहुँचा। एवम् २५ मार्च १९४१ को भागलपुर अखिल भारत वर्षीय मारवाडी सम्मेलन के अधिवेशन में भाग लेने को आमंत्रण देने के हेतु आगमन पर श्री ईश्वरदास जालान का सम्मान किया गया।

राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के देशव्यापी दौरे के मध्य बम्बई आगमन पर सम्मेलन ने २२ जून १९३५ को मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स व दि हिन्दुस्तानी देशी व्यापारियों की एसोसियेशन का सहयोग आमंत्रित करते हुये मारवाड़ी विद्यालय हॉल में अभिनन्दन

समारोह आयोजित किया जिस में नगर के प्रायः सभी कांग्रेसी नेता उपस्थित थे। जनता की अपार भीड़ थी तथा समारोह की अध्यक्षता श्री नारायणलाल पित्ती ने की थी। राजेंद्र बाबू ने मारवाड़ी समाज के कार्यों का भावपूर्ण उल्लेख किया तथा समाज के सर्वतोमुखी विकास के हेतु प्रयत्नशील सम्मेलन के कार्यों की प्रशंसा करते हुये राष्ट्रीय विकास में अधिकाधिक योगदान देने का आह्वान किया।

लखनऊ कांग्रेस का अध्यक्षपद ग्रहण करने के बाद राष्ट्रपति पं०जवाहरलाल नेहरू मई मास में बम्बई आये तो समाज की प्रायः सभी संस्थाओं के सहयोग से सम्मेलन ने १९ मई १९३६ मारवाड़ी विद्यालय के चौगान में एक विराट समारोह आयोजित कर उन्हें अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। समारोह के अध्यक्ष श्री गोविन्दलाल पित्ती थे। कलामय मञ्जुषा के चहुँओर निर्मित चार वर्तुलों में महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, कमला नेहरू तथा स्वयम् राष्ट्रपति के चित्रों को परिवेष्ठित किया गया था तथा राष्ट्रपति ने अपने भाषण में समाज की भावनाओं का समादर करते हुये राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्धारित सिद्धान्तों के अन्तर्गत राष्ट्र सेवा में सलग्न रहने का उद्‌बोधन किया तथा स्वदेशी वस्त्र एवम् खादी के महत्व को अंगीकृत करने का आह्वान किया।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय की अध्यक्षता में ५ जनवरी १९३७को महामना मदनमोहन मालवीय की ७६ वीं वर्षगांठ मनाने का आयोजन सम्मेलन ने पुस्तकालय के सभाकक्ष में किया जिसमें महामना का दिव्य सन्देश संस्था के अभ्युत्थान की कामना व सक्रिय सेवारत रहने का सामयिक निर्देश हृदयगंम करने का महत्व स्वीकार किया गया था।

राष्ट्रपति सुभाषचन्द्र बोस के बम्बई आगमन पर २७ फर्वरी १९३९ को माधव बाग में श्री मुकुन्दलाल पित्ती की अध्यक्षता में समारोह आयोजित किया गया तथा राष्ट्रपति को सम्मानपत्र समर्पित किया गया। सम्मेलन के इतिहास में इस आयोजनका विशेष महत्व इस दृष्टि से सर्वथा विशिष्टता रखता है कि मानपत्र का उत्तर उनके द्वारा हिन्दी में दिया गया। अहिन्दी बंगाल प्रदेश के सपूत राष्ट्रगौरव सुभाषबाबू ने महाराष्ट्र की भूमि पर हिन्दी का स्तुत्य प्रयोग सार्वजनिक मंच पर करके न केवल सम्मेलन की मान्यताओं व हिन्दी प्रेमको बल पहुँचाया बल्कि हिन्दी के भावी स्वरूप की प्रतिष्ठा भी बढ़ाई जिस के फलस्वरूप ही राष्ट्रभाषा के पद पर वह अवस्थित हुई है।

इसी वर्ष बम्बई सरकार के कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने पदारूढ होते ही जनसाधारण के हितार्थ जो प्रशसनीय कार्य किये उनके लिये मंत्रिमण्डल को बधाई सन्देश प्रेषित किया गया।

श्री मुरलीधर सुपुत्र पं० माधवप्रसाद शर्मा का सॉलिसिटर परीक्षा में द्वितीय क्रमांक में उत्तीर्ण होने पर तथा श्री मदनलाल पित्ती के बार-एट-लॉ की परीक्षा में सफल होने के उपलक्ष्य में एक स्वागत समारोह समाज के इन सुशिक्षित उत्साही नवयुवकों को सम्मानित करने के उद्देश्य से सम्मेलन ने आयोजित किया तथा उनके अनुभवों के श्रवण से समाज को लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

श्री जयशंकरप्रसाद व गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के निधन से हुई राष्ट्र की साहित्यिक क्षति का अनुमान लगाना संभव नहीं हो सकता। सम्मेलन ने क्रमशः १५ नवम्बर १९३६ एवम् ९ अगस्त १९४१ को उनकी स्मृति में शोक सभायें आयोजित की तथा उनकी काव्य सेवाओं के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये समाज में उनकी दिव्य भावनाओं के प्रसार पर बल दिया।

अगस्त क्रान्ति के उद्‌बोधनकारी ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन पर बम्बई में आये हुये भारत के लगभग सभी जननेताओं के सम्मानार्थ ८ अगस्त १९४२ को ग्वालिया टैंक स्थित कांग्रेस के स्वल्पाहारगृह में एक समारोह का आयोजन किया तथा उनके प्रिय सन्देश को आत्मसात् कर सन् १९४२ के आन्दोलन में समाज सक्रिय रूप से अग्रसर रहा था।

श्री जमनालाल बजाज के निधन से सम्मेलन तथा समाज का एक महान् पुरुष संसार से उठ गया। अपने क्रियाशील जीवन का एक ज्वलंत आदर्श समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये विशिष्ट परम्परायें समाज के विकास हेतु वे निर्धारित कर गये। १४ फर्वरी १९४२ को सर बंशीलाल पित्ती सभागृह में सभी संस्थाओं के सम्मिलित सहयोग से एक शोक सभा सम्मेलन द्वारा आयोजित की गई जिसमें उनके जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया एवम् उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। १७ अगस्त १९४२ को श्री महादेवभाई देसाई के निधन पर सम्मेलन ने शोक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें उनकी राष्ट्रीय सेवाओं एवम् महात्मागांधी के प्रियजन होने के गुणों को मान प्रदान किया गया था।

१७ मार्च १९४५ को श्री श्री कृष्णदास जाजू तथा सितंबर १९४५ में श्री जयनारायण व्यास का स्वागत सत्कार सम्मेलन की ओर से हुआ जिसमें इन कर्मठ राष्ट्र सेवियों के क्रियाशील जीवन के अनुरूप ही समाज में आदर्शों की संस्थापना का प्रयास होता रहे इन दिव्य सन्देश का प्रचार-प्रसार सम्मेलन करने को अग्रसर हुआ था।

राजस्थान के प्रधानमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री के बम्बई आगमन-पर सर बंशीलाल पित्ती सभागृह में उनके सम्मान में एक आयोजन की व्यवस्था सम्मेलन ने की। शास्त्री जी के भाषण में राजस्थान प्रदेश के सर्वांगीण विकास की अपील समाज से की गई थी तथा उद्योग धन्धों का प्रसार राजस्थान में भी करने का आग्रह किया था जिस से प्रभावित समाज के अनेक बन्धु इस दिशा में अग्रसर हुये। कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन की सफलता के हेतु प्रचार व्यवस्था को सशक्त करने के उद्देश्य से जयपुर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सरदार हरलालसिंह के बम्बई आगमन पर सम्मेलन कार्यालय में आयोजित बैठक में राजस्थान की वर्तमान स्थितियों पर विचार किया गया तथा अधिवेशन की सफलता में सहयोगी होने के निश्चय व्यक्त किये गये।

श्रीरामदेव पोद्दार के शेरिफ पद पर नियुक्ति से गौरवान्वित मारवाडी समाज ने सम्मेलन द्वारा अपना अभिनन्दन उन्हें प्रदान किया तथा सम्मेलन की ओर से अध्यक्ष श्रीमदनमोहन रुइयाने उनका स्वागत करते हुये नगर के हेतु की गई सेवाओ की सराहना की । श्री रामदेव पोद्दार ने धन्यवाद देते हुये अपने निर्वाचन को मारवाडी समाज के सम्मान के रूप में ही मान्य किया । सन् १९५२-५३ में नगरपति गणपति शंकर देशाई, राजस्थान के मुख्यमत्री जयनारायण व्यास व शिक्षामत्री मास्टर भोलानाथ का स्वागत सम्मेलन द्वारा हुआ ।

सन् १९५३-५४ मे सेठ गोविन्ददास एम० पी० के स्वागतार्थ पुस्तकालय सभाकक्ष में तथा राजस्थान के मुख्य मत्री श्री जयनारायण व्यास के सम्माम में भी समारोह का आयोजन किया । व्यासजी ने राजस्थानी विद्यार्थियों के लिये बम्बई में छात्रावास के अभाव की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया ।

सन् १९५४-५५ में राजस्थान के मुख्य मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया, अर्थमत्री श्री टीकाराम पालीवाल, खाद्य मत्री श्री भोगीलाल पंडया का स्वागत समारोह सम्मेलन ने आयोजित किया जिसमें इन नेता गणो ने राजस्थान की अनेक सामयिक समस्याओ , आर्थिक व्यवस्थाओं एवम् खाद्य परिस्थितियो का दिग्दर्शन करवाया तथा समाज को इस दिशा में अग्रसर होने के प्रेरणाप्रद सन्देश दिये । हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार महाराज कुमार रघुवीरसिंह एम० पी० व कलकत्ता के वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्रीरामदेव चोखानी के स्वागत आयोजनमें राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवाके नवीन उद्योगो में तत्परता प्रदर्शित करने व श्री चोखानी के समाज की दहेज प्रथा आदि कुरीतियो को यथा शीघ्र समाप्त कर देने सम्बन्धी विचारोंका सम्मेलन के उपस्थित सदस्यो एवम् जनसमूह पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा ।

राजस्थान दिवस के अवसर पर राजस्थानी ग्रेजुएटस् ऐसोसियेशन राजस्थानी विद्यार्थी सघ एवं राजस्थानी सम्मेलन मलाड के सहयोग से सम्मेलन ने भारत सरकार के उपसवहन मत्री श्री राजबहादुर की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें मुख्य अतिथि बम्बई के राज्यपाल डा० हरेकृष्ण मेहताब थे । श्रीराजबहादुर ने राजस्थान को प्राकृतिक पदार्थों का भण्डार बताते हुये वहाँ औद्योगिकरण की दिशा में अग्रसर होने व अपनी पूजी का सुरक्षित विनियोजन करने का आह्वान किया । प्रमुख अतिथि ने भी प्रेरणाप्रद सन्देश दिया ।

जून १९५५ में बम्बई विश्व विद्यालय की द्वितीय एल्० एल० बी० परीक्षा में श्री बाल मुकुन्द अग्रवाल सर्व प्रथम, श्री देवकी नन्दन धानुका प्रथम श्रेणी में द्वितीय , तथा श्री जयदेव सिंहानिया प्रथम श्रेणी तथा श्री जसवन्तराय वालिया प्रथम एल० एल० बी० में सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुये । समाज के इन युवको की सफलता पर गर्व अनुभव करते हुये उनके सम्मान में एक विशेष आयोजन २७ जुलाई १९५५ को सम्मेलन की ओर से हुआ तथा उनके प्रयास से प्रोत्साहन प्राप्त कर शिक्षा को अग्रसर होने की प्रेरणा समाज के विद्यार्थी वर्ग को ग्रहण करने का भाव प्रदर्शन किया गया । सम्मेलन के प्रधानमत्री श्री शिवकुमार भुवालका की ओर से इन्हें विधि शास्त्र की पुस्तकें भेंट की ।

४ सितंबर १९५५ के कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री भागीरथ कानोडिया, ३१ मार्च १९५६को नगर निगम अध्यक्षपद पर निर्वाचित श्रीमती सुलोचना मोदी, ३० अप्रैल १९५६ को केन्द्रीय सवहन मत्री श्री राजबहादुर एवम् २३ मई १९५६ को नगरपति सालेह भाई अब्दुल कादर का सम्मान किया। श्री कादरने अपने धन्यवाद भाषण मे प्रकट किया कि लोगो में जो धारणा है कि सभी मारवाडी जाति के लोग धनवान है यह बिलकुल गलत है । औसत मारवाड़ी धनवान नही है । लेकिन इस पूरी जाति के पास हिम्मत , साहस व कार्यदृढ़ता का धन अवश्य है जिसे वह राष्ट्र के नव निर्माण में लगा रही है ।

कांग्रेस अधिवेशन में उपस्थित राजस्थानी कांग्रेस नेताओं का सम्मेलन ने सर बंसीलाल पित्ती सभागृह में ४ जून १९५६ को स्वागत किया । सर्वश्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री टीकाराम पालीवाल, कुम्भाराम आर्य, बृजसुन्दर शर्मा व मास्टर आदित्येन्द्र आदि कार्यकर्त्ता गण उपस्थित थे तथा उन सभी ने आपसी सम्पर्क व विचारो के आदान प्रदान के महत्व को स्वीकार किया एवम् राजस्थान की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुये विकास में योग देने की प्रार्थना समाजसे की

इडिया कॉटन एसोसियेसन लि० के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर सम्मेलन के सभापति श्री मदनमोहन रुइया के स्वागत में एक प्रीति भोज का आयोजन १० जुलाई १९४९ को बम्बई के राज्यपाल डा० हरेकृष्ण मेहताब की अध्यक्षता में मारवाड़ी विद्यालय हॉल में हुआ जिस में डा० मेहताब ने रुइया परिवार के सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की ।

२१ जुलाई १९५६ को श्री ईश्वरदास जालान का, ३१ जुलाई १९५६ को शेरिफ पद पर निर्वाचित सरदार बहादुर बक्सी दिलीपसिंह का स्वागत सम्मेलनने किया। श्री शेरिफने सम्मेलन द्वारा सामाजिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्यों की प्रशंसा की ।

५मई १९५७को सर बंसीलाल पित्ती सभागृह में डा० कैलाश, श्रीरामनाथ पोद्दार अध्यक्ष मिल मालिक सघ, ससद सदस्य श्री सूरज रतन दमाणी का सम्मेलन ने स्वागत किया । इन्होंने अपने सन्देश में समाज के सर्वतोमुखी विकास मे अग्रसर रहने की अपील की । ७ मई १९५७ को केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री श्री राजबहादुर का स्वागत सम्मेलन ने किया जिसमें देश की वर्तमान नौका परिवहन स्थिति का दिग्दर्शन उन्होने करवाया ।

श्री स० का० पाटिल के केन्द्रीय मत्री नियुक्त होने पर उनके सम्मानमें सम्मेलन द्वारा एक स्वागत समारोह १९ मई १९५७ को हुआ जिस में श्री पाटिल ने कहा कि मारवाडी समाज मे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है । आपने समाज के व्यापारी वर्ग से देश की समृद्धि में पूर्ण सहयोग देनेका आह्वान किया ।

मानस मर्मज्ञ पं० शिवनारायण व्यास का ९ अप्रैल १९५८ को तथा ८ फर्वरी १९६२ को गोस्वामी बिन्दुजी महाराज तथा कपीन्द्रजी के स्वागत आयोजन से सम्मेलन ने समाज के समक्ष रामायण के महत्व का प्रसंग उपस्थित किया ।

बम्बई विश्व विद्यालय 'द्वारा भारतीय वस्त्रोद्योग में श्रमिकों की स्थिति और उनका योग' विषय पर डाक्टरेट प्राप्ति पर श्री मोहनलाल पीरामल माखरिया के स्वागत में प्रीति गोष्ठी का आयोजन ९ मार्च १९६० को किया गया।

१ मई १९६० को बम्बई राज्य का विभाजन महाराष्ट्र एवम् गुजरात के दो प्रदेशों में किया गया। नवनिर्मित महाराष्ट्र राज्य के मंत्रिमंडल का अभिनन्दन करने के हेतु मुख्य मंत्री श्री यशवन्तराव चव्हाण व मंत्रि मंडल के अन्य सदस्यों को एक प्रीति भोजपर १६ जून १९६० के नेशनल स्पोर्टस् क्लब ऑफ इण्डिया के सभाकक्ष में आमंत्रित किया। सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री पुरषोत्तमलाल झुझनुवाला ने माननीय मुख्य मंत्री उनके सहयोगियों को सम्मेलन की ओर से धन्यवाद देते हुये मारवाडी समाज की भेदभाव विहीन सेवा भावना एवम् महाराष्ट्र के गाँव गाँव में बसे राजस्थानियों द्वारा इसे ही अपनी कर्मभूमि मानकर इस के सर्वतोमुखी विकास में संलग्न होने के दृढ मन्तव्य पर प्रकाश डाला। अभिवादन के लिये आभार मानते हुये मुख्यमंत्री ने व्यापारी समाज को महाराष्ट्र ही नही अपितु सारे देश के विकास की कुंजी के समान मानते हुये मारवाड़ी समाज के इस दिशा में अग्रणी रहने की सराहना की तथा उसे भारत भर में सौहार्दता का प्रतीक माना।

कल्याण के यशस्वी संपादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के बम्बई आगमन पर सर बंशीलाल पित्ती सभागृह में उनका स्वागत किया गया। उनके सार गर्भित प्रवचन में समाज के सभी अगों में व्याप्त फैशन परस्ती के त्याग तथा शुद्ध सात्विक जीवन यापन का निर्देश सन्निहित था! सुप्रसिद्ध सर्वोदयी कार्यकर्त्ता व सन्त विनोबा के भूदान आन्दोलन के सक्रिय कर्मवीर श्री सिद्धराज चड्ढा ने पुस्तकालय हॉल में अपने सम्मान के अवसर पर सर्वोदय के सिद्धान्तो एवम् सर्वोदय मडल की गति विधियों से श्रोताओं को परिचित किया।

व्यापारिक क्षेत्र में दीर्घ कालीन सेवाओ के प्राचीनतम संगठनो में बिडला प्रतिष्ठान का महत्वपूर्ण स्थान देश के औद्योगिक एवम् व्यावसायिक विकास में रहा है। अपनी सक्रिय सेवाओ से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ करने व देश को सर्वथा स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से इस प्रतिष्ठान ने अनेक उद्योग-धन्धों की स्थापना व संचालन गत शताब्दि के अन्तर्गत करने का अभूतपूर्व प्रयास किया। बम्बई में अपने प्रतिष्ठान के त्रि-दिवसीय शताब्दि महोत्सव कार्यक्रम के समय बिड़ला परिवार का समाज की प्रायः सभी सस्थाओ के सम्मिलित सहयोग से हार्दिक अभिनन्दन करने के हेतु एक स्वागत समारोह का आयोजन १२ मार्च १९६२ को वेस्टर्न इंडिया टर्फ क्लब के प्रांगण में किया गया। श्रीरामनाथ पोद्दार ने अध्यक्ष पद से बिड़ला परिवार द्वारा देशभर में शिक्षा प्रसार के जो आयोजन किये है उन्हें प्रशंसनीय बताते हुये उनके विशाल उद्योगो में प्रायः एक लाख व्यक्तियो के कार्य रत होने व देश विदेशो में प्रतिष्ठान की साख को सर्वथा उल्लेखनीय बताया परिवार की ओर से श्रीघनश्यामदास बिड़ला ने स्वागत सत्कार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुये समाज व देश के सभी भागो के स्फूर्त सहयोग एवम् राष्ट्रीय सरकार की सहकारी भावनाओं को ही प्रतिष्ठान के विकास का मूलस्त्रोत बताया! सस्थाओ के अध्यक्षों द्वारा पुष्पहार अर्पण हुये तथा सभी सस्थाओं की ओर से श्री गजाधर सोमाणी ने धन्यवाद प्रदान किया।

१५ सितबर १९६२ को राजस्थान के गृहमंत्री श्री मथुरादास माथुर, कृषिमंत्री नाथूराम मिर्धा आदि के बम्बई आगमन पर उनके स्वागतार्थ एक समारोह का आयोजन पुस्तकालय में हुआ तथा प्रवासी राजस्थानियों की विविध समस्याओं एवम् राजस्थान के औद्योगिक विकास पर विस्तृत चर्चा हुई।

५ मार्च १९६३ को सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री रामप्रसाद पोद्दार को राष्ट्रपति द्वारा मानद् कैप्टेन के विशिष्ट पद प्रदान किये जाने पर सम्मेलन की भावनाओं के अनुरुप विशेष अभिनन्दन समारोह का आयोजन सर बंशीलाल पित्ती सभागृह में आयोजित किया गया एवम् अगले दिन वयोवृद्ध समाज सेवी व उद्योगपति श्री रामप्रसाद खंडेलवाल के सम्मान में एक समारोह आयोजित किया गया।

स्वागत सत्कार एवम् अभिनन्दन समारोह आदि ही ऐसे सुअवसर हैं जिनपर देश की महान विभूतियों के दर्शन-श्रवण की सुविधा जनसाधारण को हो सकती है। सम्मेलन ने ऐसे किसी अवसर को हाथ से नही जाने दिया जिसका उपयोग समाज के लोगो के मानस पटल पर इन जननेताओ के उद्बोधनकारी उद्गारों का प्रभाव डालने में सहकारी हो, जिसे समाज सम्मानित करने को अग्रसर हो उस की महानता सर्वमान्य है—उसे जन मानस से महान विभूति की संज्ञा स्वतः प्राप्त है अत. प्रत्येक सम्मानित व्यक्ति द्वारा मानसिक विकास के हेतु समुन्नत विचार धारारुपी मधुवर्णों का मदिर प्रवाह समाज के अंग अंग में व्याप्त करने के उद्देश्य से ही इस आलेख के अन्तर्गत सभी स्वागत सत्कार आयोजनों का समावेश हुआ है।

राष्ट्रीय अभ्युत्थान और बम्बई का मारवाड़ी समाज

एक ही आम की गुठली से पेड़, शाखा और आम पैदा होते हैं फिर भी मीठे और मुलायम आम जिस गुठली से पैदा होते हैं उसी से पेड़का कठिन पड़ भी पैदा होता है। इसी तरह हम ऊपर से कितने ही भिन्न क्यों न दिखाई दें, तो भी हम एक ही भारत माता की संतान हैं, यह कदापि न भूलना चाहिये।

संत विनोबा

किसी भी विकासशील राष्ट्र के लिये अपने अभ्युत्थान के प्रत्येक चरण में गतिशीलता का प्रभाव तभी स्थायी रूप धारण कर सकता है जबकि सभी ओर से और समाज के प्रत्येक वर्ग से इस तरह के स्फूर्त प्रयत्न निरंतर जारी रहें जिनसे उत्कर्ष में सहयोग प्राप्त हो। बम्बई स्थित मारवाड़ी समाज के क्रियाकलापों एवं प्रवृत्तियों के गत आलेखों में अंकित विवरण से इस दिशा में हुये प्रयत्नों की कुछ झलक का आभास हुआ है किन्तु अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रयासों का मूर्त रूप समय समय पर और भी हुआ है।

इससे पूर्व कि बम्बई के मारवाड़ी समाज के योगदान के सम्बन्ध में विचार किया जाय यह जानकारी सर्वथा आवश्यक है कि राष्ट्रीय अभ्युत्थान के अन्तर्गत किन विशिष्ट प्रक्रियाओं को अन्तर्हित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय विकास को अबाध गति से अग्रसर रखने के हेतु गतिविधियों का संचालन अनिवार्य है उनमें समाज के अभिन्न अंग स्वरूप शिक्षण केन्द्र, उद्योग-व्यवसाय, सामाजिक सेवा संस्थायें एवं राष्ट्रीय विचार धाराओं को पोषण प्रदान करने वाली राष्ट्रवादी समाजवादी, समन्वयवादी व सर्वोदयवादी प्रवृत्तियां होती हैं। इनमें समाज की प्रायः सभी सेवा संस्थाओं का उल्लेख इस आलेख में संलग्न करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु फिर भी स्वतन्त्ररूप से अन्य दिशाओं में सेवा संलग्न मारवाड़ी समाज की पृष्ठभूमि इतनी विस्तृत है कि उपरोक्त दृष्टि से सम्पूर्ण सेवा वृत्तियों को लेखबद्ध किया जाना संभव नहीं प्रतीत होता है। स्थानीय जन विकास में सहयोगी शैक्षणिक व सामाजिक सेवाओं का मूल्य आकने में कोई कमी नहीं रह जाती है किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर जिन व्यवस्थाओं का अमिट प्रभाव दृष्टिगत होता है तथा जिनकी सफलता का श्रेय जिन सुदृढ़ भावनाओं वाले बम्बई स्थित मारवाड़ी समाज के नर रत्नों को है उनका सामयिक उल्लेख सर्वथा आवश्यक है। साथ ही साथ जिन विचारधाराओं ने न केवल बम्बई में बल्कि समस्त राष्ट्र में क्रान्तिकारी भावनाओं के प्रश्रय में सहयोग दिया है और उन्हें आत्मसात करने में बम्बई का मारवाड़ी समाज कहां तक सफल हुआ है और उन्हें आधार मानकर राष्ट्र के अभ्युत्थान में क्या योग समाज की ओर से मिला है इसका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है।

उद्योग व्यवस्था :

राष्ट्र के आर्थिक उन्नयन का समुचित आधार प्रस्तुत करने के एक मात्र साधन के रूप में उद्योग व्यवसाय का स्थान सर्वोपरि है। यद्यपि मानव आवश्यकताओ के अन्तर्गत परिस्थितियो के प्रभाव से इन माध्यमों में कई सूत्र इस ढंग से प्रमुखता प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं जिनसे विचार भेद की स्थिति का निर्माण हो। शोषक व शोषित वर्ग की उपस्थिति के कटु सत्य का परिदर्शन प्राप्ति का प्रयत्न यदि किसी व्यवस्था के अन्तर्गत आज के प्रगतिशील व कट्टर समाजवादी विचार-धारा के पोषक करना चाहते हैं तो वह इसी प्रवृत्ति के अन्तर्गत दृष्टिगत होता सभवत उन्हें प्रतीत हो किन्तु यह एक अनिवार्य सत्य नही है।

जीवनयापन के मापदण्ड में इतने क्रान्तिकारी परिवर्तन आज के विश्व की परिस्थिति के कारण हो चुके हैं तथा मानव ने अपनी आवश्यकताओ को शनै. शनै इतना विस्तार प्रदान कर दिया है कि उनसे निस्तार पाने के उसके सभी प्रयत्न असफल होते जा रहे है। अत यह दोष किसी एक वर्ग के मत्थे मढना उचित नही लगता है कि उसकी प्रतिक्रियाओं का प्रभाव किसी के अहित की ओर अग्रसर है।

यंत्रयुग के आवश्यक अंग के रूप में राष्ट्र के प्रत्येक हितैषी का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने कृषि, व्यवसाय व उद्योग धंधो द्वारा अधिकाधिक उत्पादन करे तथा कम से कम व्यय का स्तर निर्माण करे तभी राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के सुदृढ कारण का आधार समुपस्थित हो सकता है। सभी का परम ध्येय इनमें जो विकास हो वह समाज के हित के लिये, राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिये हो न कि व्यक्तिगत लाभ के लिये। विदेशी वस्तुओं के आकर्पण के भूतकाल में भी भारतीय पूजी का बहाव स्वदेश के बाहर की ओर प्रवाहित था और आज भी न्यूनाधिक रूप से हम इस प्रवाह को रोकने के प्रति उतनी गभीरता से प्रयत्नशील हो जिसमें सभी स्थानीय उत्पादित वस्तुओं के अभिनव प्रयोगकी ही भावना निहित हो ऐसी परिस्थिति दिखाई नही पड रही है फिर भी भारतीय उद्योग धन्धो को आज के शक्तिशाली उत्पादन साधनो के समकक्ष स्थिति तक पहुंचाने में मारवाड़ी समाज का भाग किसी भी अन्य समाज से कम नही है, अग्रगण्य भारतीय औद्योगिक समाजों में हमारा समाज भी प्रमुख है तथा बम्बई के मारवाडी समाज की देन भी इस दिशा में किसी भी रूप में कम नही है। जिन उद्योग धन्धो का स्वामित्व आज भी बम्बई के मारवाड़ी समाज के हाथो सन्निहित है तथा जो अपना पूर्ण योगदान राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक चरण को शक्तिशाली बनाने में देते आ रहे है कपड़ा उद्योग बम्बई के जीवन का आवश्यक अंग है तथा उसमें पचास प्रतिशत से भी अधिक लूम मारवाडी समाज के हाथों सचालित है। बम्बई स्थित समाज के औद्योगिक प्रतिष्ठानो की सेवाओ का महत्वपूर्ण योग राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में दृष्टिगोचर हुआ है। यदि बम्बई में मारवाडी समाज के पूर्वकालीन बीमा, बैंकिंग, वस्त्र, गल्ला, रुई, वायदा, जहाज, सौदे व लेन देन के व्यावसायिक संगठनों की सूचि आलेख में संलग्न करने का प्रयास किया जाय तो मात्र इसी अध्याय को ग्रन्थाकार स्वरूप प्रदान करने को बाध्य होना पड़े किन्तु इससे उनके द्वारा व्यापार धन्धे के हेतु किये गये सुप्रयत्नों के फल का जो लाभ समाज व राष्ट्र को प्राप्त हुआ है वह अविस्मरणीय नहीं किया जा सकता है। आज तो स्थिति यह है कि जहा जिस उद्योग के विश्रृंखलित अथवा स्वामित्व परिवर्तन का प्रश्न उत्पन्न होता है बम्बई के मारवाड़ी समाज को उनमें अपनी पूजी विनियोजित करने में सर्वथा अग्रसर पाया जायेगा। अब सभी दिशाओं में और सभी प्रकार के उद्योग व्यवसायों में समाज के लोग बम्बई में अग्रसर हो रहे है और इस प्रकार राष्ट्रीय विकास के कार्य में अपना सफल सहयोग प्रदान कर रहे है।

सामाजिक अभ्युत्थान

बम्बई के मारवाडी समाज ने राष्ट्र के अभ्युत्थान का आधार प्रस्तुत करने के उद्देश्य को अपनी नवीन पीढी के निर्माण में भी ध्यानगत रखा है। समाज में नेता भी हुये है तथा कार्यकर्त्ता भी रहे है। उनमें अन्तर इतना ही रहा है कि एक ने प्रभुत्व को और दूसरे ने सेवा को प्राधान्यता दी जो कि अनिवार्य भी है क्योंकि नेतृत्व सदैव भावना प्रधान होता है जबकि क्रियान्वय का उत्तर दायित्व वहन करनेवाले कार्यकर्त्ताओं को भावना से विरत रहकर कार्य की सम्पन्नता ही अभीष्ट होती है।

आज के अर्थयुग मे सेवा के क्षेत्र में भी धनिक वर्ग का प्रवेश सराहनीय है किन्तु सेवा में धन गौण स्थान प्राप्त करता है, प्रधानता नही। सेवा के लिये धन साधन हो सकता है, साध्य नहीं। राष्ट्रीय अभ्युत्थान के लिये यह सर्वथा आवश्यक है कि सामाजिक सेवा का क्षेत्र सेवाभावी वर्ग के लिये ही सुरक्षित रखा जाय क्योकि समाज की उन्नति एवम् प्रगति उसके सेवाभावी कार्यकर्त्ता ही कर सकते हैं। धनी दानवीर तो होता है किन्तु वह कर्मवीर भी हो यह कतिपय उदाहरणों को छोड़कर सभव नही है।

राष्ट्रीय हित में समाज के स्तर को उच्च करने के प्रयत्नों में बम्बई के मारवाडी समाज के कार्यकर्त्ताओ ने अपनी सहिष्णुता से अनेक कष्ट सहन करते हुये भी अनेक प्रतिगामी धाराओ से टक्कर ली है और रूढीगत व्यवस्थाओं के परिमार्जन का मार्ग प्रशस्त किया है। युग में परिवर्तन के शृष्टा हर राष्ट्र में हर समय उपस्थित रहे ही है जिन्हें सुकृत्यो से विलग करने में भयानक से भयानक विपत्ति अथवा अत्याचार भी सफल नही हुये। यही कारण है कि विरोधी शक्तियो से लडता हुआ मानव समाज उन्नति की ओर अग्रसर है। भारतीय इतिहास में उन राष्ट्रवीरों का नाम अमरता प्राप्त है जिन्होने राष्ट्र एवम् मानवमात्र के हितार्थ सहस्त्रो विरोधी शक्तियों से लोहा लिया और समाज को अपने सिद्धान्तो पर अटल रखते हुये राष्ट्रीय विकास में सहयोगी होने का आव्हान प्रदान किया।

बम्बई के मारवाडी समाज में राष्ट्रीय हितों का प्रतिनिधित्व करनेवाले व सामाजिक जागृति और चैतन्यता के अकुर जमानेवाले बन्धुओ में जिन कार्यों के प्रारम्भ में विविध कठिनाइयों एवम् बाधाओ का परिष्कार करते हुये उनके सर्वहितैषी स्वरूप को सुरक्षा प्रदान की इनके कारण आज भी समाज सशक्त है। अदम्य उत्साही कार्यकर्त्ताओ ने बम्बई में मारवाड़ी समाज के माध्यम से राष्ट्र हित कार्यों में गति प्रदान करने का मूल मंत्र हृदयंगम करते हुये जो कार्य किया वह अविस्मरणीय रहेगा।

राष्ट्रवादी संभावनाएँ :

जीवन में राष्ट्रहित का सर्वोपरि मान निर्धारित रखे हुये मारवाडी समाज के बम्बई स्थित कार्यकर्त्ता बन्धुओं ने स्वाधीनता काल से लेकर गणतंत्र भारत के विविध निर्माण प्रयत्नों में जिन संभावनाओं की सृष्टि की है वे सर्वथा स्तुत्य है।

विदेशी पराधीनता से त्रस्त देश की स्वतंत्रता के लिये अलग अलग ढंग से प्रयत्न होते रहे और उनमें बम्बई के मारवाडी समाज का योगदान बराबर रहा। महात्मा गाँधी का सबल नेतृत्व कांग्रेस को प्राप्त होते ही सन् १९२१ में समस्त देश में जिस असहयोग का मत्र महात्माजी ने फूंका और उसी की सफल सम्प्राप्ति के सहकारी महत्वपूर्ण प्रयत्नों में तिलक स्वराज्य फण्ड के प्रारम्भ ने देश में नवीन भावनाओं का संचार किया।

पूर्वालेख के अनुसार यह स्पष्ट है कि इस फण्ड में बम्बई मारवाड़ी समाज का योग राष्ट्रीय अभ्युत्थानकी दृष्टि से सर्वथा महत्वपूर्ण रहा है। विदेशी वस्त्र बहिष्कार व खादी प्रचार के कार्य को तो तत्कालीन युवक वर्ग ने अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न किया तथा उन प्रवृतियों के राष्ट्र हितैषी स्वरूप के निर्माण में सर्वथा सराहनीय योगदान सर्वश्री विश्वेश्वरलाल बिड़ला, मदनलाल जालान, बैजनाथ भावसिंहका, रामनारायण गोयंका, रामेश्वर जाजोदिया एवम् सावलराम सराफ द्वारा प्राप्त हुआ। यह उत्साही बन्धु प्रति दिन प्रातः काल ही घर घर गली गली पहुँच जाते थे तथा घंटा ध्वनि से सभी लोगोंका ध्यान महात्मा गांधी के सन्देशों की ओर आकर्षित करते थे जिससे प्रभावित होकर बहुत बड़ी संख्या में सामूहिक रूप से विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने खादी धारण करने, चर्खे चलाने व राष्ट्रीय महासभा के सदस्य बनने को उन्मुख हुये और असहयोग आन्दोलन सग्राम में सक्रिय हुये। चौरी चौरी काड से स्थगित सत्याग्रह काल को जनमानस में स्वातन्त्र्य भावना भरने व भावी संग्राम की तैयारियां करने के लिये उपयोग में लिया गया।

बम्बई में मारवाडी समाज के तत्कालीन युवक वर्ग में असीम उत्साह था। सभाओं का आयोजन जनजागृति के हेतु उनके द्वारा होता था व जुलूस निकालकर जन भावना में ऊभार लाने का प्रयत्न किया जाता था तथा साथ ही साथ उन्होंने यह भी निश्चय क्रियान्वित करने का आधार निर्माण किया कि यदि नाटकों के माध्यम से विदेशी सत्ता के अत्याचार तथा शोषण से देश की वर्तमान दयनीय स्थिति का अवलोकन जनता को करवाया जाय तो वह काफी प्रभावशाली रहेगा। इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु मारवाड़ी नाटच परिषद् की स्थापना सर्वश्री दामोदर महड, प० इन्द्र, जमनाप्रसाद पचेरिया, मुरलीधर दाधीच, प्रभुदयाल खेतान, जवाहरलाल चोरडिया, मदनलाल जालान, नारायणलाल पित्ती, चिरंजीलाल लोयलका के प्रयत्नों से हुई और समय समय पर भावनाप्रधान नाटकों के सफल प्रयोग से जनता में प्रबुद्ध चेतना आई। नाटकों का अवलोकन कर श्री जमनालाल बजाज ने भी इस माध्यम से जन जागृति के प्रयत्नों की सराहना की।

मुक्ति संग्राम नाटक देखने को देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद और वल्लभ भाई पटेल भी आये तथा इस प्रयोग से सर्वथा प्रभावित होकर उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि इस के बार बार प्रयोग जन-जागरण के हेतु निरंतर किये जायें।

युद्धोपरान्त जिस आलस्य व सुस्ती का भाव सैनिक को आ जाता है उसी प्रकार आन्दोलन के स्थगन पर बम्बई प्रदेश कांग्रेस के कार्यों में भी शिथिलता का आभास होने लगा था। लोकमान्य तिलक की पुण्य तिथि पर किसी आयोजन की व्यवस्था प्रदेश कांग्रेस द्वारा स्वयम् स्फूर्त न होते देखकर नाटच परिषद् के कार्यकर्त्ता श्री गणपति-शंकर देसाई से मिले तथा उनके निजी परामर्श व उत्साहपूर्ण भाव का आदर करने के उद्देश्य से "सी" वार्ड कांग्रेस के सहयोग से एक जुलूस का कार्यक्रम निश्चित किया उसमें अलग अलग दलों के ५०० स्वयं-सेवक सम्मिलित हुये तथा हजारों की संख्या में स्त्री पुरुषों ने जुलूस का विशाल स्वरूप निर्माण किया तथा लोकमान्य के समाधिस्थल पर सभा के रूप मे इस जुलूस की परिणिती हुई।

नमक सत्याग्रह काल में लोगों में जागृति के भाव सचार करने में बम्बई के मारवाडी समाज का भी योग रहा है। समाज का युवक वर्ग बहुत बडी संख्या में जेलयात्रा को पुनीत कर्त्तव्य मानकर अग्रसर हुआ। अर्थयोग के रूप में हजारों रुपया स्वतंत्रता आन्दोलन के सचालन में व्यय किया तथा देश के किसी भी कोने में पुलिस की ज्यादती अथवा प्रमुख नेतागणों की गिरफ्तारी का समाचार प्राप्त होते ही सर्वप्रथम मारवाडी बाजार को बन्द रखा जाता था। आन्दोलन से सरकार के रुख में नरमी के भाव प्रकट हुये व आन्दोलन स्थगित हुआ महात्माजी को गोलमेज परिषद् के कटु अनुभव महामना मदनमोहन मालवीयजी आदि के साथ लन्दनयात्रा पर हुये क्योंकि अंग्रेजी सरकार मात्र बातचीत ही करने की तत्परता दिखाती थी किसी भी निर्णय पर पहुँचने या समझौता करने को अग्रसर नहीं थी। वापसी के तुरन्त बाद महात्माजी सहित सभी नेता एक साथ जेल भेज दिये गये और कांग्रेस संगठन पुनः छिन्न भिन्न दृष्टिगोचर होने लगा।

ऐसे विषमकाल में बम्बई का मारवाडी समाज सुस्त कैसे रह सकता था तथा श्री मदनलाल जालान के पूना से आते ही श्री उमाशंकर दिक्षीत, गणपति शंकर देसाई आदि में सम्मेलन कार्यालय में मंत्रणा हुई और रात्रि को शिवाजी पार्क में जेल से उस समय तक बाहर रहे हुये सभी कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई। आन्दोलन को सबल बनाने के स्फूर्त प्रयत्न किये गये। सन् १९३२ का आन्दोलन बम्बई में सफलता-पूर्वक सचालित करने में मारवाड़ी समाज का बहुत बडा हाथ रहा है। प्रायः पचीस हजार के मासिक व्यय में से रु. ५०००) मारवाडी समाज प्रतिमाह देता था जिसमें श्री रामेश्वरदास बिडला का योग सर्वथा सराहनीय रहा था।

समाज में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति जागृति के भावों का जन्म-दाता निःसकोच रूप से महात्मा गाधी द्वारा मान्य वह पंचम पुत्र श्री जमनालाल बजाज ही रहा है जिनकी सेवाओं के अमर प्रतीक आज भी राष्ट्र के प्रति बम्बई के मारवाडी समाज की श्रद्धा की अभिव्यक्ति में सलग्न है। नागपुर झडा सत्याग्रह और जयपुर आन्दोलन के अतिरिक्त गाधीयुग के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्तों ट्रस्टीशिप योजना और रचनात्मक

कार्यक्रम की सजीव मूर्ति के रूप में खादी, हिन्दी, गोसेवा आदि राष्ट्र को उन्ही की देन है । उनकी धर्म पत्नी श्रीमती जानकी देवी बजाज का भी महिला जागरण के हेतु स्फूर्त प्रयत्न भुलाया नही जा सकता और बम्बई प्रवास तक उन्ही से प्रेरणा प्राप्त कर बम्बई की मारवाड़ी समाज की महिलायें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों की पूर्ति में संलग्न रहती थी।

श्री मदनलाल जालान व श्री श्रीनिवास बगडका की युगल जोड़ी बम्बई के राजनैतिक क्षेत्र में डटी रह कर किसी भी प्रवृत्ति से जिसका देश या समाज से सम्बन्ध था अलग नही रही।

सन् १९४२ के आन्दोलन मे इन्होने काफी कार्य किया । रूई बाजार में वाय काट तथा अर्थ संग्रह आदि का भार इन लोगो पर ही था । श्री मदनलालजी जालान तो आन्दोलन के अन्त तक भूमिगत रहकर कार्य करते रहे किन्तु आन्दोलन की शिथिलता में जान फूँकने को श्री श्रीनिवास बगडका ने पुलीस को सूचित कर स्वयम् को गिरफ्तार करवा दिया व शीघ्र ही छुटकारा भी हो गया किन्तु चौकी पर हाजिरी की शर्त न मानने पर पुन १५ मई को जेल हुई तथा उसी काल में इन की माताजी के स्वर्गवास के समय भी माफी माँग कर छुटने की अपेक्षा उन्होने जेल में रहना ही श्रेयस्कर समझा था।

जो अन्य बन्धु जेलयात्रा पर गये उनका उल्लेख परमावश्यक है तथा समय पर बम्बई के मारवाड़ी समाज के इन उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने अपने त्यागपूर्ण जीवन को राष्ट्र के हितार्थ समर्पण की जो परम्परा स्थापित की थी उसका प्रभाव हमारे समाज पर चिरकाल तक स्थायी रहेगा। श्री विश्वेश्वरदास बिड़ला सन् १९२१ के आन्दोलन में ही जेल यात्रा कर आये थे तथा सर्वश्री मदनलाल जालान, रतनलाल जोशी, बनारसीलाल खेतड़ीवाल, सावलराम गुरावा, हीरालाल लोहिया आदि सज्जन १९३० में जेल जाने वालों में प्रमुख थे। बहनो में श्रीमती सौभाग्यवती देवी दाणी, दयावतीदेवी श्राफ सत्यवतीदेवी दाणी एवम् श्रीमती सत्यवती देवी का भी आन्दोलन काल में जेल जाना बहुत महत्व रखता है। सन् १९३२ में जेल जानेवालो में सर्वश्री हीरालाल सिवी, रामेश्वर जाजोदिया मामराज शर्मा, पूरणचन्द सराफ, सावलराम सराफ, बद्रीनारायण गाडोदिया, सोहनलाल अग्रवाल, कन्हैयालाल कलयंत्री मथुरादास चाण्डक रामगोपाल, शत्रुघ्न शर्मा व श्री लक्ष्मीनारायण मूँदडा, प्रह्लादराय केडिया आदिका उल्लेख समाज के गौरव का विषय है तथा उससे राष्ट्र हितो में अग्रसर समाज के वास्तविक स्वरूप को मान प्राप्त हुआ है।

सन् १९४२ के आन्दोलन में श्री श्रीनिवास बगड का सर्वश्री मदनलालजी पित्ती, बाबूलाल माखरिया पशुपतिनाथ काकड़िया एवम् महावीर प्रसाद जालान को राष्ट्रीय आन्दोलन में जेलयात्रा का मार्ग अपनाने में गर्व अनुभव हुआ था। श्री पित्ती व श्री माखरिया के सम्बन्ध में समाज वादी प्रयत्नो के विषयान्तर्गत उल्लेख होना सामयिक है किन्तु यहाँ यह स्पष्ट कर देना सर्वथा वाछनीय है कि यह बन्धु इससे पूर्व भी जेल यात्रा पर गये थे और साथ ही साथ यह भी विशिष्टता रही है कि श्री पित्ती की मातुश्री श्रीमती शांतिबाई व श्रीमाखरिया की गृहदेवी श्रीमती शान्तिबाई का क्रान्तिकारी सहयोग इन्हे निरन्तर अपने राष्ट्रीय आन्दोलन कारी स्वरूप में प्राप्त रहा है।

इनके अतिरिक्त भी समाज के जिन बन्धुओं ने जेल यात्रा तो नही की किन्तु जिनका सक्रिय योग निरन्तर स्वतंत्रता आन्दोलन को प्राप्त रहा उनमें निम्नांकित का उल्लेख सर्वथा वाछनीय है । सर्वश्री प्रभुदयाल खेतान, राधाकृष्ण लाहोरी, नारायणलाल पित्ती, गुलावराय नेमाणी, जमनादास अडुकिया, शिवनाथ, मुरलीधर दाधीच, गोविन्दलाल पित्ती, देशराज शर्मा, नारायणलाल मिश्रा, बैजनाथ माखरिया, मक्खनलाल रूंगटा एवम् श्रीमती शांतिबाई पित्ती आदि ने जेलसे बाहर रहकर अपने कृत्यो से आन्दोलन को सुदृढ आधार प्रदान किया।

तात्पर्य यह है कि बम्बई के मारवाड़ी समाज ने उन सभी राष्ट्रीय सभावनाओ की सफल सम्पूर्ति में अपनी शक्ति निरंतर प्रदान करने में कोई कसर नही रखी जिनका राष्ट्र के अभ्युत्थान में महत्व सर्वसिद्ध था।

समाजवाद में आस्था रखनेवाले बम्बई के मारवाड़ी समाज के युवक बन्धुओ में प्रसिद्ध समाजवादी नेता डाक्टर राममनोहर लोहिया पर किसी सीमातक बम्बई का अधिकार है तथा समाज ने बम्बई में उन के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा व यही से जर्मनी डाक्टरेट होने जाने में सहकार देने की जिस भावना की अनुभूति हुई थी उससे कही अधिक गर्व सन् १९४२ का आन्दोलन उनके कुशल नेतृत्व में समस्त देश में संचालित रहा व अधिकाश समय वे बम्बई में ही रहे इस तथ्य पर होता है। यो तो राष्ट्र के इस सपूत की समाजवादी विचारधारा को समाज अथवा नगर की सीमाओं में बाँध रखना सहज नही है किन्तु उन्होंने स्वयम् बम्बई को अपने ऊपर हक्क का अधिकार दिया है। कांग्रेस में समाजवाद का प्रवेश करवानेवाले वे ही थे तथा वर्षो तक कांग्रेस सोशलिस्ट' का सम्पादन उन्होंने किया जो कांग्रेस का मुखपत्र था। सन् १९३५ में कांग्रेस के विदेश विभाग का कार्यभार इन्होंने संभाला व शान से उसे निभाया व सन् १९३८ में ए० आइ० सी० सी० में चुने गये । अनेक विदेशी भाषाओं एवम् अर्न्तराष्ट्रीय इतिहास व राजनीति का इतना अधिक ज्ञान आज देश में संभवत: किसी राजनेता को नहीं है। नेता विहीन जनता का सन् १९४२ में १८ मास तक नेतृत्व इन्होंने किया व क्रान्तिकाल में कांग्रेस रेडियो का अनुभूत प्रयोग भी इन्ही की देन रही थी।

इसी सन्दर्भ में श्री मदनलाल पित्ती की महत्वपूर्ण देन का उल्लेख प्रस्तुत करना समुचित होगा । केन्द्रिय कौंसिल में बम्बई से कांग्रेसी प्रतिनिधी व पार्टी नेता, देशी राज्य लोकपरिषद के अध्यक्ष एवम् भारत में युवक आन्दोलन के जन्म में सक्रिय बम्बई यूथ लीग से सम्बन्धित श्री गोविन्दलाल पित्ती के यह सुपुत्र प्रसिद्ध स्थानीय कांग्रेस समाजवादी नेता भाई युसुफ मेहरअलि के सम्पर्क से यहाँ समाज वादी आन्दोलन को सबल बनाने व स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहने को सदैव तत्पर रहे हैं। बम्बई युवक संघ में इन्होने काफी कार्य किया । १९४२ में भी गैरकानूनी रेडियो संचालन करने व विध्वंसात्मक कार्यो में संलग्न रहने का दोष लगाकर श्री मदनलाल पित्ती को सजायें दी गई । श्री वेंकटलाल पित्ती ने भी सन् १९४२ में संत्रस्त लोगो के राहत कार्य में काफी योग दान दिया । इन दोनो भाइयो पर कांग्रेस समाजवादी पक्ष

का भारी असर था तथा उन्हें सक्रिय रूप से अग्रसर करने को यह निरंतर तत्पर रहते थे।

श्री बाबूलाल पीरामल माखरिया के सम्बन्ध में आलेख अन्यत्र प्रस्तुत हुआ है किन्तु समाजवादी पक्ष की प्रबलता और राष्ट्रीय विचारधारा की पुष्टि के हेतु निरंतर सक्रिय रहने में इन्हें अपनी गृहदेवी श्रीमती गंगाबाई माखरिया ने सदैव प्रोत्साहित किया था।

बम्बई में मारवाड़ी समाज के यह बन्धु समाजवादी विचारधाराओं के अनुरूप राष्ट्रीय विकास में अपने आप को संलग्न रखते हुये राष्ट्र के अभ्युत्थान में अपनी सेवायें अर्पित करते रहे हैं तथा इन्हीं के स्फूर्त प्रयत्नों का फल है कि आज भी देश का समाजवादी पक्ष बम्बई के मारवाडी समाज की रीति नीति के प्रति विशेष संशकित नहीं है क्योंकि समाजवाद की प्रबल आस्था हृदयस्थ किये हुये समाज का ही एक महामानव आज सारे देश में विलक्षण ढंग से समाजवाद की ध्वज लहराने में संलग्न है। सभी पुराने साथी अपनी विविध दिशाओं में में मुड़कर निकल चुके हैं तथा नवीन प्रयास अपनी आस्थाओं के अनुरूप बनाने को प्रयत्नशील हैं किन्तु ध्रुव रूप से स्थिर रहकर समाजवाद की सुसेवा में संलग्न डा. राम मनोहर लोहिया पर बम्बई का मारवाडी समाज ही नहीं अपितु सारा देश गर्व करता है।

मारवाडी समाज ने बम्बई में रहते हुये यह अनुभवजन्य ज्ञान अर्जन करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है जिसके अधीन सर्वोदय की भावना का उद्‌भव समाज में हुआ तथा उसे राष्ट्रीय विकास में समाज ने संलग्न किया। सर्वोदयी समाज की स्थापना के हेतु जिन प्रवृत्तियों को समाज के विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने हाथों में लिया उनका उल्लेख समीचीन होगा।

श्री जमनालाल बजाज के प्रयत्नों एवम् मार्ग दर्शन के फलस्वरूप गोसेवा-खादी प्रयोग एवम् अन्य रचनात्मक कार्यों का समावेश होने के साथ ही साथ बम्बई में मारवाडी समाज ने अपने अर्जित धन का सदुपयोग सर्वोदयी सिद्धान्तों के अनुरूप करना प्रारंभ किया! कहीं भी उनके ध्यान से यह बात विस्मृत नहीं हुई कि परम्परागत शैली के अनुरूप ही कार्य करते हुये सभी के विकास में सहयोगी बनाने को प्रयत्नशील समाज को हरसमय रहना है।

सर्वोदय उन भावों को आत्मसात करवाने का पथ प्रदर्शक सिद्ध हो सकता है जिनसे समाज के सभी अंगों को एक दूसरे के पूरक रहते हुये अग्रसर होने का अवसर प्राप्त हो सके। समाज का एक वर्ग यदि पिछड़ता है तो दूसरे वर्ग के विकास का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है। व्यापार व्यवसाय में सत्याचरण की प्रवृत्ति से विश्वास अर्जन के साथ साथ सभी के हृदय में निर्मलता का सचार होता है चाहे वह क्रेता हो अथवा विक्रेता क्योंकि जिस प्रकार एक दीपक की लौ दूसरी को प्रज्वलित होने का आधार प्रदान करती है, उसी प्रकार सत्य का परावर्तन सत्य से होगा जब कि असत्य व कटुता का प्रतिकार उसी रूप में किया जायेगा।

बम्बई के मारवाड़ी समाज ने प्रारंभ से ही व्यवहारिक सत्याचरण के आदर्श द्वारा ऐसी ही स्थिति का निर्माण कर लिया था जिसमें सभी को अपने साथ लेकर आगे बढ़ने का प्रयत्न उस के द्वारा निरंतर सफलतापूर्वक जारी रहा। बड़े से बड़े लेन देन में भी 'मारवाड़ी समाज ने निस्संकोच अपनी वाणी की सत्यता प्रस्थापित की! सत्याचरण के अतिरिक्त आत्मशुद्धि की भावना का विकास भी सर्वोदय सिद्धान्तों में निहित है। आत्मा की आवाज में अनहदनाद के स्वर मुखरित हो उठते हैं यदि वास्तव में उसकी पवित्रता अक्षुण्ण रही हो। मारवाड़ी समाज ने आत्मिक विकास को आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वदा मान्य किया है और सभी आत्माओं में समान सुखदुःख के भाव स्फूर्त होते हैं यह मान कर चलनेवाला समाज अपने क्रिया कलापों से कभी किसी की आत्मा का हनन कर पायेगा इस की कल्पना ही नहीं की जानी चाहिये। विशाल औद्योगिक व व्यवसायिक संगठनों के अधिष्ठाता के रूप में भी उसकी आत्मा का स्वरूप इन्हीं सर्वोदयी भावनाओं से युक्त परिलक्षित हुआ और यही कारण है कि उसके प्रति कटुता के चिन्ह कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हुये।

समन्वय भावनाका प्राधान्य मारवाड़ी समाज के अंग अंग में आदि काल से व्याप्त है। बम्बई का मारवाड़ी समाज भी इससे अछूता नहीं है। समाज के प्राचीन इतिहास की शोध में सलग्न हों तो ऐसे प्रयत्नों का नया अध्याय ही प्रकट हो सकता है किन्तु इस समय समाज इस वृत्ति को अपने व्यवहार में किस सीमा तक उतार पा रहा है इसका उल्लेख ही सभवत उचित रहेगा।

आज की परिस्थितियों में भाषागत विभेद की प्राचीरें बन रही हैं तथा प्रादेशिक भावनायें प्रस्फुटित हो रही हैं। राष्ट्रीय हित को भी यदा कदा इनकी प्रबलता के समक्ष नत होना पडता है और उसके फलस्वरूप ही राष्ट्र की एकता एवम् विकासशीलता में बाधायें उपस्थित होती हैं। उन बाधाओं के परिमार्जन का एकमात्र आधार जो समाज अपना सकता है वह है समन्वय भाव! मधुरतम व्यवहार और कठोरतम आचरणों के मध्यम मार्ग के रूप में सहनशीलता को प्रश्रय दिया जा सकता है जो समन्वय के स्वरूप का परिदर्शन कराने वाला तथ्य ही है!

बम्बई का मारवाड़ी समाज समन्वय का सर्वोत्तम आदर्श समुपस्थित करने में समर्थ हो पाया! सर्व समुदाय नगर बम्बई में इसका महत्व जीवन में उतार लेना सर्वथा अनिवार्य है। इस अनिवार्यता का अनुभवजन्य ज्ञान हृदय में धारण किये हुये आज समाज अपने विकास में सलग्न होने के साथ ही साथ नगर के विकास और राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान करने को अग्रसर हो रहा है। यहाँ के प्रत्येक नागरिक से भाषा-भेष व व्यवहार में उसी उचित भावों के अनुरूप सम्बन्ध स्थापित करने में बम्बई के मारवाड़ी समाज को कभी किसी बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है।

गुजराती के साथ वह गुजराती है—मराठी को मराठी के रूप में ही बन्धुत्व प्रदान करने को वह अग्रसर है तथा इसी प्रकार अन्य सभी समाजों के लोगों को भी अपना ही अंग मानकर चलने का स्फूर्त प्रयत्न मारवाड़ी समाज की हर गति विधि से परिलक्षित होता है। किसी से द्वेष अथवा राग विराग से सर्वथा दूर यह समाज अपनी सर्वसाधारण सम्पन्न स्थिति के निर्माण व उसके स्थायित्व के हेतु प्रयत्नशील रहने के साथ साथ उसका समुचित उपयोग राष्ट्र निर्माण के हेतु करने में

संकोच नहीं करता है। मारवाड़ी समाज की समन्वय भावना ने उसके स्वरूप में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन गतिमान समय में भी किये हैं तथा जिस प्रकार पारिवारिक अंग का प्रतिपालन मानव अपना उत्तरदायित्व मानकर करता आ रहा है उसी प्रकार से इसके ग्रहण करने में भी वही भावना निहित है कि समाज का कोई अंग अलग न पड़ जाय—ऐक्य सूत्र में आबद्ध रहकर न केवल स्वयम् के अथवा समाज के बल्कि राष्ट्र के अभ्युदय की ओर अग्रसर होने का अवसर उसे प्राप्त हो यही इसका मन्तव्य है और यही इसमें अन्तर्हित भावना है।

बम्बई के मारवाड़ी समाज की सभी प्रवृत्तियों एवम् उन प्रवृत्तियों की साकारता के हेतु किये गये प्रयत्नों में जिन जिन कर्मवीरों का हाथ रहा है उनके इस संक्षिप्त आलेख से इस तथ्य की पुष्टि होती प्रतीत होती है कि इस समाज ने अपना सुगठित स्वरूप निर्माण एकलक्ष्य अवश्य रखा है किन्तु अन्ततः अपने कार्यों से तथा आचरण से यह सिद्ध करने में समर्थ हुआ है कि यह एक राष्ट्रवादी विकासशील समाज है।

यह एक ऐसा समाज है जिसने राष्ट्रवादी सभी शक्तियों को चाहे वह किसी भी विचार धारा से सम्पन्न हो—किसी भी वाद से सम्बन्धित हो अपने आश्रय में लिया और उन्हें विघटित होने देने की अपेक्षा अधिकाधिक सशक्त किया। अपने शैक्षणिक प्रयासों में राष्ट्र भाषा के सम्मान की सुरक्षा उसे अभीष्ट हुई तो स्थानीय प्रमुख भाषाओं के प्रति भी औदार्य भावनाओं को प्रश्रय प्रदान किया गया तथा प्रयत्न यह हुआ कि इन सभी को सशक्त करने के महान उद्देश्य की पूर्ति में ही अन्तर्हित राष्ट्रभाषा के सम्मान को सुरक्षा प्रदान की जाय।

स्वाधीनता आन्दोलन काल में इस समाज द्वारा जो कुछ सहयोग राष्ट्रकी सेवार्थ अर्पित हुआ उस पर गर्व करने का अधिकारी समाज है और रहेगा भी। अधिकतम त्याग की परम्पराओं का श्रीगणेश भी समाज की रचनात्मक प्रवृत्तियों के द्वारा प्रतिभाषित हुआ। समान अधिकारों के संग्राम में समाज को उस विशिष्ट वादी विचारधाराओं का मुक्त सहयोग प्राप्त हुआ जो युवक वर्ग की भावनाओं के अनुरूप था। इसी प्रकार समाज का सर्वोदयी व समन्वयवादी स्वरूप भी राष्ट्र के अभ्युत्थान में सर्वदा सहयोगी सिद्ध हुआ है।

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति,
चन्द्रो विकाशयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति,
संतः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ।।
—भर्तृहरि

जैसे सूर्य कमल को खिलाता है, चंद्रमा कुमुद समूह को विकसित करता है और बिना याचना किये ही मेघ पृथ्वी पर जल की वर्षा करते हैं, वैसे ही सज्जन परोपकार के लिये स्वयम् ही कटिबद्ध रहते हैं।

मारवाड़ी समाज ने अपने बहुमुखी प्रयत्नों से बम्बई नगर व उपनगर विभाग में इस प्रकार की अनेक सर्वहितैषी सेवा संस्थाएँ संस्थापित की हैं जिनसे जन साधारण को बहुत अधिक लाभ पहुँचा है। इस स्फूर्त प्रयत्न में कहीं भी समाज ने अपनी वृत्तियों के लाभान्वय से किसी भी वर्ग व समुदाय को वंचित नहीं रखा। भारतीय संस्कृति के पुरातन एवम् अर्वाचीन भावों के सामंजस्य व समन्वय को समाज ने अपने व्यवहार में समाहित रखते हुये सभी के साथ मिल जुलकर अग्रसर होने का सर्वदा प्रयास किया। समाज की इन संस्थाओं में गत अर्द्ध-शताब्दी का रचनात्मक इतिहास अंकित है तथा बम्बई के जनमानस में इनके प्रति समादर का भाव है। संस्थाओं की अभिव्यक्ति प्रत्येक समाज के लोग हार्दिक रूप से कर रहे हैं। इन प्रस्तुत उपादानों में निहित जनहित भावना का उद्गम मारवाड़ी समाज की परम्परागत संस्कारिक वृत्ति से संलग्न है।

पुरातन धार्मिक भावनाओं की प्रतीक धर्मशाला एवम् वाडियां हैं तो रोगीजनों को राहत दिलाने के प्रारंभिक काल की कृतियों का स्वरूप विभिन्न औषधालयों के रूप में प्रकट हुआ है। शैक्षणिक संस्थाओं के विशाल व प्राचीन संगठनों की स्थिति नगर की स्वास्थ्य समस्या को ध्यानगत रखते हुये सर्वथा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

इन सभी प्रवृत्तियों का जो स्वरूप आज बम्बई में है उसका विस्तृत विवरण इस आलेख में संलग्न होना संभवतः अधिक उपयोगी सिद्ध होता किन्तु एक स्थल पर ही समाज की सभी संस्थाओं एवम् अन्य प्रवृत्तियों के क्रिया कलापों का यह परिचयात्मक उल्लेख भी सर्वथा अभिनव प्रयोग का प्रतीक बन पायेगा और समाज की गतिविधियों का सूक्ष्म चित्रण सुसुपस्थित करने में समर्थ हो सकेगा।

आलेख के अन्तर्गत वर्गीकृत स्वरूप में संस्थाओं के परिचय का सामूहिकरण सम्पन्न हुआ है अतः विभागानुसार जानकारी के एक मात्र साधन के प्रस्तुत करने का प्रयास विशेष परिस्थितियों में संग्रहित सूचनाओं के आधार पर ही निर्मित हुआ है इसे ध्यानगत रखते हुये ही इस पर मनन होना आवश्यक है।

मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूल
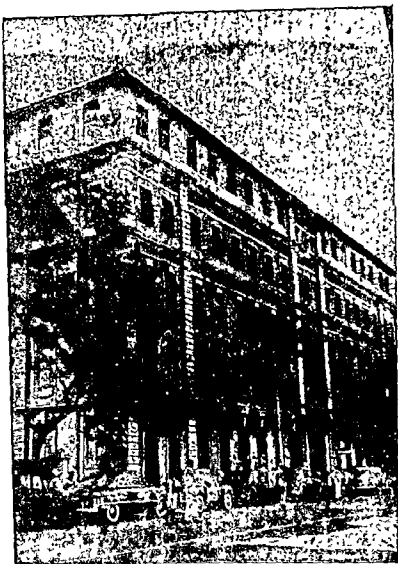
सन् १९१२–१३ में विजयादशमी के पुण्य पर्व पर नेमाणी वाडी में मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना हुई थी। मारवाड़ी विद्यालय का प्रारम्भ सर्व प्रथम सेठ शिवनारायण जी की वाडी में हुआ था। १८८५ वर्ग गज भूमि पर दो मंजिल के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन बम्बई के तत्कालीन गवर्नर लार्ड विलिंग्टनके द्वारा दिनाक ११–१–१९१६ को सम्पन्न हुआ। शुरू में ५०० विद्यार्थियों तक की अध्ययन सुविधा से सज्जित विद्यालय को कुछ ही समय में स्थानाभाव महसूस होने लगा जो इसकी बढती हुई लोकप्रियता का प्रतीक था। छात्र संख्या की निरंतर वृद्धि से स्थानाभाव की विकट समस्या उपस्थित हुई। सन् १९३७ में सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया ने रु २७,०००) भवन की तृतीय मजिल के निर्माणार्थ दिये तथा पुन: स्थानाभाव की पूर्ति के लिये श्री सत्यनारायण मोदी ने अपने पितृश्री सागरमल मोदी की पुण्यस्मृति के हेतु प्रदत्त ५०,०००) की धनराशि का उपयोग विद्यालय के दक्षिणभाग के उपगृह सम्बद्ध विस्तार के निर्माणार्थ किया गया।

मात्र ३८ विद्यार्थियों को लेकर इस विद्यालय की शुरूआत हुई थी, वर्तमान में विद्यालय में शिशु कक्षा से एस० एस० सी० तक के छात्रों की सख्या २४१७ है व व्यय अनुमानित ४ लाख है।

सन् १९२० में पहली बार मेट्रिक परीक्षा में विद्यालय के ५ परीक्षार्थी प्रविष्ट हुये, और वे सभी उत्तीर्ण घोषित हुये। मार्च १९६२ के विद्यालय का परीक्षा परिणाम ८० प्रतिशत रहा जब कि एस० एस० सी० बोर्ड का परीक्षाफल ६२ प्रतिशत रहा। सन् १९६२ में संस्था ने स्वर्ण जयन्ती मनाई। इस अवसर पर मारवाडी विद्यालय की भूतपूर्व

प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया व भविष्य में शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक विस्तार की प्रतिज्ञा की गई।

विद्यालय की विविध प्रवृत्तियां :

सन् १९३७ में श्री गोविन्दराम सेक्सरिया ने पुस्तकालय को सुचारु रूप से संचालित करने के हेतु रु० १०,०००) की राशि प्रदान की थी, सन् १९५५–५६ में विद्यालय भवन की चौथी मंजिल पर एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण करवाया गया। पुस्तकालय में साहित्य के सभी अंगों को स्पर्श करनेवाले ग्रन्थ है। उक्त पुस्तकालय सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया पुस्तकालय के नाम से संचालित है।

विद्यालय में ए० सी० सी० का प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान में विद्यालय में २९० केडेट्स है। शिशुओ को आधुनिकतम शिक्षा देने के हेतु सन् १९४९ में श्रीमती कृष्णादेवी शिवओंकार माहेश्वरी ने १५,०००) का दान देकर शिशुमंदिर की स्थापना की। शिशुमन्दिर में बच्चों की संख्या ८८ है।

विद्यालय में बालचरों तथा बालवीरों की संख्या २०० है, उन्हें प्रशिक्षित करने के हेतु ५ शिक्षक हैं। बालचर दल समय समय पर सार्वजनिक कार्य में योग देकर विद्यालय का नाम रोशन करता रहता है। विद्यालय में प्रतिवर्ष 'प्रेरणा' नामक पत्रिका का प्रकाशन होता है। इस पत्रिका के प्रकाशन का समुचित भार विद्यार्थियों पर रहता है। इससे नन्हें मुन्नों के मस्तिष्क में उत्पन्न कल्पनाओं को साकार रूप देने में काफी सहायता मिली है। जिससे उनके बौद्धिक विकास का विस्तार हर दृष्टि से पूर्ण होता है।

विद्यार्थियों को बाहर के दूषित व बासी खाने से बचाने के लिये एक अल्पाहार गृह का सचालन किया जाता है। विद्यालय भवन में ही एक अल्पाहार गृह की व्यवस्था है जहाँ विद्यार्थियों को शुद्ध, ताजा, व स्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

विद्यालय में २४ विद्यार्थियों का एक सड़क सुरक्षा दल है, जिसका गठन बृहत्तर बम्बई पुलिस विभाग द्वारा किया गया है। विद्यालय की पढाई समाप्त होने पर बालकों को सड़क पार करने में सुविधा प्रदान करता है। इससे दुर्घटना की आशंका कम रहती है। इसके लिये विद्यालय के विभिन्न आयोजनों में सुव्यवस्था में यह दल विशेष सहायक सिद्ध होता है। बौद्धिक और शारीरिक ज्ञान के साथ २ बालकों को बाह्य जगत् से परिचित कराने व उनकी चेतना में प्रसार लाने हेतु पर्यटन करवाये जाते हैं। जिसमें ऐतिहासिक स्थानों व भारत के भावी तीर्थों के परिचय के साथ २ विद्यार्थी मनोरंजन भी प्राप्त कर सकें। विद्यार्थियों को लाने ले जाने के लिये बसो की पूर्ण रूपेण सुविधा है और उसके लिये अत्यन्त न्यून चार्ज लिया जाता है। इसके अलावा उनके शैक्षणिक भ्रमण के लिये भी उपर्युक्त बसें काम में आती हैं। अनुशासन व सफाई के लिये विद्यालय में स्कूल पोशाक अनिवार्य है।

इसके अलावा विद्यालय में शार्टहैण्ड व टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है ताकि विद्यार्थियो को नोटस् बनाने में सहायता मिले व अगर पढाई न करें तो भी उनके भावी जीवन के लिये आधार के रूप मे काम आती है।

विद्यालय के वर्तमान पदाधिकारी निम्नप्रकार है —

सभापति : श्री मदनमोहन रुइया
उपसभापति : „ श्री पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला
मंत्री . „ रामेश्वर साबू
सहायक मंत्री „ रामप्रसाद पोद्दार
„ सावलरामजी तोदी

हिन्दी माध्यम से शिक्षा देनेवाला यह विद्यालय राष्ट्र भाषा के प्रचार प्रसार के साथ २ बम्बई में हिन्दी भाषा भाषी छात्रों के लिये एक आदर्श शिक्षण स्थल है, और भविष्य में भी इसी प्रकार सेवा करता रहेगा ऐसी आशा है।

मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल
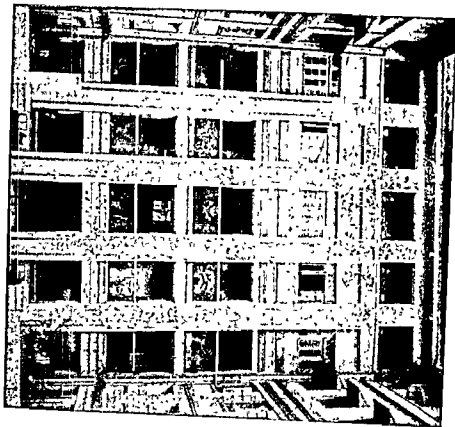
हिन्दुस्तानी मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्स एसोसिएशन लि०, द्वारा संचालित स्थानीय मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल की स्थापना श्री जगन्नाथजी खेमका के प्रयासों से सन् १९१६ में उक्त एसोसिएशन द्वारा की गयी। डेढ सौ वर्षों के शैक्षणिक इतिहास में जिस प्रकार की व्यवसाय संबंधी शिक्षा की कमी थी उसकी पूर्ति इस स्कूल की स्थापना से हुई। बम्बई नगर में शिक्षा प्रचार के इतिहास का यह एक महत्वपूर्ण पृष्ठ था जो उक्त स्कूल के उद्घाटन के साथ लिखा गया।

इस स्कूल की स्थापना के पहले हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने वाला नगर में एक मात्र स्कूल मारवाडी विद्यालय ही था परंतु सुदूर सैन्डहर्स्ट रोड पर स्थित होने के कारण कालबादेवी, भुलेश्वर, सी० पी० टंक और इसके समीपस्थ क्षेत्रों में रहनेवाली हिन्दी भाषी जनता को कठिनाई महसूस होती थी। उक्त स्कूल की स्थापना से जनता की यह असुविधा दूर हो गयी।

प्रारंभ मे स्कूल में केवल एक शिक्षक और चार विद्यार्थी ही थे। एकमात्र अध्यापक श्री शांताराम रेले की संरक्षता में स्कूल की कक्षा एसोसिएशन के कार्यालय में ही लगती थी जिसकी देख रेख श्री जगन्नाथजी स्वयं करते थे। धीरे धीरे जब विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने लगी तब स्कूल को फणसवाडी के एक मकान में स्थानान्तरित किया गया। जैसे जैसे विद्यार्थियों की सख्या में वृद्धि होती गयी वैसे वैसे स्कूल के स्थान बदलते गए। फणसवाडी, मंगलदास मार्केट, कालबादेवी का रामनारायण हरनदराय भवन आदि स्थानों पर स्कूल की कक्षाएँ काफी समय तक लगती रही। अंत में सन् १९२५ के आसपास जब उसे कावेल स्ट्रीट की भाटिया बिल्डिंग में ले जाया गया तब उसमें १२ अध्यापक तथा १७५ के लगभग विद्यार्थी थे। सन् १९२६ में उसे बम्बई म्युनिसपल कारपोरेशन से मान्यता प्राप्त हुई तथा सन् १९२७ में कुछ ग्रांट भी मिलने लगी। ग्रांट मिलते ही पुनः विद्यार्थियो की संख्या में वृद्धि होना आरंभ हुई। अतः स्कूल को सी० पी० टंक पर स्थित डा० पुरदरे की बिल्डिंग में स्थान्तरित किया गया। सन् १९३५ तक स्कूल इसी स्थान पर चलता रहा। अभी तक पढ़ाई ७ वी कक्षा तक होती थी परंतु १९३५ में एक कक्षा और बढाई गयी। सन् १९३७ तक ९वी, १० वी, ११ वी कक्षाओं की भी पढाई शुरू कर दी गयी और स्कूल एक संपूर्ण हाई स्कूल में परिणत कर दिया गया। अभी तक स्कूल में शिक्षा नि.शुल्क ही दी जाती थी परंतु सन् १९४० के आसपास जब विद्यार्थियो की संख्या ५५० के लगभग हो गयी तब अंग्रेजी कक्षाओं के

लिए नाम मात्र का शुल्क लिया जाने लगा। इसमें २० प्रतिशत विद्यार्थी नि.शुल्क शिक्षा ग्रहण करते थे। इन्ही दिनों श्री तुलसीरामजी शर्मा, "दिनेश" के प्रयासों से स्कूल में हिन्दी की कक्षाओं का सूत्रपात किया गया। सन् १९३९ में स्कूल के १० छात्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं में बैठे। इनके परिणामो से प्रोत्साहित हो स्कूल में हिन्दी कक्षाओं के लिए स्थायी व्यवस्था कर दी गयी जो सर्वथा नि शुल्क ही थी।

४ छात्रों से प्रारंभ होकर ५५० छात्रों के सम्पूर्ण हाई स्कूल की स्थिति में पहुँचने पहुँचते स्कूल को २० वर्ष लगे। प्रारभ मे एसोसिएशन ने इसके खर्चे को संभालने और हर प्रकार के सचालन भार का जो उत्तरदायित्व लिया था उसे उसने पूरी तरह निभाया। इस खर्च की पूर्ति के लिए एसोसिएशन ने अपने सभासदो द्वारा प्रांत के बाहर भेजे जाने वाली कपड़े की प्रत्येक गाँठ पर एक पैसा लाग लेने की व्यवस्था की। कालांतर में यह लाग तीन पैसा प्रति गाँठ तक हो गयी। इसके सिवाय स्कूल के भवन के निर्माण के लिए उसने अपने सभासदों से चंदा भी एकत्रित किया। लगभग ७५ हजार रुपए की लागत पर एसोसिएशन ने गजदर स्ट्रीट, चीरा बाजार में दो मंजिल का स्कूल भवन तैयार किया। सन् १९४१ में श्री भैरामल जी केडिया के नाम पर तथा श्री भीखराजजी जैपुरिया के प्रयास से इस भवन में एक मंजिल और जोड़ी गयी। इसी प्रकार सन् १९६१ में श्री गुलराजजी चूड़ीवाला के नाम पर तथा तत्कालीन सम्मान्य मंत्री श्री गौरीशंकरजी केजरीवाल के प्रयास से चौथी मंजिल का निर्माण किया गया। उपरोक्त दोनो दान-दाताओं से भवन के निर्माण के लिए बड़े बड़े अनुदान प्राप्त हुए।

भवन के निर्माण और यथेष्ठ स्थान की उपलब्धि से स्कूल के प्रगति में बड़ी सहायता मिली। श्री गोविन्दरामजी सेक्सरिया से प्राप्त १० हजार रुपये के अनुदान की सहायता से स्कूल में एक पुस्तकालय खोला गया। इसी प्रकार श्री मनसुखलाल मोर से प्राप्त १० हजार रुपये के अनुदान से स्कूल में नवीन शैक्षणिक प्रसाधनों की व्यवस्था करने में सहायता मिली। इन सबका प्रभाव यह हुआ कि स्कूल के शैक्षणिक स्तर में वृद्धि हुई जिसके कारण वह नगर के विद्यार्थियों के लिए एक आकर्षक बिन्दु बन गया। सन् १९४३ में स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या ६०० के लगभग थी। सन् १९४७ में यह संख्या ८०० हो गयी। सन् १९५३ में लगभग ९०० विद्यार्थी थे। इस समय स्कूल के प्रमुख श्री हरनारायण गोपालदास तथा सम्मान्य मंत्री श्री गौरीशंकरजी केजरीवाल एवं हरिकिशनदासजी मेहरा के कुशल संचालन में स्कूल की शिक्षा का स्तर ऊँचा था। इस वर्ष स्कूल से लगभग ५० विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा में बैठे जिसमें से १९ प्रथम श्रेणी तथा १८ द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। मारवाड़ी सम्मेलन ने अभी एक योजना चालू की है जिसके अंतर्गत एस० एस० सी० की परीक्षा में सबसे अधिक नम्बर पाने वाले राजस्थानी विद्यार्थी को पारितोषिक दिया जाता है। इस योजना के अंतर्गत सन् १९६१ में मारवाड़ी कमशियल हाई स्कूल के दो छात्र श्री छगनलाल खंडेलवाल को १५०) रु० तथा श्री केशवलाल दोशी को १००) रु० पारितोषिक के रूप में दिए गए।

आज स्कूल में लगभग १,५०० विद्यार्थी है तथा उसमें प्राथमिक से लेकर मैट्रिक तक की पढाई की जाती है। स्थान का आज भी अभाव है परंतु इस समस्या को दो सिफ्टों में पढाई करके हल करने का प्रयास किया जा रहा है। रात्रि को हिन्दी कक्षाएँ अभी तक नि.शुल्क चलाई जा रही है तथा समस्त बम्बई नगर के हिन्दी प्रेमियो के लिए आकर्षक का केन्द्र बनी हुई है। स्कूल की व्यवस्था के लिए एसोसिएशन द्वारा निर्मित ट्रस्ट है जिसमें सर्वश्री हरनारायण गोपालदास, बद्रीप्रसादजी केजरीवाल, देवीप्रसादजी केजरीवाल, देवीप्रसादजी पोद्दार और विश्वनाथजी बूबना ट्रस्टी हैं। ट्रस्ट के अतिरिक्त एसोसिएशन की कार्यसमिति द्वारा प्रतिवर्ष नियुक्त की जाने वाली एक शिक्षा समिति है जिसमें श्री गौरीशंकरजी केजरीवाल अध्यक्ष विश्वनाथजी बूबना उपाध्यक्ष, धनराजजी बाठिया तथा रमेश रस्तोगी सम्मान्य मंत्री तथा श्री खेतारामजी चौधरी कोषाध्यक्ष है। स्कूल के दैनिक संचालन और नियंत्रण के लिए एक स्कूल समिति भी है जिसके श्री गौरीशंकरजी केजरीवाल अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारियों के अतिरिक्त प्रधानाध्यापक श्री एच० बी० केवलरामानी सेक्रेटरी हैं।

उपरोक्त प्रशासनिक सगठन के अंतर्गत स्कूल की गतिविधियाँ बड़ी क्षमता पूर्वक चलायी जा रही है। सन् १९२० से लेकर १९६० तक स्कूल की जो प्रगति हुई उसका अधिकांश श्रेय प्रधानाध्यपक श्री के० एम० दामले को है जो ४० वर्ष तक स्कूल को सजाते और सवारते रहे स्कूलमें बच्चों के स्वास्थ्य और अनुशासन पर पूर्ण ध्यान दिया जा रहा है स्कूल में सफाई वगैरह रखने का कार्य काफी संतोषजनक है। यह आशा की जाती है उनके तथा वर्तमान पदाधिकारियों के मार्गदर्शन से स्कूल की गणना देश के उच्च कोटि के स्कूलों में होने लगेगी।

बालिका विद्या मन्दिर
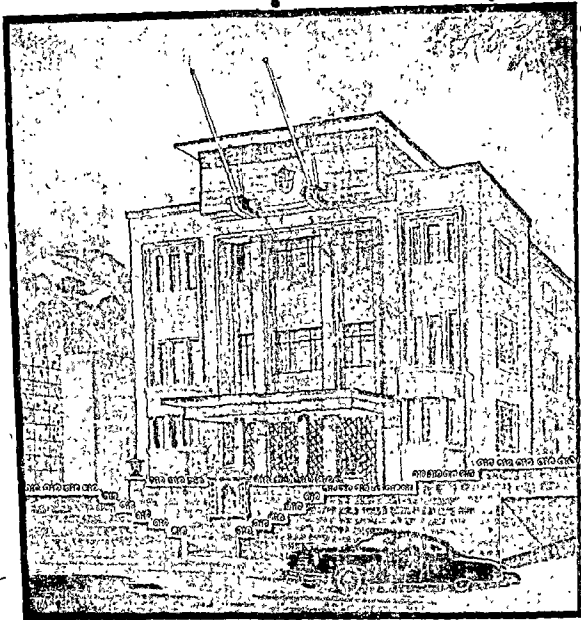
८ जून १९५३ के शुभ दिवस पर सरस्वती देवी की अर्चना में गूंजित श्लोको की मधुर ध्वनि के मध्य "बालिका विद्या मंदिर" की स्थापना हुई । कुल १२० बालिकाओं तथा १६ अध्यापिकाओं से शुरु किया गया यह विद्या मंदिर आज प्रगति पथ पर द्रुत गति से अग्रसर है। वर्तमान में यहा लगभग ६०० बालिकाएँ तथा ३५ प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ है ।

बालिका विद्या मदिर का सचालन " बिरला इडस्ट्रीज ग्रुप चेरिटी ट्रस्ट" द्वारा किया जाता है तथा इस पवित्र कार्य के लिये सब प्रकार की आधुनिक सुविधाओ से युक्त एक भव्य भवन नि.शुल्क प्रदान किया है।

पदाधिकारी :

विद्या मदिर के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित है ।

प्रधान–श्रीमती शारदादेवी बिडला

उप-प्रधान–श्रीमती ताराबहन माणिकलाल प्रेमचंद

आनरेरी सेक्रेटरी–श्रीमती गोपीकुमारी बिड़ला
श्रीमती राधादेवी मोहता

प्राचीन और आधुनिक भारतीय सभ्यता का संगम व आदर्श गृहिणी तथा बालिकाओ को उत्तम नागरिक एव उनका सर्वांगीण विकास

ही इस विद्यालय का ध्येय है। सन् १९५८ तक शिक्षा का माध्यम हिन्दी तथा गुजराती था, परंतु सन् १९५८ से पाचवी कक्षा से शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी किया गया है परंतु के० जी० से चौथी कक्षा तक अब भी हिन्दी और गुजराती विभाग है।

एस० एस० सी० का परीक्षाफल कभी भी ९० प्रतिशत से कम नही रहा, सन् ६२–६३ में परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। १९५८ में कुमारी शशीप्रभा गाड़ोदिया ने ए० सी० सी० के सफल विद्यार्थियो मे २५ वा स्थान प्राप्त किया। सन् १९६१–६२ में कुमारी जिगेंद्र कौर ने गुजराती (आर० एल०) मे प्रथम और ६२–६३ में कु० कान्ता बानोड़िया ने हिन्दी (एम० टी०) में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

बालिकाओ के मन में ललित कलाओं के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिये स्कूल के वार्षिक उत्सव में नाटक, रास गरबा, आदि विभिन्न कार्यक्रम रक्खे जाते है। प्रति दूसरे वर्ष आनद बाजार का भी आयोजन किया जाता है। देश प्रेम तथा अवनीत्मक एकता के भाव जागृत करने के लिये देश के मुख्य-मुख्य सामाजिक तथा राष्ट्रीय त्यौहार स्कूल में मनाये जाते है।

पाठशाला में अध्ययन के लिये बालिकाओं को देश प्रेम की शिक्षा भी दी जाती है। राजस्थान के कूपदान, बिहार बाढ़ फंड, पूना फंड प्रधान मंत्री रिलीफ फंड आदि में बालिकाओ ने तहेदिल से दान दिया। पिछले वर्ष देश की संकट कालीन परिस्थिति में विद्यालय की बालिकाओ ने वीर सैनिको के लिये स्वेटर, मफलर आदि स्वयं बुने और अपने आभूषण और धन दान देकर देश सेवा में हाथ बंटाया।

बच्चों में आत्मविश्वास तथा स्वावलबन की भावना पैदा करने के लिये १९५७ में स्कूल में गर्ल गाइड्स तथा बुलबुल का आयोजन किया गया है। साथ ही कर्तव्यपालन का पाठ विद्यार्थी अपनी स्टुडेंटस् कौंसिल से सीखते है। इसके वार्षिक चुनाव मे नन्ही नन्ही बच्चियां देश के आम चुनाव का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करती है साथ ही बच्चियो के बौद्धिक विकास के लिये एक पत्रिका भी निकाली जाती है।

ऐतिहासिक व भौगोलिक ज्ञान की जानकारी के लिये उन्हें पर्यटन हेतु ले जाया जाता है जैसे– राजस्थान, काश्मीर, गुजरात आदि- १९६१ में अपने पड़ौसी देश लका के ऐतिहासिक भ्रमण पर भी गए थे।

सामान्य ज्ञान तथा मनोरजन के लिये पुस्तकालय की एक हजार की विपुल पुस्तक संख्या तथा लगभग पचास दैनिक एव मासिक पत्रिकाओ का सदुपयोग बालिकाऐं ओपन सेल्फ सिसटम के फलस्वरूप स्वाधीनता पूर्वक करती है। विद्यालय सब साधनो से संपन्न है। इस वर्ष पनवेल में "साइन्स फेयर" में स्कूल ने भाग लिया था तथा इसमें पाच पुरस्कार प्राप्त किये।

यह संस्था अभी अपनी बाल्यावस्था में है। आशा है कि निकट भविष्य में सतत् परिश्रम से सचित यह पौधा, फले-फूले और भारत की प्राचीन गरिमा को उज्ज्वल करे।

★

आनन्द शाला

मलबार हिल के अंचल में नेपियन सी रोड है, इस घुमावदार शात रास्ते पर चन्द्रलोक नामक इमारत में "आनन्द शाला" नाम की यह संस्था अवस्थित है। दरिद्रनारायण को महान मान, उनकी सेवार्थ निर्धन जनों के बच्चो के लिये नि:शुल्क पढ़ाई की यह एक अनुपम शिक्षण संस्था है। आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई। उस समय शिक्षा का माध्यम राष्ट्र भाषा हिन्दी थी, किन्तु अधिकतम विद्यार्थियों की मातृभाषा मराठी को परिलक्षित कर विगत ३ साल से शिक्षा का माध्यम मराठी कर दिया गया है।

पढाई की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ साथ बच्चों को अमरीकी दूध व यूनिफार्म की व्यवस्था मुफ्त है। शाला में ८० बच्चे वर्तमान में पढ रहे हैं। कक्षाएँ नर्सरी से दूसरी तक है तथा शिक्षिकाओ की संख्या तीन है। बम्बई नगरपालिका द्वारा संस्था को मान्यता भी प्राप्त है।

शाला की सचालिका श्रीमती रतनदेवी मोहता ने उनके स्वर्गीय श्वसुर दानवीर सेठ रामगोपालजी मोहता से प्रेरणा प्राप्त कर इस शाला की स्थापना की थी। पुनीत उद्देश्य से स्थापित इस संस्था में श्रीमती रतनदेवी मोहता प्रतिदिन नियमपूर्वक शाला की गतिविधियो में दिलचस्पी लेती है।

समाज में निर्धन वर्ग के लिये किये गये प्रयास नि:सदेह अपने समाज की सबसे बड़ी सेवा होती है। अपने पावन उद्देश्य के प्रति सजग-जागरूक रहकर संस्था के संचालक गण दिनो दिन इसकी प्रगति के प्रयास में हाथ बँटा कर अभावो की पूर्ति करते रहें, ऐसी आशा है समाज की अन्य बहिनों द्वारा उनकी यह निस्वार्थ सेवा अनुकरणीय है।

●

बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रूइया बहुउद्देश्यीय हाईस्कूल

हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुये पार्ले के कुछ प्रतिष्ठित व विद्याप्रेमी सज्जनों ने हिन्दी शिक्षा मण्डल नामक संस्था की स्थापना की, और इसी संस्था के अन्तर्गत यहाँ सन १९४० से १९५३ तक एक हिन्दी पाठशाला चलती रही। इस पाठशाला के व्यय का भार श्री बृजमोहनजी रुइया, श्री मदनलालजी राजपुरिया, श्री विश्वम्भरलालजी रुइया, श्री रतनलालजी खेमका और श्री जगन्नाथजी चमडिया आदि महानुभावों पर था।

उपनगरों में हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल की क्षतिपूर्ति के लिये श्री बृजमोहनजी रुइया ने महन्त रोड, पंजाबी चाल के विशाल मैदान में सन् १९५२ में विद्यालय भवन का निर्माण कार्य शुरू किया, जो १९५३ में बनकर तैयार हो गया। इस भवन का उद्घाटन तत्कालीन बम्बई राज्य के मुख्य मंत्री श्री मुरारजी देसाई के करकमलों द्वारा २ जून सन् १९५३ को हुआ। तीन माले के इस विशाल भवन पर ९ लाख रुपये का व्यय हुआ, आवश्यकतानुसार फर्नीचर व शिक्षणसामग्री खरीदी गई। प्रथम वर्ष में ही शिक्षार्थियों की संख्या ४१८ हो गई क्रमशः २५० छात्र व १६८ छात्राओं ने प्रवेश लिया। विद्यार्थियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान में लगभग १७०० छात्रछात्राएँ विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षार्थियों की बढ़ती हुई संख्या के कारण इसमें दो पालियाँ (शिफ्ट्स्) चलाई जाती हैं। साथ ही जून १९५७ से इस विद्यालय में वाणिज्य शिक्षण का प्रबन्ध किया गया है और जून १९६२ से तान्त्रिक (टेक्नीकल सेक्शन) और विज्ञान (होम साइंस) की समुचित व्यवस्था कर दी गई है। इस प्रकार गत वर्ष से यह विद्यालय न केवल बम्बई अपितु महाराष्ट्र राज्य में सम्भवतः हिन्दी माध्यम का बहुउद्देश्यीय (मल्टीपरपज) एकमात्र विद्यालय है।

विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास विशेषकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिये सतत प्रयत्न किया जाता है, जिसके अन्दर निर्भयता, सेवा भावना, शौर्य, नैतिक कर्तव्य, स्वास्थ्य वर्द्धन आदि भावनाओं को प्रोत्साहन दिया जाता है व व्यायाम शिक्षण की विशेष व्यवस्था है। विद्यालय में सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक गतिविधियाँ चलती रहती हैं। जिनमें महान पुरुषों व नेताओं की जयन्तियाँ, पुण्यतिथियाँ १५ अगस्त व २६ जनवरी के राष्ट्रीय पर्व और वार्षिकोत्सव विशेष उल्लेखनीय है। इस विद्यालय में पधारते रहनेवाली महान विभूतियों में श्री श्रीप्रकाश, श्री शांतिलाल

शाह, डा० एन० एन० कैलाश, श्री हीरालाल शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय है।

विद्यालय में पिछले ४ वर्षों से हिन्दी माध्यम द्वारा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज की भी व्यवस्था की गई है। तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, राष्ट्रभाषा प्रचार सभा वर्धा तथा भारतीय विद्या-भवन बम्बई की संस्कृत परीक्षाओ से सम्बन्धित पढ़ाई की उचित व्यवस्था है। इस विद्यालय में साधनहीन छात्रों को सहायतार्थ बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुइया चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से पर्याप्त सहायता दी जाती है तथा विद्यालय का विद्यार्थी सहायता कोष एवं भूतपूर्व छात्र संघ छात्र-छात्राओ को पुस्तकें, कापियाँ, वस्त्र आदि की सहायता प्रदान करते है।

यह विद्यालय बम्बई में अपनी श्रेष्ठ पढ़ाई, समुचित प्रबन्ध, अनुशासन और एस० एस० सी० परीक्षा के शानदार परिणाम के लिये प्रसिद्ध है। विगत ५ वर्षों से इस विद्यालय का वार्षिक परिणाम बम्बई के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में सर्व श्रेष्ठ रहा है। सन् १९६२ में इसका परिणाम १०० प्रतिशत रहा। हिन्दी शिक्षा मण्डल का नाम गत वर्ष बदल कर बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुइया हाईस्कूल कर दिया गया है।

विद्यालय के सर्व प्रकार के विकास के लिये, भावी योजनाओं में सहकारी भण्डार तांत्रिक शिक्षण के लिये भवन निर्माण जिसके लिये एक भूमि का प्लाट खरीद लिया गया है, वाटिका, बाल क्रीडा मंदिर की योजनायें सम्मिलित है। इस प्रकार विगत २५ वर्षों से यह संस्था बहुउद्देश्यीय शिक्षण का प्रसार करने में अपना विशेष स्थान रखती है। विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति का श्रेय सक्रिय कार्यकर्त्ता, आचार्यगणों को है, जो विद्यालय की उन्नति के लिये रात दिन प्रयत्नशील रहते हैं। इसके द्वारा की जा रही उन्नति से स्पष्ट परिलक्षित है कि यह विद्यालय कुछ ही वर्षों में शिक्षा का एक आदर्श स्थल बनेगा जो अपने आप में पूर्ण होगा, यह विश्वास है।

विद्यालय के वर्तमान पदाधिकारी :–

अध्यक्ष : श्री घनश्यामदास पोद्दार

उपाध्यक्ष : श्री जयदेव सिंहानिया,

मंत्री : श्री पुरुषोत्तमलाल रुइया

स०मंत्री : श्री किशोरीलाल रुइया
श्री जगदीशप्रसाद रिंगसिया

★

श्रीमती दुर्गाबाई बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुइया प्राथमिक म्युनिसिपल शाला

हिन्दी–मराठी–गुजराती, विलेपार्ले

बम्बई म्युनिसिपल कोरपोरेशन शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की अपनी कोशिशों में प्रयत्नशील है। प्राथमिक शिक्षा में योगदान करना राष्ट्रीय भावना के प्रति आस्था प्रगट करना है।

सन् १९५६ में श्रीमती कपिला बहन खाण्डवाला जो कि उस समय बम्बई म्युनिसिपल शिक्षा समिति की अध्यक्षा थी उन्होंने श्री बृजमोहनजी रुइया से आग्रह किया कि विलेपार्ले (पूर्व) में स्थित जो प्राथमिक विभाग म्युनिसिपैल्टी द्वारा चलाया जाता है उसका एक विशाल भवन बनवाया जाय जिससे कि हिन्दी गुजराती और मराठी जनों के बच्चों के लिये शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया जा सके।

उपनगरो में हिन्दी भाषा भाषी जनता की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुये श्री बृजमोहनजी रुइया ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और लगभग पैंतीस हजार रुपयों का दान उन्हें देकर इस कार्य को सफल बनाने मे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

आज यह प्राथमिक स्कूल हर तरह से सुसज्जित है एवं योग्य और अनुभवी अध्यापक अध्यापिकाओ द्वारा इसका कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। भविष्य में क्षेत्रिय भाषा भाषी लोगो के के लड़को लड़कियो की ओर भी अच्छी सेवा कर सकेगा ऐसी आशा है।

★

सर्वोदय बालिका विद्यालय, मालाड
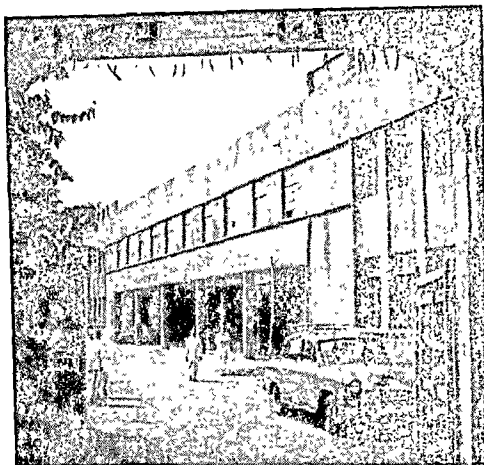
राजस्थानी सम्मेलन, मलाड द्वारा संचालित " सर्वोदय बालिका विद्यालय" २१ जून १९५९ से पहले केवल "सर्वोदय विद्यालय" के नाम से संचालित था। सर्वोदय विद्यालय, की स्थापना ६ नवम्बर १९५४ को केवल दो बच्चों को लेकर श्री हनुमान मंदिर में की गई थी। और इसे सुचारुरूप से संचालित करने हेतु सर्वोदय शिक्षण समिति नामक संस्था की स्थापना की गई। विद्यालय को भविष्य में स्थानाभाव महसूस नहीं हो इसलिये इसकी स्थापना के शीघ्र बाद ही श्री कुंडीलालजी सेकसरियाने इसे ३८०० वर्ग गज जमीन गोविन्द नगर, मलाड में प्रदान की, जिसमें श्रमदान से एक झोपड़ा बनाकर २५ जनवरी १९५५ को कक्षाएँ प्रारंभ की गई। तत्पश्चात् एक पक्का भवन (६ कमरे) बनाया गया। भवन छोटा होने के कारण छात्रों की संख्या पर्याप्त मात्रा में न हो सकी, अतः विद्यालय को आर्थिक स्थिति का सामना करना पड़ता था।

भवन के पूर्ण विस्तार के लिये आर्थिक सुदृढ़ता आवश्यक थी। तब यह भार राजस्थानी सम्मेलन, मलाड को सम्भालने के लिये कहा गया। सम्मेलन ने भार सम्हालते हुये चन्दे के लिये प्रयास करना शुरू किया जिसमें सर्व प्रथम श्री बृजमोहनजी रुईया ने ५०,०००) लिख कर एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया, शीघ्र ही रु.१,२५,०००) और लिखा गया, जिसके फलस्वरूप २२–४–५८ को भूमि पूजा के साथ भवन का निर्माण कार्य शुरू हुआ, जिसमें १२ कमरे बनाये गये। ता० १ अप्रैल १९५९ को सर्वोदय शिक्षण समिति ने व्यवस्था के हेतु–सम्पत्ति व लेन देन औपचारिक रूप से राजस्थानी सम्मेलन को सौंप दिया गया।

छात्राओं की बढ़ती हुई संख्या ध्यान में रखकर भवन के विस्तार के लिये ता० ३–१०–१९६० को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया, जिसके मुख्य अतिथि महाराष्ट्र राज्य के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण थे। जिसमें करीब २,२५,०००) रु० एकत्रित हुये, अपेक्षा से अधिक राशि प्राप्त करने में मारवाडी समाज की मुक्त हस्त दान की वृत्ति प्रशंसनीय रही, साथ ही विद्यालय में द्वितीय मंजिल पर एक हाल के निर्माण के लिए श्री रामकुमार चेरिटी ट्रस्ट से रु० ७५,०००) का आश्वासन प्राप्त हुआ। इस संस्था की स्थापना से उपनगरों में छात्राओं की शिक्षा की एक बड़ी समस्या का समाधान हुआ। सन् १९६१ में विद्यालय के पीछे की ओर करीब ६ हजार सात

सौ गज जमीन भी क्रय कर ली गई जिसमें हरियानिवासी श्री अर्जुनदास अग्रवाल का प्रशंसनीय सहयोग मिला । उपनगरो में बालिका विद्यालय की कमी को महसूस करते हुये जून १९५९ में इसे बालिका विद्यालय में परिवर्तित कर दिया गया । केवल प्राथमिक विभाग में ११ साल तक के लड़को को प्रवेश दिया जाता है। इसकी स्थापना काल से ही प्रतिवर्ष छात्र संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर है। वर्तमान में शिक्षा पानेवाली छात्राओं की संख्या करीबन ८५० है।

विद्यालय की ओर से मार्च १९६२ में प्रथम बार मेट्रिक की परीक्षा में २० छात्रायें बैठी, जिसका परीक्षाफल ५६ प्रतिशत रहा । सर्वप्रथम आनेवाली छात्रा को "घनश्यामदास जालान स्वर्ण पदक" प्रदान किया जाता है। साथ ही छात्राएँ भविष्य में सुगृहिणी साबित हो, इसलिये उन्हें समुचित स्त्रियोपयोगी शिक्षा दी जाती है, जिसमें गृहविज्ञान, कढाई, बुनाई, पाकशास्त्र, संगीत आदि के नाम उल्लेखनीय है। छात्राओ में अनुशासन एवं नागरिक भावना के विकास के लिये "विद्यार्थिनी-ससद" का भी सगठन किया गया है, जिसके अन्दर छात्राओं में से ही प्रधान मंत्री, एव मत्री का चुनाव होता है। पूरे स्कूल की छात्राओं को चार दल क्रमशः दुर्गा, लक्ष्मी, पद्मिनी, सरोजिनी में विभक्त किया गया है। जिसमें खेलकूद आदि की प्रतियोगिताएँ चलती रहती हैं। छात्राओ के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विस्तृत प्रांगण उपलब्ध होने से खेल कूद को काफी प्रोत्साहन मिलता है, क्रीडा के क्षेत्र में बालिकाओं को बागवानी की शिक्षा भी दी जाती है। विद्यार्थिनी संसद की तरह छात्राओ के लिये विद्यार्थिनी सहकारी सस्था की भी सन् १९६२ में स्थापना की गई। जिसमें शालोपयोगी वस्तुऐं सस्ते दामों में छात्राओं को उपलब्ध हो जाती है। सन् १९६३ से गर्ल गाईड की भी स्थापना की गई है।

दूर से आनेवाली छात्राओ की सुविधाओ को ध्यान में रखते हुये बसों की भी व्यवस्था है, जिसमें आने जाने का किराया नाम मात्र लगता है। छात्राओ की अन्य प्रवृत्तियो में हर वर्ष महान पुरुषों की जन्मतिथियाँ भी मनाई जाती है। तथा उनके आत्मिक विकास के लिये छात्र दिवस पर पढाने, व्यवस्था, नौकर आदि का काम भी छात्राएँ करती है।

सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय के अलावा बम्बई नगर मे छात्राओं के लिये विद्यालय का अभाव था, सर्वोदय बालिका विद्यालय की स्थापना से उस अभाव की पूर्ति तो हुई ही, उपनगरीय लोगों ने भी एक राहत की साँस ली। सर्वोदय बालिका विद्यालय की उपर्युक्त प्रवृत्तियो को दृष्टिगत रखते हुये यह नि.सकोच कहा जा सकता है कि इस विद्यालय की उन्नति अवश्यभावी है। जैसी कि सचालको की आकांक्षा है भविष्य में महिला महाविद्यालय की स्थापना इस विद्यालय का दूसरा आदर्श कदम होगा।

विद्यालय के वर्तमान पदाधिकारी–
सभापति :–श्री दुर्गादत्त थरड
उपसभापति :–श्री विश्वनाथ पोद्दार
स० स० मत्री :–श्री मुरलीधर जालान तथा श्री रामगोपाल रुइया
कोषाध्यक्ष –श्री पुरुषोत्तमलाल हरलालका

★

कलाकुंज

गाँवों में औरतें अपने फुर्सत के समय चरखा लेकर बैठ जाती है। यह चरखा गृहस्थी के चरखे के साथ २ चलता था– आधुनिक युग में बड़े २ शहरों में चरखे का प्रचलन हट गया है, पर उसकी बुनियाद नही। चरखे की जगह सिलाई की मशीन ने ले ली है। चरखे के पहिये की जगह अब सिलाई की मशीन का पहिया घूमता है और साथ साथ घूमते हैं जाने-अनजाने विचार। स्त्री की सृजन शक्ति के सहारे हम दिन ब दिन सम्यतर होते जा रहे हैं।

कलाकुंज ऐसी ही एक सामुहिक आहुति है। यह उपयोगी कलाओं का वह केन्द्र है जो मुख्यत. उन बदनसीब बहिनो को जिन्हें "बेचारी" कहते है, सिलाई व कसीदे की शिक्षा नि शुल्क देने को भरपूर कोशिश कर रहा है। गत चार वर्षो से नेपियन सी रोड पर बिना किसी टीम-टाम के यह अपने मिशन पर दृढ है। कितनी ही बहने इस उपयोगी कला के घाट आकर अपनी जीवन-तरणी पार करने में सहारा प्राप्त कर चुकी है अथवा कर रही हैं। फिलहाल ४० स्त्रियाँ सिलाई कक्ष में व २५ कसीदा के काम में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। उनके आमोद प्रमोद के लिये वर्ष में एक बार पिकनिक व सिनेमा का आयोजन किया जाता है। उन्हें प्रियप्रदर्शनियो में भी ले जाया जाता है। इस केन्द्र से शिक्षा लेकर बहुत सी बहने अपने पाँव पर खडी हो गई है और उनके पास सिलाई की मशीने भी उनकी अपनी हो चुकी हैं। उपयोगी कला शिक्षा का यह केन्द्र सुप्रसिद्ध मोहता परिवार के सरक्षण मे फल फूल रहा है। श्रीमती राधादेवी मोहता के निरीक्षण में यह आदर्श केन्द्र बहिनों के सोये भाग को जगाने में निरन्तर रत है।

★

नवजीवन विद्यालय
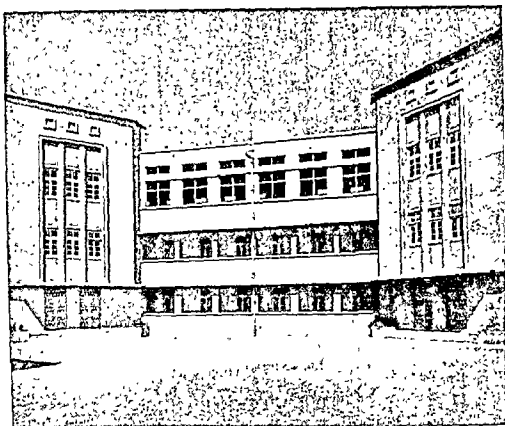
उपनगरो मे हिन्दी माध्यम से शिक्षा के अभाव की पूर्ति के हेतु राजस्थान रिलीफ सोसायटी द्वारा उपर्युक्त विद्यालय की स्थापना हुई। इस विद्यालय की स्थापना से उपनगरों में रहनेवाले हिन्दी भाषा भाषी लोगो को अपने बच्चो की समुचित पढाई के प्रति राहत महसूस हुई है, जिसका परिचय हमें विद्यालय में शिक्षा प्राप्ति के हेतु आने वाले विद्यार्थियों से मिलता है। विद्यालय में न केवल मलाड वरन् विरार, भयदर, नालासोपारा, कादिवली व जोगेश्वरी आदि स्थानों से भी बालक व बालिकाओ का आगमन होता है। विद्यालय में बालक-बालिकाओ की सख्या निरतर वृद्धि पर है ३१ दिसम्बर १९६३ को बालक बालिकाओ की कुल सख्या १६४३ थी जिसमें ९६६ बालक और बालिकायें माध्यमिक विभाग में व ६७७ बालक और बालिकायें प्राथमिक विभाग में शिक्षा पा रहे थे। विद्यालय में बाल वर्ग से लेकर ११ वी कक्षा तक की शिक्षा का हिन्दी व गुजराती माध्यमो द्वारा पूर्ण प्रबन्ध है। विद्यालय का इस वर्ष एस० एस०सी० का परीक्षाफल ९४ प्रतिशत रहा।

विद्यालय में बालक बालिकाओ के मानसिक भावो की प्रगति व सहकारी भावना पैदा करने के हेतु कोओपरेटिव स्टोर, पर्यटन, स्काउटिंग, गर्ल्स गाईड, ए० सी० सी० खेलकूद प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, राष्ट्रीय दिवसो पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाता है। इन प्रवृत्तियो के अलावा नन्हें मुन्नों में अवस्थित जन्मजात सहज-प्रवृत्तियो के विकासार्थ हस्तकला चित्र प्रदर्शनी, अनुशासन के भावो के प्रस्फुरण के हेतु विद्यार्थी-दिवस, राष्ट्रीय भावो की उत्पत्ति के हेतु महान पुरुषों की जयतियो आदि का आयोजन किया जाता है जिनके अन्दर विद्यालय के छात्र छात्रायें अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इससे लाभ उठाते हैं।

विद्यालय में एक विशाल हाल बनाने का कार्य निर्माणान्तर्गत है। इस हाल में १,५०० सीटें होगी जो विद्यालय के विभिन्न उत्सवो सभाओं आदि के लिये तो उपयोग में आयेगी ही साथ ही साथ उपनगरीय जनता की तत्सम्बन्धी मांग की पूर्ति भी इसके निर्माण से हो सकेगी यह हाल इस उपनगरीय क्षेत्र का सबसे बड़ा हाल होगा।

हिन्दी व गुजराती माध्यम से शिक्षा प्रदान करनेवाला यह विद्यालय उपनगरो में विशेषकर मलाड के निवासियो के लाभार्थ अपनी सेवायें अर्पित कर रहा है और इसके साथ साथ राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के उत्थान में भी लगा हुआ है। भविष्य में भी नित्य नूतन रूप धारण कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना आदर्श स्थापित कर सकेगा, ऐसी आशा है।

✶

श्री जमनादास अडूकिया बालिका विद्यालय
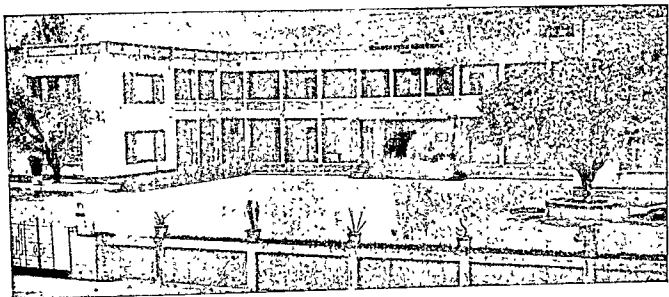
आज के युग में स्त्री शिक्षा का बहुत महत्व है। कांदिवली के आसपास के उपनगरों में कोई बालिका विद्यालय न होने के कारण श्री जमनादासजी अडूकिया ने एक बालिका विद्यालय की स्थापना का विचार किया। विद्यालय भवन का कार्य दिसम्बर १९५८ में आरम्भ हुआ और बहुत ही अल्प समय में भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया। जिससे स्कूल जून १९५९ से शुरु हो गया। बालिकाओं को कम शुल्क में शिक्षा दी जाय इस विचारधारा को लेकर शुल्क बहुत ही न्युन रखा गया। विद्यालय का उद्घाटन ७ जून १९५९ को माननीय श्री एस० के० पाटिल के कर कमलों द्वारा हुआ। विद्यालय में एम० एस० सी० तक गुजराती व प्राथमिक विभाग में हिन्दी माध्यम द्वारा शिक्षा दी जाती है।

विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस, बाली दिवस, महाराष्ट्र दिन मनाये जाते हैं। इस विद्यालय की बढती हुई प्रगति को ध्यान में रखते हुये महाराष्ट्र शिक्षा विभाग इसकी यथासाध्य सहायता कर रहा है। बालिकाओं में अनुशासन के ज्ञान के लिये स्कूल में संसद् की स्थापना की गई है इस संसद में विद्यालय की सभी बालिकाएँ सदस्यायें हैं। संसद् की मंत्रिणी के रूप में भी विद्यालय की छात्रायें ही कार्य करती है। साथ ही बालिकाओं को शिक्षण पद्धति और व्यवहारिक ज्ञान देने के लिये विद्यार्थी-दिवस मनाया जाता है, जिसमें बालिकायें शिक्षिका बनकर कक्षाओं का भार ग्रहण करती है। बालिकाओं के भावी जीवन सम्बन्धी मार्ग दर्शन देने के हेतु व्यवसायिक पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है। इसमें उन्हें महत्वपूर्ण स्थानों का अवलोकन् व सामूहिक रूप से भोजन बनाने का अवसर भी प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही साथ बालिकाओं के बाह्य ज्ञान के लिये समय समय पर पर्यटन के लिये भी ले जाया जाता है जिससे ऐतिहासिक स्थानों के साथ भारत के भावी नीवों का भी अवलोकन करवाया जाता है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के ज्ञान और प्रचार के लिये हिन्दी के वर्ग शुरू किये गये हैं। सितम्बर १९६० में ४८ बालिकाएँ राष्ट्रभाषा परीक्षा में बैठी थी जिसमें से ३९ बालिकाएँ उत्तीर्ण हुई और विद्यालय का परिणाम ७५ प्रतिशत रहा, गत वर्ष परीक्षा परिणाम शत् प्रतिशत रहा।

विद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त कर जाने वाली छात्राओं की भीनी भीनी याद बनी रहे इसलिये विद्यालय की छात्राओं लिये विदाई समारोह का भी आयोजन किया जाता है जिसमें उनका आपसी प्रेम भली प्रकार दर्शित होता है।

विद्यालय में नई चेतना लाने के लिये हर वर्ष आनन्द मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें प्रत्येक वर्ग की बालिकाओं द्वारा उनके बनाये गये व्यंजनों को अभिभावकों द्वारा देखा जाता है। सहकार की भावना का विकास और प्रेम की उत्पत्ति करने के हेतु यह आयोजन किया जाता है।

विद्यालय ने रोड सेफ्टी पुलिस के एक दल का भी गठन किया है जिसको आवश्यक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। व सड़क सुरक्षा के लिये इसका समय समय पर उपयोग किया जाता है साथ ही ऊँच नीच का भाव मिटाने के लिये विद्यालय ने एक बुल बुल दल का भी संगठन किया है। रोड सेफ्टी पुलिस दल की तरह रेड क्रास के दल का भी गठन

किया गया है। इसमें प्राथमिक उपचार की शिक्षा प्रदान की जाती है जिससे आवश्यकता होने पर उनका उपयोग किया जा सके। बालिकाएँ एक सहकारी स्टोर का भी संचालन कर रही है। यह को-ऑपरेटिव आधार पर चल रहा है। जो उचित मूल्य पर बालिकाओं को उनकी जरूरत का सामान प्रदान करता है। व लाभ बालिकाएँ आपस में बाँट लेती है। तथा लाभ का कुछ अंश स्वेच्छा से विद्यार्थी सहायक फण्ड में दिया जाता है। गरीब बालिकाओं की सहायतार्थ एक बुक बैंक की स्थापना की गई है। जो बालिकाएँ पुस्तक खरीदने में असमर्थ होती है वे पांच रुपये जमा देकर अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकें प्राप्त कर सकती हैं। साथ ही अत्यन्त गरीब छात्राओं की सहायता के लिये एक सहायता कोष का गठन किया गया है जो गरीब छात्राओं को मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करता है। साथ ही अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिता वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है।

छात्राओं को हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने में उन्हें जीवन के हर अंग में प्रवीण करने के हेतु व उनकी सहायतार्थ व लाभार्थ विद्यालय में इतने विशाल पैमाने पर जो प्रवृत्तियाँ चलाई जाती है –निःसंदेह विद्यालय के संचालक उसके लिये बधाई के पात्र हैं। विद्यालय का संचालन श्री जमनादास अडूकिया ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। विद्यालय दिनोंदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहे, छात्राओं को समुचित शिक्षा मिले यही इस विद्यालय के संचालकों का एक मात्र लक्ष्य है।

★

शिल्पम

आज से लगभग ६ साल पूर्व " शिल्पम" की स्थापना उन बहनों के लिये की गई, जो अपनी छोटी सी गृहस्थी में व्यस्त रहते हुये भी, थोड़ा समय इधर उधर बैठ कर नष्ट कर देती है। घर का खर्च अकेले पुरुष को भार स्वरूप महसूस होता है। उसकी भी घर में रहकर थोड़ी मदद पहुंचा सकती है। जीवन के टेढ़े मेढ़े रास्ते पर तथा अच्छे बुरे समय में वे अपने पांव पर खड़े रहने की हिम्मत कर सकती हैं। उन्हें एकाएक किसी के सामने हाथ फैलाने के लिये मजबूर नहीं होना पड़े इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये "शिल्पम" की स्थापना हुई थी और इसके लिये ऐसे कार्य या प्रवृत्तियों के संचालन का निश्चय किया गया जिनके कारण बहिनें नवीन ज्ञान धारा से परिचित तो हो ही सकें साथ ही में उन्हे अपने जीवन का अंग भी बनालें ताकि समय पर उससे फायदा उठा सकें। और अपने स्वाभिमान की रक्षा की जा सके।

शिल्पम में स्त्रियों को बढ़िया कसीदाकारी सिखाई जाती है तथा उन्हे घर पर बनाने के लिये काम भी दिया जाता है ताकि उन्हे हर महीने कार्य सीखने के साथ साथ आमदनी भी होती रहे। जिससे समाज की बहिनें जीवन में एक नये अध्याय से परिचित हो सकें। भविष्य में उससे लाभ उठा सकें व साथ ही गृहस्थी को सुचारु रूप से चलाने के लिये कुछ आमदनी भी होती रहे।

वर्तमान में शिल्पम की सदस्याओं की संख्या ३५ है शिल्पम की संचालिका है श्रीमती पद्मावाई खेतान जिनकी सुयोग्य देखरेख में इसकी प्रवृत्तियां संचालित है।

समाज का सहयोग और बहनों की अधिकाधिक रुचि संस्था की प्रगति के लिये आवश्यक है और तभी शिल्पम समाज के लिये अधिकाधिक लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

जिन पवित्र उद्देश्यों को लेकर इसकी स्थापना हुई है व बहिनों के हितों को संरक्षण देने की वृत्ति है उससे शिल्पम दिनों दिन अधिकाधिक प्रगति कर समाज की सेवा करता रहेगा ऐसी आशा सबको है

★

श्री घनश्यामदास पोद्दार विद्यालय
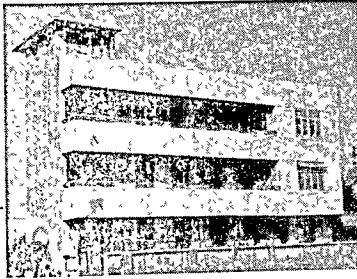
मध्यमवर्ग की आवास समस्या की परिस्थिति को देखते हुये समाज के कतिपय विशिष्ट व्यक्तियों ने, सन् १९४६ में अंधेरी में जमीन खरीद कर "राजस्थान कोओपरेटिव सोसायटी" की स्थापना की। महान देशभक्त स्वर्गीय श्री जमनालालजी बजाज की पुण्य स्मृति में सहकारी आधार पर जमनालाल बजाज नगर का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया साथ ही आस पास के क्षेत्र में हिंदी माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालय के अभाव की पूर्ति के लिये सन् १९५३ में प्राथमिक पाठशाला प्रारम्भ की। उस समय विद्यार्थियों की संख्या ५० थी।

जमनालाल बजाज नगर व आस पास के क्षेत्र की बढती हुई आबादी के कारण इसी पाठशाला को बढाकर माध्यमिक विद्यालय बना दिया गया साथ ही विद्यालय को सुचारू रूप में संचालन के हेतु इसके संचालन का भार राजस्थानी सेवा संघ को सौंप दिया गया।

संघ ने जब यह अनुभव किया कि विले पार्ले से लेकर घाटकोपर तक हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालय का अभाव है तो इसे उच्च शिक्षा का केन्द्र बनाने का निश्चय किया साथ ही औद्योगिक प्रगति के पथ पर समान्तर रहने के लिये प्राविधिक शिक्षा का महत्व ज्यादा है अत. इसमें प्राविधिक शिक्षा देने का निश्चय भी किया गया। इसके लिये एक नये भवन का निर्माण किया जायगा और इस का अनुमानित व्यय साढे पाँच लाख रुपये के करीब है।

इसमें करीब चार हजार वर्ग गज जमीन श्री राजस्थान को-ओपरेटिव हाउसिंग सोसायटी से विद्यालय के लिये मिल जायगी ऐसा आश्वासन मिल चुका है। सवा-डेढ लाख रुपये केन्द्रीय सरकार से भी मिल जाने की आशा है।

सम्प्रति विद्यालय में १० वी कक्षा तक की शिक्षा दी जाती है। आगामी शिक्षा सत्र से ११ वी कक्षा प्रारम्भ की जायेगी। १९६४-६५ में यह विद्यालय उच्च विद्यालय (हाईस्कूल) हो जायगा। संघ की प्रबल इच्छा है कि तभी से प्राविधिक उच्च विद्यालय वर्ग भी प्रारम्भ हो जाय।

★

हिन्दी विद्या भवन

मैरिन ड्राइव के आकर्षक वातावरण में नये उपकरणों एवम विशिष्ट शिक्षण पद्धति से सुसज्ज इस विद्यालय का संचालन इसी नामांकित सोसाइटी द्वारा होता है। इसके विशाल भवन का उद्घाटन गत वर्ष हुआ था तथा विधिवत शिक्षण भी उसी समय से प्रारंभ हुआ। समाज के एक विशेष अभाव की पूर्ति इसकी संस्थापना से हुई है।
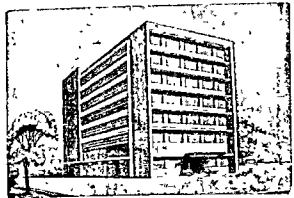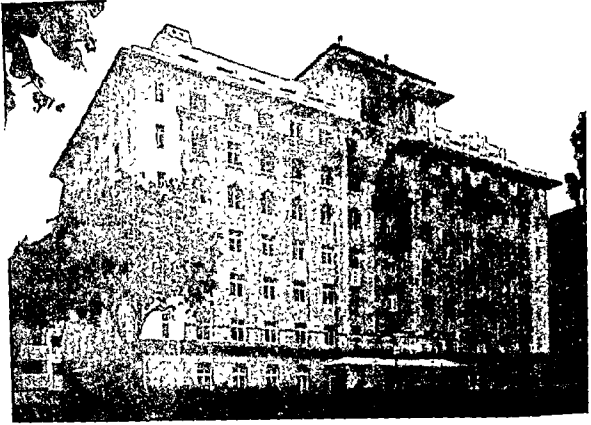
बम्बई अस्पताल

१९ जनवरी सन् १९४९ को सरदार वल्लभभाई पटेल के कर कमलों द्वारा बम्बई अस्पताल का शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ। अस्पताल भवन का निर्माण कार्य बहुत ही शीघ्र १९५० में पूर्ण हो गया, इसका उद्घाटन भी सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा २२ अगस्त १९५० को हुआ था। और आज सर्व साधारण की सेवा में रत यह अस्पताल अपने जीवन काल के १३ साल पूर्ण कर चुका है।

बम्बई अस्पताल की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर एक उपगृह का निर्माण करवाया गया। साथ ही उप-गृह में "बिड़ला मातुश्री सभागृह" का निर्माण करवाया गया। जिसमें १२०० सीटें हैं। हाल के ऊपर की दो मंजिलें नर्सों के लिये रहने के काम आती हैं। अस्पताल सभी प्रकार के आधुनिक उपकरणों से सज्जित है। अस्पताल में पाँच शीत-ताप नियंत्रक आपरेशन रूम हैं जिनमें मानवीय शरीर के सभी भागों के आपरेशन सफलतापूर्वक किये जाते हैं और उनकी सफलता के लिये बम्बई के सभी बड़े बड़े डाक्टरों की सेवायें प्राप्त की जाती हैं। अस्पताल में एक्स रे मशीन भी है। अस्पताल में रोगियों के ३८६ बेड हैं जिन में १०० मुफ्त इलाज के लिये आने वाले रोगियों के लिये रखे गये हैं। शोध के लिये रसायनशाला व आधुनिक पद्धति से रसोई का प्रबन्ध है। रोगियों के कपड़े रोज साफ करने के लिये स्वचालित धोने की मशीन भी है। अस्पताल में नर्सों को प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था है जो बम्बई नरसिंग कौंसिल से मान्यता प्राप्त है। अस्पताल में एक लाइब्रेरी है जिसमें विभिन्न देशों से प्रकाशित होने वाले शोध कार्यों का विवरण व नये प्रयोगों के पत्र-पत्रिकायें आते हैं। अस्पताल बोम्बे होस्पिटल जनरल नामक पत्रिका सन् १९५९ से प्रकाशित करता आ रहा है जो काफी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। केन्द्रिय सरकार की सहायता से परिवार नियोजन केन्द्र की स्थापना भी अस्पताल में १९६० में हुई थी जिसके लिये आर्थिक सहायता केन्द्रिय सरकार ने देनी स्वीकृत करली है।

रोगियों की बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखकर पूरक भवन पर दो मंजले और बढ़ाने का कार्य भी प्रारम्भ हो चुका है ताकि रोगियों की शैयाओं में वृद्धि की जा सके। यह अस्पताल बम्बई नगर का प्रमुख अस्पताल है जहाँ न केवल देश के विभिन्न भागों से बल्कि विदेशों तक से इलाज के लिये रोगी आते हैं।

हर वर्ष विदेशों से प्रख्यात डाक्टरों के अनुभवों व कार्य प्रणालियों से परिचित होने के लिये उन्हें आमंत्रित किया जाता है ताकि देश की जनता उनके अनुभवों से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकें।

अस्पताल की उपयोगिता व लोकप्रियता का ज्ञान तब होता है जब हम देखते हैं कि रोगियों की संख्या प्रति वर्ष लाखों में रहती है यह इसकी उपादेयता की प्रतीक है।

आधुनिक साधनों से सम्पन्न इस अस्पताल की व्यवस्था पर २५-३० लाख रुपया प्रतिवर्ष खर्च होता है। भविष्य में यह अस्पताल अधिक सम्पन्नता के साथ सर्व साधारण की सेवा करने में अपने क्षेत्र का विस्तार करेगा ऐसी आशा है। ★

हिन्दुस्तानी मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्स एसोसियेशन लि०

सन् १८९७ में मारवाड़ी एसोसियेशन के नाम से वर्तमान हिंदुस्तानी मर्चेन्ट्स एंड कमीशन एजेंट्स एसोसिएशन लि० की स्थापना की गई। इसकी स्थापना में स्वर्गीय श्री० जगन्नाथजी खेमका का प्रमुख हाथ रहा था। कुछ ही वर्षों बाद एसोसियशन का मूल नाम बदल कर उसका नाम हिंदुस्तानी नेटिव मर्चेन्ट्स् एसोसिएशन रखा गया। सन् १९४४ में फिर इसका नाम परिवर्तित कर हिंदुस्तानी मर्चेन्ट्स् एंड कमीशन एजेंटस् एसोसिएशन किया गया। सन् १९५१ में एसोसियशन को कंपनीज एक्ट के अंतर्गत पजीकृत करवा लिया गया और आज भी एसोसियशन लिमिटेड कपनी के रूप में सुचारू रूप से सचालित है। संस्था में ३१ सदस्यों का एक "बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स" है जिसका चुनाव प्रति वर्ष कम्पनीज एक्ट में बताये गये नियमो के अनुसार होता है। एसोसियशन का मुख्य ध्येय व्यापारियों में आपसी सहयोग, उनके व्यापार के लिये हर संभव प्रयत्न करना, या फैसला देना, केंद्रीय सरकार द्वारा प्रसारित व्यापार पर प्रभाव डालने वाली सूचनाओं का परिचय देना उनके हितों की रक्षा करना आदि प्रमुखतया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय एसोसियशन द्वारा कांग्रेस को दिये गये अनुदान व सहयोग उसकी देशभक्ति का प्रतीक है। स्वदेशी आदोलन में भी एसोसियशन का मुख्य हाथ रहा। अपने रचना काल के बाद एसोसियशन की गतिविधियां व्यापारी वर्ग तक ही सीमित रही यह बात नही उसने सन् १९१६ में मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल की स्थापना की थी जो हिंदी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाला एक आदर्श विद्यालय है। साथ ही एसोसियशन ने राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार को बल प्रदान करने के लिये इसमें राष्ट्रभाषा की परीक्षा देने का आयोजन किया गया है और उनकी पढ़ाई के लिये रात्रिकालीन नि.शुल्क वर्ग चलाये जाते हैं विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों की वर्तमान सख्या करीब चौदह सौ है।

एसोसियशन जहा एक ओर व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है वही वह बंबई अस्पताल जैसी महान् संस्था को दस हजार रुपया प्रति वर्ष प्रदान करता है। तथा अस्पताल के ट्रस्टियो में एसोसियशन का एक स्थायी ट्रस्टी भी है। साथ ही अपने कार्यालय में एक आयुर्वेदिक औषधालय का भी संचालन कर रहा है। जिसका लाभ एसोसिएशन के कर्मचारी व सदस्यगण पूर्णरूप से करते हैं। इस छोटे से चिकित्सालय के जरिये भी एसोसियशन राष्ट्र की एक बड़ी भारी सामयिक आवश्यकता की पूर्ति में लगा हुआ है। जो इसके अंदर हाल में खोले गये परिवार नियोजन केंद्र द्वारा संपन्न की जा रही है। जहां तक देश सेवा का प्रश्न है एसोसियशन हमेशा ही अग्रणी रहा है भारत के पूर्वी सीमांत पर चीन का आक्रमण होते ही एसोसियशन प्रधान मंत्री के आव्हान के पहले ही राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिये एक लाख रुपये का अनुदान दिया। एसोसियशन हमेशा से राजनैतिक चेतना में सहयोग देता रहा है पर वह दलबंदी से पृथक ही रहना श्रेयस्कर समझता है तथापि वह कांग्रेस की समाजवाद की नीति का पूर्ण समर्थक रहा है। एसोसियशन के सदस्यों में आपसी मतभेद हो जाय तो उन्हे दूर करने के लिये एसोसियशन हमेशा से ही तत्पर रहा है। प्रस्तुत मामलों का शीघ्रतापूर्वक और न्यायपूर्वक निपटारा करने में एसोसियशन को जो ख्याति प्राप्त है वह इनी गिनी सस्थाओ को ही उपलब्ध है। इसके कारण बहुत से सदस्यो को अदालत नही जाना पडता। साथ ही धन और समय की भी बचत होती है। आपसी सहयोग के साथ-साथ हुंडियों के भुगतान में भी एसोसियशन महत्वपूर्ण योग दे रहा है। आज भी प्रतिवर्ष लगभग ७०-८० लाख की हुडिया एसोसियशन में आती है जिनका भुगतान करने में एसोसियशन सहायता करता है।

आकस्मिक कठिनाई जैसे हड़ताल, बाढ आदि के समय एसोसियशन ने महत्वपूर्ण सेवायें की है। सन् १९६१ में केंद्रीय कर्मचारियों की हड़ताल के समय जब ६ दिन तक डाक तार विभाग का कार्य स्थगित रहा तब इस एसोसियशन ने अपने क्षेत्र के डाक वितरण आदि की व्यवस्था को महत्वपूर्ण ढंग से निभाया। आवागमन की समस्या के समाधान के लिये एसोसियशन के प्रतिनिधि रेलवे की बैठक में भाग लेते हैं।

व्यापारी वर्ग के हितो की रक्षा करता हुआ, उनमें आपसी सहयोग पैदा करता हुआ साथ ही शिक्षा व सामाजिक क्षेत्रों में रचनात्मक कार्यों का संपादन करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर द्रुत गति से अग्रसर है। व्यापारिक संस्था के रूप में शायद यही एक मात्र एसोसियशन है जो बंबई महानगरी में व्यापारिक हितों की कामना रखता हुआ समाज के अन्य अंगो के प्रसारण में भी उसी प्रकार योग दे रहा है।

भविष्य में भी समाज के हित, व्यापारियों का यह एसोसियशन रचनात्मक कार्यों में इसी प्रकार रुचि लेकर नव निर्माण के पुष्प बिखेरता जाये यही हमारी कामना है।

★

वेस्टर्न इंडिया चेम्बर ऑफ कामर्स लि०

सन् १९१४ में दि मारवाडी चेंबर आफ कामर्स के नाम से इस संस्था की स्थापना की गई। सन् १९२५ में इंडियन कंपनीज एक्ट १९१३ के अधीन उक्त संस्था "दि मारवाडी चेंबर आफ कामर्स लि०" के नाम से कंपनी के रूप में अवतरित हुई। इसमें राजस्थानियों के अतिरिक्त गुजराती, कच्छी, पंजाबी, मुल्तानी, सिंधी-पारसी, मुसलमान सभी जातियों के सदस्य हैं। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् १९४९ में इसका नाम बदल कर "दि वेस्टर्न इंडिया चेंबर आफ कामर्स लि०" किया गया।

मुख्यतया वायदे के व्यापार के संचालन हेतु इस संस्था की स्थापना की गई थी और अलसी तथा गेहूं के वायदे के व्यापार संचालन और संगठन में समूचे भारत में इसका अद्वितीय स्थान रहा है।

जब इस संस्था की स्थापना की गई उस समय बंबई शहर में वायदे के व्यापार के लिये कोई सुसंगठित संस्था नहीं थी। चेंबर द्वारा इस दिशा में बहुत ठोस कार्यवाही की गई और अलसी तथा गेहूं के व्यापार के लिये नियम तथा उपनियम बनाकर इसका संचालन और नियमन बडी सुंदरता के साथ किया गया। भारत सरकार द्वारा इसके उपनियम नमूने के रूप में स्वीकार किये गये थे। द्वितीय महासमर छिड़ जाने के कारण उक्त दोनों वस्तुओं के वायदे के व्यापार का संचालन सरकार द्वारा बंद कर दिया गया।

यद्यपि आरम्भ से ही इस चेंबर द्वारा व्यापार और व्यापारियों के हितों के संरक्षणार्थ समय-समय पर सरकार के पास आवेदन पत्र भेजकर व्यापारियों का प्रतिनिधित्व किया जाता रहा है तथापि वायदे के व्यापार पर सरकारी अंकुश आ जाने के बाद व्यापारियों की व्यापारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिये इसका प्रयास और अधिक हो गया है। इसके अतिरिक्त चेंबर के सभासदों का ध्यान लघु उद्योगों की स्थापना और उनके विकास की ओर आकृष्ट करने के लिये अनेक उपयोगी समाचार, सूचनायें और तत्सम्बन्धी सहायतायें देने की दिशा में चेंबर द्वारा कार्य किये जा रहे हैं। व्यापारिक शिक्षण प्रसार के उद्देश्य से चेंबर द्वारा महाराष्ट्र राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त गवर्नमेंट कमर्शियल डिप्लोमा के वर्ग भी संचालित किए जा रहे हैं। इस दिशा में थोड़े ही समय में इसकी लोकप्रियता काफी बढ गई है। इसका मुख्य कारण अध्यापन की उत्तम व्यवस्था और नाम मात्र की फीस है। इस के क्षेत्रों और अधिक विकसित किये जाने का विचार किया जा रहा है।

भारत मर्चेन्ट्स चेम्बर

व्यापार में और विशेषकर वस्त्र व्यवसाय में उत्पन्न होनेवाली नाना प्रकार की कठिनाइयों से व्यवसाय को मुक्त कराने तथा सुचारू-रूप से व्यवसाय को जारी रखने के साथ-साथ व्यापारियों के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्णय करने की आवश्यकता महसूस किये जाने पर नगर के कुछ प्रतिष्ठित व्यापारियों ने परस्पर विचार विमर्श करने के बाद १ जनवरी १९६० में इस चेंबर की नींव रखी।

व्यापारियों की लगन, श्रम तथा प्रयत्नों का ही यह फल था कि चार वर्षों के अल्पकाल में ही चेंबर ने महान सफलता के साथ-साथ व्यापारी वर्ग में लोकप्रियता प्राप्त की। कपड़े के व्यापार में आने वाली नाना प्रकार की कठिनाइयां, बिक्रीकर की उलझनें, श्रमिक-कानून के पेचीदे विवादों आदि को सुलझाने तथा इस संबंध में व्यापारियों का सही मार्ग प्रशस्त करने में इस चेंबर ने अपने जीवन काल से ही अद्भुत कार्य किया। इन सबका परिणाम था कि अल्पावधि में चेंबर के सदस्यों की संख्या बढ कर ३०० से ऊपर पहुंच गई।

अपने जन्मकाल के प्रथम वर्ष में ही चेंबर को सन् १९६० के अक्टूबर माह में भारतीय डाक विभाग का सहयोग मिला। चेंबर के अनुरोध पर डाक तार विभाग ने चेंबर कार्यालय के स्थान में "भारत चेंबर पोस्ट आफिस" के नाम से डाक घर खोलना स्वीकार कर लिया था तथा तत्संबंधी समस्त आवश्यक व्यवस्थायें कर दी थी। चेंबर के आग्रह पर इस डाक घर के कार्य का समय व्यापारी वर्ग के उपयोगिता की दृष्टि से दोपहर के १२ बजे से रात को ८–०० बजे तक रखा गया। जहां नगर के अन्य दूसरे डाक घर ५–०० बजे के बाद रजिस्टर्ड पत्र तथा इंशुरेंस आर्टीकल स्वीकार नहीं करते हैं, वहां भारत चेंबर डाक घर ६–३० बजे तक इन्हें स्वीकार करता है। व्यापारी वर्ग के लिए इस डाक घर के खुलने से बहुत ही सुविधा हुई है।

चेंबर के सदस्यों को बहुत बड़ी तादाद में सूती कपड़ा बंबई के बाहर भेजना पड़ता है और इसके लिए मध्य रेलवे तथा पश्चिम रेलवे दोनों का ही उपयोग करना पड़ता है। दोनों रेलवे भी चेंबर के सदस्यों के महत्वपूर्ण कार्य को देखते हुए वेस्टर्न रेलवे ने बंबई शहर की अपनी स्टेशन सलाहकार समिति में तथा सेंट्रल रेलवे ने अपनी डब्लू० बी० सी० सी० में चेंबर के प्रतिनिधित्व के लिए एक सीट प्रदान की है। यह चेंबर का महत्व ही दर्शाता है।

चेंबर के सदस्य केवल व्यापारिक गतिविधियों में ही भाग लेते हैं ऐसी बात नहीं है। सामाजिक तथा शैक्षणिक कार्य में भी चेंबर के सदस्य किसी से पिछे नहीं है। बाढ जैसे राष्ट्रीय संकट के समय चेंबर ने बाढ पीडितों की सहायता करने जैसे मानवीय कार्य में हाथ बटाया था। रोहतक तथा पूना के बाढ के समय चेंबर ने बाढ पीडितों के लिए अपने सदस्यों से चंदा, कपड़ा तथा जीवन यापन की जरूरी चीजों को एकत्रित कर उन्हें संबंधित क्षेत्रों में भेज कर सामयिक सहायता की थी।

राष्ट्रीय संकट के समय जबकि चीन के नृशंस आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए जब सभी लोगों से सहायता करने की अपील की गई थी, तब भी चेंबर किसी से पिछे नहीं रहा था। उसने अपने सदस्यों तथा अन्य दूसरे व्यापारियों से काफी तादाद में रुपया तथा सोना आदि एकत्र कर तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री० एम० एस० कन्नमवार को एक समारोह में राष्ट्रीय सेवा के लिए समर्पित किया था। इस तरह यह चेंबर बराबर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष

समाज की उन्नति की मूल भित्ति शिक्षा है शिक्षा को प्रोत्साहन मिले और समाज में शिक्षितों की वृद्धि हो तभी समाज की उन्नति सभव है, इसी विचारधारा को लेकर एक जातीय कोष की स्थापना का विचार किया गया तदनुसार सन् १९२३ में इस कोष की स्थापना अग्रवाल महासभा अधिवेशन में श्रीशिवनारायण नेमाणी के सुप्रयत्नो से हुई। कोष के मूल उद्देश्यों में अग्रवाल जाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना, असमर्थ भाई, बहिनों को सहायता देना, मूलभूत भावना रही है। सेवक संघ के अन्तर्गत समाज के सेवकों को निर्वाह व्यय मात्र देकर पारिवारिक चिन्ताओं से उन्हें मुक्त रखा जाता है। सामाजिक संस्थाओं को सहायता देना तथा लघुगृह उद्योगों के लिये सहायता देना भी कोष की योजनाओं के अन्तर्गत है।

कोष की विभिन्न प्रवृत्तियों में छात्रवृत्ति जो अग्रवाल विद्यार्थियों को दी जाती है प्रतिवर्ष सैकड़ों विद्यार्थियों को स्कूल, कालेज व विदेश में अध्ययनार्थ हजारों रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। जिसका लाभ सम्पूर्ण भारत के अग्रवाल भाई उठाते हैं। साथ ही जो अग्रवाल भाई बहिन वृद्धावस्था या अन्य कारणों से धन अर्जित करने में असमर्थ होते हैं व दूसरे शब्दों में जिनकी आय का कोई साधन नहीं होता उनको कोष प्रति माह के हिसाब से राशि भेजकर बहुत बड़े पुण्य का काम करता है। वर्तमान में करीब ७० विद्यार्थी छात्रवृत्ति व ७५ व्यक्ति असमर्थ सहायता प्राप्त कर रहे हैं।

इसके अलावा विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्ति के बाद बेकारी का सामना नहीं करना पड़े इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर चुरू, रतनगढ, सीकर, लक्ष्मणगढ, फतेहपुर, रामगढ आदि शहरों में शीघ्रलिपि व टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे शिक्षा प्राप्ति के तत्काल बाद विद्यार्थियों को कार्य मिलने में कठिनाई नहीं हो। लघु एवम् कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये एक मुश्त एक बन्धु को रुपये पांच सौ तक की सहायता दी जाती है। जिससे वह अपनी रोजी के साथ साथ आर्थिक स्थिति भी सुधार सके।

सामाजिक सेवा के साथ साथ आकस्मिक विपत्तियों में भी कोष सदैव अग्रणी रहा है। पूना बाढ के समय धन-वस्त्र की सहायता के साथ ऋण भी प्रदान किया गया ताकि बाढ़ पीड़ित व्यक्ति अपने रोजगार को पुन. जमाकर अपनी स्थिति सुदृढ कर सके। इसके अलावा प्रतिवर्ष अग्रसेन महाराज की जयन्ती मनाई जाती है। जिसमें काफी सख्या में मारवाड़ी भाई एकत्रित होकर अग्रसेनजी के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। माटुंगा में कोष ने अग्रवाल नगर नाम से १०० ब्लाकों के छै भवनो का निर्माण करवाया जिसमें अग्रवाल भाई सुविधा-पूर्वक निवास करते हैं। आवास की दृष्टि से अग्रवाल नगर की व्यवस्था सुन्दरतम् है।

सामाजिक व धार्मिक वृत्तियों के सचालन व सहयोग के साथ साथ कोष अन्य सस्थाओं को भी सहायता देकर उनके संचालन में महत्वपूर्ण योग देता है। काफी वर्षों तक अपनी आय का पच्चीस प्रतिशत भाग राजपूताना शिक्षा मण्डल को देकर सस्था को सुचारु रूप से संचालन के हेतु योग दिया व मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय को दो हजार रुपया वार्षिक प्रदान किया जाता है। अबतक कोष करीब ११ लाख रुपये वितरित कर चुका है तथा रु. ५५००० प्रतिवर्ष अपने उद्देश्यों के अन्तर्गत कर रहा है।

कोष के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित हैं :—

सभापति : श्री पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला
उपसभापति : „ रामप्रसाद पोद्दार
संयुक्त मंत्री : „ मुरलीधर बजाज
„ तोलाराम चुड़ीवाला

*

माहेश्वरी प्रगति मंडल, बम्बई

बंबई के माहेश्वरी समाज के सज्जनों ने बंबई में माहेश्वरी प्रगति मंडल की स्थापना करने का निश्चय किया, तदनुसार इसकी स्थापना सन् १९५७ में हुई।

६ वर्ष की अल्प अवधि में मंडल ने जो विकास किया है उसकी समाज में भारी प्रशंसा की गई है। इस अवधि में मंडल ने अपने कार्यक्रमों में सास्कृतिक, सदस्यता अभिवृद्धि, छात्रवृत्ति योजना, वित्तीय सुधार आदि कई महत्वपूर्ण गतिविधियों का समावेश किया है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत महेश नवमी तथा होली के त्योहार नियमपूर्वक हर वर्ष बड़े उत्साह के साथ मनाये जाते हैं।

मंडल का सबसे महत्वपूर्ण कार्य छात्रवृत्ति योजना द्वारा समाज के मध्यमवर्गीय शिक्षार्थियों की सहायता करना है। इस दिशा में प्रयास जारी है और योजना के शीघ्र कार्यान्वित होने की संभावना है। इस कार्य में निरंतर सहायता देने वालों में श्री सूरजरतन दमाणी, श्री भगवानदास तोषनीवाल, श्री बंसीधर मोमानी एवं श्री श्रीराम तापड़िया के नाम विशेष उल्लेखनीय है। मंडल अखिल भारतवर्षीय महासभा द्वारा संचालित माहेश्वरी पाक्षिक पत्र को स्वावलम्बी बनाने का भी प्रयास कर रहा है।

सदस्यों की विभिन्न समस्याओं से परिचित होने के लिये एक परिपत्र का आयोजन किया गया है। परिपत्र द्वारा मंडल को सदस्यों के व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक सामाजिक एवम् व्यापारिक घटनाओं की जानकारी मिलेगी जिससे मडल उनकी समस्याओं को सुलझाने में सहायक हो सके।

माहेश्वरी जनगणना, कानूनी एवम् चिकित्सा संबंधी परामर्श, कार्योपलब्धि आदि विभिन्न योजनाओं को निपुणता से चलाने के लिये उपसमितियों का निर्माण किया है जो सुचारू रूप से सचालित है।

निम्नलिखित सुयोग्य एवम् कर्मठ समाजसेवी व्यक्तियों के हाथों में मंडल की वर्तमान बागडोर है —

अध्यक्ष—श्री सूरजरतन दमाणी
उपाध्यक्ष—श्री बंसीधर मोमानी
सं० मंत्री—श्री श्रीराम तापड़िया
श्री बंसीलाल बाहेती

*

राजपूताना शिक्षा मण्डल

मार्गशीर्ष शुक्ला १३ सम्वत् १९७६ को इसकी स्थापना शेखावाटी शिक्षा मण्डल के नाम से हुई थी। राजपूताना के विभिन्न भागों में प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने का भाव इसकी मूलभूत रूपरेखा में सन्निहित था। इसके लिये मण्डल ने स्वयं अथवा मालिकों से स्कूल लेकर उनका व्यवस्थित रूप से सचालन किया। धीरे धीरे संचालित शालाओं व मण्डल के कार्यक्षेत्र को विस्तृत करने के हेतु सन् १९२६ में इसका नाम बदल कर "राजपूताना शिक्षा मण्डल" कर दिया गया। शिक्षा प्रसार हेतु किये गये सतत् प्रयत्नो के फलस्वरूप मण्डल द्वारा संचालित सस्थाओ की सख्या अर्द्ध सैकडे तक पहुँच गई थी। इस मण्डल की स्थापना में सर्व श्री केशरदेव नेवटिया, भगतराम जालान, श्री नारायणसिह व वेणीप्रसाद डालमियाँ का विशेष हाथ रहा। मण्डल ने शिक्षा के प्रसार हेतु समाज के सभी वर्गो के हितो को ध्यान में रखा और उसके लिये हरिजनो को विशेष रूप से छात्र वृत्तियाँ प्रदान की इसी प्रकार राजपूतो में भी शिक्षा के प्रति झुकाव पैदा करने के लिये क्रमश हरिजन व राजपूत फण्ड की स्थापना की गई। राजस्थान मे छूआ-छुत की वृत्ति प्रबल होते हुये भी मण्डल द्वारा सचालित सस्थाओं में सभी वर्ग के विद्यार्थी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे, यह मण्डल की एक अभूतपूर्व सफलता थी। शालाओ के संचालन के साथ साथ मण्डल ने कासी का बास नामक छात्रावास का संचालन काफी समय तक किया। बालिकाओ को शिक्षित बनाने के हेतु मण्डल के प्रयासों से राजस्थान के विभिन्न भागो में कन्या पाठशालाओ की स्थापना हुई। जीवन की गति के प्रवाह को अनुकूल स्थिति मिलती रहे, जीवन यापन के साधन समुपस्थित रहे तदर्थ मण्डल ने विधवाओं को विशेष छात्रवृत्ति प्रदान कर विद्याध्ययन के लिये उन्हें प्रेरित किया ताकि वे अपना शेष जीवन आराम पूर्वक व्यतीत कर सकें।

मण्डल ने सचालित शालाओं को व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिये झुझनु में एक केन्द्र कार्यालय की स्थापना की जिसमे सचालित शालाओं की पूर्ण गतिविधियों का वर्णन मण्डल को मिलता रहे। इस प्रकार मण्डल ने राजस्थान में शिक्षा प्रसार के हेतु लाखो रुपये की धन राशि का व्यय किया तथा इतनी विशाल संख्या में पाठशालाओं का संचालन कर अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया। दैवी संकटों जैसे बाढ अकाल आदि समयों पर मण्डल ने मुक्त हस्त दान दिया है।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु मण्डल ने जितने कार्य किये हैं उनका क्षेत्र जितना विस्तृत रहा है उनको देखने हुये लगता है उस समय मण्डल अपने ढंग की एक विशिष्ट संस्था थी। आज भी शिक्षा प्रसार में मण्डल यथासाध्य योग प्रदान कर रहा है।

मण्डल के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित हैं:—

सभापति : श्री घनश्यामदास पोद्दार
उपसभापति: „ शिवकुमार भुवालका
मंत्री : „ श्रीनिवास बगड़का
सहायक मंत्री: „ राधाकृष्ण खेमका

★

प्रतापगढ़ (राजस्थान) प्रगति संघ

अपनी पाच वर्ष की आयु पूर्ण कर यह सघ षष्टम् वर्ष में प्रवेश करेगा। अपने इस शैशव काल में ही इस सघ ने प्रतापगढ निवासियों में प्रेम और सहकार पुष्पित और पल्लवित करने का प्रचुर प्रयास किया है।

सन् १९६२ में संघ की ओर से बंबई स्थित, प्रतापगढवासी छात्र-छात्राओ के लिये पाठ्यक्रम की व अभ्यास की पुस्तकें खरीद कर उन्हे कम मूल्य पर देने की योजना स्वीकार की गई इस योजना से समाज के काफी छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हो रहे हैं। सघ की सास्कृतिक समिति द्वारा खेल-कूद का भी समय समय पर आयोजन होता है। साथ ही सघ प्रति वर्ष अपना वार्षिक समारोह मनाता है जिसमें प्रतापगढ के भाई-बहिन इकट्ठे होकर अपनी जन्मभूमि के प्रति आसक्ति प्रगट करते हैं। इस अवसर पर सास्कृतिक प्रोग्राम भी रखे जाते हैं। कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले बालक-बालिकाओ का उत्साह बढाने के लिये उन्हे पुरष्कृत भी किया जाता है।

सघ ने प्रतापगढ स्थित, श्री भट्टारक यशकीर्ति विद्यालय, प्रतापगढ, के विकासार्थ रुपये एक हजार एक प्रदान किये। इस प्रकार संघ ने प्रतापगढ के शिक्षा क्षेत्र को अधिक व्यापक बनाने की चेष्टा की है। विद्यालय के बालक और बालिकाओं के लिये आसन व्यवस्था जुटाने में भी सघ ने रुपये तीन सौ की अतिरिक्त सहायता की है।

संघ समय समय पर छात्रवृत्ति भी प्रदान करता है जिसका सक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

वर्ष	विद्यार्थियों की संख्या	प्रदत्त राशि
१९६०–६१	१३	८९१)
१९६१–६२	३१	२०२३)
१९६२–६३	७१	३०१९)
१९६३–६४	१०४	४१३७)
१९६४–६५	लक्ष्य	५०००)

संघ के सदस्यों की वर्तमान संख्या २५० है तथा संघ के वर्तमान पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं:—

अध्यक्षा—डा. सुलोचना सेठ
उपाध्यक्ष—श्री केशरीलाल सालगिया
कोषाध्यक्ष—श्री सूर्यदत्त त्रिवेदी
सं० मंत्री—श्री सुजानमल धीया
„ „ —श्री भंवरलाल बंडी

आशा है संघ इसी प्रकार सर्व साधारण की सेवा करता रहकर अपने उद्देश्य के दिनोदिन नजदीक पहुंचेगा। ★

राजस्थान ग्रेज्युएटस् एसोसिएशन

राजस्थान ग्रेज्युएटस् एसोसिएशन, बंबई में स्नातक एवं स्नातकोपरांत राजस्थानियों की संस्था है। इसकी स्थापना सन् १९५५ में हुई थी। जिन उद्देश्यों को लेकर इस एसोसिएशन की स्थापना हुई वे निम्नलिखित हैः—

(क) राजस्थानी स्नातकों में आपसी सहयोग व सम्पर्क स्थापित करना।

(ख) राजस्थानी स्नातकों के सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसार करना एवं उनके लिये सभा, भाषण, सभाभोज, पर्यटन आदि का आयोजन करना।

(ग) शैक्षणिक संस्थाओं, विशेषकर राजस्थान में स्थित संस्थाओं से संपर्क रखना।

(घ) देश के विशेषकर राजस्थान के लिये व्यापार, आर्थिक व सामाजिक प्रगति के लिये अनुसंधान करना।

(ङ) सदस्यों की हर संभव सहायता करना।

(च) ऐसे सभी कार्य करना जिनसे इसके उद्देश्यों की पूर्ति हो।

स्थापना काल से ही एसोसिएशन ने सर्वसाधारण की सेवा की है, उसमें नौकरी दिलवाना, छात्रवृत्ति प्रदान करना, सहायता करना, लघुउद्योगों के लिये सूचना देना आदि उल्लेखनीय है।

वर्तमान में एसोसिएशन के ४०० सदस्य हैं। एसोसिएशन का राजस्थानी संस्थाओं में गौरवपूर्ण स्थान है। सदस्यों की श्रेणी-संरक्षक, आश्रयदाता, आजीवन व साधारण है।

राजस्थान के गौरवपूर्ण इतिहास का परिचय बंबई वासियों को मिले, इस लिये २६ नवंबर १९६३ को एसोसिएशन ने मीरा जयंती मनाई, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा की गई।

एसोसिएशन के संरक्षकों में श्री० राजबहादुर, श्री० श्रीप्रकाश, श्री० श्रीमाली रह चुके हैं।

एसोसिएशन अपना स्वय का भवन प्राप्त करने हेतु प्रयास कर रहा है जिससे अपनी गतिविधियों को विस्तृत कर राजस्थानी स्नातकों की अधिक से अधिक सेवा कर सके।

राजस्थानी स्नातकों के हितार्थ इस एसोसिएशन के निर्माण से एक अभाव की पूर्ति हुई है। एसोसिएशन जिस ढग से अपनी गतिविधियों का व कार्यों का सफल संपादन कर सेवा कर रहा है, उससे स्पष्ट परिलक्षित है कि सर्वसाधारण की व राजस्थानी स्नातकों के हितार्थ दिनोदिन अधिक प्रगति करेगा, ऐसी आशा सभी लोगों को है।

★

राजस्थान कला केन्द्र

राजस्थान कला केंद्र की आज से १५ साल पूर्व स्थापना हुई थी। १९५७ तक कला केंद्र द्वारा प्रतिवर्ष राजस्थान दिवस मनाया जाता रहा क्योंकि केंद्र का जन्म दिन का इतिहास भी राजस्थान के एकीकरण के साथ जुड़ा हुआ है। संस्था के मूलभूत उद्देश्य राजस्थानी कला और संस्कृति का यहां प्रचार करना है। उद्देश्यपूर्ति के हेतु केंद्र का अपना विधान है तथा सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट के अनुसार केंद्र पंजीकृत है।

केंद्र की गतिविधियों में राजस्थानी लोकगीतों का संग्रह, नृत्य, व नाटकों का प्रचार प्रसार करना और विशिष्ट अवसरों पर कवि सम्मेलन व नाटक प्रस्तुत करना है जिससे सर्वसाधारण राजस्थानी कला व संस्कृति से परिचित हो सकें।

संकट काल में केंद्र सदैव अग्रणी रहा है। सन् १९५३ में राजस्थान में अकाल पड़ा उस वक्त जोधपुर में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिससे प्राप्त विपुल धन राशि राजस्थान सरकार के राहत कोष को प्रदान की गई थी। १९६३ में चीन के हमले के समय मे दो विशाल कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और उनसे प्राप्त कुल धन "सुरक्षा कोष में" प्रदान कर दिया गया।

केंद्र ने बबई और नागपुर में आयोजित "नाट्य स्पर्धा" प्रतियोगिता में प्रथम पारितोषिक प्राप्त किये। सन् १९५७ में १६ दिन का सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें ५० राजस्थानी कलाकारों द्वारा राजस्थान के लोकगीतों व कला का प्रदर्शन किया गया। श्री जयनारायण व्यास की सेवायें संरक्षक के रूप में प्राप्त करने का सौभाग्य केन्द्र को प्राप्त हुआ है। राजस्थान सरकार द्वारा भी दान राशि स्वीकृत हुई है। केंद्र एक विद्यार्थी गृह बनाने का भी विचार कर रहा है :—

वर्तमान पदाधिकारी

अध्यक्ष	श्री० एस० आर० पुरोहित
मंत्री	श्री० सज्जन
संयुक्त मंत्री	श्री० एस० के० हरस

राजस्थान की कला और संस्कृति के प्रसार में लगा यह केंद्र निःसंदेह राजस्थान की कला व संस्कृति का सबसे बड़ा सेवक है जो उसका परिचय अन्य भाषावाले लोगों व प्रान्तों को दे रहा है। कला के मूलरूप को जीवित रखते हुये उसे बढ़ावा देता रहे ऐसी शुभकामना प्रत्येक प्रवासी राजस्थानी की है।

★

राजपूत सेवा संघ

आज से चौदह साल पहले १९५० में राजस्थान के ५-७ उत्साही राजपूतो ने मिलकर इस संस्था की नींव डाली। शुरू में इस संस्था का उद्देश्य बंबई में बाहर से आये राजपूत भाइयों की मदद करना उनको नौकरी दिलाने में सहायता करना रहा। राजपूत सेवा संघ नाम होने पर भी कोई भी राजस्थानी इसका सदस्य बन सकता है। वास्तविक रूपरेखा जो इसके उद्देश्यो को लेकर चलती है प्रवासी राजपूतो की हर तरह से मदद करना है।

सांस्कृतिक गतिविधियों में होली व दशहरे पर स्नेह समेलन का आयोजन किया जाता है। बाहर से आये व्यक्तियों के खर्च की व्यवस्था का भार भी यह संस्था वहन करती है साथ ही उनके बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान कर उनका उत्साह भी बढाती है। संस्था अभी तक करीबन ३०० आदमियों को काम दिलवा चुकी है। सतत् प्रयत्नों के बावजूद संस्था के प्रचार-प्रसार में स्वयं की जगह न होना सबसे बडी बाधा है। संस्था को कुछ प्रगतिशील व्यक्तियो के सहयोग का आश्वासन मिला है जिसके कारण इसकी समाज सेवा का क्षेत्र विस्तृत हो सके इन महानुभावो में श्री मदनलालजी जालान, महाराजा ईडर, ठा० धूड़सिंहजी आदि के नाम उल्लेखनीय है। संस्था का विधान बनाने में श्री० मदनलालजी जालान व श्री श्रीनिवासजी बगड़का का विशेष सहयोग मिला है।

आज के बदलते युग में राजपूत जाति अपने गौरव की रक्षा करती हुई जमाने के साथ आगे बढे संघ का यह मुख्य उद्देश्य रहा है। पुरानी विचार धारा को छोड़कर राजपूत नव भारत के नव निर्माण में सुयोग्य नागरिक की दृष्टि से सर्वप्रथम रहें उनमें शिक्षा का प्रचार हो, संघ की सदैव से कामना रही है व उनके लिये प्रयत्न चालू है।

संस्था के वर्तमान सभापति श्री भवानी सिंहजी राठोड हैं, जिन्होंने संस्था के कार्य के लिये अपने दो स्थान दे रखे हैं। प्रधान मंत्री श्री रामसिंहजी चौहान है जिनकी कुशल देख रेख में संस्था के कार्य सफल व सुचारू रूप से सचालित है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि सेवा भावी महानुभावों की मदद से संघ अपना कार्य आगे बढ़ाता रहेगा, उन लक्ष्यों की प्राप्ति का सतत् प्रयत्न करता रहेगा जिनको लेकर इसकी स्थापना हुई है और भविष्य में अपनी कार्यविधियो का प्रसार कर राजपूत भाइयों की अधिकाधिक सेवा करता रहेगा।

✶

राजस्थान रिलीफ सोसायटी

राजस्थान रिलीफ सोसायटी द्वारा संचालित नवजीवन विद्यालय,—मलाड की लोकप्रियता का आभास हमें सहज ही तब होता है, जब हम देखते हैं कि विद्यालय में न केवल मलाड के विद्यार्थी— अपितु विरार, नाला सोपारा, कादिवली, जोगेश्वरी आदि उपनगरो से भी शिक्षा ग्रहण करने हेतु आते है। वर्तमान में विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक बालिकाओं की संख्या १६४३ है। इस वर्ष विद्यालय का एस० एस० सी० का परीक्षाफल ९४ प्रतिशत रहा।

गत १६ वर्षों से सोसायटी समाज की सतत् सेवा कर रही है। सोसाइटी का सेवा कार्य खास तौर से चिकित्सा व शिक्षाका क्षेत्र रहा है, किंतु सामाजिक अवसरो पर सोसाइटी ने मानव कल्याणार्थ हर सभव कार्य किये है किंवा उनमें योग दिया है।

सोसाइटी द्वारा संचालित व संस्थापित राजस्थान रिलीफ सोसाइटी दातव्य औषधालय मानव समाज की चिकित्सा संबंधी सेवा करने में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। साथ ही सोसाइटी द्वारा असमर्थ रोगियो की चिकित्सा की व्यवस्था उनके घर जाकर नि:शुल्क अवलोकन व उपचार किया जाता है। इस औषधालय के लिये स्थान की कमी काफी दिनो से महसूस हो रही है वर्तमान मे औषधालय सिंहानिया बाड़ी में सचालित है।

विद्यालय में को-ओपरेटिव स्टोर, पर्यटन, स्काउटिंग, गर्ल्स गाईड, ए० सी० सी० खेलकूद प्रतियोगिता वाद-विवाद प्रतियोगिता राष्ट्रीय दिवसों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम व अन्य विभिन्न प्रवृत्तियों का समुचित सचालन और समय समय पर तत्संबंधी आयोजन होते रहते है।

इस वर्ष चीन के आकस्मिक हमले से प्रत्येक भारतीय नागरिक के दिल में अपने राष्ट्र के प्रति अपनी जवाबदारी की चेतना मिली। सोसाइटी ने भी सुरक्षा कोष के लाभार्थ आयोजन किया जिसमें महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री० कन्नमवार को पच्चीस हजार की राशि भेंट की गई, इसके साथ ही साथ स्कूल के बालक, बालिकाओं ने भी समय-समय पर धन राशि इकट्ठा कर सुरक्षा कोष में प्रदान की।

संस्था के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित है।

सभापति—श्री पुरुषोत्तमदास तोदी

उप-सभापति—श्री नागरमल गोयल

मंत्री—श्री शंकरलाल बजाज

उप-मंत्री—श्री बसंतलाल सराफ

कोषाध्यक्ष श्री गोपालचंद माहेश्वरी

मंत्री चिकित्सा विभाग— श्री पूरनमल बजाज

★

श्री राजस्थान को-ओपरेटिव् हाउसिंग सोसायटी लि० अंधेरी

मध्यम व निम्न वर्ग की आवास समस्या को हल करने के हेतु एक सोसायटी की स्थापना का विचार श्री श्रीनिवासजी बगडका ने किया तद्नुसार इसकी स्थापना ता० १९-५-१९४६ को हुई।

अपने उद्देश्य पूर्ति के लिये सोसायटी ने सर्व प्रथम सवालाख वार जमीन अंधेरी में २॥) के भाव से खरीदी बाद में करीबन छियालीस हजार वार जगह केन्द्रिय सरकार द्वारा सान्ताक्रूज हवाई अड्डे के विस्तार के लिये ले ली गई। अत: सोसायटी ने जमीन की कमी को महसूस करते हुये १००० वार जगह और खरीदी तथा तत्कालीन ६६ मेम्बरों को प्लाट भवन निर्माणार्थ दिये गये। कुछ समय बाद भारत सरकार ने सोसायटी की जमीन वापस कर दी इस प्रकार सोसायटी के पास कुल ९७ प्लाट हुये जिन पर सदस्यों द्वारा भवन निर्मित करवाये गये। सोसायटी ने सम्बन्धित भवनों के निर्माणार्थ पानी, बिजली स्टील आदि की व्यवस्था के लिये सतत् प्रयत्न किये जिसके कारण निर्माण कार्य में महत्वपूर्ण योग मिला। गाँधीजी के पंचम पुत्र श्री जमनालाल बजाज की स्मृति स्वरुप इस नगर का नाम जमनालाल बजाज नगर रखा गया। साथ ही नगर में रहने वालों की सुविधा के लिये डाकघर के लिये भवन निर्मित करके दिया इसी प्रकार आवश्यक सामानों की दुकानें भी निर्मित की गई ताकि जरूरत के सामान के लिये रहनेवालों को कष्ट न हो।

वर्तमान में सदस्य संख्या ७७ व सहकारी योजना के अन्तर्गत ८० है साथ ही शिक्षा के प्रचार प्रसार में सोसायटी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

घनश्यामदास पोद्दार स्कूल का संचालन पहले सोसायटी द्वारा ही होता था बाद में जमनालाल बजाज नगर की उन्नति के हेतु संस्थापित राजस्थानी सेवा संघ को इसका संचालन भार सौंप दिया गया। इस विद्यालय के निर्माण से उपनगरों में हिन्दी माध्यम से शिक्षा के इच्छुक विद्यार्थियों के शिक्षण स्थल के अभाव की पूर्ति हुई है।

सोसायटी मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों की आवास समस्या को हल करने के लिये सहकारी आधार योजना के आधार पर फ्लेट्स का निर्माण कर रही है, ताकि लागत मूल्य पर ही कमरे उपलब्ध हो सकें। सोसायटी नगर के मध्य एक उद्यान व पक्की सडक बनाने का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है। ताकि नगर की सुन्दरता में वृद्धि हो व रहने वालों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा मिल सकें।

सोसायटी के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित हैं—

सभापति : श्री भगवतीप्रसाद खेतान

अध्यक्ष : „ प्रेमचंद केड़िया

मंत्री : „ जगमोहन बगडका

श्रीमती उर्मिला दुबे

★

राजस्थानी सम्मेलन, मलाड

राजस्थानी समाज में सामूहिक रुप से मिलने जुलने के अभाव को दूर करने एवं समाज को संगठित करने के लिए दीपावली २००५ पर मलाड में सर्व प्रथम एक स्नेह संमेलन का आयोजन किया गया जिसमें एक स्थायी संस्था बनाने का निश्चय किया गया। तदनुसार ता. २१ नवंबर १९४८ को "मलाड राजस्थानी सम्मेलन" की स्थापना की गई। इस सस्था का कार्य क्षेत्र विस्तृत करने के लिए इसका नाम ता. १२-१२-५४ से "राजस्थानी सम्मेलन" कर दिया गया।

स्थापना के समय से ही इसका कार्यालय श्री० घनश्यामदास जालान, के निवास में रहा है।

प्रारंभ से ही इस संस्था का मलाड में एक हिन्दी माध्यम स्कूल खोलने का उद्देश्य रहा है। इस आकांक्षा की पूर्ति सन् १९५८ में "सर्वोदय बालिका विद्यालय" के रुप में हुई। सम्मेलन उपनगरों में राजस्थानी समाज की सेवा में निरंतर रत रहा। सन् १९५८ में राजस्थानी सम्मेलन की बंबई ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड कराया गया इसके साथ-साथ इनकम टैक्स एक्झेंप्शन सर्टिफिकेट भी मिल गया। इससे संमेलन को दान प्राप्ति में सुविधा हो गई।

संमेलन या संमेलन द्वारा संचालित संस्थाओं के दानदाताओं को उनके दान के अनुसार संमेलन का सदस्य बना लिया जाता है जिससे दान दाता भी अपने दान के उपयोग में सदैव संबंधित रह सके ५०,०००) या अधिक के दान दाता विशिष्ट संरक्षक हो जाते हैं और उन्हें बोर्ड आफ ट्रस्टीज में ट्रस्टी नियुक्त करने का अधिकार दिया गया है।

सर्वोदय बालिका विद्यालय के संचालन के साथ-साथ सम्मेलन अंतर्गत एक अध्यापिका प्रशिक्षण केंद्र भी संचालित करता है जिसमें एस० टी० सी० परीक्षा के लिए अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया जाता है। हिन्दी माध्यम का यह महिला प्रशिक्षण केंद्र सारे महाराष्ट्र राज्य में एक ही है।

विवाह शादी आदि में आवश्यक वर्तन सामान दरी आदि का एक वर्तन भंडार संमेलन ने स्थापित कर रखा है, जिसका उपनगरीय राजस्थानी एवं अन्य निवासी बहुत लाभ उठा रहे हैं।

उपनगरीय राजस्थानियों के लिए संमेलन हर वर्ष पुरुषों और स्त्रियों के अलग अलग दीपावली स्नेह संमेलन मलाड में आयोजित करता है। होली, दशहरा आदि त्योंहारों पर भी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

बिहार बाढ़ पीड़ितों के लिए एक सिनेमा शो द्वारा ३०००) रु० एकत्रित किये गये। इसी प्रकार सन् १९६२ में राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए सदस्यों से गिन्नी सोना रुपये आदि एकत्रित किये गये।

सम्मेलन ने शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रिय सेवा द्वारा बंबई की राजस्थानी संस्थाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है जो इसके सभापति श्री दुर्गादत्तजी धरड, भूतपूर्व सभापति श्री घनश्यामदास जालान एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं के अथक परिश्रम, सेवा-भाव और सक्रिय सहयोग से ही संभव हो सका है।

★

श्री राजस्थानी सेवा संघ
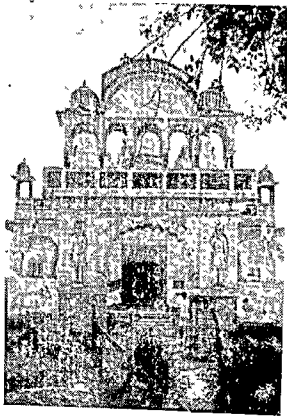
बम्बई के कुछ विशिष्ट समाज सेवी व्यक्तियों ने करीबन तीन वर्ष पूर्व इसकी स्थापना की थी। मई १९६० में संस्था पंजीयक (रजिस्ट्रार आफ सोसायटीज) से पजीकृत करवाली गई, और जून १९६० में उप-पूर्त (डिप्टी चेरिटी कमिशनर) से भी पंजीकृत करवा ली गई।

समाज हित, रचनात्मक कार्यों के संपादन हेतु यह आवश्यक सा हो जाता है कि अपने कार्यक्षेत्र के लिये एक केन्द्र चुना जाय। जहाँ कुछ मूलभूत सुविधायें उपलब्ध हो सकें। सघ ने श्री राजस्थान को ओपरेटिव हाउसिंग सोसायटी द्वारा निर्माण हो रहे "जमनालाल बजाज नगर" को केन्द्र बनाकर कार्यारम्भ किया। इसकी प्रवृत्तियों के संचालन की परिधि सिर्फ जमनालाल बजाज नगर को ही मानना उचित नहीं होगा हाँ उसे केन्द्र बिन्दु समझा जा सकता।

जमनालाल बजाज नगर जब सम्पूर्ण रूप से बनकर तैयार हो जायेगा तो उसमें सौ मकान होंगे जो अनुमानत. बारह सौ कुटुम्ब यानि छः हजार व्यक्तियों की वस्ती होगी। संघ का लक्ष्य है कि यह नगर सभी सामाजिक सेवा सस्थाओ से सम्पन्न हो।

इसी भावना और लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुये यहाँ पर एक लक्ष्मीनारायण मदिर का निर्माण प्रारम्भ गिया गया। जो करीबन बनकर तैयार है। मदिर का भव्य भवन राजस्थानी शैली पर आधारित है। लक्ष्मी, नारायण, शिव-पार्वती व हनुमानजी की सगमरमर (मकराणा) की मूर्तियाँ जयपुर के प्रख्यात कारीगरो द्वारा बनकर आ गई है। मंदिर में संगमरमर लगवाना अभी बाकी है। संगमरमर लगवाने का खर्च बीस हजार के करीब होगा।

श्री राजस्थान को-ओपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लि० ने नगर में एक प्राथमिक पाठशाला सन् १९५३ में प्रारम्भ की थी, सघ के बनने पर सोसायटी ने उक्त पाठशाला का सचालन भार सघ के सुपुर्द कर दिया। यही पाठशाला श्री घनश्यामदास पोद्दार बालिका विद्यालय के नाम से वर्तमान में आदर्श शिक्षण स्थल बनी हुई है।

सामाजिक जागृति व चेतना के साथ साथ मानवीय पहलुओं की उपेक्षा न करना ही अपने आप में सर्वांग सम्पूर्णता का भाव लक्षित माना जाता है। मनोरजन व क्रीडा के लिये वहाँ पर एक सतरण ताल एवं एक क्रीडा गृह बनाने की योजना है। साथ ही एक प्रसूति गृह व अस्पताल बनाने की योजना भी विचाराधीन है।

सघ की आगामी प्रवृत्तियो में नगर के मध्य एक पार्क व अतिथि गृह (वाडी) की योजना भी सम्मिलित है। पार्क के लिये सघ ने प्रारम्भ से ही नगर के मध्य में २४ हजार वर्ग फुट जमीन रखी है। जिसे संघ यथाशीघ्र कार्य रूप में परिणित कर सकेगा ऐसी आशा है।

तीन वर्ष की अल्पावधि में ही सघ ने जिस ढंग से सामाजिक कार्यों में हाथ बंटाकर सहायता की है तथा अपने विस्तृत दृष्टिकोण में अत्यन्त आवश्यक योजनाएँ स्वीकृत की है नि.संदेह उसके उज्ज्वल भविष्य के लिये काफी है तथा साथ ही उससे विश्वास होना चाहिये कि सघ अपनी योजनाओ को पूर्ण कर अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार कर सकेगा। वर्तमान पदाधिकारी, जिनकी कुशल देखरेख में कार्य अग्रसर है निम्न-प्रकार है :—

अध्यक्ष एवम् ट्रस्टी.—श्री घनश्यामदास पोद्दार
उपाध्यक्ष एवम् ट्रस्टी.—श्री प्रेमचन्द केड़िया
मंत्री :—श्री परमेश्वर बगड़का
सहायक मंत्री एवम् ट्रस्टी:—श्री बालमुकुन्द गुप्त
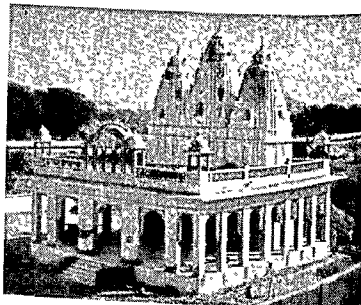
श्री गुरमुखराय सुखानंद दिगम्बर जैन धर्मशाला

इस धर्मशाला का निर्माण मार्गशीर्ष कृष्णा ५ सम्वत् १९७८ में हुआ था। बाहर से आगत यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही इसकी स्थापना हुई थी। इस धर्मशाला के निर्माण कार्य पर कुल लागत ५ लाख रुपया है। धार्मिक वृत्ति से स्थापित इस धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था के साथ साथ उनकी आवश्यकताओं का सभी जरूरी सामान मिलता है। इसका संचालन श्री सुखानंद ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

★
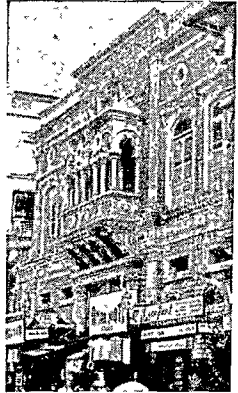
पंचायती बाड़ी

मारवाड़ी समाज के समाजसेवी सज्जनों ने मारवाड़ी पंचायती बाड़ी की आयोजना सन् १८८६ में की और उसी साल यह बाड़ी फतेहपुरिया पंचायती बाड़ी के नाम से बनाई गई। तब से लेकर आज तक यह बाड़ी सभी भाइयों के विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये तथा विशेष अवसरों पर काम में आती रही है। बाड़ी का हिसाब किताब शुरू से ही मे० ताराचंद घनश्यामदास रख रहे हैं। समय बीतने के साथ साथ बाड़ी में स्थान की कमी महसूस होने लगी। तदर्थ सदस्य बनाकर धन राशि इकट्ठी की गई व बाड़ी का नव निर्माण करवाया गया तथा इसके स्थायी फण्ड में वृद्धि की गई। वह आधुनिक ढंग से बनी आवश्यक सभी साज सामानों के साथ यह बाड़ी समाज की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। जनता को ज्यादा से ज्यादा सहूलियत प्राप्त हो यह बाड़ी के ट्रस्टियों का मुख्य ध्येय रहा है। बाहर से आनेवाले यात्रियों को बाड़ी में ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था है।

नेमाणी बाड़ी

नेमाणी बाडी ट्रस्ट के अन्तर्गत इसकी स्थापना सवत् १९६७ मे हुई थी। स्थापना के समय उपर्युक्त ट्रस्ट में चार ट्रस्टी थे, जिनकी देखरेख में इसका सचालन होता था। बाद में दो ट्रस्टियों द्वारा रु० ५०,०००) और लगाकर भवन निर्माण का विस्तार करवाया गया, ताकि स्थानाभाव की समस्या समाज के लिये कुछ कम हो सके। जनसख्या व बाहर से आनेवाले व्यक्तियों की सख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर होने के कारण बाडी का और विस्तार होना आवश्यक सा प्रतीत होने लगा। इन्ही सब असुविधाओ को ख्याल मे रखकर श्री मदनलालजी नेमाणी व श्री प्रसादीरामजी टिबडेवाला ने चालीस हजार की लागत से चौथी मजिल का निर्माण करवाया। इस प्रकार सपूर्ण भवन पर करीब ५ लाख रुपये की राशि व्यय हुई। बाडी का उपयोग शादी विवाह जनेऊ आदि शुभ कार्यो के हेतु किया जाता है। इस प्रकार के कामो के लिये बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ उठा सकता है। बाहर के आगत यात्रियो के लिये इसमें ठहरने की व्यवस्था है तथा आवश्यक सामानों की पूर्ति भी ट्रस्ट द्वारा होती है। यात्रियों की सुविधा व समाज के लाभार्थ स्थापित इस बाडी में समाज अधिकाधिक लाभ उठा रहा है। धर्म तथा कर्तव्य की भावना के सम्मिश्रण से जनहित के काम मे बाडी का महत्वपूर्ण स्थान है।
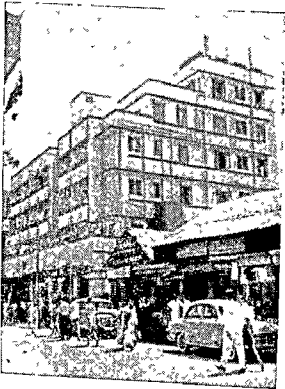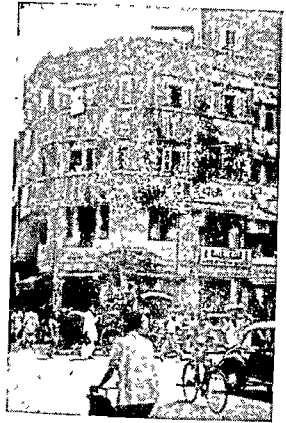
नाथूराम बाग

सन् १९८४ में श्रीमान् सेठ नाथूरामजी पोद्दार द्वारा उपर्युक्त भवन बम्बई के एक प्रमुख व्यक्ति से मोल लिया गया और उसी सन् में उसका जीर्णोद्धार कराया, उस समय यह भवन कच्चा बना हुआ था। तत्पश्चात् इसे अति शीघ्र पक्का बनाने में कई सरकारी कठिनाईयो का सामना करना पडा और कुछ समय के लिये योजना को स्थगित कर देना पडा। बाद में इसका निर्माण करवाया गया। सम्पूर्ण आधुनिक साज, सामानो व आवश्यक वस्तुओ से सज्जित करने के लिये भवन का पुन शिलान्यास १९६३ मे करवाया गया और अब बाडी पूर्ण रूपेण बनकर तैयार है। बिना किसी भेद भाव के जनसेवा के कार्यों में सलग्न है। बाडी मे शादी-विवाह व अन्य सामाजिक कार्यो का आयोजन समय समय पर होता रहता है। इसके साथ शादी विवाह आदि के लिये बर्तन, बिछाने के कपडे आदि का भी समुचित प्रबन्ध मालिको की तरफ से उपलब्ध है जिससे की जरूरत के सामानो के लिये तकलीफ नही उठानी पडती। नये बने भवन में पानी, बिजली, लिफ्ट आदि सभी सुविधाओ का सुन्दर प्रबन्ध है, व समाज के सहयोग में सहारा देती यह बाडी सेवा कार्य के क्षेत्र में अग्रसर है।

बिड़ला बाड़ी

श्री बिड़ला बाड़ी की स्थापना सवत् १९७५ में हुई थी। यह बाड़ी रायबहादुर सेठ बलदेवदास बिड़ला ने यात्रियों को ठहरने के लिये धर्मार्थ बनाई थी। जिसमें तीर्थयात्री भी उतर सकते हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये तथा उन्हें किसी तरह की तकलीफ न हो इसलिये पानी व बिजली का पूरा इन्तजाम है। यात्री अपना खाना स्वय तैयार कर सकें इसलिये रसोई घरों की भी व्यवस्था है। यात्री यहां पर आते रहते हैं, तथा बम्बई जैसे नगर में जहां आवास की समस्या जटिल है, वे सुविधापूर्वक अपना कार्य सम्पन्न कर वापस जा सकते हैं। बाड़ी के अन्दर शुरू से ही कुछ ब्राह्मण स्थायी रूप से रह रहे हैं। इसके सम्पूर्ण खर्च का भार इसके ट्रस्ट द्वारा वहन होता है। इसका अधिकाधिक सदुपयोग होता है।
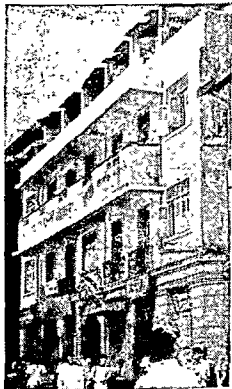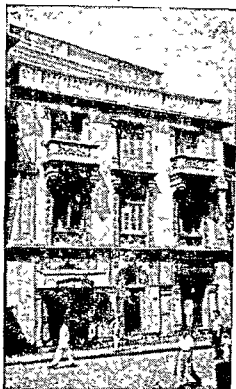
दाखीबाई सिंघानिया धर्मशाला

दाखीबाई सिंघानिया धर्मशाला ट्रस्ट के अन्तर्गत आज से करीबन ४० साल पूर्व श्रीमती दाखीबाई सिंघानिया (पत्नी श्री हरद्वारीमल सिंघानिया) ने उपर्युक्त धर्मशाला की स्थापना की थी। तब से यह बाड़ी, शादी, विवाह, कीर्तन, सभा तथा आगतुकों के ठहरने आदि विभिन्न कार्यों के उपयोग में आती है। जिस समय बाड़ी का निर्माण हुआ था, दो मजिल थी पर समाज की आवश्यकता व बाड़ी की जरूरत को महसूस करते क्रमश: तीसरी व चौथी मजिल और बनाई गई। शादी विवाह के लिये बर्तन व अन्य आवश्यक सामान दिये जाते हैं।

श्री रामनिरंजन ब्राह्मण बाड़ी

श्री रामनिरजन ब्राह्मण बाडी सवत् १९६७ में श्री रामनिरंजन झुंझनूवाला ने बाहर से आनेवाले व्यक्तियों की कठिनाइयों को दृष्टिगत रख कर बनाई थी। इस धर्मशाला के निर्माण में प्रमुख उद्देश्य था राजस्थान से आनेवाले ब्राह्मणों को सरक्षण प्रदान करना। वे यहाँ आकर इस बाडी में रहकर अपना कामधन्धा कर सकते थे, साथ ही बाडी में ठहरनेवाले यात्रियों को भोजन बनाने में मदद करते थे, अत यह धर्मशाला खास तौर से राजस्थानी ब्राह्मणों के रहने के लिये ही बनाई गई थी। स्थानाभाव को महसूस कर बाद में एक मजिल का और निर्माण करवाया गया। इसमें दो हाल ब्राह्मणों के पास है जिसमें करीबन ३०-४० ब्राह्मण रहते हैं। मुख्यरूप में स्वर्गीय सेठजी की धर्मादा वृत्ति ही इसकी स्थापना की मूल श्रेय थी जिसमें ब्राह्मणो के हितों की रक्षा का भाव सन्निहित था, और आज भी यह बाडी समाज के विभिन्न काम तथा यात्रियो के ठहरने, शादी विवाह, प्रीतिभोज आदि के काम आती है और इस प्रकार समाज की सेवा में सलग्न है।

★

बिरला ब्राह्मणवाडी

यह बाड़ी बिरला परिवार द्वारा स्थापित बिरला चेरिटी ट्रस्ट द्वारा चलायी जाती है। यह बाड़ी शाकाहारी, सदाचारी, सुयोग्य वेद-पाठी ब्राह्मणो के लिए बनाई गई है। ट्रस्ट की बंबई ओफिस से आज्ञा-पत्र लेने के बाद ट्रस्ट के नियमानुसार ब्राह्मण पंडितों को रहने दिया जाता है। उनसे किसी प्रकार का भी शुल्क नही लिया जाता है।

★

श्री राणी सतीमाता भण्डार

बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुइया चैरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत अनेक विभागों में से एक यह भण्डार भी है जो कि सारी बम्बई में अपनी उचित व्यवस्था एवम् साधन-सपन्नता के कारण बहुत ही लोकप्रिय है। बम्बई में स्थित जन-समुदाय को विवाह आदि के अवसर पर बर्तनों एवम् अन्य सामग्रियों की कठिनाई हमेशा रही है और इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए श्री बृजमोहनजी रुइया ने सन् १९५५ में इस भंडार की स्थापना की। किसी भी प्रकार का जातीय भेद-भाव इस भण्डार में नहीं रखा गया है तथा किसी भी व्यक्ति को चाहे वह किसी भी प्रान्त का क्यों न हो, इस भण्डार से सहयोग प्राप्त कर सकता है। इस समय भण्डार में लगभग ३५,००० के बर्तन है जिन मे विशेष उल्लेखनीय स्टेनलेस स्टील के करीब ४० सेट (४०० थाली, ४०० ग्लास, ८०० कटोरी) एवम् अन्य सामग्रिया है।

श्री राणीसतीमाता-विवाह-स्थल

उपनगरो में बसे हुए मध्यमवर्ग के परिवारो की शादी विवाह के लिए वाडी आदि का प्रश्न हमेशा से ही एक जटिल प्रश्न रहा है और इस बात की कमी का अनुभव उपनगर में बसे हुए हर एक नागरिक ने किया। श्री बृजमोहनजी रुइया ने अपने ट्रस्ट की एक बिल्डिंग में से ४ कमरो में छोटे रूप में इस कमी को पूरा करने का प्रयत्न सन् १९६० में किया और इसमें वे सफल भी हुए। मध्यमवर्ग के लोगों के लिए यह स्थान बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ और आज तक लगभग ७५ विवाह एव उत्सव इन स्थान पर मनाए जा चुके हैं। बी. एल. रुइया ट्रस्ट इस बात के लिए प्रयत्न-शील है कि वह अपनी इस योजना को बृहदरूप दे सके और जनता जर्नादन के हर प्रकार से काम आ सके।

श्री राणीसतीमाता शिक्षण कक्षा

आज के आर्थिक युग में मध्यमवर्ग की बढती हुई समस्याओं एवं विषम आर्थिक खर्चे को ध्यान में रखते हुए श्री बृजमोहनजी रुइया ने अपने ट्रस्ट के अन्तर्गत इस शिक्षण कक्ष की स्थापना सन् १९५७ में की। इसमें दो रुपया महीना देकर कोई भी बहन सिलाई, बुनाई, कताई एवं भरत काम की शिक्षा ग्रहण कर सकती है तथा अपने घरों के कपड़े इत्यादि लाकर उनकी सिलाई भी यहाँ से करके ले जा सकती है। योग्य एवं अनुभवी शिक्षिका की व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा इस कक्ष के लिए की गई है और इस समय लगभग ४० बहनें इसका लाभ उठा रही है।

★

श्री मारवाड़ी औषधालय

उक्त औषधालय की स्थापना इस्वी सन् १९१४ में हुई। इसमें आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दोनो प्रकार की प्रवृत्तियों मे चिकित्सा की जाती है। आयुर्वेदिक पद्धति मे औषधियो का निर्माण भी औष-धालय में किया जाता है। रोगियों की प्रतिदिन की सख्या १२५-१५० के करीब रहती है। बिना किसी भेद-भाव के यह औषधालय सार्वजनिक क्षेत्र की ५० साल से अधिक की अवधि से सेवा कर रहा है। इसके सचालक सेठ चेनीराम जेसराज और शिवनारायण सूरजरतन नेमाणी है।

★

बिरला चेरिटेबल डिसपेंसरी

यह दवाखाना बिरला परिवार द्वारा स्थापित बिरला चेरिटी-ट्रस्ट द्वारा चलाया जाता है। इस संस्था के मुख्य मेडिकल आफिसर डाक्टर झाबरमल एस० मिश्रा है। यहा पर जाति, धर्म व नश्ल को ध्यान में न रखते हुए नि शुल्क दवा दी जाती है। यहा पर प्रति दिन करीबन १५० रोगी इलाज के लिए आते है।

★

बिरला मातृ सेवा सदन चेरिटेबल डिसपेंसरी

यह दवाखाना बिरला परिवार द्वारा स्थापित मातृ सेवा सदन चेरिटीट्रस्ट बंबई द्वारा २६-७-६३ से चलाया जाता है। इस संस्था के के मुख्य डाक्टर (मिसेज) गुलाब निरूलकर है। यहा पर जाति, धर्म व नस्ल को ध्यान में न रखते हुए निःशुल्क दवा दी जाती है। इसके अलावा संतति नियोजन के लिए भी निःशुल्क परामर्श दिया जाता है।

बिरला आरोग्य मंदिर

यह संस्था बिरला परिवार द्वारा स्थापित बिरला चेरीटी ट्रस्ट द्वारा चलायी जाती है। यह आरोग्य मदिर शाकाहारी लोगों के लिए जलवायु परिवर्तनार्थ बनाया गया है। ट्रस्ट की बवई आफिस से आज्ञा-पत्र लेने के बाद ट्रस्ट के नियमानुसार ठहरने दिया जाता है। ठहरने-वालों को बरतन, चारपाई व गद्दे दिये जाते हैं। बिजली खर्च के अलावा वहा रहनेवालों से किसी प्रकार का अन्य शुल्क नही लिया जाता है।

☆

सार्वजनिक आयुर्वेदिक औषधालय माटुंगा

मारवाड़ी क्लब अग्रवाल नगर माटुगा के सौजन्य से सस्थापित यह औषधालय गत १९ वर्षो से सफलतापूर्वक अपने उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न है। इसका लाभ न केवल माटुगा क्षेत्रवासी बल्कि वम्बई नगर एवम् उपनगरों के विभिन्न जाति वर्ग एवम् समुदाय के लोगों को मुक्त रूप से प्राप्त है।

औषधालय में जन साधारण को स्वल्प मूल्य में निदान एवम् उपचार की सुविधा प्राप्त है शास्त्रीय विधि से निर्मित आयुर्वेदिक औष-धियों के माध्यम से चिकित्सा के प्राय. सभी साधन यहाँ उपलब्ध है। दवा का नाम मात्र का वीस नये पैसे लिया जाता है नि शुल्क परामर्श व कुशल चिकित्सक होने के कारण रोगियो की संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि पर है। इस वर्ष रोगियो की सख्या ४६१८० रही।

संस्था का सचालन अनुदान पर निर्भर है। पिछले वर्ष सस्था के स्थायी फण्ड की वृद्धि के लिए बिड़ला मातुश्री सभागार में "रूपकोशा" नामक नृत्य नाटिका खेली गई जिसके फलस्वरूप रुपये ५२,००० की आय हुई इस प्रकार स्थायी कोष में औषधालय के संचालन हेतु कुछ सालों के लिये राहत मिली है। नि.शुल्क व सेवाभाव से कार्य करता आ यह औषधालय प्रगति पथ पर अग्रसर है।

संस्था के पदाधिकारी :

अध्यक्ष : श्री भगवतीप्रसाद खेतान
मंत्री : „ रामस्वरूप बियाला
„ „ विश्वनाथ लुहारुका

सेठ जगन्नाथ गीगराज खेमका धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

यह औषधालय श्री जगन्नाथ गींगराज खेमका ट्रस्ट द्वारा संचा-लित है। जनसेवा की प्रेरणा से संस्थापित इस औषधालय को सर्व साधारण की सेवा करते दस बारह साल हो गये हैं। औषधालय में आयुर्वेदिक ढंग से इलाज करने के लिये वैद्य श्री वैद्यनाथजी विगल कई सालों से सेवा करते आ रहे हैं। धार्मिक भावना से प्रेरित होकर फणसवाडी में इसकी स्थापना नि संदेह एक अभाव की पूर्ति हुई है। आयुर्वेदिक औषधियो का निर्माण औषधालय में ही वैद्यजी की देखरेख में होता है। शुल्क के नाम पर सिर्फ १५ न० पै० एक दिन की दवा का लिया जाता है। रोगी के दिखाने आदि की कोई फीस नही ली जाती है यह औषधालय सेठ जगन्नाथ गीगराज खेमका ट्रस्ट के नये मकान में सचालित है। वर्तमान में रोगियों की प्रतिदिन की सख्या १५० के करीब रहती है जो इसकी लोकप्रियता का प्रतीक है। भेदभाव से दूर जनहित, व मानवीय कल्याण की भावना से ओत प्रोत इस औषधालय के निर्माण से जहाँ एक ओर गरीब आदमियो को सुविधा मिली है, वहाँ दूसरी ओर आयुर्वेदिक चिकित्सा को भी बल मिला है। होमियोपैथिक तथा एलोपैथिक दवाओ का प्रयोग भी औषधालय में किया जाता है। औषधालय के लिये सेठ जगन्नाथ गीगराज खेमका धर्मार्थ ट्रस्ट व प्रमुख चिकित्सक श्री वैद्यनाथजी दोनों ही बधाई के पात्र है। इसकी बढती हुई लोकप्रियता व कुशल सचालन को देखते हुये स्थान की कमी अखरती है।

शीघ्र ही नव निर्माण की दिशा में प्रगति करता हुआ यह औष-धालय सर्वसाधारण की अधिकाधिक सेवा करता रहेगा, साथ ही ट्रस्ट भी इसकी उपादेयता के प्रति सजग रहकर इसे और लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा ऐसी कामना है।

★

श्रीमती कृष्णाबाई रूईया दातव्य औषधालय

करीबन १९-२० साल से जन जनार्दन की सेवा में रत इस औषधालय की स्थापना श्रीमती कृष्णाबाई रूइया द्वारा की गई थी। आयुर्वेदिक ढंग से इस दवाखाने में इलाज के साथ एलोपैथिक पद्धति से भी इलाज किया जाता है। औषधालय में आने वाले रोगियों की दैनिक सख्या २५० के करीब रहती है जो इसकी लोकप्रियता का प्रतीक है। औषधालय के प्रधान चिकित्सक वैद्य श्री रामगोपालजी है।

श्री बूबना दातव्य आयुर्वेदिक औषधालय

यह दवाखाना सेठ पूरणमलजी बूबना तथा सेठ बृजमोहनजी बूबना द्वारा स्थापित हुआ था तथा करीबन १०-११ साल से जन साधारण की धर्मार्थ सेवा में संलग्न है। औषधालय में प्रति दिन इलाज के लिये आने वाले रोगियों की सख्या १५०-२०० के करीब रहती है। औषधालय में नाममात्र के शुल्क पर दवा दी जाती है जिससे निर्धन वर्ग इसका पूरा लाभ उठा सके। इस प्रकार यह दवाखाना बिना किसी भेद भाव के सेवा कार्य कर रहा है। दवाखाने में एलोपैथिक पद्धति से भी इलाज किया जाता है।

श्री बालाजी भण्डार सार्वजनिक औषधालय विलेपार्ले (पूर्व)

इस औषधालय की स्थापना श्री बृजमोहनजी रुइया द्वारा सन् १९४९ में की गई थी। श्री पुरुषोत्तमलालजी वैद्य इसके प्रथम चिकित्सक थे। दो वर्ष तक इन्होंने काफी परिश्रम और लगन से इस औषधालय की जड़ों को मजबूत बनाया। उप-नगरों में स्थित इस औषधालय का अपना एक विशिष्ट स्थान है। आयुर्वेदिक चिकित्सा का प्रसार इसका मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान चिकित्सक श्री सुरेशचन्द्रजी चतुर्वेदी लगभग सन् १९५१ में यहां पर नियुक्त हुए और आज भी इस कार्य को सुचारु रूप से कर रहे हैं। आपके आने के बाद से औषधालय ने हर एक क्षेत्र में काफी प्रगति की है और उप-नगरीय जनता में आयुर्वेद के प्रति विश्वास दिनों दिन बढ़ता जा रहा है।

एक बड़े हाल में स्थित यह औषधालय छः कमरों में विभाजित है। इसमें से एक कमरे में स्क्रीनिंग-मशीन (Screening Machine) भी है जो कि रोगियों को अच्छे एवं उचित निदान में काफी सहायक सिद्ध हुई है। औषधालय का अपना शस्त्र-चिकित्सा औषधि-वितरण एवं एक स्टोर-रूम भी है। आधुनिक साज-सज्जाओं से सुशोभित एवं कर्मठ, निःस्वार्थ-भावी चिकित्सक के होने से इस औषधालय की लोक-प्रियता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। गत छः मास वर्षों से लगभग ३०० रोगी प्रति-दिन इस औषधालय से लाभ उठाते हैं। स्थानाभाव इसकी सबसे बड़ी समस्या है, लेकिन फिर भी अपने-आप में स्थित यह औषधालय बंबई के उपनगरीय क्षेत्रों में अन्य लोकप्रिय औषधालयों में से एक है।

००

किशनलाल जालान धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

किशनलाल जालान चेरिटी ट्रस्ट बंबई के अंतर्गत संचालित यह मालाड-स्थित औषधालय, २४ जुलाई १९४९ को श्री० घनश्यामदास जालान, द्वारा स्थापित किया गया था। इसका उद्घाटन बंबई के तत्कालीन मेयर श्री एम० के० पाटिल द्वारा किया गया था।

गत ४० वर्षों से मालाड के निवासी होने से निकटवर्ती क्षेत्रों की चिकित्सा सेवा की दृष्टि से जालान परिवार ने यह औषधालय प्रारंभ किया। भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक विशेषज्ञ वैद्यरत्न प० शिवशर्मा की प्रेरणा से यह संस्था आयुर्वेदिक प्रणाली की बनाई गई और आप इसके सम्मान्य निर्देशक हैं।

इस औषधालय के कारण उपनगरों में आयुर्वेद की लोकप्रियता काफी बढ़ी जो इस बात से स्पष्ट है कि इस संस्था की स्थापना के ४-५ वर्ष के बाद उपनगरों में अन्य धर्मार्थ औषधालय खोले गये जिनमें भी बड़ी संख्या में जनता लाभ ले रही है। यह औषधालय, संचालक ट्रस्टी श्री० घनश्यामदास जालान तथा श्री० मुरलीधर जालान एवं नंदकिशोर जालान के अथक परिश्रम और सेवा भावना एवं मुक्त रूपेण आर्थिक सहायता के कारण उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

इस औषधालय की विशेष उन्नति १९५५ में वर्तमान प्रधान वैद्य पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा वैद्य वाचस्पति द्वारा कार्य संभालने के बाद हुई। इनके आयुर्वेद ज्ञान, शल्य चिकित्सा एवं क्षारचिकित्सा के अनुभव के कारण जनता ने इनके निदान एवं चिकित्सा पद्धति को बहुत प्रशंसित किया है।

औषधालय स्वयं के भवन "जालान निवास" में स्थित है। बढ़ती हुई रोगी संख्या के कारण अब जगह काफी बढ़ा दी गई है। रोगियों को शुद्ध और ताजा औषधियां उपलब्ध करने के लिए सभी औषधियां औषधालय में ही बनाई जाती है, स्वनिर्मित हुई औषधियों के कारण शीघ्र आरोग्य-लाभ होता है जो रोगियों के चिकित्सा काल में कमी से स्पष्ट है। इस औषधालय में बिना किसी जाति-धर्म भेद भाव निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा की जाती है। कुछ रोगों एवं कतिपय औषधियों के बारे में अनुसंधान भी किया जा रहा है।

औषधालय की वार्षिक नवीन रोगी संख्या जो १९४९ में ३०५१ थी बढ़कर १९६३ में १५८६९ हो गई है। कुल रोगी संख्या १९४९ में २५८०९ थी जो १९६३ में ५६८१४ हो गई है। इससे के बृहत सेवा कार्य का पता लगता है। दैनिक रोगी संख्या लगभग ३००।३२५ रहती है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने औषधालय के कार्य को देखकर एक्सरे-स्क्रीनिंग मशीन लगाने के लिए विशेष अनुदान दिया है। यह मशीन लग जाने पर जन साधारण का बहुत लाभ होगा।

इस संस्था की सेवाओं को मान्यता देते हुए केंद्रीय सरकार राज्य सरकार, बंबई महापालिका, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड ग्रान्ट दे रहे हैं जो राजस्थानी समाज के लिये गौरव का विषय है।

इसके अतिरिक्त प्रमुख नेताओं का प्रोत्साहन औषधालय को सदैव मिला है। बंबई के राज्यपाल डा० महताब एवं तत्पश्चात श्री० श्रीप्रकाश जी, मुख्य मंत्री श्री० मुरारजी देसाई, श्री० यशवंतराव चौहान, केंद्रीय गृहमंत्री, श्री० लालबहादुर शास्त्री आदि नेता गण समय समय पर औषधालय का निरीक्षण कर संस्था को मान्यता एवं प्रोत्साहन देते रहे हैं।

स्थापना के समय से ही इस संस्था ने उपनगरों में जनसाधारण के रोग निवारण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। "जनता के स्वास्थ्य पर देश की उन्नति निर्भर करती है।" इस दृष्टिकोण से देश के वर्तमान विकास अभियान में यह संस्था अपना कर्तव्य निष्ठा के साथ निभा रही है।

★

मारवाड़ी समाज में यों तो अनेक ट्रस्ट समाजोपयोगी संस्थाओं के संचालनार्थ स्थापित हुये हैं तथा उनके द्वारा न केवल बम्बई में बल्कि देश के सभी भागों में महत्वपूर्ण सेवा कार्य किया जा रहा है। उनमें कतिपय ट्रस्टों के प्राप्त विवरण के आधार पर उनकी गतिविधियों का संक्षिप्त उल्लेख समीचीन होगा।

पोद्दार परिवार से सम्बन्धित शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थायें

पोद्दार परिवार ने सार्वजनिक सेवा के हेतु शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना और उनके संचालन में समय समय पर उदारतापूर्वक दान दिया है इस प्रकार की उनकी संस्थाओं की सूची निम्नांकित है–

१ श्री आनन्दीलाल पोद्दार चेरिटेबल सोसायटी द्वारा संचालित संस्थायें :—
   (अ) सेठ ज्ञानीराम बंसीधर पोद्दार कालेज, नवलगढ़ (आर्ट, साइन्स तथा कामर्स, ५०० विद्यार्थी)
   (ब) सेठ ज्ञानीराम बंसीधर पोद्दार हाईस्कूल नवलगढ़ (६७५ विद्यार्थी)

२ राजस्थान सरकार द्वारा संचालित संस्थायें :–
   (अ) सेठ आनन्दीलाल पोद्दार "बधिर मूक तथा अंध" संस्था जयपुर
   (ब) राजा रामदेव पोद्दार बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जयपुर (१४८५ विद्यार्थी)
   (स) सेठ आनन्दीलाल पोद्दार हाईस्कूल, भवानी मंडी, १००० विद्यार्थी)
   (द) श्री गणेश माध्यमिक बालिका विद्यालय, भवानी मंडी (४०० विद्यार्थी)

३ सान्ताक्रुज एजूकेशन सोसायटी, बम्बई द्वारा संचालित संस्था.– सेठ आनन्दीलाल पोद्दार हाईस्कूल बम्बई ४५०० विद्यार्थी) प्राथमिक शिक्षा से हिंदी, गुजराती तथा मराठी के अलग अलग विभाग)।

४ शिक्षण प्रसारक मंडली, पूना, द्वारा संचालित संस्था – रामनिरंजन आनन्दीलाल पोद्दार कोलेज आफ कामर्स एण्ड इकोनोमिक्स, बम्बई (१२३६ वि०)

५ महाराष्ट्र सरकार द्वारा संचालित संस्थाएँ :–
   (अ) महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार हास्पिटल (१६० पलंग)
   (ब) रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल कॉलेज (आयुर्वेदिक) बम्बई (३०० विद्यार्थी)
   (स) राजा रामदेव पोद्दार आयुर्वेदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बम्बई।
   (द) रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार लेबर रिक्रियेशन सेंटर, बम्बई।

रामनारायण रुईया ट्रस्ट के सेवा कार्य

रुइया परिवार ने समय समय पर अपने सन् १९२९ में संस्थापित श्रीरामनारायण हरनंदराय चेरिटेबिल ट्रस्ट से विशाल दानराशि संस्थाओं के स्थापनार्थ एवम् संचालनार्थ दी है। स्वयम् ट्रस्ट की ओर से रामगढ़ में सेठ रामनारायण रुइया कालेज व सर्स्त हाईस्कूल का संचालन हो रहा है तथा बाई सुवन्ता देवी रामनारायण धर्मादा ट्रस्ट न० १,२, ३ में प्राय: २० लाख की पूंजी धर्मादे के उद्देश्य से अलग सुरक्षित की गई है। बम्बई स्थित रामनारायण रुइया कालेज माटुंगा को रु० २ लाख भवन निर्माण के हेतु तथा वेंकटेश्वर रामनारायण रुइया होस्पिटल निर्मित के लिये रू० ५ लाख का अनुकरणीय दान प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार अन्य प्रवृत्तियों में भी ट्रस्ट का सक्रिय आर्थिक सहकार सदव रहा है।

श्री खेमराज श्रीकृष्णदास चैरिटी ट्रस्ट

इस ट्रस्ट की स्थापना सन् १९२० में श्री खेमराज श्रीकृष्णदास द्वारा हुई थी, संस्था के वर्तमान मैनेजिंग ट्रस्टी श्री मुरलीधर बजाज हैं। ट्रस्ट के तत्वावधान में बम्बई में आयुर्वेदिक पद्धति से एक दानव्य औषधालय का संचालन होता है। इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्थानों पर ट्रस्ट की ओर से धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पर यात्रियों के ठहरने का सुन्दर प्रबन्ध है।

१ खेमराज श्रीकृष्णदास धर्मशाला रामघाट, उज्जैन
२ ,, ,, ,, तिरुपति (बालाजी)
३ ,, ,, ,, श्रीरंगम्
४ ,, ,, ,, श्रीपेरम्बदूर

पूर्वकालीन बृहद् ट्रस्टों द्वारा सर्व समुदाय भावना से प्रदत्त विशिष्ट दान राशियों में श्री मूलाराज गोइन्का द्वारा भारतीय विद्या भवन को प्रदत्त रुपया आठ लाख का बहुत अधिक महत्व है। श्री पूरणमल सिंहानियाँ ट्रस्ट द्वारा जनहितार्थ सर्वस्व दान का उल्लेख हो चुका है। श्रीगोविन्दराम सेकसरिया चेरिटेबल ट्रस्ट के हेतु निर्धारित रुपया एक करोड़ की राशि से आज विदर्भ, बरार एवम् मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों यथा वर्धा, इन्दौर, अकोला आदि में ट्रस्ट के सहयोग से उच्चतम प्रशिक्षण केन्द्र व प्रावधिक प्रशिक्षण के साधन समुपस्थित हुये हैं तथा साथ ही साथ बम्बई में भी विविध शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाओं को निरंतर सहयोग ट्रस्ट द्वारा प्राप्त हुआ। सन् १९२१ में संस्थापित श्री जगन्नाथ सीताराम सेकसरा धर्मार्थ ट्रस्ट के निर्माता श्री जगन्नाथजी सेकसरा की उदारमना कृतियाँ व्यवसायिक शैक्षणिक संस्थायें के रूप में प्रस्तुत हैं। सेवाभाव से स्थापित इस ट्रस्ट ने ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम का पूर्ण व्यय भार २ वर्ष तक वहन किया, रामगढ़ में दाहक्रिया के साधन सामान समुपस्थित किये व बम्बई में अपने नये भवन में एक आयुर्वेदिक औषधालय संचालित किया है। वर्तमान में जिन ट्रस्टों को महत्व पूर्ण योग समाज के विकास में सहायक प्रवृत्तियाँ को प्राप्त हो रहा है उनमें श्री बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रुइया चेरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत विविध धार्मिक ट्रस्टों या बम्बई में श्री लक्ष्मीनारायण बृजमोहन फोफलवाड़ी ट्रस्ट व श्री लक्ष्मीनारायण फतेहचंद बृजमोहन

ट्रस्ट एवम् रामगढ में बालाजी भंडार आदि की संस्थापना और समय समय पर विशाल राशि प्रदान करने वालों में अग्रणी इन ट्रस्टों के संचालक श्री बृजमोहनजी रूइया आज के युग में भी ऋषितुल्य जीवनयापन करते हुये समाज को अपनी दानशीलता का लाभ प्रदान करने को हर समय प्रस्तुत रहते हैं।

समाज की दानशीलता के प्रतीक रुपये दो लाख का दान श्री रामनिरंजन झुंझनुवाला कालेज घाटकोपर के हेतु हिन्दी सोसाइटी को प्रदान करने वाले श्रीराम रामनिरंजन चेरिटी ट्रस्ट के सचालक व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पुरषोत्तमलाल झुंझनुवाला का सहयोग समाज की सभी गतिविधियो को अग्रसर करने मे निरंतर रहता है। श्री मदनलाल राजपूरिया ट्रस्ट द्वारा राजस्थान विद्यार्थी-गृह के अन्धेरी स्थित छात्रावास के निर्माणार्थ दिये गये डेढ लाख रुपये को इसी प्रकार की महत्वपूर्णदान शृंखला की सुदृढ कड़ी के रूप में मान्य किया जा सकता है। श्रीमती भा. मा रूइया ट्रस्ट के रु. ७५०००) के दान का उल्लेख प्रस्तुत हो चुका है।

ऐसे और अनेको संस्थान है जिनके असंख्य ट्रस्ट समाज की हित साधना मे मूक सेवा का आदर्श अपनाये हुये निज प्रचार के महत्व से सर्वथा दूर रह कर लाखो रुपये की विशाल राशि समाज हितैषी प्रवृत्तियो के विकास में लगा रहे है उन सभी प्रवृत्तियों का उल्लेख आलेख में अंकित करना अभीष्ट था किन्तु कतिपय सामयिक कठिनाइयो के फलस्वरूप इस दिशा में वाछित सफलता प्राप्त नही हो सकी फिर भी विवरण के अन्तर्गत समाज की अधिकाधिक संस्थाओं एवम् अन्य प्रवृत्तियो का उल्लेख प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है फिर भी कुछ कमियां अवश्यम्भावी है जिन्हे ध्यानस्थ न रखते हुये इसके अन्तर्गत निहित उद्देश्यो को ही मान्यता देना अधिक श्रेयस्कर होगा।

★

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा,
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम्।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं,
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः॥
—भर्तृहरि

समुद्र मंथन के समय देवता अनेक तरह के बहुमूल्य रत्नों का लाभ हो जाने से संतुष्ट नहीं हुये और न भयंकर विष निकलने पर भयभीत ही हुये। जब तक अमृत की प्राप्ति नहीं हुई तब तक अविराम गति से प्रयत्न करते ही रहे, विश्राम नहीं लिया। इसी तरह धैर्यवान् मनुष्य भी अपने उद्देश्य की प्राप्ति पर्यन्त निरंतर प्रयत्नशील बने रहकर सफल होते हैं।

गत पचास वर्षों की अवधि में सम्मेलन की सरिता अबाध गति से बही, उसकी धारा हर ठहराव पर, जीवन में आने वाले हर स्थिर स्थान पर, समाज रूपी धरती को सिंचित करती हुई, मरू के टीलों को तृप्त करती हुई, नव कोंपल व नूतन निर्माण करती हुई आज मूल उद्देश्य की ओर उन्मुक्त रूप से प्रवाहित है। पचास वर्षों की अवधि में सूर्य नित्य नवीन प्रकाशमयी किरणों को बिखेरता उदय हुआ, और शान्ति की शुभकांक्षा रखता हुआ अस्त। समय काल के अंचल से अच्छी बुरी हर प्रकार की घटनायें घटी, पर मानव की शृंखला की कड़ी छिन्न भिन्न न हो पाई, उसका विशेष श्रेय सामूहिक रूपमें प्रयत्न करनेवाले समुदाय को ही है। आदर्श और ध्येय का क्षेत्र और गति स्वतः स्फूर्त होते हुये उसमें भी स्वय का अलग अस्तित्व भी होता है। स्वः की भावना को न ले पूर्ण समाज के हेतु किये गये कार्यों में व्यक्ति की भावना नहीं सम्पूर्ण मानव समाज की हित साधना होती है। इन्ही संकल्पों को लेकर मारवाड़ी सम्मेलन का निर्माण हुआ व विगत पचास वर्षों में समाज हित ने उसके पथ में पुष्प बिखेरे है, नई चेतना दी है, क्रांति का स्वर व अस्तित्व को बल प्रदान किया है।

सामाजिक और शैक्षणिक जागृति के साथ साथ मारवाड़ी सम्मेलन ने राजनैतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योग दान दिया है। आज स्वर्ण जयती के पावन पर्व पर विगत इतिहास को देखते हुये भविष्य के नव निर्माण के लिये भी सम्मेलन उन प्रवृत्तियों के संपादन का संकल्प करता है जिनकी पूर्ति से भावी पीढ़ी आदर्श प्राप्त कर सके, समाज चेतना व इसके सपादित रचनात्मक कार्यों की भीनी भीनी महक इस पथ पर आनेवाला हर पथिक पा सके।

शीघ्र समाज के लाभार्थ एक महाविद्यालय के हेतु किये गये संकल्प की पूर्ति के हर संभव प्रयत्न किये जा रहे हैं, और शीघ्रा-

शीघ्र महाविद्यालय हेतु भवन निर्माण कर, महाविद्यालय की स्थापना कर सकेंगे। आज के आधुनिक युग में प्राविधिक शिक्षा का महत्व अधिक है, हमारा समाज प्रगति पथ में अन्य समाजो के न केवल समानान्तर रहे बल्कि आगे बढे इस हेतु एक प्राविधिक महाविद्यालय की स्थापना शीघ्र ही की जायेगी। जिसमे प्राविधिक शिक्षा का ज्ञान विद्यार्थी उठा सकें। नारी जागरण व आज के विकासशील युग की प्रभुता मे उन्हें चेतन करने मे महिलाओ के लाभार्थ ऐसी विभिन्न प्रवृत्तियों का सचालन होगा जिससे समाज की महिलाये नूतन युग के अनुसार अग्रसर हो सकें। समाज में फैली कुरीतियाँ यथा दहेज, अनमेल विवाह व आडम्बर-प्रदर्शन आदि को समूल नष्ट कर देने के लिये समाज में नई चेतना, नई जागृति व नई स्फूर्ति पैदा करें जिससे समाज की प्रगति की राह में रोडा बनने वाली प्रवृत्तियों का नाश हो। राजस्थानी कला व सस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये अन्य कार्यरत सस्थाओं से सहयोग व हर सभव प्रयत्न किये जायेंगे जिनमे राजस्थान के लोकगीतो का सकलन कर प्रकाशन, राजस्थानी नाटकों को रगमच पर लाने मे सहायता, राजस्थानी कला और साहित्य को विस्तृत करने हेतु लेखको व साहित्यकारो को प्रोत्साहन देने के लिये पुरस्कार और श्रेष्ठ पुस्तको के लेखको का सम्मान किया जायेगा जिससे राजस्थानी का लालित्य व रूप खिल सके। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सम्मेलन ने महत्वपूर्ण योग दिया है, आगे भी इसी प्रकार हिन्दी माध्यमो के महाविद्यालय की स्थापना व तदर्थ संचालन हेतु हर संभव कार्यों का संपादन सम्मेलन करेगा जिससे हिन्दी जन जन की भाषा बन सके उसे राष्ट्रभाषा के रूप में वह भी सही रूप में मान्यता मिल सके जिससे देश में भावात्मक एकता उत्पन्न हो और देश एकता के सूत्र में बंध सकें। हिंदी, राजस्थानी व मराठी व अन्य क्षेत्रिय भाषाओ के साहित्य-समृद्धि के हेतु सम्मेलन प्रयत्न करेगा। शोध ग्रन्थ, अन्वेषण और श्रेष्ठ साहित्य पर पुरस्कार व सहायता देगा ताकि हर भाषा पनप सके, क्योकि सम्मेलन मानता है कि जिस देश का साहित्य जितना समृद्ध होता है वह देश भी उतना ही समृद्ध होता है अत साहित्य प्रसार के महत्वपूर्ण कार्य में सम्मेलन सदा सर्वदा योग देता रहेगा।

सम्मेलन का कार्यक्षेत्र सिर्फ मारवाडी समाज तक ही सीमित नही है उसकी विशालता की गहराई में सम्पूर्ण भारत के नागरिक आ सकें इसके लिये कार्यक्षेत्र का विस्तार व गतिविधियो में परिवर्तन किया जायेगा।

आज के पवित्र, शुभ अवसर पर सम्मेलन के लिये यह सकल्प अनिवार्य है कि समाज के हर अंग के विस्तार व वृद्धि के हेतु उन सभी कार्यों व प्रवृत्तियो का सपादन करने को, जिससे आने वाले कल, उदय होने वाले भानु की नवीन किरण, गहरी अरुणाई लिये समाज को नव सदेश से रग दे, जिससे जन जन का चेहरा आत्मविभोरभाव मे खिल उठे।

*

स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर विज्ञापन एवम् दानराशि प्रदानकर्त्ता

५०००) श्री रामेश्वरदास बिड़ला
- १०००) मे. कॉटन एजेन्ट्स प्रा. लि०
- १०००) ,, एशियन इन्स्ट्रूमेन्ट्स लि०
- १०००) ,, इण्डियन स्मेल्टिंग एण्ड रिफाइनिंग क० लि०
- २०००) ,, सेन्चुरी स्पि० एण्ड० विविंग मिल्स लि०

२५००) मे. इण्डिया युनाइटेड मिल्स लि०

१०००) ,, रामनारायण सन्स प्रा० लि०

२५००) मे. मैकेन्जीस लि०

२५००) श्री शिवकुमार भुवालका
- १५००) मे. विकास उद्योग लि०
- १०००) ,, रामविलास नन्दलाल

२५००) मे. नाथूराम रामनारायण प्रा० लि०

२५००) श्री महावीरप्रसाद मुरारका
- १०००) मे. गैनन डंकरले एण्ड कं. लि०
- ५००) ,, दी सासार अंग सुगर मिल्स लि०
- ५००) ,, दी इण्डिया सुगर्स एण्ड रिफायनरीज लि०
- ५००) ,, हुकमचन्द मिल्स लि०

२५००) श्री बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रइया

२५००) मे. एल्फिन्स्टन स्पीनिंग एण्ड विविंग क० लि०

२५००) ,, बच्छराज कंपनी
- १५००) मे. मुकुन्द आयरन एण्ड स्टील वर्क्स लि०
- १०००) ,, हिन्दुस्तान सुगर मिल्स लि०

२५००) मे. अरुण इम्पोर्टर्स प्रा० लि०

२५००) ,, दी न्यू सिटी ऑफ बॉम्बे मैनूफेक्चरिंग कं० लि०

२५००) ,, सेक्सरिया कॉटन मिल्स लि०

२५००) ,, श्रीनिवास कॉटन मिल्स लि०

१५००) श्री श्रीराम तापड़िया
- ५००) मे. बोम्बे टैक्स्टाइल मिल्स.
- ५००) ,, अंजनीकुमार कं० प्रा० लि०
- ५००) ,, श्री निवास कं० प्रा० लि०

११००) मे. बन्दोई ब्रदर्स

११००) ,, तोदी एड कं.,

११००) मे० गेमंगाम श्रीकृष्णदास

११००) ,, मान इण्डस्ट्रियल कॉरपोरेशन

११००) ,, बृजमोहन पुरुषोतमदास

११००) ,, द्वारकादास रामेश्वर गोयन्का

११००) ,, चिरंजीलाल गोयन्का

११००) ,, ट्रान्सपोर्ट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया

११००) ,, जोखीराम प्रह्लादराय

११००) ,, रामचन्द्र मुरलीधर

११००) ,, सीताराम मिल्स लि०

११००) ,, धनराज मिल्स लि०

११००) ,, हरी ट्रेडिंग कं० लि०

११००) श्रीमती सरस्वतीबाई माहेश्वरी

११००) मे. दौलतराम रामेश्वरलाल

५००) ,, जालान ब्रदर्स

५००) ,, ओरियेन्ट एजेन्सीज

५००) ,, इंडियन ट्रेडर्स एंड फाइनेन्स प्रा० लि०

५००) ,, गुलराज गौरीशंकर

५००) ,, विश्वंभरलाल बाजोरिया

५००) ,, जमनादास अडुकिया

५००) ,, तोपनीवाल ब्रदर्स, प्रा० लि०

५००) ,, झुंझनुवाला कं०

५००) ,, जगन्नाथ किशनलाल

५००) श्री. नथमल सोमानी

५००) ,, घनश्यामदास रइया चेरिटी ट्रस्ट

५००) ,, गोपीराम हरसुखराम चेरिटी ट्रस्ट

५००) मे. जौहरीमल रामलाल

५००) ,, प्रभात जनरल एजेन्सीज

५००) ,, राजस्थान ट्रेडिंग कं०,

★

तिशीघ्र महाविद्यालय हेतु भवन निर्माण कर, महाविद्यालय की स्थापना कर सकेंगे। आज के आधुनिक युग में प्राविधिक शिक्षा का महत्व अधिक है, हमारा समाज प्रगति पथ में अन्य समाजों के न केवल समानान्तर रहे बल्कि आगे बढ़े इस हेतु एक प्राविधिक महाविद्यालय की स्थापना शीघ्र ही की जायेगी। जिसमे प्राविधिक शिक्षा या ज्ञान विद्यार्थी उठा सकें। नारी जागरण व आज के विकासशील युग की प्रभुता से उसे चेतन करने में महिलाओं के लाभार्थ ऐसी विभिन्न प्रवृत्तियों का संचालन होगा जिससे समाज की महिलायें नूतन युग के अनुसार अग्रसर हो सकें। समाज में फैली कुरीतियाँ यथा दहेज, अनमेल विवाह व आडम्बर-प्रदर्शन आदि को समूल नष्ट कर देने के लिये समाज में नई चेतना, नई जागृति व नई स्फूर्ति पैदा करे जिससे समाज की प्रगति की राह में रोड़ा बनने वाली प्रवृत्तियों का नाश हो। राजस्थानी कला व संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये अन्य कार्यरत संस्थाओं से सहयोग व हर संभव प्रयत्न किये जायेंगे जिनमे राजस्थान के लोकगीतो का संकलन कर प्रकाशन, राजस्थानी नाटको को रंगमंच पर लाने मे सहायता, राजस्थानी कला और साहित्य को विस्तृत करने हेतु लेखको व साहित्यकारो को प्रोत्साहन देने के लिये पुरस्कार और श्रेष्ठ पुस्तको के लेखको का सम्मान किया जायेगा जिससे राजस्थानी का लालित्य व रूप खिल सके। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सम्मेलन ने महत्वपूर्ण योग दिया है, आगे भी इसी प्रकार हिन्दी माध्यमो के महाविद्यालय की स्थापना व तदर्थ संचालन हेतु हर संभव कार्यों का संपादन सम्मेलन करेगा जिससे हिन्दी जन जन की भाषा बन सके उसे राष्ट्रभाषा के रूप में वह भी सही रूप में मान्यता मिल सके जिसमे देश में भावात्मक एकता उत्पन्न हो और देश एकता के सूत्र में बंध सकें। हिंदी, राजस्थानी व मराठी व अन्य क्षेत्रिय भाषाओ के साहित्य-समृद्धि के हेतु सम्मेलन प्रयत्न करेगा। शोध ग्रन्थ, अन्वेषण और श्रेष्ठ साहित्य पर पुरस्कार व सहायता देगा ताकि हर भाषा पनप सके, क्योंकि सम्मेलन मानता है कि जिस देश का साहित्य जितना समृद्ध होता है वह देश भी उतना ही समृद्ध होता है अत साहित्य प्रसार के महत्वपूर्ण कार्य में सम्मेलन सदा सर्वदा योग देता रहेगा।

सम्मेलन का कार्यक्षेत्र सिर्फ मारवाड़ी समाज तक ही सीमित नही है उसकी विशालता की गहराई में सम्पूर्ण भारत के नागरिक आ सके इसके लिये कार्यक्षेत्र का विस्तार व गतिविधियो में परिवर्तन किया जायेगा।

आज के पवित्र, शुभ अवसर पर सम्मेलन के लिये यह संकल्प अनिवार्य है कि समाज के हर अंग के विस्तार व वृद्धि के हेतु उन सभी कार्यों व प्रवृत्तियो का संपादन करने को, जिससे आने वाले कल, उदय होने वाले भानु की नवीन किरण, गहरी अरुणाई लिये समाज को नव संदेश से रंग दे, जिसमे जन जन का चेहरा आत्मविभोरभाव मे खिल उठे।

स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर विज्ञापन एवम् दानराशि प्रदानकर्त्ता

५०००) श्री रामेश्वरदास बिड़ला
- १०००) मे. कॉटन एजेन्ट्स प्रा. लि०
- १०००) „ एशियन डिस्ट्रीब्युटर्स लि०
- १०००) „ इंडियन स्मेल्टिंग एण्ड रिफायनिंग कं. लि०
- २०००) „ सेन्चुरी स्पि० एण्ड० विविंग मिल्स लि०

३५००) मे इंडिया युनाइटेड मिल्स लि०

३०००) „ रामनारायण सन्स प्रा० लि०

२५००) मे मैकेन्जीम लि०

२५००) श्री शिवकुमार भुवालका
- १५००) मे. बिलास उद्योग लि०
- १०००) „ रामबिलास नन्दलाल

२५००) मे. नाथुराम रामनारायण प्रा० लि०

२५००) श्री महावीरप्रसाद मुरारका
- १०००) मे गेनन डंकरले एण्ड कं. लि०
- ५००) „ दी सालार जंग सुगर मिल्स लि०
- ५००) „ दी इण्डिया सुगर्स एण्ड रिफायनरीज लि०
- ५००) „ हुकमचन्द मिल्स लि०

२५००) श्री बृजमोहन लक्ष्मीनारायण रूइया

२५००) मे एल्फिन्स्टन स्पीनिंग एण्ड विविंग क० लि०

२५००) „ बच्छराज कंपनी
- १५००) मे. मुकुन्द आयरन एण्ड स्टील वर्क्स लि०
- १०००) „ हिन्दुस्तान सुगर मिल्स लि०

२५००) मे. अरब इम्पोर्टर्स प्रा० लि०

२५००) „ दी न्यू सिटी ऑफ बॉम्बे मैनूफेक्चरिंग कं० लि०

२५००) „ सेक्सरिया कॉटन मिल्स लि०

२५००) „ श्रीनिवास कॉटन मिल्स लि०

१५००) श्री श्रीराम तापड़िया
- ५००) मे. बॉम्बे टैक्स्टाइल मिल्स.
- ५००) „ मंगनीकुमार कं० प्रा० लि०
- ५००) „ श्री निवास कं० प्रा० लि०

११००) मे. सन्टोई ब्रदर्स

११००) „ वोंदी एंड कं,

११००) मे० खेमराज श्रीकृष्णदास

११००) „ मान इंडस्ट्रियल कॉर्पोरेशन

११००) „ बृजमोहन पुरषोत्तमदास

११००) „ द्वारकादास रामेश्वर गोयन्का

११००) „ चिरंजीलाल गोयन्का

११००) „ ट्रान्सपोर्ट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया

११००) „ जोखीराम प्रहलादराय

११००) „ रामचंद्र मुरलीधर

११००) „ सीताराम मिल्स लि०

११००) „ धनराज मिल्स लि०

११००) „ लकी ट्रेडिंग कं० लि०

११००) श्रीमती सरस्वतीबाई माहेश्वरी

११००) मे. दौलतराम रामेश्वरलाल

५००) „ जालान ब्रदर्स

५००) „ ओरियेन्ट एजेन्सीज

५००) „ इंडियन ट्रेडर्स एंड फाइनेन्स प्रा० लि०

५००) „ गुलराज गौरीशंकर

५००) „ विश्वंभरलाल बाजोरिया

५००) „ जमनादास अडुकिया

५००) „ तोपनीवाल ब्रदर्स, प्रा० लि०

५००) „ झुंझनुवाला क०

५००) „ जगन्नाथ किशनलाल

५००) श्री. नथमल सोमानी

५००) „ घनश्यामदास रुइया चेरिटी ट्रस्ट

५००) „ गोपीराम हरमुखराम चेरिटी ट्रस्ट

५००) मे. जौहरीमल रामलाल

५००) „ प्रभात जनरल एजेन्सीज

५००) „ राजस्थान ट्रेडिंग कं०,

★

तिशीघ्र महाविद्यालय हेतु भवन निर्माण कर, महाविद्यालय की स्थापना कर सकेंगे। आज के आधुनिक युग में प्राविधिक शिक्षा का महत्व अधिक है, हमारा समाज प्रगति पथ में अन्य समाजों के न केवल समानान्तर रहे बल्कि आगे बढ़े इस हेतु एक प्राविधिक महाविद्यालय की स्थापना शीघ्र ही की जायेगी। जिससे प्राविधिक शिक्षा का ज्ञान विद्यार्थी उठा सकें। नारी जागरण व आज के विकासशील युग की प्रभुता में उन्हें चेतन करने में महिलाओं के लाभार्थ ऐसी विभिन्न प्रवृत्तियों का सचालन होगा जिससे समाज की महिलायें नूतन युग के अनुसार अग्रसर हो सकें। समाज मे फैली कुरीतियाँ यथा दहेज, अनमेल विवाह व आडम्बर-प्रदर्शन आदि को समूल नष्ट कर देने के लिये समाज में नई चेतना, नई जागृति व नई स्फूर्ति पैदा करे जिससे समाज की प्रगति की राह में रोड़ा बनने वाली प्रवृत्तियों का नाश हो। राजस्थानी कला व संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये अन्य कार्यरत संस्थाओं से सहयोग व हर संभव प्रयत्न किये जायेंगे जिनमें राजस्थान के लोकगीतों का संकलन कर प्रकाशन, राजस्थानी नाटकों को रंगमंच पर लाने में सहायता, राजस्थानी कला और साहित्य को विस्तृत करने हेतु लेखकों व साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने के लिये पुरस्कार और श्रेष्ठ पुस्तकों के लेखकों का सम्मान किया जायेगा जिससे राजस्थानी का लालित्य व रूप खिल सके। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सम्मेलन ने महत्वपूर्ण योग दिया है, आगे भी इसी प्रकार हिन्दी माध्यमों के महाविद्यालय की स्थापना व तदर्थ संचालन हेतु हर संभव का सम्मेलन करेगा जिससे हिन्दी जन जन की भाषा बन र भाषा के रूप में वह भी सही रूप में मान्यता मिल सके भावात्मक एकता उत्पन्न हो और देश एकता के सूत्र में ब राजस्थानी व मराठी व अन्य क्षेत्रिय भाषाओं के म हेतु सम्मेलन प्रयत्न करेगा। शोध ग्रन्थ, अन्वेषण और पुरस्कार व सहायता देगा ताकि हर भाषा पनप सके, मानता है कि जिस देश का साहित्य जितना समृद्ध होग उतना ही समृद्ध होता है अत. साहित्य प्रसार के प्र सम्मेलन सदा सर्वदा योग देता रहेगा।

सम्मेलन का कार्यक्षेत्र सिर्फ मारवाड़ी समाज नही है उसकी विशालता की गहराई में सम्पूर्ण भार सकें इसके लिये कार्यक्षेत्र का विस्तार व गतिविधि किया जायेगा।

आज के पवित्र, शुभ अवसर पर सम्मेलन के अनिवार्य है कि समाज के हर अंग के विस्तार व वृ कार्यों व प्रवृत्तियों का संपादन करने को, जिससे आ होने वाले भानु की नवीन किरण, गहरी अरुणाई नव संदेश से रंग दे, जिससे जन जन का चेहरा खिल उठे।

*

सम्मेलन के पदाधिकारी

नाम		सभापति	उप-सभापति	मंत्री	सहमंत्री
		(सन्)	(सन्)	(सन्)	(सन्)
श्री गौरीशंकर रुइया	...			३८–३९	३६–३७
,, महावीर प्रसाद दाधीच				४३–४७	
,, श्रीनिवास बगड़का				५०–५४	३६–४१
,, वल्लभनारायण दानी	..	३७–३८			
,, उमरावसिंह डालमियाँ	..				२५–२६
,, मदनलाल चौधरी	...				२५–२६
,, हनुमानप्रसाद बगड़िया	...				२५–२६
,, सीताराम पोद्दार	...	२५–२६			
,, मुकुन्दलाल पित्ती	...	३८–३९			
,, बैजनाथ माखरिया	..	४८–५०	३७–३९		
,, गोविन्दराम सेक्सरिया	...	३९–४०			
,, घनश्यामदास पोद्दार	..	४३–४४	३९–४०		
,, उमाशंकर दीक्षित	..				३९–४०
,, प्रेमचन्द केडिया	.			४७–४८	४०–४१ ५३–५४
,, वेगराज गुप्ता	...	४१–४२			
,, बैजनाथ सेक्सरिया	...		३९–४०		
,, इन्द्रमल मोदी	..				३९–४०
,, गजाधर सोमानी	...		४३–४४		
,, रामनारायण गोयनका	.				४५–४६
,, रामेश्वर प्रसाद साबू	...		४५–४६		४३–४४
,, रामनाथ पोद्दार जे० पी०	.	४५–४७	४४–४५		
,, विश्वम्भरलाल रामविलास	.		४४–४५		
,, भवानीदास बिनानी	...	४७–४८	४५–४६		

सम्मेलन के पदाधिकारी

नाम		सभापति	उप-सभापति	मंत्री	सहमंत्री
		(सन्)	(सन्)	(सन्)	(सन्)
श्री रामेश्वरदास बिड़ला	...	२३–२४	२६–२७		
		२४–२५	२८–२९		
,, केशवदेव नेवटिया	...		२३–२४		
			२४–२५		
			२७–२८		
,, प्यारेलाल गुप्त	...		३१ से ३३	२३से२५	२५–२६
			३४–३६, ४०–४१	२७–३०	३०–३१ ३३–३४
,, जमनादास अड़ुकिया	...	४०–४१	३०–३१ ३३–३४		२३–२४
,, रामेश्वरदास जाजोदिया	...				२४–२५
,, बालकृष्णलाल पोद्दार	...	२६–२७			
,, श्रीनिवास बजाज	...		२५से२७		
पं० माधवप्रसाद शर्मा (सोलीसीटर)	...		३१से३३	२५–२६	२८–२९
			३४से४१	२६–२७	
श्री रामदेव पोद्दार	...	२७–२८ ३०–३१ }			
		३३–३४			
		३६–३७			
,, बेनीप्रसाद डालमिया	...		२९–३०		
,, नारायणलाल पित्ती	...	३१–३३			
		३४–३६	४३–४४		
		४४–४५			
,, विश्वंभरलाल रुइया	...		३०–३१, ३३–३४		
,, हीरालाल सिंघी	...			३०–३३	
				३४–३६	
,, विश्वंभरलाल बुकरेडीवाला	...			३१–३३	
				३४–३६	

सम्मेलन के पदाधिकारी

नाम		सभापति	उप-सभापति	मंत्री	सहमंत्री
		(सन्)	(सन्)	(सन्)	(सन्)
श्री गौरीशंकर रुइया	...				३६–३७
				३८–३९	
,, महावीर प्रसाद दाधीच	.			४३–४७	
,, श्रीनिवास बगड़का				५०–५४	३६–४१
,, वल्लभनारायण दानी	.	३७–३८			
,, उमरावसिंह डालमियाँ	...				२५–२६
,, मदनलाल चौधरी	..				२५–२६
,, हनुमानप्रसाद बगड़िया	...				२५–२६
,, सीताराम पोद्दार	...	२५–२६			
,, मुकुन्दलाल पित्ती	...	३८–३९			
,, बैजनाथ मालरिया	...	४८–५०	३७–३९		
,, गोविन्दराम सेक्सरिया	...	३९–४०			
,, घनश्यामदास पोद्दार	.	४३–४४	३९–४०		
,, उमाशंकर दीक्षित	..				३९–४०
,, प्रेमचन्द केडिया	.			४७–४८	४०–४१ ५३–५४
,, वेगराज गुप्ता	..	४१–४२			
,, बैजनाथ सेक्सरिया	...		३९–४०		
,, इन्द्रमल मोदी	..				३९–४०
,, गजाधर सोमानी	..		४३–४४		
,, रामनारायण गोयनका	..				४५–४६
,, रामेश्वर प्रसाद साबू	..		४५–४६		४३–४४
,, रामनाथ पोद्दार जे० पी०	..	४५–४७	४४–४५		
,, विश्वम्भरलाल रामविलास	..		४४–४५		
,, भवानीदास बिनानी	...	४७–४८	४५से४६		

संम्मेलन के पदाधिकारी

नाम		सभापति	उप-सभापति	मंत्री	सहमंत्री
		(सन्)	(सन्)	(सन्)	(सन्)
श्री मदनलाल अग्रवाल	.				
,, चिरंजीलाल टिबड़ेवाला		४७–४८	४५–४६		
,, जगन्नाथ चमड़िया					४५–४६
,, फतेहचन्द झुनझुनूवाला		५७–५८	४७–४८		
		५८–५९	४८–४९		
		५९–६०	५१से५३		
,, लक्ष्मीनारायण गाडोदिया		५०–५१	४९–५०		
,, मदनलाल जालान				४८–४९	
				४९–५०	
,, शिवचन्दराय गुप्त	...				४६–४७
,, पशुपतिनाथ कारवाडिया	...				४६–४७
,, यशवन्तसिंह लोढा	...				४७–४८
,, श्यामबहादुर सिंह	...				४८–४९
,, जयदेव सिंहानिया	...			६०–६१	५६–५७
					५८–५९
					५९–६०
,, परमेश्वर बगड़का	...				
					४७–४९
					५४–५५
					५५–५६
,, रमणलाल गुप्ता	...				४९–५०
,, बालमुकुन्द अग्रवाल	.				४९से५३
,, खेताराम चौधरी	..				५३से५५
,, जुगीलाल पोद्दार	..				५५–५६
,, मदनमोहन रुइया	...	५१–५२ से ५५–५७	५०–५१		
,, शिवकुमार भुवालका	...		६०से६१	५४–५५ से ५९–६०	५०से५३
			६१–६२		
			६२–६३		

सम्मेलन के पदाधिकारी

नाम	सभापति	उप-सभापति	मंत्री	सहमंत्री
	(सन्)	(सन्)	(सन्)	(सन्)
श्री पुरुषोत्तमलाल झुनझुनूवाला .	६०–६१	५७–५८		
	से	५८–५९		
	६२–६३	५९–६०		
,, काशीप्रसाद अडुकिया				५६–५७
				से
				६०–६१
				६१–६२
,, मुरलीधर जालान				५९–६०
,, जयन्तीलाल रइया ...				६०–६१
				६१–६२
				६२–६३
,, रामप्रसाद पोद्दार ..			६१–६२	
			६२–६३	
,, शंकरलाल बजाज ...				६२–६३

प्रस्तावित विद्यार्थीगृह भवन का स्वरूप

सर वंशीलाल पित्ती सभागृह विद्याभवन फसणवाड़ी का दृश्य

स्वर्ण जयंती महोत्सव समिति के कुछ सदस्यों का समूह चित्र

सम्मेलन की व्यवस्थापिका सभा के कुछ सदस्य
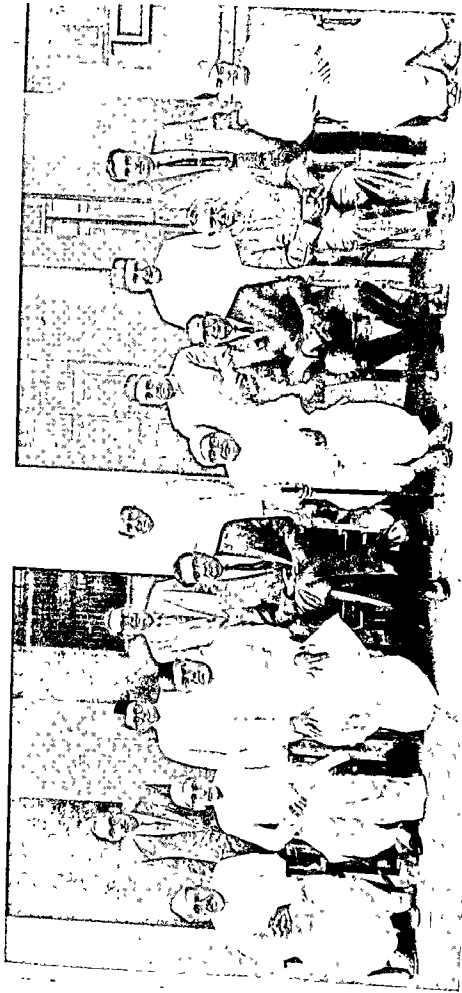
बैठे हुये (बायें से दायें) सर्वश्री श्रीनिवास बगड़का, गौरीशंकर केजड़ीवाला (सहायक मंत्री) शिवकुमार भुवालका (उपाध्यक्ष), पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला (अध्यक्ष), जमनादास अड़ुकिया (ट्रस्टी), रामप्रसाद पोद्दार (प्रधानमंत्री), शंकरलाल बजाज (सहायकमंत्री), रामेश्वरलाल कन्दोई, खड़े हुये (बायें से दायें) सर्व श्री गोविन्दराम बूबना, मुरलीधर जालान, जयदेव सिंहानिया, गोकुलचंद अग्रवाल, मदनलाल जालान एवम् ओमप्रकाश मोदी

मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई स्वर्ण-जयन्ती वर्ष की व्यवस्थापक सभा एवम् उपसमितियाँ

व्यवस्थापक सभा

१	श्री पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला	सभापति एवं ट्रस्टी
२	,, शिवकुमार भुवालका	उपसभापति एवं ट्रस्टी
३	,, रामप्रसाद पोद्दार	प्रधान मंत्री
४	,, गौरीशंकर केजड़ीवाल	सहायक मंत्री
५	,, शंकरलाल बजाज	सहायक मंत्री
६	,, घनश्यामदास पोद्दार	कोषाध्यक्ष एवं ट्रस्टी
७	गोविन्दलाल पित्ती	ट्रस्टी
८	,, पन्नालाल पित्ती	,,
९	,, मदनमोहन रुइया	,,
१०	,, जमनादास अडुकिया	,,
११	,, रामरिख 'मनहर'	सदस्य
१२	,, जयदेव सिहानिया	,,
१३	,, श्रीनिवास बगड़का	,,
१४	,, काशीप्रसाद अडुकिया	,,
१५	,, गोविन्दराम बूबना	,,
१६	,, रामेश्वर साबू	,,
१७	,, संताराम चौधरी	,,
१८	,, ओमप्रकाशमोदी,	,,
१९	,, कालीचरण डालमिया	,,
२०	,, गोकुलचन्द्र अग्रवाल	,,
२१	,, सांवरमल तोदी	,,
२२	,, मुरलीधर जालान	,,
२३	,, मुरलीधर बजाज	,,
२४	,, मदनलाल जालान	,,
२५	,, पुरुषोतमदास फतेहचन्द झुंझनुवाला	,,
२६	,, रामेश्वरलाल कन्दोई	,,

विद्यालय समिति

संयोजक : श्री जयदेव सिहानिया
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, घनश्यामदास पोद्दार
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल
श्रीमती कीर्ति एन० ओझा

पुस्तकालय समिति

संयोजक : श्री कालीचरण डालमिया
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला
,, श्रीराम तापड़िया
,, बसन्तलाल नरसिंहपुरा
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल
श्री रामप्रसाद पोद्दार
,, शंकरलाल बजाज
,, मुरलीधर जालान

शिक्षा समिति

संयोजक : श्री गौरीशंकर केजड़ीवाल
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनुवाला
,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, सांवरमल तोदी
,, जयदेव सिहानिया
,, मदनलाल जालान
,, श्रीनिवास बगड़का
,, घनश्यामदास पोद्दार
,, श्रीराम तापड़िया
,, शंकरलाल बजाज
,, गौरीशंकर मोदी
,, मुरलीधर गुप्ता
,, रामेश्वरप्रसाद साबू
,, काशीप्रसाद अडुकिया

महिला महाविद्यालय समिति

संयोजक : श्री जयदेव सिंहानिया
सदस्य : ,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
डा० प्रभात
डा० भ्रमर
डा० उषा मेहता
श्री गौरीशंकर केजड़ीवाल
श्रीमती सुशीला गुप्ता

महिला मंडल सम्पर्क समिति

संयोजक : श्री खेताराम चौधरी
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
, घनश्यामदास पोद्दार
,, गौरीशंकर केजडीवाल
,, श्रीनिवास बगडका
,, मदनलाल जालान
श्रीमती रुक्मणीबाई पोद्दार
,, दमयंतीबाई पित्ती

सांस्कृतिक समिति

संयोजक : श्री मदनलाल जालान
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, शंकरलाल बजाज
,, मुरलीधर दाधीच
पं० इन्द्र
श्री जमनाप्रसाद पचेरिया
,, कालीचरण डालमिया
,, रामेश्वरप्रसाद कन्दोई
,, रामरिख "मनहर"
,, काशीप्रसाद अडुकिया
,, महिपत राय शर्मा
,, जयदेव सिंहानिया
,, श्रीनिवास बगड़का
,, गोविन्दराम बूबना
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल

अर्थ समिति

संयोजक : श्री रामेश्वरप्रसाद कन्दोई
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
श्री अमरचन्द डालमिया
,, गोकुलचन्द अग्रवाल
,, मदनलाल जालान
,, श्रीनिवास बगड़का
,, जयदेव सिंहानिया
,, श्रीराम तापड़िया
,, रामेश्वरप्रसाद साबू
,, सुन्दरलाल सराफ
,, परमेश्वरलाल चौधरी
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल

प्रचार समिति

संयोजक : श्री रामरिख "मनहर"
सदस्य : ,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, मुरलीधर बजाज
,, जयदेव सिंहानिया
,, शंकरलाल बजाज
,, गणपतराय आर्य
,, गोविन्दराम बूबना
,, तोलाराम चूडीवाला

सेवा समिति

संयोजक : श्री ओमप्रकाश मोदी
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, कालीचरण डालमिया
,, रामेश्वरप्रसाद कन्दोई
,, श्रीनिवास बगडका
,, नरनारायण गनेड़ीवाल
,, रमाशंकर आर्य
,, गौरीशंकर केजडीवाल
,, शिवकुमार भुवालका
,, मदनलाल जालान

अतिथि सत्कार समिति

संयोजक : श्री राधाकृष्ण खेमका
,, रामेश्वरप्रसाद साबू
सदस्य : ,, पुरुषोत्तमलाल झुंझनूवाला
,, शिवकुमार भुवालका
,, रामप्रसाद पोद्दार
,, गौरीशंकर केजड़ीवाल
,, शंकरलाल बजाज
,, जमनादास अडुकिया
,, मदनलाल जालान
,, श्रीनिवास बगड़का

A GREAT WEAVER
In the world of Nature the Spider is a great inexhaustible weaver. Its tireless perseverance was the inspiration and hope of a famous king in despair and its gossamer finery is the admiration of most exacting connoisseurs. . . . In the world of human Industry such a great weaver is
INDU
whose huge annual output of 14 crores of yards of quality textiles is a major contribution to a world in great despair of clothing.
THE INDIA UNITED MILLS LTD. BOMBAY
THE BIG SIX
INDU FABRICS
BOMBAY
THE INDIA UNITED MILLS LTD.
Indu House, Dougall Road, Ballard Estate BOMBAY-1

A GREAT WEAVER
In the world of Nature the Spider is a great inexhaustible weaver. Its tireless perseverance was the inspiration and hope of a famous king in despair and its gossamer finery is the admiration of most exacting connoisseurs . . . In the world of human Industry such a great weaver is
I N D U
whose huge annual output of 14 crores of yards of quality textiles is a major contribution to a world in great despair of clothing
THE INDIA UNITED MILLS LTD. BOMBAY
THE BIG SIX
INDU FABRICS BOMBAY
THE INDIA UNITED MILLS LTD.
Indu House, Dougall Road, Ballard Estate BOMBAY-1
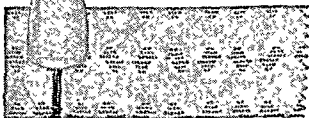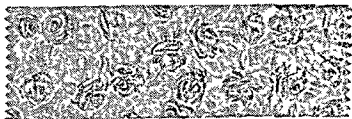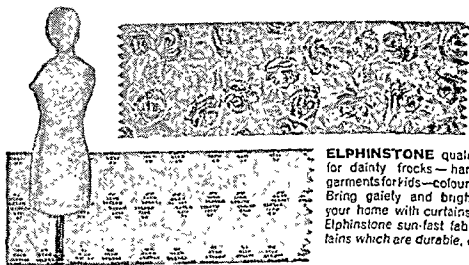
In trains and planes... In buses and cars...wherever hardwearing, stylish upholstery is wanted, CHEETA is leader... first among leather cloths for variety of design and colour.
CHEETA-The fastest selling leather cloth
ELPHINSTONE quality fabrics for dainty frocks—hardwearing garments for kids—colourful cholis. Bring gaiety and brightness to your home with curtains made of Elphinstone sun-fast fabrics, curtains which are durable, colourful.
THE ELPHINSTONE SPG. & WVG MILLS CO LTD., 32, Nicol Road, Ballard Estate, Bombay
Strengthen the fabric of the nation—BUY DEFENCE BONDS